प्रकाशक —
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
बीकानेर (राजस्थान)

प्रथमावृत्ति सन् १९६१

मुद्रक —
जैन प्रिंटिंग प्रेस
कोटा (राजस्थान)

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंह जी बहादुर द्वारा संस्कृत हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वांगीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारंभ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१ विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर लंबे समय से प्रारंभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द संपादित हो चुके हैं। कोश में शब्द, व्याकरण व्युत्पत्ति उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यंत विशाल योजना है, जिसकी संतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारंभ करना संभव हो सकेगा।

२ विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर संपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है। यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य

जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी।

३ आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१ कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३ वरस गांठ मौलिक कहानी संग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' में भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयों के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३–४ 'डा० लुइजि पिओ तेस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अङ्क १–२ राजस्थान के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेषांक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन में भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों में भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओं के लिये 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यतः संग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५ राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान, सम्पादन एवं प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियों को सुरक्षित रखने एवं सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एवं शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य में वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसंधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यों की ओर से निरंतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६ पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई संस्करण प्रकाश में लाये गये हैं और उनमें से लघुतम संस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अंश 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध संस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती में प्रकाशित हुए हैं।

७ राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखां) की ७५ रचनाओं की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अंक में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन संस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबंध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

६. मारवाड़ क्षेत्र के ५०० लोकगीतों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकड़ों लोकगीत घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां और लगभग ७०० लोक कथायें संगृहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाड़े और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान भारती' में प्रकाशित किए गए हैं।

१ बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखों का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

११ इसमर्थ उद्योत, मुहणोत नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।
१२ जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के संबंध में भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३ जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४ बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान् विद्वान् महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६२ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा लुइजि पिओ तैस्सितोरी समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियाँ मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध, लेख कवितायें और कहानियाँ आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषण मालाओं आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।
१६ बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल डा० कैलाशनाथ काटजू राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश डा० डब्लू० एलन डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या डा० तिबेरियो-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठौड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः

राजस्थानी भाषा के मूर्धन्य विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए० हुण्डलोद थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल में संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नहीं हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लड़खड़ा कर गिरते पड़ते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओं के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नहीं है न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं परन्तु साधनों के अभाव में भी संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चय ही बढ़ा सकने वाली होगी।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यंत विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनों और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढ़ता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना संभव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास की योजना के अन्तर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिए रु० १५०००) इस मद में राजस्थान सरकार को दिए तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३०,०००) तीस हजार की सहायता राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन हेतु इस संस्था को इस

वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है जिससे इस वर्ष निम्नोक्त २१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१ राजस्थानी व्याकरण—	लेखक—श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	लेखक—डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३ अचलदास खीची री वचनिका—सम्पादक	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४ हमीरायण— „	श्री भंवरलाल नाहटा
५. पदमिनी चरित्र चौपई— „	„ „
६ दलपत विलास „	श्री रावत सारस्वत
७ डिंगल गीत— „	„ „
८. पंवार वंश दर्पण— „	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रन्थावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१० हरिरस— „	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११ पीरदान लालस ग्रन्थावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२ महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३ सीताराम चौपई— „	श्री अगरचन्द नाहटा
१४ जैन रासादि संग्रह— „	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६ जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि „	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि— „	„ „ „
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रन्थावली— „	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा— „	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२० वीर रस रा दूहा— „	„
२१ राजस्थान के नीति दोहा— „	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२ राजस्थानी व्रत कथाएं — „	„ „ „
२३ राजस्थानी प्रेम कथाएं — „	„ „ „
२४ चंदायन— „	श्री रावत सारस्वत

२५. मरुश्री— सम्पादक—श्री अगरचन्द नाहटा
म० विनयसागर
२६ जिनहर्ष ग्रन्थावली — श्री अगरचन्द नाहटा
२७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थों का विवरण ,, ,, ,,
२८. दम्पति विनोद ,, ,, ,,
२९. हीयाली-राजस्थान का बुद्धि वर्धक साहित्य ,, ,, ,,
३० समयसुन्दर रासत्रय ,, श्री भंवरलाल नाहटा
३१ दुरसा आढा ग्रन्थावली , श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईसरदास ग्रन्थावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया) रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रन्थों का संपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो पा रहा है।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एवं गुरुता को लक्ष्य में रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की।

राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया जो सौभाग्य से शिक्षामंत्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने में पूरा-पूरा योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। संस्था उनकी सदैव आभारी रहेगी।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रंथों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर संग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता महावीर तीर्थ क्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ बृहद् ज्ञान-भंडार बीकानेर मोतीचंद खजांची ग्रन्थालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भंडार बीकानेर एशियाटिक सोसाइटी बंबई आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी मुनि रमणिक विजयजी श्री सीताराम लालस श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियों से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थों का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सब के प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थों का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः। हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावों द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकें और मां भारती के चरण-कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकें।

	निवेदक
बीकानेर,	लालचन्द कोठारी
मार्गशीर्ष शुक्ला १५	प्रधान-मंत्री
सं० २०१७	सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
दिसम्बर ३ १९६०	बीकानेर

द्वितीय प्रकरण

२—ऐतिहासिक-गद्य-साहित्य

(क) जैन ऐतिहासिक गद्य—पट्टावली—उत्पत्ति ग्रंथ — वंशावली — दफ्तर बही — ऐतिहासिक टिप्पण—

(ख) जैनेतर — ऐतिहासिक गद्य साहित्य ख्यात बात — पीढ़ियावली हाल, श्रहवाल हगीगत, याददास्त — विगत — पट्टा परवाना इकरारनामा — जन्म पत्रिया — वहीखाता पृ० २०-२१

३—कलात्मक-गद्य-साहित्य

क—बात साहित्य 'कहानी साहित्य ...कथा और बात का संबंध बात साहित्य प्रभूत मात्रा में प्राप्त।

ख—वचनिका ...एक शैली .. अन्त्यानुप्रास या तुक प्रधान गद्य। इसमें गद्य के साथ साथ पद्य का भी प्रयोग।

ग—दवावैत वचनिका की भांति ही एक शैली .. वचनिका का ही एक रूपान्तर।

घ—वर्णक-गद्य तुकान्तानुप्रास युक्त वर्णन आदि विविध प्रकार के वर्णनों का संग्रह .. ये प्रसंगानुसार किसी भी कहानी में जोड़ दिये जाते हैं। २१-२४

४—धार्मिक और दार्शनिक-गद्य-साहित्य

आयुर्वेद ज्योतिष शकुनशास्त्र सामुद्रिक शास्त्र छन्द शास्त्र नीति शास्त्र तंत्र मंत्र धर्म शास्त्र योग शास्त्र वेदान्त आदि अनेक विषयों के अनुवाद ..

क-पत्रात्मक. तीन प्रकार के पत्र... १ जैन आचार्यों से सम्बन्धित.... इनके भी दो प्रकार क-आदेश पत्र... अनुशासन करने के लिये आचार्यों द्वारा शिष्यों या श्रावकों को दिये गये आदेश सम्बन्धी....ख-विनती या विज्ञप्ति पत्र श्रावकों के द्वारा आचार्यों से विहार के लिये की हुई प्रार्थना.... २—राजकीय राजाओं द्वारा पारस्परिक या अंगरेज सरकार से पत्र व्यवहार सम्बन्धी....३-व्यक्तिगत जन साधारण द्वारा किये गये पारस्परिक पत्र

व्यवहार—ख अभिलेखीय.... प्रशस्ति स्तम्भ शिला लेख, ताम्रपत्र आदि पृ० २४-२६

काल विभाजन... १-प्राचीन काल दो उपविभाग....क-प्रथम काल

सं० १२०० से सं० १४०० तक और २ विकास काल सं० १४०० से सं० १६०० तक....

२—मध्यकाल ...क-विकसित काल सं० १६०० से १९०० तक ख-ह्रास काल सं० १९०० से १९५० तक ग-नवजागरण काल सं० १९५० से उपरान्त।

प्रयास काल में गद्य शैली के कई प्रयोग सभी स्फुट टिप्पणियों के रूप में प्राप्त—विकास काल में गद्य का रूप स्थिर हुआ .. शैली में परिवर्तन —भाषा में प्रवाह ..विकसित काल राजस्थानी का सर्वोत्कर्ष.. कलात्मक, ऐतिहासिक, धार्मिक वैज्ञानिक आदि कई क्षेत्रों में गद्य के प्रयोग—पर्याप्त ग्रंथों की रचना वचनिका दवावैत आदि नवीन शैलियों का प्रादुर्भाव... ७-१८

तृतीय प्रकरण

राजस्थानी गद्य का विकास

वैदिक संस्कृत काल में गद्य का महत्वपूर्ण स्थान .. लौकिक संस्कृत काल में उसका ह्रास.. पाली और प्राकृत कालों में पुनः उत्थान अपभ्रंश काल में फिर अवसान

देशी भाषा के उदाहरण तेरहवीं शताब्दी से पहले के नहीं मिलते ... उक्ति व्यक्ति प्रकरण बारहवीं शताब्दी देशी गद्य का सबसे प्राचीन उदाहरण.. गोरखनाथ का ब्रजभाषा गद्य की प्रामाणिकता संदिग्ध ...मैथिली गद्य का प्रथम प्रयोग ज्योतिरीश्वर ठाकुर की "वर्ण रत्नाकर" र०का० चौदहवीं शताब्दी "वैद्यनाथ कलानिधि" र० का पन्द्रहवीं शताब्दी का अन्तिमांश —मराठी गद्य की प्रथम रचना

राजस्थानी गद्य साहित्य के आरम्भ और उत्थान में जैन विद्वानों का हाथ ...अपने धार्मिक विचारों को गद्य के माध्यम से जन साधारण तक पहुँचाने का प्रयास

विकास की दृष्टि से इस काल के उपविभाग....

१—प्रयास काल सं० १२०० से १४०० तक

२—विकास काल सं० १४०० से १६०० तक   २१-३१

१—प्रयास काल

इस काल की भाषा को "प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी" नाम दिया गया है। इस काल में गुजराती और राजस्थानी का एक ही स्वरूप रहा। इस

"मौक्तिक' ३-तिलक कृत "उक्ति संग्रह"...राजस्थानी के माध्यम से संस्कृत व्याकरण को समझाने के उद्देश्य से इनकी रचना...इस काल के भाषा स्वरूप को समझने के लिये इनका अध्ययन आवश्यक...इन सब में मुग्धावबोध अधिक महत्वपूर्ण...गद्य के उदाहरण...

५-वैज्ञानिक गद्य पृ० ६१-६३

केवल दो गणित रचनायें प्राप्त...१-गणित सार, २-गणित पंचविंशिका...प्रथम श्री राजकीर्ति मिश्र द्वारा अनूदित मध्यकाल के नापतोल के उपकरण एवं सिक्कों का उल्लेख। द्वितीय श्री शंभूदास मंत्री द्वारा रचित सं० १४७५...गद्य के उदाहरण...

चतुर्थ प्रकरण

पूर्व पीठिका...ऐतिहासिक भूमि...मुसलमान राज्य की स्थापना...हिन्दु मुस्लिम संघर्ष शिथिल...

१-ऐतिहासिक गद्य—पिछले काल की अपेक्षा अनेक नए रूपों में प्राप्त दो प्रमुख उपविभाग...

क-जैन ऐतिहासिक गद्य पृ० ६७-७१

पांच प्रकारों में उसका वर्गीकरण...अ-वंशावली...उसके प्रमुख विषय...गद्य के उदाहरण आ-पट्टावली...प्रमुख विषय...गद्य का उदाहरण प्रमुख प्राप्त पट्टावलियां १-कडुआमत पट्टावली २-नागौरी लुकागच्छीय पट्टावली ३-बंगड़गच्छ पट्टावली ४-पिपलक शाखा पट्टावली ५-तपागच्छ पट्टावली इन पट्टावलियों का महत्व...गद्य के उदाहरण...इ-दफ्तर बही दैनिक व्यापारों की डायरी...शैली में संग्रह—गद्य का उदाहरण...ई ऐतिहासिक टिप्पण...उनके विषय गद्य का उदाहरण उ-उत्पत्ति ग्रंथ...प्रमुख विषय प्राप्त ग्रंथ १-कक्कलमतोत्पत्ति २-रिपमतोत्पत्ति...गद्य का उदाहरण

ख-जैनेतर ऐतिहासिक गद्य पृ० ७२-१०४

राजाश्रय या स्वतंत्र रूप से लिखा गया ऐतिहासिक विवरण ख्यात के नाम से प्रसिद्ध....

ख्यात साहित्य...ख्यातों का प्रारम्भ...अकबर से पूर्व उनका अभाव ....अकबर की इतिहास लिखवाने का प्रमाण..."आइने अकबरी" के उपरान्त

इस प्रकार की रचनाओं का प्रारम्भ। राजस्थान के देशी राज्यों में भी उसका अनुकरण...ख्यातों का प्रारम्भिक रूप....वंशावली। धीरे धीरे विस्तृत विवरण....विकसित रूप ख्यात ...ख्यातों के प्रकार.... १–वैयक्तिक, २–राजकीय १–वैयक्तिक ख्यातें....वैयक्तिक ख्यातों में व्यक्ति की इतिहास मिश्रता के उदाहरण प्रमुख वैयक्तिक ख्यातें ... १–नैणसी की ख्यात... संकलन काल सं० १७०७ से १७२२....नैणसी प्रौढ़ राजस्थानी गद्य का लेखक और परिचय....साहित्यिक महत्व....राजस्थानी के ऐतिहासिक गद्य का सबसे अच्छा उदाहरण विषय की दृष्टि से साहित्यिकता का अभाव ...गद्य के उदाहरण....

२–दयालदास की ख्यात... दयालदास सं० १८५५ से १६४८....परिचय और ग्रंथ ...बीकानेर रा राठौड़ां री ख्यात ...आर्याख्यान कल्पद्रुम....देश दर्पण ...गद्य शैली....गद्य के उदाहरण....

३–बांकीदास की ख्यात....बांकीदास सं० १८२८ से १८६०....परिचय ....ख्यात का प्रमुख विषय.... गद्य के उदाहरण ...

२–राजकीय ख्यातें

ख्यातों के लेखक....मुत्सदी ...पुरानी ख्यातों में कम उपलब्ध ...प्रमुख प्राप्त ख्यातें ..."राठौड़ां री वंसावली सीहे जी सूं कल्याणमल जी ताई — बीकानेर रै राठौड़ा री बात तथा वंसावली....जोधपुर रा राठौड़ां री ख्यात.... राठौड़ां री वंसावली....राव अमर सिंघ जी री बात....राव रायसिंघ जी री बात ...महाराजा अजीतसिंघ जी री ख्यात....उदयपुर री ख्यात....मारवाड़ री ख्यात....तीन भागों में विभक्त ...किशनगढ़ री ख्यात ...बीकानेर री ख्यात गद्य के उदाहरण....

स्फुट ख्यातें—अनेक गुटकों में प्राप्त....जीवनी साहित्य का अभाव ... साधारण तथा एक मात्र महत्वपूर्ण उदाहरण....ऐतिहासिक जीवनी....दलपत विलास....बीकानेर के राजकुमार दलपतसिंह की जीवनी....अपूर्ण.... ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण....तत्कालीन इतिहास पर यत्र तत्र नया प्रकाश।

अन्य प्रकार.... १–ऐतिहासिक बातें....रावजी अमरसिंह जी री बात ... नागौर रै मामले री बात... २–पीढ़ियावली "वंशावली"....राठौड़ां री वंसावली....बीकानेर रा राठौड़ा राजावां री वंसावली। सीसोदिया रा राठौड़ां री पीढ़ियां सिसोदिया री वंसावली तथा पीढ़ियां ...ओसवालां री पीढ़ियां.... ३–हाल....अहवाल....हगीगत....याददाश्त....आदि.... ४–विगत....चारण रा सांसण री विगत....महाराजा तखतसिंघ जी रै कंवरा री विगत....जोधपुर

रा देवस्थानां री विगत.. जोधपुर बागायत री विगत.. जोधपुर रा निवाणां री विगत ५-पट्टा परवानो परवाना री तथा उमरावां रो पटो....महाराजा अनूपसिंघ जी रो आनन्द राम रै नाम परवानो आदि ६-इकरारनामा ... कई संग्रह.... ७-जन्म पत्रियां ..राजां री तथा पातसाहां री जन्मपत्रियां ८-तहकीकात .. जयपुर वारदात री तहकीकात..

२–धार्मिक गद्य पृ० १०४ १२१

पुस्तक प्रमुख विभाग.. क-टीकात्मक.... ख-व्याख्यान... ग-खंडन मंडनात्मक ई-प्रश्नोत्तर ग्रंथ.. ट-विधि विधान .. ङ-तत्व ज्ञान .. च-शास्त्रीय विचार.... छे-कथा साहित्य

३–पौराणिक गद्य पृ० १२१ १२३

अब तक इसका पूर्ण अभाव प्रमुख विषय .. १-पुराण, २-धर्म शास्त्र ३-माहात्म्य, ४-स्तोत्र ग्रंथ, ५-वेदांत, ६-कथायें....

४–कलात्मक गद्य पृ० १२४ १६७

पिछले काल की अपेक्षा अधिक विस्तृत क्षेत्र प्रमुख स्तम्भ १-बात साहित्य ..कहानी का बीज मानव की ज्ञान भूमियां....भारत की प्रान्तीय लोक कथायें राजस्थान की वार्तें उन पर संस्कृति का प्रभाव चार संस्कृतियों का प्रभाव १-ब्राह्मण २-राजपूत, ३-जैन ४-मुस्लिम....उनका वर्गीकरण लोक कथायें- १-मौलिक, २-संग्रहीत ..उनको लिपि बद्ध करने के प्रयास २-पारम्परिक... नवरचित एवं अनूदित कथायें ...लिपिबद्ध 'संग्रहीत' कथाओं के दो विभाग. १-अर्द्ध ऐतिहासिक २-अनैतिहासिक या कल्पनिक।

२-वचनिका—चारण वचनिका—राठौड़ रतनसिंघ जी महेसदासोत री वचनिका....रचना सं० १७१७.. लेखक जगमाल 'खिड़िया'....लेखक परिचय... गद्य का उदाहरण... ३-दवावैत— १-नरसिंह दास गौड़ की दवावैत अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लिखित उदाहरण १ जैनाचार्य जिन लाभ सूरि जी की दवावैत उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में रचित.... उदाहरण २-जैनाचार्य जिन सुखसूरि जी की दवावैत सं० १७६२ उपाध्याय राम विजय रचित गद्य के उदाहरण ... ४-दुरगादत्त की दवावैत गद्य का उदाहरण ... ५-वरणक ग्रंथ—एक प्रकार के वर्णन कोष....प्रमुख ग्रंथ—१ राजान राउतरो बात वणाव -खीची गंगव नींबावत रा दो पहरा १-वागविलास या मुत्कलानुप्रास....

४-कुतूहलम वर्ण्य विषय गद्य के उदाहरण
५-सभा शृंगार सं० १७६२ महिमा विजय लिखित वर्ण्य विषय

४-वैज्ञानिक गद्य पृ० १६७-१७०

दो रूपों में प्राप्त...१-अनुवादात्मक तथा २-टीकात्मक ..स्वतंत्र गद्य के प्रयोग बहुत कम ...प्राप्त वैज्ञानिक गद्य के प्रकार १-योग शास्त्र-गोरख राव टीका, हठयोग की क्रियाओं पर प्रकाश....हठयोग प्रदीपिका टीका सं० १८८७ प्रथम कृति से विषय साम्य.... २-वेदान्त-भागवद् गीता की टीकायें ही प्राप्त गद्य के उदाहरण ... ३-वैद्यक.. कुछ प्रसिद्ध प्राप्त प्रतियां....गद्य के उदाहरण ४-ज्योतिष-अनूदित ग्रंथ.. क-राशिफल आदि... १-साठ संवत्सरी फल, २-बकड मकडी, ३-वर्षा ज्ञान विचार ४-पंचांग विधि ५-रत्न माला टीका, ६-लीलावती .. ख-शकुन शास्त्र.... १-देवी शकुन २-शकुनावली ३-पाशा केवली शकुन... ग-सामुद्रिक शास्त्र १-सामुद्रिक टीका, २-सामुद्रिक शास्त्र....

४-प्रकीर्णक गद्य-विषय के आधार पर वर्गीकरण ..१-नीति सम्बन्धी प्राप्त ग्रंथ क-चाणक्य नीति टीका ख-चौरासी बोल ग-भरथरी सबद, घ-भरथहरी उपदेश .. २-अभिलेखीय....शिलालेख पर्याप्त संख्या में प्राप्त प्राप्त शिलालेखों में सबसे बड़ा एवं महत्वपूर्ण जैसलमेर में पन्वों के यात्री संघ का शिलालेख... गद्य का उदाहरण.. ३-पत्रात्मक....तीन प्रकार १-नरेशों के पत्र २-जैन आचार्य या साधुओं के पत्र, ३-जन साधारण के पत्र N P ४-यंत्र मंत्र सम्बन्धी उपसंहार ...भाषा की दृष्टि से इस काल का महत्व राजस्थानी गद्य के प्रौढ़तम प्रयोग....विषय की दृष्टि से सर्वतोमुखी विकास शैली में प्रवाह तथा अपनापन...

पांचवा प्रकरण

आधुनिक काल सं० १६४० से अब तक

हिन्दी की उन्नति से राजस्थानी की प्रगति में गतिरोध तथा नवीन प्रयास

नाटक पृ० १७७-१७८

श्री शिवचंद भरतिया के तीन नाटक १-केशर विलास २-बुढापा की सगाई सं १६६३ ३-फाटका जंजाल...श्री गुलाबचन्द नागौरी का 'मारवाड़ी मौसर और सगाई जंजाल' भगवती प्रसाद दारूका के पांच नाटक १-वृद्ध विवाह सं० १६६० २-बाल विवाह सं १६७४ ३-कलकी सिरली छाया सं० १६७० ४-कलकतिया बाबू सं० १६६१ ५-सीठणा सुधार

O

"लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इन्डिया—खण्ड ६ भाग २ में मिलता है। इसका प्रकाशन सन् १६०८ में हुआ। इसी में सबसे पहले राजस्थानी साहित्य के महत्व को स्वीकार किया गया। इनके समर्थन पर तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन ने राजस्थानी साहित्य के शोध एवं प्रकाशन के लिये बंगाल एशियाटिक सोसाइटी को कुछ रुपयों की सहायता प्रदान की जिसके फलस्वरूप सन् १६१३ में श्री हरप्रसाद शास्त्री ने अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की।

डॉ० ग्रियर्सन के उपरान्त डॉ० टैसीटोरी ने राजस्थानी साहित्य को प्रकाश में लाने का उल्लेखनीय कार्य किया। सन् १६१४ में भारत सरकार ने बंगाल एशियाटिक सोसाइटी के अधीन राजस्थानी साहित्य को शोध करने के लिये इनको इटली से बुलाया। ६ वर्ष के अनवरत परिश्रम के उपरान्त ३० वर्ष की आयु में सन् १६२० में इनकी मृत्यु हो गई। इन्होंने सहस्त्रों राजस्थानी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज की ऐतिहासिक सामग्री को एकत्रित किया तथा राजस्थानी के तीन काव्य-ग्रन्थों का सम्पादन किया।

अब राजस्थानी के अध्ययन की ओर विद्वानों का ध्यान जाने लगा। डॉ० टर्नर, डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी कविराज मुरारीदान, पं० रामकरण आसोपा ठा० भूरसिंह, श्री रामनारायण दूगड़, मुंसिफ देवीप्रसाद पुरोहित हरनारायण, पं० सूर्यकरण पारीक श्री जगदीशसिंह गहलोत, डॉ० दशरथ शर्मा, मोतीलाल मेनारिया श्री अगरचन्द नाहटा श्री भँवरलाल नाहटा गणपति स्वामी श्री नरोत्तमदास स्वामी कन्हैयालाल सहल प्रभृति विद्वानों ने राजस्थानी साहित्य को प्रकाश में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

राजस्थानी का गद्य-साहित्य अब तक प्रायः अप्रकाशित था। इसी विषय को अपनी शोध के लिये चुनने का निश्चय किया। पू० डा० फतहसिंह जी ने सुझाव दिया कि श्री नरोत्तमदास स्वामी इस विषय में उपयुक्त पथ-प्रदर्शक हो सकते हैं। उन्होंने एक पत्र पू० स्वामी जी को इस सम्बन्ध में लिखा। फलस्वरूप स्वामी जी ने मुझे अपना शिष्य बना लिया। "काम मनोयोग से करना होगा" उनके ये शब्द आज भी मेरे कानों में गूंजा करते हैं।

बीकानेर पहुंच कर मैंने अपना कार्य प्रारम्भ किया। स्वामी जी ने शीघ्र ही मुझे कार्य क्षेत्र की सीमाओं से अवगत कराया। रूपरेखा बन ही चुकी थी इसी पर कार्य करना था। स्वामी जी ने मेरी सभी कठिनाइयों को

दूर किया। स्वामी जी के प्रथम दर्शन से ही मैं प्रभावित हो गया। उनका व्यक्तित्व मुझे आकर्षक लगा। उन्होंने अपने पुत्र की भाँति ही मुझ पर स्नेह उड़ेल दिया। जो कुछ भी मुझे कठिनाई होती थी मैं निसंकोच उसे उनके सामने रखता था वह कठिनाई शीघ्र ही दूर हो जाती थी। रहन आदि की व्यवस्था भी उनकी कृपा का ही परिणाम थी। यदि ये सुविधायें प्राप्त न होती तो सम्भवतः यह काम हो ही नहीं सकता था। स्वामी जी के निर्देशों ने मुझे अध्ययन में अधिक सहायता पहुँचाई। कई निराशा के क्षणों में उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया। अधिकांश सामग्री मुझे उनके द्वारा ही प्राप्त हुई। उन्होंने मुझे वे सब स्थान बताये जहाँ से सामग्री प्राप्त हो सकती थी। स्वामी जी ने मेरा परिचय श्री अगरचन्द जी नाहटा से करवाया। श्री शुक्ल मेरे साथ श्री नाहटा जी के यहाँ गये। उस समय श्री नाहटा जी किसी जैन भंडार में प्राचीन प्रतियों को देख रहे थे। वे अपने कार्य में इतने मग्न थे कि हमारी उपस्थिति का पता उन्हें देर से मिला ऐसा साहित्य का साधक मैंने आज तक नहीं देखा। वेश भूषा से यह जानना कठिन था कि यह एक अध्ययननिष्ठ विद्वान हैं। इसका पता उनके सम्पर्क में आने पर ही चला। श्री नाहटा जी ने मुझे प्राचीन जैन-लिपि सिखाई तथा अपने अभय जैन पुस्तकालय से उपयुक्त सामग्री अध्ययन के लिए दी। अभय जैन पुस्तकालय में राजस्थानी गद्य की अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ हैं उनमें से प्रमुख के अध्ययन का अवसर श्री नाहटा जी ने मुझे प्रदान किया। उन्होंने मेरे साथ परिश्रम करके अन्य अध्ययन सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर किया। श्री नाहटा के द्वारा कुछ जैन विद्वानों से भी परिचय हो गया जिससे मुझे अध्ययन में सहायता मिली। दूसरे जैन भंडारों को भी मैंने श्री नाहटा जी के साथ देखा तथा आवश्यक सामग्री प्राप्त की। अनूप संस्कृत पुस्तकालय का उल्लेख भी अत्यन्त आवश्यक है। वहाँ से भी मुझे अधिक सामग्री मिली। सामग्री को प्राप्त करने के लिए मुझे अधिक नहीं भटकना पड़ा। बीकानेर के इन पुस्तकालयों में मेरा बहुत सा काम बन गया। आवश्यकता के अनुसार सूचीपत्र पत्र-पत्रिका, रिपोर्ट, अभिनन्दन-ग्रन्थ साहित्य के इतिहास भाषा के इतिहास आदि से भी मैंने सहायता ली है। जहाँ से भी सामग्री प्राप्त हो सकी मैंने उसे प्राप्त करने का श्रम अवश्य किया है। प्राप्त सामग्री के उचित उपयोग के लिये मुझे स्वामी श्री नरोत्तम दास तथा श्री अगरचन्द नाहटा से अधिक सहायता मिली है। इनके बहुमूल्य सुझाव तथा निर्देश आदि के लिए मैं सदैव ऋणी रहूँगा।

प्रस्तुत निबन्ध में सं० १३३ के आराधना नामक टिप्पणी को मैंने राजस्थानी का सर्वप्रथम गद्य का उदाहरण माना है। यह मुनि श्री जिनविजय जी की शोध का परिणाम है। इससे प्राचीन उदाहरण मुझे प्राप्त न हो सका। सं० १३३६ से आज तक राजस्थानी गद्य साहित्य के विकास को दिखलाने का प्रयास यहाँ किया गया है। इस विकास को दिखाने के लिये सम्पूर्ण गद्य साहित्य को कालों में विभाजित कर दिया है— १-प्राचीन राजस्थानी काल—सं० १३ ० से १६०० तक—, २-मध्य राजस्थानी काल—सं १६ ० से १६ ० तक—, ३—आधुनिक काल—सं० १६ ० से अब तक—। प्राचीन राजस्थानी काल के भी दो उपविभाग करना मैंने उचित समझा है— क-प्रयास काल—सं० १३०० से १४०० तक— ख-विकास काल—सं० १४ से १६०० तक—। मध्यकालीन को विकसित काल कहा जा सकता है। विकसित काल के अन्तिम सोपान में राजस्थानी साहित्य का ह्रास होने लगा था। किन्तु यह समय बहुत थोड़ा है। इस ह्रास काल के उपरान्त आधुनिक काल का नाम नवजागरण काल, मैंने दिया है।

प्रयास कालीन गद्य में जैन विद्वानों का ही हाथ रहा है। इस काल की ८ रचनायें मिलती हैं— १-आराधना—सं० १३३०— २-बाल शिक्षा—सं १३३६— ३-अतिचार सं १३४०—, ४-नवकार व्याख्यान—सं० १३५८— ५-सर्वतीर्थ नमस्कार स्तवन—सं० १३५९—, ६-अतिचार—सं १३६९— ७-तत्वविचार प्रकरण ८-धनपाल कथा। ये सभी जैन आचार्यों की रचनायें हैं। अन्तिम दो रचनाओं का समय आनुमानिक है। हस्तप्रतियों तथा श्री अगरचन्द नाहटा के मतानुसार इन दोनों रचनाओं का समय चौदहवीं शताब्दी माना गया है।

विकासकाल विकास की दूसरी सोपान है। इस काल की प्रथम प्रौढ़ रचना आचार्य तरुणप्रभसूरि की षडावश्यक बालावबोध (सं० १४११) है। इसके उपरान्त राजस्थानी गद्य लेखन की प्रवृत्ति बढ़ती चली गई। इस काल में पाँच रूपों में राजस्थानी गद्य का प्रयोग मिलता है— १-धार्मिक गद्य २-ऐतिहासिक गद्य ३-कलात्मक गद्य ४-व्याकरण गद्य, ५-वैज्ञानिक गद्य। धार्मिक तथा ऐतिहासिक गद्य के क्षेत्र में जैन आचार्यों का ही हाथ रहा। कलात्मक गद्य की सबसे प्रथम रचना "पृथ्वीचन्द्र वाग्विलास"—सं० १४७८—गत आचार्य श्री माणिक्यचन्द्र सूरि की है। सं० १४८५ में लिखित शिवदास चारण की "अचलदास खीची री वचनिका" धारणा

कथात्मक गद्य का सर्व प्रथम उदाहरण है। जिन समुद्र सूरि तथा शान्तिसागर सूरि की दो जैन वचनिकायें भी इस काल में मिलती हैं। कुशलमण्डन का "मुग्धावबोध मौक्तिक (सं० १४४) इस काल का महत्वपूर्ण व्याकरण ग्रन्थ है। वैज्ञानिक गद्य के अन्तर्गत गणितसार (सं० १६४६) तथा गणितपंच विंशतिका बालावबोध (सं० १४७४) गणित ग्रन्थ मिलते हैं।

विकसित काल राजस्थानी-गद्य-साहित्य का स्वर्णकाल है। इस काल में राजस्थानी गद्य साहित्य का सर्वतोमुखी विकास हुआ। इस काल में फक्त ४ क्षेत्रों में ही गद्य का विकास हुआ। ऐतिहासिक गद्य के दो प्रकार मिले—क-जैन ऐतिहासिक, ख-जैनेतर ऐतिहासिक। प्रथम प्रकार में वंशावली पट्टावली दफ्तर बही, ऐतिहासिक टिप्पण एवं उत्पत्ति ग्रन्थ मिलते हैं। दूसरे प्रकार में "ख्यात साहित्य" उल्लेखनीय है। इस काल में ख्यातें खूब लिखी गई। ख्यातों के अतिरिक्त ऐतिहासिक बातें, पीढ़ियावली हाल, विगत, पट्टापरवाना, इलकाबनामा, जन्मपत्रियाँ तथा वहकोचन आदि रूप भी मिलते हैं। इसी प्रकार धार्मिक गद्य के भी दो उपविभाग किये गये हैं—क-जैन धार्मिक, ख-जैनेतर धार्मिक। जैन धार्मिक गद्य के अन्तर्गत टीका, व्याख्यान खण्डनमण्डन प्रश्नोत्तर, विधिविभाग तत्वज्ञान, शास्त्रीय विचार तथा कथा साहित्य समाहित हैं। जैनेतर-धार्मिक-साहित्य पौराणिक गद्य पुराण धर्मशास्त्र माहात्म्य स्तोत्रग्रन्थ वेदान्त तथा कथाओं के अनुवाद एवं टीका रूप में लिखा है। कथात्मक गद्य में 'बात साहित्य' अधिक महत्वपूर्ण है। इन राजस्थानी कहानियों का साहित्यिक महत्व है। ये कहानियाँ अनेक प्रकार की हैं। इनके अतिरिक्त वचनिका दवावैत तथा वर्णक ग्रन्थ कथात्मक गद्य के अच्छे उदाहरण हैं। वैज्ञानिक गद्य के क्षेत्र में गणित की रचना नहीं मिलती। योगशास्त्र, वेदान्त वैद्यक, ज्योतिष आदि नये विषयों के लिये राजस्थानी गद्य का प्रयोग हुआ। कुछ प्रकीर्णक विषयों के लिए भी राजस्थानी गद्य प्रयुक्त किया गया। इस काल में नीति सम्बन्धी, अभिलेखीय पत्रात्मक तथा यंत्र मन्त्र सम्बन्धी विषयों का प्रतिपादन भी राजस्थानी गद्य में किया गया।

विकसित काल के अन्तिमांश में राजस्थानी गद्य की प्रगति का गतिरोध हुआ। न्यायालयों की भाषा उर्दू तथा शिक्षा की भाषा हिन्दी और अंगरेजी होने के कारण राजस्थानी को कोई प्रोत्साहन नहीं मिला। यह अवस्था अधिक समय तक नहीं रह सकी। इनके पुनरुत्थान के प्रयास

आरम्भ होने लगा फलस्वरूप अब नाटक, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, गद्यकाव्य, रेखाचित्र संस्मरण, एकांकी नाटक, भाषण आदि सभी क्षेत्रों में राजस्थानी गद्य साहित्य प्रकाशित हो रहा है। इसको प्रकाश में लाने के लिये अनेक पत्र-पत्रिकायें निकलीं जिनमें पंचराज,—सं १६७०—, मारवाड़ी हितकारक—सं० ० ४— मारवाड़—सं० २८ ०— मारवाड़ी सं० २ ०४ आदि साप्ताहिक पत्र प्रमुख है। राजस्थानी के शोध कार्य के लिये "राजस्थान "राजस्थानी, 'चारण", "राजस्थान-भारती, "शोध पत्रिका 'मरु-भारती" आदि शोध पत्रिकायें भी अधिक सहायक सिद्ध हुई हैं।

राजस्थानी गद्य साहित्य का विकास दिखाने के लिये उसकी भाषा का विकास दिखाना भी आवश्यक था। यह भाषा का विकास दिखाने के लिये परिशिष्ट –क– में राजस्थानी गद्य के उदाहरण भी काल क्रमानुसार दे दिये हैं।

अन्त में, मैं उन सबका प्रति कृतज्ञ हूँ जिनकी मुझे सहायता मिली है। यदि यह निबन्ध उपादेय सिद्ध हुआ तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।

कोटा
शिवरात्रि १६६१ } शिवस्वरूप शर्मा
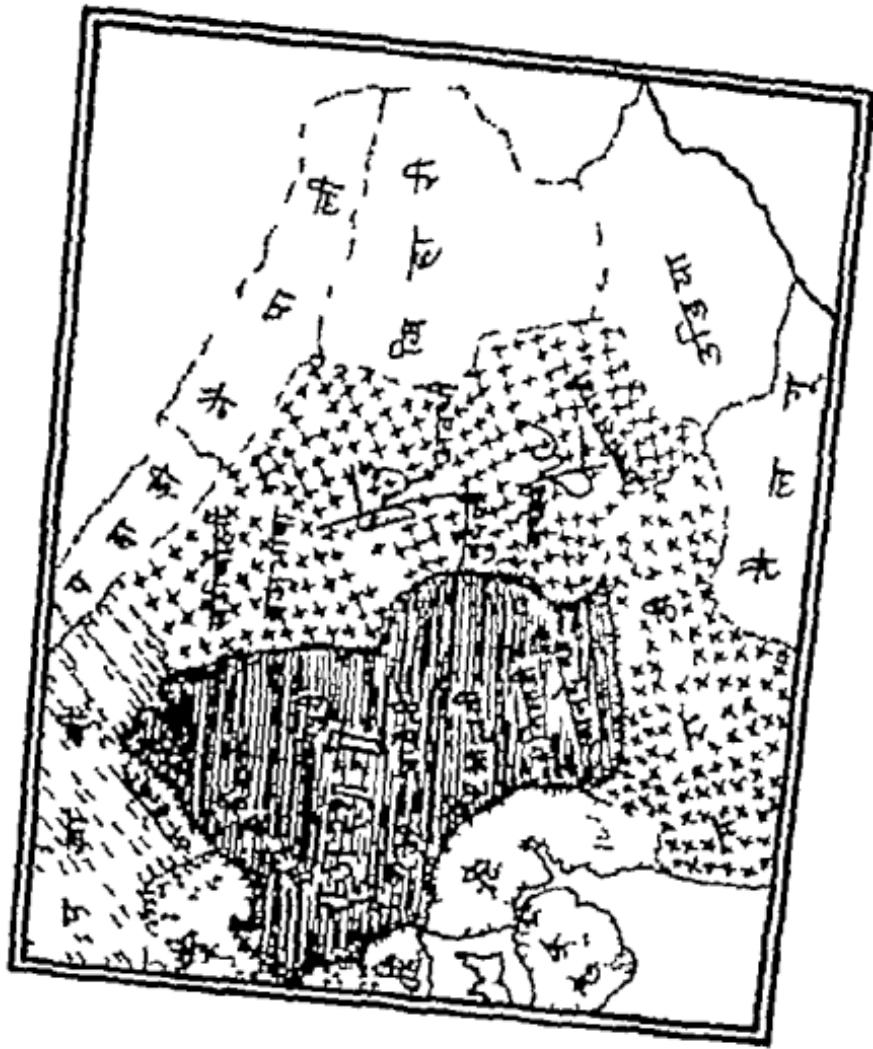
राजस्थानी-भाषा-भाषी-क्षेत्र

प्रथम-प्रकरण

विषय प्रवेश

क—राजस्थानी—भाषा

१ क्षेत्र और सीमायें

"राजस्थानी" राजस्थान और मालवा की मातृभाषा है। इसके अतिरिक्त यह मध्यप्रदेश, पंजाब तथा सिंध के कुछ भागों में बोली जाती है[1]। राजस्थानी-भाषा-भाषी प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग डेढ़ लाख वर्गमील है[2] जो अधिकांश भारतीय भाषाओं के क्षेत्रफल से अधिक है। इस भाषा के बोलने वालों की संख्या डेढ़ करोड़ से ऊपर है[3] यह संख्या गुजराती सिंधी, उड़िया आसामिया सिंहली ईरानी, तुर्की, बर्मी यूनानी आदि बहुत सी भाषा-भाषियों की संख्या से बड़ी है।

१—ग्रियर्सन —

L S I Vol I Part I Page 171—

It is spoken in Rajputana and Western portion of of Central India and also in the neighbouring tracts of Central Provinces, Sind and the Punjab. To the East it shades of into the Bangali dialect of Western Hindi in Gwalior State. To its North it merges into–Braj Bhasha in the State of Karauli and Bharatpur and in the British District of Gurgaon To the West it gradually becomes Punjabi Lahanda and Sindi through mixed dialects of Indian Desert and directly Gujrati in the State of Palanpur On the South it meets marathi but this being an outerlanguage does not merge into it

२—ग्रियर्सन एल० एस० आई० खण्ड १ भाग १ पृ० १७१

३—ग्रियर्सन की अध्यक्षता में किए सर्वे के अनुसार यह संख्या १,५७,१८,७६० है एल०, एस०, आई० खण्ड १ भाग १ पृ० १७१

राजस्थानी के इस विशाल क्षेत्र प्रदेश की उत्तरी सीमा पंजाबी से मिली हुई है। पश्चिम में सिंधी इसकी सीमा बनाती है। दक्षिण में मराठी, दक्षिण-पूर्व में हिंदी की बुन्देली शाखा, पूर्व में ब्रज और उत्तर पूर्व में हिंदी की बांगडू तथा खड़ीबोली नामक बोलियां बोली जाती हैं।[1]

२ नामकरण

इस भाषा का "राजस्थानी" नाम आधुनिक है। मरुदेश की भाषा का उल्लेख सर्वप्रथम आठवीं शताब्दी में रचित उद्योतन सूरि के "कुवलयमाला कथा-ग्रन्थ में अठारह देश-भाषाओं के अन्तर्गत मिलता है[2]। सत्तरहवीं शताब्दी में रचित "आईने अकबरी" में अबुल फजल ने भारत की प्रमुख भाषाओं में मारवाड़ी को गिनाया है[3]। उत्तरकालीन ग्रन्थों में इस भाषा के लिये मरुभाषा[4] मरुभूम भाषा[5], मारूभाषा[6], मरुदेशीया भाषा[7] मरुवाणी[8] डिंगल आदि कई नामों का प्रयोग पाया जाता है। इनमें "डिंगल" को छोड़कर सभी नाम मरु-प्रदेश की भाषा की ओर संकेत करते हैं। अत "डिंगल" नाम का व्याख्या अपेक्षित है।

डिंगल और उसका अभिप्राय—

"डिंगल" राजस्थानी का एक बहुत मचलित पर्याय रहा है। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कविवर बांकीदास की "कुकवि बत्तीसी" में पाया गया है[9]। सं० १८७० के आसपास लिखित

१—ग्रियर्सन एल० एस० आई० खण्ड ९ भाग २ पृ० १

२—"भाषा तुला" भणिरे अइ पच्छइ मारुए तत्तो "कुवलयमाला अपभ्रंश काव्यत्रयी—नं० ३७ पृ० ९१

३—ग्रियर्सन। एल० एस० आई० खण्ड १ भाग १ पृ० १

४—गोपाल लाहोरी रस विलास मरुभाषा निर्जल तजी करो ब्रजभाषा चाव

५—कवि मल रघुनाथ रूपक मरुभूम भाषा धर्यो मारग रमै भागीरथि सू.

६—कवि मोडजी पाबू प्रकाश कर आर्यान कथम बहुग मरुभाषा बर

७—सूर्यमल वंश भास्कर

८—सूर्यमल वंश भास्कर डिंगल उपनामक कर्तृक मरुवानीहु विधेय

९—डिंगलियां मिलियां करे पिंगल तणो प्रकाश
संस्कृती हुवे कपट सब पिंगल पढ़ियां पास
—बांकीदास ग्रन्थावली भाग २ पृ० ८१

"पिंगल शिरोमणि" में "उडिंगल" शब्द का प्रयोग हुआ है जो सम्भवतः डिंगल का मूल है[1]।

"डिंगल" शब्द की व्युत्पत्ति अभी तक अनिश्चित है। विद्वानों ने इस विषय में अनेक मत प्रस्तुत किये हैं जिनमें डॉ० टेसीटोरी[2] पं० हरप्रसाद शास्त्री[3], श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी[4], श्री गजराज ओझा[5], श्री पुरुषोत्तमदास स्वामी[6], श्री उदयराज उज्ज्वल[7], श्री मोतीलाल मेनारिया[8], श्री जगदीशसिंह गहलोत[9] आदि के मत उल्लेखनीय हैं, परन्तु ये सभी मत अनुमान एवं कल्पना पर आधारित हैं। वर्तमान में "डिंगल" शब्द का अर्थ संकुचित हो गया है। यह साधारणतया चारणी–शैली की प्राचीन कविता की भाषा के लिये प्रयुक्त होता है।

३ राजस्थानी की शाखायें

राजस्थानी के अन्तर्गत कई बोलियां हैं। ये चार समूहों में विभाजित की जाती हैं[10] —

१–पूर्वी राजस्थानी

पूर्वी राजस्थान में इसका प्रयोग होता है। इसकी दो बड़ी शाखायें ढूंढाड़ी और हाड़ौती हैं। ढूंढाड़ी शेखावाटी को छोड़कर सम्पूर्ण जयपुर,

---

१–अगरचन्द नाहटा राजस्थान-भारती भाग १ अंक ४ पृ० २५
२–ज० पी० ए० एस० बी० खण्ड १० पृ० ३७६
३–प्रिलिमिनरी रिपोर्ट आन दी आपरेशन इन सर्च आफ मेन्युस्क्रिप्ट्स आफ बार्डिक क्रोनीकल्स पृ० १५
४–नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग १४ पृ० ५५
५–वही भाग १४ पृ० १ ०
६–नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग १४ पृ० ५५
७–राजस्थान भारती भाग २ अंक पृ० ४५
८–राजस्थानी भाषा और साहित्य पृ० १
९–उमर-काव्य भूमिका पृ० ११८
१०–श्री श्यामसुन्दर दास के अनुसार राजस्थानी की चार बोलियाँ हैं—
क–मारवाड़ी, ख जयपुरी ग–मेवाती घ–राजस्थानी
भाषा-रहस्य पृ० ६३

किशनगढ़ और टोंक के अधिकांश भाग तथा अजमेर मेरवाड़ा के उत्तर पूर्वी भाग में बोली जाती है इसमें साहित्य की रचना बहुत ही कम है।

'हाड़ौती' कोटा, बून्दी और झालावाड़ की बोली है। ये तीनों राज्य हाड़ौती प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध हैं, झालावाड़ की बोली पर मालवी का प्रभाव है। इसमें साहित्य का अभाव है।

२—दक्षिणी राजस्थानी

यह मालवी के नाम से पुकारी जाती है। यह मालवा प्रदेश की भाषा है। निमाड़ी और खानदेशी भी इसी के अन्तर्गत हैं। यह कर्ण-मधुर एवं कोमल भाषा है किन्तु इसमें साहित्य नहीं है।

३—उत्तरी राजस्थानी

इस पर ब्रजभाषा का प्रभाव है। यह अलवर और भरतपुर के उत्तर-पश्चिम भाग तथा गुड़गाँव में बोली जाती है। बांगड़ू मारवाड़ी ढूंढाड़ी तथा ब्रजभाषा के क्षेत्रों से घिरी हुई है। इसमें भी साहित्य का का अभाव है।

४—पश्चिमी राजस्थानी

इसका नाम "मारवाड़ी है। इसकी प्रमुख उपबोलियाँ मेवाड़ी जोधपुरी, थली ढेलवाटी आदि हैं। राजस्थानी की शाखाओं में मारवाड़ी

डा० धीरेन्द्र वर्मा ने यह विभाजन इस प्रकार किया है।—

क-मेवाती-अहीरवाटी ख-मालवी, ग-जयपुरी-हाड़ौती घ मारवाड़ी मेवाती हिन्दी भाषा का इतिहास पृ ५४

डो ग्रियर्सन द्वारा किया गया वर्गीकरण इस प्रकार है —

अ-पश्चिमी राजस्थानी मारवाड़ी, ढाटकी थली बीकानेरी बागड़ी शेखावाटी मेवाड़ी गोड़वाड़ी तथा सिरोही की बोलियाँ

आ-उत्तर पूर्वी राजस्थानी अहीरवाटी मेवाती

इ-दक्षिण पूर्वी राजस्थानी मालवी बागड़ी सोंदवाड़ी

ई-मध्य पूर्वी राजस्थानी : ढूंढाड़ी जयपुरी काठेड़ा राजावटी अजमेरी किशनगढ़ी चौरासी नागरचाल और हाड़ौती

उ-दक्षिणी राजस्थानी निमाड़ी

ही सबसे महत्वपूर्ण है।[1] साहित्यिक राजस्थानी का यही आधार रही है। यह जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, सिरोही, उदयपुर और अजमेर मेरवाड़ा, पालनपुर, सिंध के कुछ भाग तथा पंजाब के दक्षिणी भाग में बोली जाती है। इसका प्राचीन साहित्य बहुत ही विस्तृत है। पद्य के क्षेत्र में चारण और भाटों के द्वारा इसका बहुत ही प्रभुत्व बढ़ा। गद्य के क्षेत्र में भी इसका अधिक महत्व है। इसका गद्य साहित्य अपनी प्राचीनता तथा प्रौढ़ता के लिए उल्लेखनीय है। वस्तुतः यही राजस्थानी की "स्टेण्डर्ड" टकसाली भाषा है।[4]

इनके अतिरिक्त भीली भी राजस्थानी की शाखा है[2] यद्यपि डॉ ग्रियर्सन इस पक्ष में नहीं हैं।[4] राजस्थान प्रान्त के बाहर बोली जाने वाली गूजरी तथा बंजारी (लमानी) भी राजस्थानी के रूपान्तर हैं।[5]

४ राजस्थानी का विकास

पश्चिमी भाषाओं का विकास शौरसैनी प्राकृत से हुआ है। शूरसेन मथुरा प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा मध्यकाल में शौरसैनी प्राकृत के नाम से प्रसिद्ध थी। इसी से शौरसैनी अपभ्रंश का विकास हुआ। शौरसैनी अपभ्रंश का प्रदेश शूरसैन प्रदेश सम्पूर्ण राजस्थान तथा गुजरात सिंध का पूर्वी भाग और पंजाब का दक्षिण-पूर्वी भाग रहा है। राजस्थानी की उत्पत्ति भी इसी शौरसैनी अपभ्रंश से हुई। विकास की दृष्टि से राजस्थानी के दो विभाग किये जा सकते हैं —

१—प्राचीन राजस्थानी —सं० १३०० से सं० १६०० तक
—अर्वाचीन-राजस्थानी —सं० १६०० से अब तक

प्राचीन-राजस्थानी-काल—सं० १३ से सं १६ तक—

इस काल के प्रारम्भ में राजस्थानी पर अपभ्रंश का प्रभाव था।

१—ग्रियर्सन एल० एस आई० खण्ड ९ भाग २ पृ
—सुनीतिकुमार चटर्जी। राजस्थानी भाषा पृ ८
३—क—सुनीतिकुमार चटर्जी राजस्थानी भाषा पृ ६
ख—पृथ्वीसिंह मेहता "हमारा राजस्थान" पृ १०
४—ग्रियर्सन एल० एस आई० खण्ड ९ भाग १ पृ १०८
५—नरोत्तमदास स्वामी 'राजस्थानी' खण्ड १ पृ १

यह प्रभाव धीरे धीरे कम होता गया। संग्रामसिंह की "बाल शिक्षा" (रचना काल सं० १३३६) तक यह प्रभाव बहुत ही कम हो गया। इसी समय आधुनिक भाषाओं की दो प्रमुख विशेषतायें १–संस्कृत के तत्सम शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग और –द्वित्व वर्णों वाले शब्दों का समोप, धीरे धीरे अभिव्यक्त दिखाई पड़ने लगी।

सोलहवीं शताब्दी के अन्तिमांश में राजस्थानी और गुजराती जो अभी तक एक ही भाषा के रूप में साथ साथ विकसित होती आई थी धीरे धीरे अलग हो गई।[1] पर राजस्थान में लिखित जैन-गद्य रचनाओं की भाषा पर गुजराती का प्रभाव बहुत दिनों तक रहा। गुजरात के साथ जैन साधुओं का घनिष्ठ सम्पर्क रहने के कारण जैन-शैली अपनी परम्परा के अनुसार चलती रही। शुद्ध राजस्थानी-शैली का प्राचीन रूप शिवदास चारण की 'अचलदास खीची की वचनिका' (रचना सं० १४७५) में मिलता है। यह शैली आगामी काल में अपनी पूर्ण प्रौढ़ता को पहुंची।

गद्य के उत्थान और अभ्युदय में जैन-लेखकों ने बहुत योग दिया। प्राचीनकाल का प्राय सम्पूर्ण राजस्थानी-गद्य जैन-लेखकों की ही रचना है। पंद्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही राजस्थानी-गद्य के प्रौढ़ रूप मिलने लगते हैं। सं० १४११ में लिखित आचार्य तरुणप्रभ सुरि की "बालावबोध" इसका सर्वप्रथम उदाहरण है। पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक पहुंचते पहुंचते राजस्थानी गद्य में कलापूर्ण साहित्यिक रचनायें होने लगीं। "पृथ्वीचन्द्र चरित्र (सं० १४७८) जैसी रचनायें इसके परिणाम हैं।

अर्वाचीन-राजस्थानी-काल—सं० १६ से अब तक–

इस काल में राजस्थानी का वास्तविक रूप निखर आया। इस समय तक यह गुजराती के प्रभाव से पूर्णतया मुक्त हो चुकी थी। गद्य के क्षेत्र में बहुत अधिक रचनायें इस काल में हुई। इतिहास तथा कथा-साहित्य बहुत ही महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक साहित्य में ख्यात-साहित्य इस काल की अपूर्व देन है। ये ख्यातें अच्छी संख्या में लिखी गई। कथा साहित्य भी इस काल में अधिक समृद्ध हुआ। जो कथायें राजस्थानी-जनता की जिह्वा पर विद्यमान थी उनको लिपिबद्ध किया गया।

[1]–टैसीटोरी औरिजिन एण्ड डेवलपमेन्ट आफ बंगाली लैंग्वेज

इस काल में गद्य ऐतिहासिक, कलात्मक, धार्मिक, वैज्ञानिक आदि कई रूपों में मिलता है। ऐतिहासिक गद्य-लेखन में चारणों और जैनियों का अधिक हाथ रहा। धार्मिक-गद्य टीका और अनुवादों के रूप में मिलता है। गद्य शैली विषय तथा विस्तार की दृष्टि से यह राजस्थानी-गद्य का स्वर्णयुग कहा जा सकता है।

फारसी का प्रभाव

राजस्थान में मुगल साम्राज्य के प्रभुत्व के कारण भाषा पर फारसी का प्रभाव भी पड़ने लगा, जिसके फलस्वरूप सैकड़ों फारसी के शब्द विशेषतः तद्भव रूप में राजस्थानी में सम्मिलित हो गये। राज दरबारों से सम्बन्ध रखने वाली रचनाओं में फारसी शब्दों का बहुत कुछ प्रयोग पाया जाता है।

ख—राजस्थानी साहित्य

राजस्थानी-साहित्य जीवन का साहित्य है। राजस्थान की भूमि सदैव ही वीर प्रसविनी रही है। यहां के निवासियों के चरित्र उनकी नैतिकता तथा उनका स्वाभिमान सभी आदर्शों से ओतप्रोत रहे हैं। जीवन की छाप साहित्य पर पड़ना स्वाभाविक ही है। अतः राजस्थान का जीवन ही साहित्य-मन्दाकिनी का आदि स्रोत बना।

राजस्थानी प्राचीन साहित्य बहुत ही विशाल एवं विस्तृत है। गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में इसने अपना महत्व सिद्ध किया है। पद्य-साहित्य अपनी सरसता तथा प्रभावोत्पादकता सिद्ध कर चुका है। प्राचीन गद्य साहित्य जितनी मात्रा में मिलता है उतना किसी भी प्रान्तीय-भाषा में कदाचित ही मिले।

राजस्थानी साहित्य के प्रकार

राजस्थानी-साहित्य को विषय और शैली के भेद से पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है —

१—चारणी साहित्य
२—जैन-साहित्य
३—संत-साहित्य

४—लोक-साहित्य

५—ब्राह्मण-साहित्य

यहाँ चारण-साहित्य से अभिप्राय केवल चारण जाति के साहित्य से ही नहीं है। 'चारणी' शब्द को विस्तृत अर्थ में ग्रहण किया गया है। चारण, ब्रह्मभट्ट, भाट, ढाढी, ढोली आदि सभी विरुद्-गायक जातियों की कृतियां और उस शैली में लिखी गई अन्यान्य जातियों की कृतियों को भी चारणी-साहित्य में परिगणित किया गया है। यह अधिकांशतः पद्य में है और प्रधानतया वीर-रसात्मक है। स्फुट गीतों प्रभावोत्पादक दोहों तथा वीर-प्रबंध काव्यों के रूप में इसके उदाहरण मिलते हैं।

राजस्थानी का जैन-साहित्य गद्य और पद्य दोनों रूपों में है और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। चारणी-साहित्य का अधिकांश भाग विनष्ट हो गया पर यह लिपिबद्ध होने के कारण अभी तक सुरक्षित है। जैनों की रचनायें प्रायः धार्मिक हैं जिनमें कथात्मक अंश अधिक है। राजस्थानी का प्राचीनतम गद्य प्रधानतया जैनों की रचना है। पद्य के क्षेत्र में जैनों ने दोहा-साहित्य का खूब निर्माण किया जिनमें नीति शास्त्र, शृंगार आदि से सम्बन्ध रखने वाले भावपूर्ण दोहे विद्यमान हैं।

राजस्थान में होने वाले कई संत महापुरुषों ने भक्ति और वैराग्य सम्बन्धी साहित्य की अर्चना की है। इन सन्तों ने गद्य की रचना नहीं के बराबर की। पद्य के आधार पर ही अपनी भावनायें साधारण जनता तक पहुँचाई। जनता ने इसका खूब आदर किया।

राजस्थानी का लोक साहित्य बहुत ही अनुपम है। खेद का विषय है कि अभी तक वह प्रकाश में नहीं आ पाया। मुख-परम्परागत होने के कारण इसका रूप परिवर्तित होता रहा है। यह साहित्य बड़ा ही भावपूर्ण तथा जीवन के आदर्शों से परिपूर्ण है।

ब्राह्मण-साहित्य प्रधानतया धार्मिक ग्रंथों के अनुवादों तथा टीकाओं के रूप में मिलता है। भागवत आदि पुराणों तथा अन्य धर्मग्रन्थों के अनुवाद अच्छी संख्या में उपलब्ध हैं।

राजस्थानी का जितना साहित्य प्रकाश में आया उसी ने अनेक भारतीय और यूरोपीय विद्वानों का ध्यान आकर्षित कर लिया है। इन सब

विद्वानों ने उसके महत्व को स्वीकार किया है। महामना मदन मोहन मालवीय[1], विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर[2], सर आशुतोष मुकर्जी[3],

१—राजस्थानी वीरों की भाषा है। राजस्थानी साहित्य वीरों का साहित्य है। संसार के साहित्य में उसका निराला स्थान है। वर्तमान काल के भारतीय नवयुवकों के लिए उसका अध्ययन होना अनिवार्य होना चाहिए। इस प्राण भरे साहित्य और उसकी भाषा के उद्धार का कार्य होना अत्यन्त आवश्यक है। मैं उस दिन की उत्सुक प्रतीक्षा में हूँ जब हिन्दू विश्वविद्यालय में राजस्थानी का सर्वाङ्ग पूर्ण विभाग स्थापित हो जायगा जिसमें राजस्थानी साहित्य की खोज तथा अध्ययन का पूर्ण प्रबन्ध होगा। —म मो मा

२—कुछ समय पहले कलकत्ता में मेरे कुछ मित्रों ने राग सम्बन्धी गीत सुनाये। इन गीतों में कितनी सरसता, सहृदयता और भावुकता है। ये लोगों के स्वाभाविक उद्गार हैं। मैं तो इनको संत-साहित्य से भी उत्कृष्ट मानता हूँ। क्या ही अच्छा हो अगर ये गीत प्रकाशित किये जायें। ये गीत संसार के किसी भी साहित्य और भाषा का गौरव बढ़ा सकते हैं।

—र ना टै०

3 But Bardic poems are also important as literary documents they have a literary value and taken to-gether from a literature which better known, is sure to occupy *a most distinguished place amongst the literature of the new Indian Varnaculars*"

"They (i e the Bardic Prose Chronicles) are real and actual chronicles with no other aim in view than a faithful record of facts and their revilation is destory for ever the unjust blame that India never possessed historical genious."

—Dr Ashutosh Mukerjee

सुनीतिकुमार चटर्जी[१], डॉ० ग्रियर्सन[२], एल० पी० टैसीटोरी[३] आदि कई विद्वानों ने इसकी प्रशंसा की है।

—:•:—

1 "There is however a very rich literature in Rajasthani mostly in Marwari ... Rajasthani literature is nothing but a massage of brave flooded life and stormy death

It was in these songs that foaming streams of infallible energy and undomitable iron courage had flown and made the Rajput warrior forget all his personal comforts and attachment in fight for what was true good and beautiful

The period covered by the literature extend from a little before the fourteenth century A D to the present day During these five and six centuries we have scattered here and there over millions of complete songs and historical compositions

—Dr Sunit Kumar Chatarjee

2 There is an enormous mass of literature in various forms in Rajasthani of considerable historical importance about which hardly anything is known

—Dr Grearsen

3 This vast literature flourished all over Rajputana and Gujrat wherever Rajput was lavished of his blood to the soil of his conquest

—Dr Tesitori

द्वितीय-प्रकरण

राजस्थानी गद्य साहित्य
उसके प्रमुख विभाग और रूप

राजस्थानी गद्य-साहित्य
उसके प्रमुख विभाग और रूप

❀❀❀

राजस्थानी का गद्य साहित्य बहुत प्राचीन है। चौदहवीं शताब्दी से आज तक राजस्थानी में गद्य साहित्य की रचना होती आई है। यह प्राचीनता की ही नहीं, विस्तार की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यदि इस सम्पूर्ण गद्य-साहित्य का प्रकाशन किया जाय तो सैकड़ों बड़ी बड़ी जिल्दें आपनी पड़ें। प्राप्त गद्य के अतिरिक्त न जाने कितनी सामग्री अज्ञात हस्तलिखित ग्रन्थों में छिपी पड़ी है।

वर्गीकरण —

राजस्थानी के सम्पूर्ण प्राप्त गद्य-साहित्य को ५ प्रमुख भागों में विभक्त किया जा सकता है जिनमें प्रत्येक के अन्तर्गत कई रूपान्तरों का समावेश है —

१—धार्मिक-गद्य-साहित्य

क—जैन-धार्मिक-गद्य-साहित्य
ख—पौराणिक-गद्य-साहित्य

२—ऐतिहासिक-गद्य-साहित्य

क—जैन-ऐतिहासिक-गद्य-साहित्य
ख—जैनेतर ऐतिहासिक-गद्य-साहित्य

३—कथात्मक-गद्य-साहित्य

४—वैज्ञानिक-गद्य-साहित्य

५—प्रकीर्णक-गद्य-साहित्य

क—पत्रात्मक
ख—अभिलेखीय

१—धार्मिक-गद्य-साहित्य

राजस्थानी का धार्मिक-गद्य दो रूपों में मिलता है — क-जैन और ख-पौराणिक। प्रथम में कलात्मक अंश अधिक है। राजस्थानी का प्राचीनतम गद्य प्रधानतया जैनों की रचना है। पौराणिक गद्य में अनुवाद की अधिकता है।

क-जैन धार्मिक गद्य

इसके दो रूप हैं १-टीकायें २-स्वतंत्र। जैनों के धर्म-ग्रन्थ प्राकृत में हैं। उस प्राकृत को समझना जनसाधारण के लिए कठिन था। अतः जैन आचार्यों और उनके शिष्यों ने सीधी सादी भाषा में सरल एवं बोधगम्य कथाओं के साथ उनकी व्याख्यायें की, उनके अनुवाद प्रस्तुत किये तथा उनके आधार पर स्वतंत्र कृतियों की रचनायें की। ये टीकायें दो रूपों में मिलती हैं — १-बालावबोध २-टब्बा

१-बालावबोध —

बालावबोध से अभिप्राय ऐसी टीका से है जो सरल और सुबोध हो। जिसे साधारण पढ़ा लिखा अपढ़ या मन्द बुद्धि भी सरलता से समझ सके। बालावबोध में केवल मूल की व्याख्या ही नहीं मूल सिद्धान्तों को स्पष्ट करने वाली कथा भी होती है, यह कथा ही बालावबोध शैली की मुख्य विशेषता है। इस प्रकार बालावबोध टीकाओं में कथाओं का बहुत बड़ा संग्रह होता है। ये कथायें प्रायः परम्परागत होती हैं। इनमें बहुत सी कथायें बौद्ध जातक कथाओं की भाँति लोक-कथा-साहित्य से ली हुई हैं। कुछ कथायें प्रसंगानुसार नई भी गढ़ ली जाती हैं। इन कथाओं के द्वारा जन-साधारण का ध्यान धर्म-चर्चा में लगाया जाता है। कथा के अन्त में कुछ कुछ जातक-कथाओं की भाँति इससे मिलने वाली धार्मिक शिक्षा का उल्लेख होता है। आरम्भ और मध्य में जैन धर्म सम्बन्धी कोई विशेषता नहीं होती। अन्त में यह धार्मिक रूप ग्रहण करती है। ये बालावबोध सैंकड़ों की संख्या में लिखे गये और जैन जनता में सब लोकप्रिय हुए।

२-टब्बा —

यह बालावबोध से बहुत संक्षिप्त होता है। इसमें मूल शब्द का अर्थ उसके ऊपर नीचे या पार्श्व में लिख दिया जाता है

इन दोनों रूपों में बालावबोध का लेखन ही अधिक हुआ। ये बालावबोध टीकायें निम्नलिखित जैन-धार्मिक ग्रन्थों पर मिलती हैं —

क. अंग, ख. उपांग, ग. मूल सूत्र, घ. स्तोत्र ग्रन्थ, च. चरित्र ग्रन्थ, छ. दार्शनिक ग्रन्थ ज. प्रकीर्णक

क. आगम ग्रन्थ—अंग

१ आचारांग —जैन धर्म के बारह अंगों में से पहला अंग है। श्रमण निर्ग्रन्थ के प्रशस्त आचार गोचरी वैनयिक, कायोत्सर्गादि स्थान विहार भूमि आदि में गमन, चंक्रमण आहारादि पदार्थों की माप स्वाध्यायादि में नियोग, भाषा, समिति, गुप्ति, शैया, पान आदि दोषों की शुद्धि, शुद्धाशुद्धआहारादि ग्रहण, व्रत, नियम तप, उपधान आदि इसके विषय हैं।

सूत्रकृतांग :—यह जैन धर्म का दूसरा अंग है जिसमें जैनेतर दर्शन की चर्चा भी है। अन्य दर्शन से मोहित संदिग्ध तथा नवदीक्षितों की बुद्धि शुद्धि के लिए १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी ३२ विनयवादी लोगों के मतों का उल्लेख है।

बालावबोधकार पार्श्वचन्द्र

३ व्याख्या प्रज्ञप्ति (भगवती):—यह जैन धर्म का पांचवा अंग है। जीव अजीव जीवाजीव लोक, अलोक, लोकालोक, विभिन्न प्रकार के देव राजा राजर्षि सम्बन्धी अनेक गौतमादि द्वारा पूछे गये प्रश्न और श्री महावीर द्वारा दिये गये उनके उत्तर इसके विषय हैं। द्रव्यानुयोग तत्त्व विचार का प्रधान ग्रन्थ है।

अज्ञात लेखक की बालावबोध (रचना काल सं० १५०१)

४ उपासक दशांग —यह जैन धर्म का सातवां अंग है, जिसमें भगवान महावीर के दस श्रावकों का जीवन-चरित्र है।

बालावबोधकार विवेकहंस उपाध्याय

४ प्रश्न व्याकरण :—यह दसवां अंग है। प्रथम पांच अध्याय में हिंसा आदि पांच आश्रवों का तथा अन्तिम पांच में संवर भाग का वर्णन है।

स उपांग ग्रंथ :—

१ औपपातिक (उववाइ) यह एक वर्णन प्रधान ग्रंथ है जिसमें चम्पानगरी पूर्णभद्र चैत्य, वन खंड, अशोक वृक्ष आदि के वर्णन के साथ साथ तापस, श्रमण, परिव्राजक आदि का स्वरूप बताया गया है।

बालावबोधकार मेघराज पार्श्वचन्द्र

रायपसेणी (राजप्रश्नीय) :—इसमें श्रावस्ती नगरी के नास्तिक राजा प्रदेशी तथा पार्श्वनाथ के गणधर केशीकुमार के मध्य में हुए आत्मा-परमात्मा एवं लोक-परलोक सम्बन्धी संवाद हैं।

बालावबोधकार पार्श्वचन्द्र

मूल सूत्र :—

ये वे ग्रंथ हैं जिनका मूल रूप में अध्ययन सब साधुओं के लिये आवश्यक है।

१—षडावश्यक :—इसमें जैन मत के ६ आवश्यक कर्मों का विवेचन है जिनका पालन करना आवश्यक कहा गया है। ये आवश्यक कर्म इस प्रकार हैं — १-सामायिक -सावद्य अर्थात पाप कर्म का परित्याग एवं सम भाव ग्रहण। -चतुर्विंशतिस्तव -जैन-धर्म के चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति। ३-गुरुवंदन ४-प्रतिक्रमण -पापों की गर्हणा ५-कायोत्सर्ग ध्यान। ६-प्रत्याख्यान -आहार आदि से सम्बन्ध रखने वाले व्रत-नियम।

षडावश्यक पर बालावबोध रचनायें सबसे अधिक हुई हैं। उपलब्ध बालावबोधों में सब प्रथम बालावबोध इसी पर है जिसकी रचना आचार्य तरुणप्रभ सूरि ने सं १४११ में की थी।

बालावबोधकार सर्व श्री तरुणप्रभ सूरि हेमहंस गणि मेरुसुन्दर आदि

२—साधु प्रतिक्रमण -में जैन साधुओं के निशि दिन में लगने वाले दोषों से मुक्त होने की क्रिया है।

बालावबोधकार पार्श्वचन्द्र

३—दशवैकालिक—में जैन साधुओं के आचारों का वर्णन है।

बालावबोधकार पार्श्वचन्द्र सोमविमल सूरि रामचन्द्र

४—पिण्डविशुद्धि —इसमें जैन साधुओं के आहार-ग्रहण एवं आहार शुद्धि की विधि का उल्लेख है।

बाला० संस्कार संवेगदेव गणि

५—उत्तराध्ययन —में भगवान महावीर के अन्तिम समय के उपदेशों का संग्रह है।

बालावबोधकार मानविजय कमललाभ उपाध्याय

ग स्तोत्र ग्रंथ —

१—भक्तामर —यह प्रथम जैन तीर्थंकर ऋषभदेव का स्तोत्र ग्रंथ है। इसकी रचना मानतुंगाचार्य ने भोज के समय में की। इसमें कुल ४४ श्लोक हैं। प्रथम श्लोक के प्रथम शब्द "भक्तामर" के आधार पर इसका यह नाम पड़ा।

बालावबोधकार सोमसुन्दर सूरि। मेरुसुन्दर

२—अजितशान्ति स्तवन—में दूसरे तीर्थंकर अजितनाथ एवं सोलहवें तीर्थंकर शान्तिनाथ का संयुक्त स्तवन है।

बालावबोधकार मेरुसुन्दर

३—कल्याणमन्दिर —में तेइसवें जैन तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की स्तुति है।

बालावबोधकार मुनिसुन्दर शिष्य

४—शोभन स्तुति इसमें शोभन मुनि कृत २४ तीर्थंकरों की यमक युक्त स्तुतियाँ हैं। मूलग्रंथ संस्कृत में है।

बालावबोधकार भानुविजय

ऋषभ पंचाशिका —यह महाकवि धनपाल द्वारा रचित पद्य तीर्थंकर ऋषभदेव की स्तुति है।

५—रत्नाकर पंचविंशति —इसकी रचना आचार्य रत्नाकर ने की है जिसमें भगवान के सम्मुख आत्म-आलोचना की गई है।

बालावबोधकार कुंवर विजय

घ चरित्र ग्रंथ —

१—कल्पसूत्र इसके अन्तर्गत अ-तीर्थंकर चरित्र, आ-आचार्य पट्टावलि और इ-साधु-समाचारी ये तीन प्रकरण हैं। श्री महावीर के चरित्र का इसमें विस्तार से वर्णन है।

बालावबोधकार हेमविमल सूरि सोमविमल सूरि, शिवनिधान मार्से चन्द्र

इनके अतिरिक्त महावीर चरित्र जम्बू स्वामी चरित्र तथा नेमिनाथ चरित्र पर क्रमशः लक्ष्मीविजय, भानुविजय तथा सुशीलविजय ने बालावबोध की रचनायें की।

ङ दार्शनिक ग्रंथ —

विचार-सार प्रकरण —में जैनधर्म के तत्वों मोक्ष हिंसा, अहिंसा जीव, अजीव पाप, पुण्य आदि का विचार हुआ है।

२—योग-शास्त्र —इसमें जैन दर्शन-सम्मत अष्टांग योग का चित्रण है।

बालावबोधकार । सोमसुन्दर सूरि

३—कर्मविपाकादि क॰म ग्रंथ यह जैन दर्शन के कर्मवाद के ग्रंथ हैं। इनमें क्रिया के परिणाम-स्वरूप आत्मा पर पड़ने वाले संस्कारों का विवेचन है।

बालावबोधकार यश साम

४—संग्रहणी —संग्रहणी में जैनदर्शन की भौगोलिक बातों आदि का संग्रह किया है। टब्बाकार नगर्षि (तपागच्छ)। सम्वत १६१६ का लिखा हुआ एक अज्ञात लेखक कृत बालावबोध प्राप्त है।[1]

छ प्रकीर्णक —

१—उपदेशमाला —इसमें भगवान महावीर द्वारा दीक्षित श्री धर्मदास गणि के रचित उपदेशों का संग्रह है।

बालावबोधकार सोमसुन्दर सूरि नम सूरि

१—अभय जैन पु॰ बीकानेर

२—भवभावना —में संसार के स्वरूप पर विचार किया गया है।

बालावबोधकार माणिक्य सुन्दर गणि

३—चौशरण (चतुःशरण) अरिहन्त, सिद्ध, साधु और केवली द्वारा प्रणीत धर्म इन चारों की शरण जैन मत स्वीकार करता है। इन्हीं से सम्बन्धित विषय ही इस ग्रन्थ में हैं।

टब्बाकार संवेगदेव तथा बालावबोधकार जैचन्द्र सूरि

४—गौतमपृच्छा में गौतम स्वामी द्वारा भगवान महावीर से पूछे गये प्रश्नों और भगवान महावीर द्वारा दिये गये उत्तरों का संग्रह है। यह प्रश्न पाप और पुण्य के फल से सम्बन्धित हैं।

बालावबोधकार जिनसूरि (तपागच्छ)

५—क्षेत्र समास —में जैन धर्म की दृष्टि से भूगोल का वर्णन है जिसमें उर्ध्व अधस् और तिर्यक् तीनों लोकों का विवरण है।

बालावबोधकार उदयसागर, मेघराज, दयासिंह आदि

६—शीलोपदेश माला —में ब्रह्मचर्य के सिद्धान्तों का प्रतिपादन और उसके महत्व का स्थापन कथाओं के द्वारा किया गया है।

बालावबोधकार : मेरुसुन्दर

७—पंच निर्ग्रंथी —में पुलाक, बकुश कुशील स्नातक और निर्ग्रन्थ इन पांच प्रकार के साधुओं के लक्षण बताये गये हैं।

बालावबोधकार मेरुसुन्दर

८—सिद्ध पंचाशिका —में जैन धर्म के सिद्ध सम्बन्धी वचन हैं।

बालावबोधकार विद्यासागर सूरि

आ—स्वतन्त्र

इन टीकाओं के अतिरिक्त राजस्थानी गद्य में जैनों का स्वतन्त्र धार्मिक साहित्य भी अच्छी मात्रा में मिलता है उसके कुछ प्रकारों का उल्लेख नीचे किया जाता है।

१—व्याख्यान —इनमें धार्मिक पर्वों को मनाने की विधि तथा अनुष्ठान सम्बन्धी आचार विचारों को दृष्टान्त देकर समझाया जाता है। पर्वों के अवसरों पर इनका पठन-पाठन करने का प्रचलन है।

२—विधि विधान—कर्मकाण्ड के ग्रन्थ हैं। इनमें पूजाविधि, सामायिक तपस्या प्रतिक्रमण, पौषध, उपधान दीक्षाविधि आदि का वर्णन होता है।

३—धार्मिक कहानियाँ —जैन-आचार्य ने धर्म-शिक्षा में कहानियों का प्रचुर प्रयोग किया है। इन कहानियों के अनेक संग्रह मिलते हैं।

४—दार्शनिक —जैन दर्शन शास्त्र पर अनेक छोटी रचनायें मिलती हैं।

५—खण्डन-मण्डन —इनमें अन्य धर्मों का एवं अन्य मतों का या संप्रदायों के सिद्धान्तों का खण्डन तथा अपने मत के सिद्धान्तों का जैन आचार्यों द्वारा मण्डन होता है।

६—सिद्धान्त सारोद्धार —में जिन प्रतिमा पूजादि मान्यताओं की सप्रमाण चर्चा है।

ख—पौराणिक धार्मिक-गद्य-साहित्य

पौराणिक धार्मिक गद्य-साहित्य पौराणिक-ग्रन्थ या उनके आधार पर लिखे गये रामायण महाभारत, भागवत, व्रतकथा, माहात्म्य धर्मशास्त्र कर्मकाण्ड स्तोत्र आदि के अनुवादों के रूप में मिलता है। अधिकांश उपलब्ध अनुवाद सत्रहवीं शताब्दी के पीछे के ही हैं। जैन धार्मिक साहित्य की भाँति यह न तो अधिक प्राचीन ही है और न विस्तृत ही।

२—ऐतिहासिक-गद्य-साहित्य

क—जैन-ऐतिहासिक-गद्य

जैन विद्वानों ने ऐतिहासिक गद्य का भी निर्माण किया है यह प्रमुखतः पांच रूपों में प्राप्त है:—

अ—पट्टावली

इसमें जैन-आचार्यों की परम्परा का इतिहास होता है। पट्टधर आचार्यों का वर्णन विस्तार से रहता है। पट्टावली लिखने की परिपाटी प्राचीन है। संस्कृत एवं प्राकृत में लिखी गई पट्टावलियाँ भी मिलती हैं। राजस्थानी गद्य में लिखी गई पट्टावलियाँ पर्याप्त संख्या में विद्यमान हैं।

आ–उत्पत्ति ग्रंथ

इन ग्रंथों में किसी मत, गच्छ आदि की उत्पत्ति का इतिहास रहता है। मत विशेष किस प्रकार प्रचलित हुआ, उसके प्रथम आचार्य कौन थे, उस मत ने अपने विकास की कितनी अवस्थायें प्राप्त की तथा ऐसी ही अन्य बातों का वर्णन होता है।

इ–वंशावली

इनमें किसी जाति विशेष की वंश-परम्परा का वर्णन होता है। इन वंशावलियों को लिखने और सुरक्षित रखने के लिये कई जातियां ही बन गई जिनको महात्मा, कुलगुरु, भाट आदि नामों से पुकारा जाता है।

ई–दफ्तर बही

इसमें समय समय के विहार दीक्षादि की घटनाओं को जानकारी के रूप में लेख-बद्ध किया जाता था। इसे एक प्रकार की डायरी ही समझिये।

उ–ऐतिहासिक टिप्पण

जैन आचार्य अपने युग में ऐतिहासिक विषयों का संग्रह भी करते रहते थे यह संग्रह छोटी छोटी टिप्पणियों के रूप में होता था। इनके विषयों में अनेकरूपता मिलती है।

ख–जैनेतर-ऐतिहासिक-गद्य

जैनेतर ऐतिहासिक साहित्य भी अनेक रूपों में मिलता है जिनमें से प्रमुख रूपों का उल्लेख नीचे किया जाता है —

१–ख्यात –

ख्यात शब्द संस्कृत के "ख्याति" (प्रसिद्धि) का तद्भवरूप है इसका सम्बन्ध "आख्याति" (वर्णन) से भी जोड़ा जा सकता है। श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार राजपूताने में ख्यात ऐतिहासिक गद्य रचना को कहा जाता है[1] ख्यात में राजपूत राजाओं का इतिहास या प्रमुख

१–ओझा : नैणसी की ख्यात भाग दो भूमिका

घटनाओं का संकलन वंश-क्रमानुसार या राज्य-क्रमानुसार रहता है। –

ख्यातें दो प्रकार की मिलती हैं १—व्यक्तिगत जैसे "नैणसी की ख्यात" "बांकीदास की ख्यात' और 'दयालदास की ख्यात"। २—राजकीय इनके लेखक सरकारी कर्मचारी मुत्सद्दी या पंचोली होते थे जो नियमित रूप से घटनाओं का विवरण लिपिबद्ध करते थे।

यह बात तो नहीं है कि इन ख्यातों को वैज्ञानिक इतिहास कहा जा सके, क्योंकि प्राचीन इतिहास में अनेक स्थानों पर किंवदन्तियों का आधार दिखाई पड़ता है और समकालीन इतिहास में भी अतिरंजना का प्रयोग एवं निष्पक्षता का अभाव पाया जाता है जैसाकि मुसलमानी लेखकों की ख्यातों में भी होता है, पर समकालीन और निकट प्राचीन कालीन-इतिहास के लिए यह ख्यातें विश्वसनीय मानी जा सकती हैं। ख्यात कई प्रकार की होती हैं जैसे १–जिनमें लगातार इतिहास होता है यथा 'दयालदास की ख्यात'। २–जिनमें बातों का संग्रह होता है, यथा "नैणसी की ख्यात' तथा ३–जिनमें छोटी छोटी स्फुट टिप्पणियों का संकलन होता है यथा 'बांकीदास की ख्यात' आदि।

२–बात –

राजस्थान में "बात" कथा या कहानी का पर्याय है। यह दो प्रकार की होती हैं। १–जिनमें किसी एक ही ऐतिहासिक घटना अथवा व्यक्ति विशेष की जीवनी का विवरण होता है। ये बातें कथाओं से भिन्न होती हैं। उदाहरणतः "नाहीर रै मामला री बात' 'राजजी अमरसिंहजी री बात" आदि। २–ख्यातसाहित्य के रूप में लिखी गई छोटी छोटी टिप्पणियों को भी बात कहा जाता है। जैसे 'बांकीदास की बातें' में संग्रहीत बातें। इनमें अनेक बातें एक एक दो दो पंक्तियों की भी हैं।

३–पीढ़ियावली (वंशावली) –

ये ख्यातों की अपेक्षा प्राचीन हैं, आरम्भ में इनमें वंश में होने वाले व्यक्तियों के नाम ही क्रमशः संगृहीत होते थे पर बाद अनेक नामों के साथ उनके महत्वपूर्ण कार्यों और उनके जीवनकाल से सम्बन्ध रखने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं का भी उल्लेख किया जाने लगा। राजवंशों के अतिरिक्त सेठ साहूकारों मरदारों आदि की वंशावलियाँ भी मिलती हैं। उदाहरणतः

राठौड़ाँ री वंसावली, बीकानेर रा राठौड़ाँ राजावाँ री वंसावली, कीशीवाड़ा रा राठौड़ाँ री पीढ़ियाँ, सीसोदियाँ री वंसावली, ओसवालाँ री वंसावली आदि।

४–हाल, अहवाल, हगीगत, याददास्त –

इनमें घटनाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन होता है। जैसे–सौलंकी वंदियाँ सूं आंगद् लियो वैरो हाल, पातसाह औरंगजेब री हगीगत, भाटी राह री हगीगत, राव जोधाजी बेटाँ री याद इत्यादि।

५–विगत –

विगत का अर्थ है विवरण। इसमें विभिन्न गाँव, कुएँ, गढ़, बाग के वृक्ष आदि की नामावलियाँ या सूची टिप्पणियों के साथ पाई जाती है जैसे बारठ रा सांसणा री विगत महाराजा तखतसिंघ जी रे कंवरां रा विगत जोधपुर रा देवस्थानां री विगत, जोधपुर रा पागाम्ब री विगत, जोधपुर रा निषाणां री विगत इत्यादि।

६–पट्टा परवाना राजकीय अधिकार पत्र एवं आज्ञापत्र :–

राजाओं के द्वारा दी गई जागीरों का अधिकार-पत्र और उसका विवरण पट्टा तथा राजकीय आज्ञा-पत्र को परवाना कहते हैं। जैसे परवाना रो तथा उमरावाँ रो पट्टो महाराजा अनूपसिंह जी रो आनन्द राम रे नाम परवानो आदि।

७–इसकाब नामा –

पत्र व्यवहार के संग्रह को इसकाब नामा कहा जाता है। राजस्थानी में इस प्रकार के कई संग्रह मिलते हैं।

८ जन्म-पत्रियाँ –

इनमें प्रसिद्ध पुरुषों की जन्म कुण्डलियों का संग्रह पाया जाता है। उदाहरणार्थ राजा रा तथा पातसाहाँ री जन्म-पत्रियाँ।

९–तहकीकात :–

इसमें किसी मामले की छानबीन से सम्बन्ध रखने वाले पक्ष-विपक्ष के प्रश्नोत्तरों का संग्रह होता है। उदाहरणार्थ जयपुर चारणाँ री तहकीकात री पोथी।

३—कलात्मक गद्य साहित्य

अ—बात :—

बात संस्कृत "वार्ता" से बना है जिसका अर्थ कथा है। राजस्थान में बातें बहुत प्राचीनकाल से कही और सुनी जाती रही हैं। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त या अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में राजस्थानी-कथाओं को लिपिबद्ध किये जाने के प्रयास होने लगे। इससे पूर्व या तो ये लिखी ही नहीं गई या इससे पूर्व की लिखी कथायें हस्तलिखित ग्रंथों के नष्ट हो जाने से प्राप्त नहीं हैं।

आ—दवावैत —

दवावैत अन्त्यानुप्रास रूप गद्य जाता है। अन्त्यानुप्रास, मध्यानुप्रास या अन्य किसी प्रकार के सानुप्रास या यमक युक्त गद्य का प्रकार दवावैत के नाम से पुकारा जाता है।[1] इसके दो भेद माने गये हैं। १—शुद्ध बंध—जिसमें अनुप्रास मिलाया जाता है मात्राओं का नियम नहीं होता। जैसे —

> प्रथम ही अयोध्या नगर जिसका बरणाव।
> बारै जोजन तो चौड़े सौळै जोजन की लाब।
> चो तरफ के फैलाव चौसठ जोजन का छिड़ाव।
> जिसके तळै सरिता सरिता के घाट
> मत जाणज्यो सू बड़े, चोमर कोसों का पाट।[2]

२—गद्यबंध—इसमें अनुप्रास नहीं मिलाये जाते। २४ मात्रा का पद होता है जैसे —

हाथियों के हल्के झंमू गजाते डोले धाराधर के साथी मत्र जाति के टोळे। मद वेड के दिमाक विन्ध्याचल के सुजात रंग रंग चित्रे सुडा दंड के बणाव। भूका की बहस पीर बंद के ठपाके, बादलों की जगमगा भरे मौरों की मको मणाके। कपा कदमू के लंगर भारी कनक की हूँस जवाहर जेहर दीपमाला की रूप माल के आडम्बर।[3]

१—रघु कवि। रघुनाथ रूपक गीतों रो पृ २३६
२—कवि मंछ रघुनाथ रूपक गीतां रो पृ २३७
३—वही पृ २४

इ—वचनिका —

ये वचनिकायें भी दवावैत का ही भेद मालूम होती हैं। इतना सा भेद मालूम होता है कि वचनिका कुछ लम्बी और विस्तृत होती है। इसके भी दो भेद हैं—१-गद्यबंध—में कई शब्दों के युग्म वचनिका रूप में जुड़े चले जाते हैं।[1] २-पद्यबंध—के दो भेद (अ) वारता (आ) वारता में मुहरा राखना।

वचनिका यद्यपि गद्य रचना है तथापि यह चंपू रूप में मिलती है अर्थात गद्य के साथ साथ पद्य का प्रयोग भी इनमें मिलता है।

ई—वर्णक-ग्रंथ :—

इनको यदि वर्णन-कोष कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। इन वर्णनों का उपयोग किसी भी कलात्मक रचना के लिये किया जा सकता है। जैसे यदि नगर, विवाह, मोज ऋतु, युद्ध, आखेट आदि का वर्णन करना हो तो इन ग्रंथों में आये हुये अंश का उपयोग वहां पर किया जा सकता है। राजान राउत रो वात-वणाव खीची गंगेव नीं वावत रो दो पहरो मुत्कलानुप्रास कुतूहल सभा शृंगार आदि इसी प्रकार के ग्रंथ हैं।

४—वैज्ञानिक-गद्य-साहित्य

राजस्थानी गद्य में वैज्ञानिक साहित्य या तो अनुवाद के रूप में मिलता है या टीका रूप में। स्वतंत्र रूप से इस प्रकार का गद्य बहुत कम है। आयुर्वेद ज्योतिष शकुनावली सामुद्रिक-शास्त्र तंत्र, मंत्र आदि अनेक विषयों के संस्कृत ग्रंथों के राजस्थानी अनुवाद या इन्हीं के आधार पर लिखी हुई राजस्थानी-गद्य की रचनायें मिलती हैं।

५—प्रकीर्णक-गद्य-साहित्य

क—पत्रात्मक —

इन पत्रों के विषय एवं प्रकारों के कई रूप हैं इनको इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है —

---

१ कवि मंछ रघुनाथ रूपक गीतों रो पृ० २५२

१—जैन आचार्यों से सम्बन्ध रखने वाला पत्र-व्यवहार
२—राजकीय पत्र-व्यवहार
३—व्यक्तिगत पत्र-व्यवहार

१—पहले प्रकार के अन्तर्गत १-आदेश पत्र, २-विनती या विज्ञप्ति पत्र महत्वपूर्ण हैं। आदेश पत्रों के द्वारा आचार्य अपने शिष्यों का चातुर्मास आदि करने का आदेश देते थे। विनती या विज्ञप्ति पत्र श्रावकों के द्वारा आचार्यों को प्रार्थना पत्र के रूप में लिखे जाते थे जिनमें किसी स्थान के श्रावकों द्वारा आचार्यों से अपने स्थान की ओर विहार या चातुर्मास करने का आग्रह होता था। विज्ञप्ति पत्र बड़ी कला के साथ तैयार करवाये जाते थे। कुछ के आरम्भ में सम्बन्धित नगर के सैंकड़ों कलापूर्ण चित्र होते थ।

२—इसके अन्तर्गत राजाओं के पारस्परिक पत्र अंग्रेज सरकार को भेजे गये पत्र आदि आते हैं।

३—तीसरे प्रकार के अन्तर्गत विभिन्न व्यक्तियों के पारस्परिक व्यक्तिगत पत्र आते हैं। जैन-संग्रहों तथा राजकीय कर्मचारियों आदि के व्यक्तिगत संग्रहों में इस प्रकार के अनेक प्राचीन पत्र मिलते हैं।

ख—अभिलेखीय –

प्रशस्ति लेख, शिलालेख ताम्रपत्र आदि इस प्रकार के अन्तर्गत हैं। इनके लिखने की परिपाटी प्राचीन रही है। प्रशस्ति लेख जैन आचार्यों की प्रशस्ति में लिखे जाते थे। शिलालेख प्राय राज्याश्रय में राजा की आज्ञा मुसार लिखे गये हैं। जैसाकि नाम से प्रकट है पाषाण-खंडों पर खोद कर लिखा जाना शिला-लेख कहलाता है। ताम्रपत्र भी प्राय राजाओं द्वारा ही प्रयुक्त होते थे। इन ताम्रपत्रों (धातु विशेष के बने हुए पत्रों) पर नरेश अपनी आज्ञा या दानादि का विवरण लिखवाते थ।

इस अभिलेखन के लिये प्रधानतः संस्कृत का प्रयोग अधिक मिलता है। राजस्थानी में भी इस प्रकार का गद्य प्राप्त है।

काल विभाजन

राजस्थानी गद्य साहित्य के विकास को निम्नलिखित ३ कालों में विभाजित किया जा सकता है —

१—प्राचीनकाल

क-प्रयास-काल सं १३ ० से सं १४०० तक

ख—विकास-काल सं० १४ ० से सं० १६ ० तक

२—मध्यकाल—(विकसित काल) सं० १६०० से सं० १६५० वि तक

३—आधुनिक काल—(नवजागरण काल) सं० १६५० से अब तक

"प्रयास-काल का महत्व उसकी प्राचीनता की दृष्टि से है। इस काल में गद्य-शैली के कई प्रयोग हुए। ये सभी प्रयोग स्फुट टिप्पणियों के रूप में प्राप्त हैं। प्राकृत एवं अपभ्रंश-गद्य के उपरान्त राजस्थानी-गद्य का यह स्वरूप विशेष रूप से उल्लेखनीय है। किस प्रकार लेखकों ने अपनी शैली प्रतिपादित की किस प्रकार शब्द-योजना की रूपरेखा बनी आदि बातों पर इस काल की रचनाओं द्वारा प्रकाश पड़ता है।

"विकास काल में गद्य का रूप स्थिर हुआ। शैली परिवर्तित हुई। भाषा में प्रवाह आया। अब तक केवल स्फुट टिप्पणियां स्मृति-नोटों (याददाश्त) के रूप में ही लिखी गई थीं किन्तु अब ग्रन्थ भी लिखे जाने लगे। इस काल में जैनों द्वारा लिखित धार्मिक साहित्य की प्रधानता रही, जिसमें बालावबोध-शैली विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मौलिक ग्रन्थ (व्याकरण ग्रन्थ) भी लिखे गये। कई एक सुन्दर कलापूर्ण साहित्यिक रचनायें भी इस काल में हुई जो जैन और चारणी दोनों शैलियों की हैं। ऐतिहासिक गद्य के उदाहरण भी सामने आये। अनुवाद भी हुए जिनके कुछ नमूने उपलब्ध हैं। राजस्थानी-गद्य के विकास की दृष्टि से यह युग महत्वपूर्ण है।

"विकसित काल" राजस्थानी गद्य का स्वर्ण-काल है। इस काल में भाषा प्रौढ़ और परिमार्जित हुई। वर्ण्य-विषय बदले। गद्य का सर्वतोमुखी विकास हुआ। कलात्मक, ऐतिहासिक, धार्मिक, वैज्ञानिक आदि कई रूपों में राजस्थानी-गद्य का प्रयोग हुआ। वचनिका, दवावैत मुत्कलानुप्रास आदि शैलियों में गद्य रचनायें की जाने लगीं। मौलिक, टीका एवं अनुवाद इन

तीनों रूपों में गद्य को स्थान मिला। अभिनन्दन गद्य पत्रात्मक गद्य भी इस काल में प्रचुर मात्रा में तैयार हुआ जिसका विशाल संग्रह विविध राज्यों के तथा अनेक व्यक्तियों के व्यक्तिगत संग्रहालयों में उपलब्ध है। प्राचीनकाल की रचनायें प्रधानतः जैन-सम्प्रदाय की कृतियां हैं पर मध्यकाल में जैनेतर-गद्य भी प्रचुर मात्रा में लिखा गया।

विकास काल के अन्तिम चरण में राजस्थानी गद्य प्रायः शिथिल पड़ गया। 'नव जागरण काल' में इसकी उन्नति के लिए पुनः प्रयत्न आरम्भ हुये और नाटक, उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र आदि क्षेत्रों में इसका अच्छा विकास हो रहा है। निबन्ध के क्षेत्र में यह अभी आगे नहीं बढ़ पाया है। आशा है इस कमी की पूर्ति भी शीघ्र ही हो जायगी।

तृतीय - प्रकरण

राजस्थानी गद्य का विकास (१)

प्राचीन राजस्थानी काल

(सं० १३०० वि० से सं० १६०० वि० तक)

प्राचीन राजस्थानी काव्य

नित्य प्रति जीवन में काम आने वाली भाषा "बोली" कहलाती है। यह तनिक भी साहित्यिक नहीं होती और बोलने वालों के मुख में रहती है।[1] इसी बोली का साहित्यिक रूप गद्य कहलाता है।

भारतीय साहित्य के इतिहास में गद्य-साहित्य को "चक्रनेमिक्रम" से बराबरी से ऊपर उठता और नीचे गिरता पाते हैं। अतः संहिता-काल में जहाँ पद्य का प्राधान्य है वहाँ ब्राह्मण-काल में गद्य का और उपनिषद्-काल में पुनः पद्य का। लौकिक संस्कृत में भी, रामायण और महाभारत के समय का सारा साहित्य पद्य में ही है, जबकि उसके परवर्ती-काल में सारा सूत्र-साहित्य गद्य में ही मिलता है। बौद्ध और जैन-गद्य इस काल में अधिक मिलता है अपभ्रंश-काल में वह फिर लुप्त हो गया।

देशी भाषा का गद्य—

विक्रम की सातवीं शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी तक अपभ्रंश की प्रधानता रही और फिर वह पुरानी हिन्दी में परिणत हो गई इसमें देशी भाषा की प्रधानता है।[2] नवीं शताब्दी से ही बोलचाल की भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्द आने लगे थे।[3] किन्तु देशी भाषा के गद्य के उदाहरण तेरहवीं शताब्दी से पहले के नहीं मिलते। "उक्ति व्यक्ति प्रकरण"[4] देशी-भाषा गद्य का सबसे प्राचीन उदाहरण है। इसके रचयिता दामोदर भट्ट गाहड़वार राजा गोविन्दचन्द्र के सभा पंडित थे। सम्भवतः राजकुमारों को काशी-कान्यकुब्ज की भाषा सिखाने के लिए इसकी रचना की गई।[5] गोविन्द चन्द्र का राज्यकाल सन ११५४ ई० तक था।[6] इस प्रकार विक्रम की बारहवीं शताब्दी की बनारस के आसपास के प्रदेश की भाषा का स्वरूप इसमें देखा जा सकता है।

१—श्यामसुन्दर दास भाषाविज्ञान —सं० १ ०६ पृ ७७
२—चन्द्रधर शर्मा गुलेरी पुरानी हिन्दी
३—हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य का आदिकाल पृ० २०
४—पाटन केटलॉग आफ मेन्युस्क्रिप्ट्स पृ० १५८
५—हजारीप्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य का आदि काल पृ० ८८
६—हजारीप्रसाद द्विवेदी। हिन्दी साहित्य का आदिकाल पृ० ८

कहा जाता है कि गोरखनाथ के गद्य को लगभग सं० १४० के आसपास के ब्रजभाषा गद्य का नमूना मान सकते हैं।[1] मिश्रबन्धु गोरखनाथ का समय सं० १४०७ निश्चित करते हैं।[2] किन्तु राहुल सांकृत्यायन इसे मानने में विवश हैं उनके अनुसार गोरखनाथ विक्रम की दसवीं शताब्दी में विद्यमान थे[3] अतः गोरखनाथ का समय सर्वसम्मति से निश्चित नहीं हो पाया है। दूसरी बात गद्य के सम्बन्ध में है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने गोरखनाथ के ब्रजभाषा-गद्य के जो उदाहरण दिये हैं[4] उनकी पुष्टि का कोई सबल प्रमाण नहीं मिलता। इन रचनाओं का गोरखनाथ की कृतियाँ होना संभव नहीं जान पड़ता[5] अतः इस गद्य की प्रामाणिकता संदिग्ध है।

चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लिखित मैथली-गद्य के उदाहरण ज्योतिरीश्वर ठाकुर की "वर्ण रत्नाकर" में मिलते हैं इसका आनुमानिक रचना काल विक्रम की चौदहवीं शताब्दी का तृतीय-चतुर्थांश है।[6] इसमें सात वर्णन हैं— १—नगरवर्णन २—नायिका वर्णन ३—स्थान वर्णन ४—ऋतु वर्णन ५—प्रयानक वर्णन ६—भट्टादि वर्णन ७—श्मशान वर्णन[7]। इन वर्णनों में प्रौढ़ मैथली-गद्य का प्रयोग है जिससे अनुमान किया जा सकता है कि इससे पूर्व भी गद्य रचना होती रही होगी। पंद्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विद्यापति ने भी अपनी "कीर्तिलता" में मैथली-गद्य का प्रयोग किया है।[8]

मराठी-गद्य के उदाहरण भी लगभग इसी समय के मिलते हैं। "वैजनाथ कलानिधि"[9] प्राचीन मराठी-गद्य का उदाहरण है। यह ताड़पत्र

१—रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास सं० १९९९ पृ० ४३८
२—मिश्रबन्धु मिश्रबन्धु विनोद भाग १ पृ० २११
३—नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग ११ अंक ४ पृ० ३८८
४—रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास सं० १९९९ पृ० ४३९
५—अगरचन्द नाहटा कल्पना मार्च सं० १९५२ पृ० २११
६—सुनीतिकुमार चटर्जी वर्ण रत्नाकर का अंग्रेजी भूमिका पृ० १
७—बाबू मिश्र वर्ण रत्नाकर मैथिली भूमिका पृ० ४
८—रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास सं० १९९९ पृ० ६६
९—पाटन कैटेलौग आफ मैन स्क्रिप्ट्स पृ० ७५

पर लिखी हुई है। इसका आनुमानिक समय पंद्रहवीं शताब्दी का अंतिमांश है। इस प्रकार देशीभाषा-गद्य के उदाहरण चौदहवीं शताब्दी से मिलने लगते हैं। राजस्थानी में भी प्राप्त गद्य इसी शताब्दी के पूर्वार्द्ध का प्रयास है।

—❀—

जैन विद्वानों का हाथ—

राजस्थानी भाषा की उन्नति के साथ साथ गद्य-साहित्य का भी उत्थान हुआ। राजस्थानी-गद्य-साहित्य के आरम्भ और उत्थान में जैन विद्वानों का बहुत हाथ रहा है। अपने धार्मिक विचारों को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए इन विद्वानों ने गद्य का सहारा लिया। राजस्थानी-गद्य के प्रारम्भिक उदाहरण इन्हीं जैन आचार्यों की रचनाओं में मिलते हैं। जैन-विद्वानों का यह गद्य कलात्मक दृष्टिकोण से नहीं लिखा गया उसका उद्देश्य केवल धार्मिक शिक्षा मात्र था।

विकास की दृष्टि से राजस्थानी-गद्य के प्राचीन-काल को (१३०० से सं० १६००) तक को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है —

१—प्रथम काल—सं० १३०० से सं० १४०० तक—
२—विकास काल—सं० १४०० से सं० १६०० तक—

प्रथम-काल (सं० १३०० वि० से सं० १४०० वि० तक)

राजस्थानी-गद्य के प्रामाणिक प्राचीन उदाहरण विक्रम की चौदहवीं शताब्दी से मिलने लगते हैं। इस समय तक राजस्थानी और गुजराती भाषाओं का पृथक्करण नहीं हुआ था। दोनों अभी तक एक ही भाषा थी

जिसे विद्वानों ने "प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी" (ओल्ड वेस्टर्न राजस्थानी) नाम दिया है।[1]

चौदहवीं शताब्दी की राजस्थानी-गद्य की ८ रचनायें अभी तक प्राप्त हुई हैं जिनमें ७ रचनायें गुजरात में लिखी हैं। इन रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं[2] :—

१—आराधना—र० सं० १३३ वि०—
२—बाल-शिक्षा र० सं० १३३६ वि०—
३—अतिचार—र० सं० १३४० वि०—
४—नवकार व्याख्यान—र० सं० १३५८ वि०—
५—सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन—र० सं० १३५९ वि०—
६—अतिचार—र० सं० १३६९ वि०—
७—तत्वविचारप्रकरण—र० काल लगभग चौदहवीं शताब्दी
८—धनपाल-कथा—र० काल लगभग चौदहवीं शताब्दी

१—डा. टैसीटोरी—Notes on the Grammar of Old Western Rajasthani Indian Antiquary 1914–1916 (Introduction)

डा सुनीतिकुमार चटर्जी—The Origin and Development of Bengali Language Page 9

२—इनमें १ ३ ४ ५, ६ रचनाओं को प्रकाश में लाने का श्रेय बड़ौदा के श्री चम्मनलाल दलालभाई दलाल को है। यह रचनायें इन्हें पाटन के जैन भण्डारों में प्राप्त हुई थी और उनके द्वारा संपादित 'जैन-गुर्जर काव्य-संग्रह' में प्रकाशित हो चुकी हैं। नं ७ और ८ के अतिरिक्त शेष सभी रचनाओं को मुनि श्री जिनविजय जी ने अपने 'प्राचीन गुजराती-गद्य-संदर्भ' में प्रकाशित किया है। अन्तिम दो रचनाओं की खोज निकालने का श्रेय श्री अगरचन्द नाहटा बीकानेर को है। नं ७ "राजस्थान भारती" के जुलाई सन् १९४१ के अंक में प्रकाशित हुई है इसकी मूल ह० प्र० बीकानेर के बड़े उपासरे के ज्ञान भंडार में है। नं० ८ की ह० प्र० बीकानेर के बड़े उपासरे के महिमा-भक्ति-भंडार में रक्षित है।

इनमें दूसरी रचना व्याकरण-संबंधी है। एक, तीन, पांच और छै रचनायें जैन धर्म से सम्बन्धित विषयों पर लिखी गई स्फुट टिप्पणियां हैं। चौथी टीका है। सातवीं में जैन धर्म सम्बन्धी तत्वों का नामोल्लेख है। आठवीं कथा रूप में है। यह सभी रचनायें जैन लेखकों की कृतियां हैं। "बालशिक्षा' के लेखक संग्रामसिंह के जैन होने में संदेह था किन्तु श्री लालचन्द भगवान दास गांधी की खोज के अनुसार वह भी जैन सिद्ध होता है।[1]

'आराधना' गुजरात के आशापल्ली (आसावल) नगर में आश्विन सुदी ४ गुरुवार सं० १३३० में ताड़पत्र पर लिखी गई थी। इसके लेखक का नाम नहीं दिया गया है पर यह किसी सुपठित जैन साधु की रचना जान पड़ती है।

'आराधना' जैन धर्म की एक विशेष क्रिया है जिसमें आचार सम्बन्धी अतिचारों की आलोचना आचार्य आदि के सम्मुख गुप्ततम रहस्यों का प्रकटीकरण, व्रतों का वाणी द्वारा अंगीकरण सब जीवों के प्रति अपने अपराधों की क्षमापना, अठारह पाप-स्थानों का त्याग, चार शरणों का ग्रहण दुष्कृत्यों की गर्हणा, सुकृतों का अनुमोदन तथा पंच नमस्कारों का स्मरण किया जाता है।

प्रस्तुत 'आराधना' में जैन-आराधन क्रिया की विधि निर्देशित की गई है जो सारतत्व के रूप में लिखी गई एक स्फुट टिप्पणी है। इसमें संस्कृत शब्दों की प्रचुरता तथा समास-प्रधान शैली का प्रयोग मिलता है। शब्दावली और रूपों पर अपभ्रंश का प्रभाव दिखाई देता है। शैली कुछ यान्त्रिक सी हो गई है। भाषा-लेखन में सौन्दर्य नहीं आने पाया। लेखक प्रायः अधिक कवित्व मय हो उठता है और अनुप्रासान्त-गद्य-शैली को अपनाता चलता है।

गद्य का उदाहरण—

सात नरक तथा नारकि दशविध भवनपति अष्टविध व्यंतर पंचविध ज्योतिषी द्विविध वैमानिक देवा किं बहुना। इह भवइ अतीत भवांतर मुक्त-अमुक्त स्वजन परजन मित्र शत्रु मध्यस्थ परोपि जे केइ जीव चतुरासी लक्ष योनि रूपना चतुर्गति की संसारी भ्रमता मई दूमिया वंचिया सीसीविया

१—लालचन्द भगवान गांधी —भरत बाहुबली रास प्रस्तावना पृ० ४१

इसिया तिरिया किलामिया गामिया पाडिया पूकिया भवि भवांतरि भवसति भवसहस्रि भवलाखि भवकोटि ममि भवनि भरा तीह सवीहउ। मिच्छामि दुक्कडं।

तीसरी और छठी रचनायें (अतिचार) हैं जो क्रमशः सं० १३४० वि०[1] के लगभग तथा सं १३६९ वि०[2] में लिखी गई। अतिचार, आचार सम्बन्धी व्यतिक्रम (नियम-भंग) को कहते हैं। अतिचारों की आलोचना तथा उनकी गणना इन कृतियों का विषय है। उक्त 'आराधना" से इनका बहुत कुछ साम्य है। इनकी भाषा कम संस्कृतनिष्ठ तथा पदावली कम समास-प्रधान है। संस्कृत से तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है।

गद्य का उदाहरण १

बारि भेदि तपु छहि भेदि बाह्य अणसणु इत्यादि उपवास आंबिल नीविय एकासणु पुरिमड्ड-एकासणउ यथाशक्ति तपु तथा ऊनोदरि तपु वृत्तिसंक्षेपु। रसत्यागु काय क्लिशेसु संलीनता कीधी नहि तथा मत्याम्वान एकासणा बिपुरिमड्ड साढपोरिसि पोरिसिसंगु अतिचारु नीविय आंबिलि उपवासि कीधर विरामइ सचित पाणीइ पीसई हुयइ पक्ष दिवसमांहि।
—सं १३४०—

गद्य का उदाहरण नं २

मृषावादि मृषोपदेश दीघउ, कूडउ लेख लिखिउ, कूडी साखि आपया मोसेउ कुणहस्तं राखि भवि कतहु विवादिमिदि जु कोई अतिचार मृषावादि वृति भय समस्ताह बाहि हुउ त्रिविधमिच्छामि दुक्कडं।
—सं १३६९—

चौथी रचना-नवकार व्याख्यान[3] सं १३५८ वि में लिखित एक गुच्छे में प्राप्त हुई है। नवकार नमस्कार का प्राकृत रूप है इसमें जैनों के नमस्कार मंत्र जिसके द्वारा पंच-परमेष्ठियों को नमस्कार किया जाता है, की व्याख्या की गई है यह राजस्थानी के टीकात्मक गद्य का सर्व प्रथम

१—प्राचीन गूर्जर काव्य संग्रह पृ ८८
२—प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ पृ २१
३—प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ पृ २१६ और प्राचीन गूर्जर काव्य संग्रह पृ ८८

उदाहरण है जो राजस्थानी में प्रचुर परिमाण में मिलता है इसकी शैली रूढ़िबद्ध टीकाओं जैसी है।

गद्य का उदाहरण—

नमो आयारियाणं। ३। माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ। किसा जि आचार्य पंच विधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ। किसउ पंच विधु आचारु, ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वीर्याचारु, यउ पंच विधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ। तीह आचार्य माहरउ नमस्कारु हुउ। सं० १३४८

पांचवीं रचना "सर्वतीर्थ नमस्कार स्तवन"[1] है जो सं १३५६ में लिखी गई। यह एक छोटी सी टिप्पणी है जिसमें स्वर्ग, पाताल और मनुष्य लोक इन तीनों के विविध मार्गों में जितने जिन-मन्दिर हैं उनकी संख्या बताकर वंदना की गई है।

गद्य का उदाहरण—

अथ मनुष्यलोकि नंदिसर वरि दीपि बावन च्यारि कुण्डलवल्गि च्यारि रुचकि वल्गि च्यारि मनुष्योत्तरि पर्वति, च्यारि इषुकार पर्वति पंचयासी पांच मेरे, वीस गजदंत पर्वति दस कुरु पर्वति सीस संस सिहरे मरिसउ वैताढ्यपर्वति एवं च्यारि सइ त्रिसट्ठि जिमालइपरिम एवं आठ कोडि छप्पन लाख सत्ताणवइ सहस च्यारि सइ छियासिया तिमलुक्के शास्वतानि महामन्दिर त्रिकाल तीह नमस्कार करउं। —सं० १३५६—

'तत्व-विचार प्रकरण" में जैन धर्म के तत्वों पर टिप्पणियाँ हैं इसका रचनाकाल ज्ञात नहीं पर जिस प्रति में यह प्राप्त हुई है उसका लखन सं १४०० के लगभग हुआ है अतः इसका रचनाकाल उसी के आसपास होना चाहिए।

गद्य का उदाहरण—

जीव किसा होहि, चितु चतना लक्षण आई हुइ ति जीव भणियहि। ते पुणु अनेक विधि हुहि। इत्थ पुणु पंच विधु अधिकारु एकेन्द्रिय बइ न्द्रिय तिइ न्द्रिय चउरिंद्रिय पचेन्द्रिय। जि एकेंद्रिय ति दुविध-सूक्ष्म बादर। बादर ति मोकला। च उ र्यायिक बादर। मोकस्प उ मनि कपनि बादर न

1—प्राचीन गुजर-काव्य-संग्रह पृ ८८ प्राचीन गुजर-काव्य-संग्रह पृ० ११६
2—"राजस्थानी-भारती" वर्ष ३ अंक ३–४ पृ० ११८

इणउ न इणाणइ। आरंभु सापराधु मोकलउ। ग्उ पहिलउ अणुव्रतु।

"बालशिक्षा"[1] की रचना संग्रामसिंह ने सं १३३६ में की। संग्रामसिंह का जन्म श्रीमाल वंश में हुआ था इनके पिता का नाम ठक्कुर कूरसी और पितामह का नाम माहाक था। यह रचना संस्कृत के विद्यार्थियों के लाभ के लिये की गई थी। इसके द्वारा संस्कृत व्याकरण की शिक्षा दी गई है। समझाने के लिए तत्कालीन भाषा का प्रयोग किया है। संस्कृत के रूपों के साथ तुलनात्मक रीति से तत्कालीन-भाषा-शब्दों के रूप दिये गये हैं। अन्त में संस्कृत के अनेक क्रिया क्रियाविशेषण आदि शब्दों के भाषा-प्रतिरूप संग्रहीत हैं। भाषा के रूपों और शब्दों को लेकर बताया गया है कि उनको संस्कृत में किस प्रकार व्यक्त किया जायगा। इस प्रकार यह अनुवाद पद्धति से संस्कृत की शिक्षा देने वाला छोटा सा बालोपयोगी व्याकरण है।

भाषा के तत्कालीन स्वरूप को समझने के लिए एक अत्यन्त उपयोगी रचना है। इसमें भाषा के व्यवहारिक और प्रचलित रूप संग्रहीत किये गये हैं जिनमें प्राचीनता तथा अव्यवहारिकता का संदेह नहीं हो सकता। इसी शैली पर आगे चल कर और भी रचनायें हुई जो साधारणतया 'औक्तिक' नाम से प्रसिद्ध हैं।

गद्य का उदाहरण–

स्वर कला १४ समान कला १० सवर्ण १० ह्रस्व ५ दीर्घ ५ लिंगु ३ पुल्लिंग स्त्रीलिंग नपुंसक लिंगु अकारु पुल्लिंग अकी स्त्रीलिंग अलु नपुंसकलिंगु। सं १३२६

'धनपाल-कथा'[2] एक बहुत प्राचीन प्रति में लिखी हुई मिली है इसके साथ चार भी छोटी मोटी अनेक रचनायें हैं जिनका रचनाकाल चारहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध है।

इस कथा में उज्जयिनी नगरी के महाश्रेष्ठि धनपाल के जैन श्रावक हो जाने का वृत्तान्त है। इसमें एक छोटी सी घटना को लेकर धनपाल के

१—'प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ' में प्रकाशित
२—राजस्थान-भारती वर्ष ३ अंक १ पृ ६४

जीवन में सहसा परिवर्तन होने, उसके द्वारा जैन धर्म स्वीकार करने तथा "तिलक मञ्जरी' कथा के अग्नि शरण होने और पुनः लिखी जाने की कथा है।

इसकी भाषा ऊपर लिखे उदाहरणों की भाषा से प्राचीनतर ज्ञात पड़ती है यह अपभ्रंश के अधिक निकट प्रतीत होती है।

गद्य का उदाहरण—

उज्जयिनी नाम नगरी तहिठे भोजदेव नामि राजा तीहइ तणइ पंचहसयइ पंडितह मांहि मुख्यु धनपालु नामि पंडितु विहइ तणइ घरि अन्यदा कदाचित साधु विहरण निमत्तु पइठा पंडितहणी भार्याभीक्षा दिवसहणी दधि लेउ उठी। भीमुनु कहइ तिथि प्रस्तावि वहतिषा निहरावण सारीखेउ न हुम् इति परमर्षियत।

चौदहवीं शताब्दी का गद्य-प्रवृत्ति एवं भाषा स्वरूप की दृष्टि से विशेष महत्व है यद्यपि अब तक पद्य का ही प्राधान्य रहा तथापि गद्य लेखन की ओर भी ध्यान जा चुका था। पद्य-प्रवृत्ति अधिक प्राचीन थी अतः उसकी भाषा प्रौढ़ और परिमार्जित हो चुकी थी। गद्य की भाषा अभी उस स्तर पर नहीं पहुँच पाई थी किन्तु उस ओर बढ़ने का प्रारम्भ होने लगा था। इस शताब्दी का लिपिबद्ध गद्य बहुत कम मिलता है इसके दो प्रमुख कारण थे १—पद्य को अधिक मान्यता मिली थी और उसके स्थायित्व पर अधिक आस्था थी। उसकी मनोरमता एवं आकर्षण-शक्ति के कारण गद्य लेखन की ओर अधिक ध्यान नहीं जा सका। २—इस शतक में जो भी गद्य लिखा गया वह पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं है। उसमें से कुछ तो संभवतः सामयिक होने के कारण नष्ट हो गया और कुछ हस्त-प्रतियां अज्ञात स्थानों में रहकर काल का कलेवा बन गई।

जो कुछ भी अभी तक प्राप्त हैं उनके आधार पर कहा जा सकता है कि चौदहवीं शताब्दी में गद्य का स्वरूप न तो भाषा की दृष्टि से और न साहित्य की दृष्टि से प्रौढ़ हो पाया था किन्तु उसमें विकास के तत्व विद्यमान थे इस काल के गद्य का महत्व गद्य के प्रारम्भिक रूप के उदाहरण होने के नाते है। इस समय गद्य लेखकों के सम्मुख कोई पूर्व निश्चित आधार नहीं था। उनको स्वयं अपना नवीन मार्ग बनाना पड़ा। फलतः भाषा लेखन में न तो साम्य ही आने पाया और न शैली ही सम पाई।

विकास-काल (सं० १४०० वि० से १६०० तक)

गद्य शताब्दी के प्रयास अब प्रौढ़ता प्राप्त करने लगे। शैली बदली। विषयों का क्षेत्र भी विस्तृत हुआ। इस काल के साहित्य को पांच भागों में विभक्त किया जा सकता है —

१—धार्मिक-गद्य-साहित्य
२—ऐतिहासिक-गद्य-साहित्य
३—कलात्मक-गद्य-साहित्य
४—व्याकरण-गद्य-साहित्य
५—वैज्ञानिक-गद्य-साहित्य

इन दो शताब्दियों का गद्य-साहित्य प्रधानतया जैनों की धार्मिक रचना है। जैन आचार्यों ने प्रधानतः ३ प्रकार के गद्य-ग्रंथ लिखे हैं। १—सरल गद्य-कथायें २—विशिष्ट गद्य-निबंध ३—टीका-टिप्पणी अनुवाद बालावबोध व्याकरण आदि। सरल गद्य-कथायें विशेषकर धार्मिक रहीं। विशिष्ट गद्य-निबन्धों में कलात्मक छटा दिखलाई पड़ती है। बालावबोध लेखन की प्रथा का आरम्भ आचार्य तरुण प्रभ सूरि से होता है। यह परम्परा बराबर चलती रही। जैन लेखकों ने ऐतिहासिक तथा व्याकरण सम्बन्धी रचनायें भी की किन्तु इनकी संख्या अधिक नहीं है।

चारणी-गद्य-साहित्य भी इसी काल से मिलता है इसका सर्वप्रथम उल्लेखनीय ग्रंथ 'अचलदास खीची री वचनिका' १५ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लिखा गया।

माणिक्यचन्द्र सूरि द्वारा लिखित 'पृथ्वीचन्द्र-चरित्र वा वाग्विलास' इस काल की महत्वपूर्ण जैन कलात्मक कृति है जो वचनिका शैली में लिखी गई है।

१—धार्मिक गद्य-साहित्य

राजस्थानी के धार्मिक गद्य के उदाहरण पंद्रहवीं शताब्दी के आरम्भ से ही मिलने लगते हैं। जैन आचार्य तथा उनके शिष्य इस प्रकार की रचनाओं में सदैव भाग लेते रहे। इनमें प्रमुख गद्यकारों के नाम इस प्रकार हैं — १—तरुणप्रभ सूरि, २—सोमसुन्दर सूरि, (तपागच्छ) तथा

उनका शिष्यवर्ग— मुनिसुन्दर सूरि, जयसुन्दर सूरि, भुवनसुन्दर सूरि जिनसुन्दर सूरि और रत्नशेखर सूरि ३-मेरुसुन्दर (खरतरगच्छ) ४-शिवसुन्दर ५-जिन सूरि (तपागच्छ) ६-संवेगदेव गणि (तपागच्छ) ७-राजवल्लभ (धर्मघोषगच्छ) ८-लक्ष्मीरत्न सूरि ९-पार्श्वचन्द्र १०-जयसागर (खरतरगच्छ) ११-साधुरत्न सूरि (तपागच्छ) १२-शुभवर्धन १३-हर्षहंस गणि ।

इन सब में निम्नलिखित चार गद्य लेखकों ने राजस्थानी के प्रारम्भिक धार्मिक गद्य-साहित्य को जीवन दान दिया है। १-आचार्य तरुणप्रभ सूरि २-श्री सोमसुन्दर सूरि ३-श्री मेरुसुन्दर और ४-श्री पार्श्वचन्द्र। यह चारों इस काल के ज्योति-स्तम्भ हैं।

१—आचार्य तरुणप्रभ सूरि :—

आचार्य तरुणप्रभ सूरि का नाम राजस्थानी गद्य लेखकों में सर्वप्रथम उल्लेखनीय है। इनके जीवनकाल जन्म-स्थान वंश आदि का कुछ भी पता नहीं चलता। 'युगप्रधानाचार्य-गुर्वावली'[1] के अनुसार इनका दीक्षा-नाम तरुण कीर्ति था। खरतरगच्छ के पट्टधर आचार्य जिनचन्द्र सूरि ने सं० १३६८ वि० में भीमपल्ली (भीलड़िया)[2] में इनको दीक्षा दी[3]। राजेन्द्रचन्द्र सूरि तथा जिनकुशल सूरि के पास इन्होंने विविध शास्त्रों का अध्ययन किया।[4]

श्री जिनकुशल सूरि इनकी विद्वता एवं योग्यता से प्रभावित थे। इन्होंने इनको सं० १३८८ में आचार्य पद प्रदान किया। श्री तरुणप्रभ सूरि धुरन्धर जैन विद्वानों में से थे इन्होंने संस्कृत प्राकृत एवं तत्कालीन लोक भाषा में कई स्तोत्रादि भी लिखे हैं। राजस्थानी गद्य की सबसे प्रथम प्रौढ़ रचना "षडावश्यक बालावबोध"[5] इन्हीं की कृति है।

१—इसकी प्रति क्षमा कल्याण-ज्ञानभंडार बीकानेर में विद्यमान है।

२—यह स्थान पालनपुर एजेन्सी के डीसा कैम्प से ११ मील है।

३—मोहनलाल दुलीचन्द देसाई — जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास टिप्पणी संख्या ६५१ । ?

४—तरुणप्रभ सूरि षडावश्यक बालावबोध प्रशस्ति गर्भितमासि पूर्व विद्याभ्यासयन राजेन्द्रचन्द्रसूरिराजविद्या पार्श्वे अध्ययन जिनादि कृपया ...

५—इसकी प्रति अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर में विद्यमान

षडावश्यक बालावबोध

जैसाकि नाम से ही संकेत मिलता है यह पुस्तक जैन धर्म के छै आवश्यक कर्मों[1] का बोध कराने के लिये लिखी गई है। अतः इसके लिखने में तरुणप्रभ सूरि का उद्देश्य धार्मिक शिक्षा ही रहा। इसकी रचना सं १४११ वि० में दीपोत्सव के अवसर पर हुई।[2] इस उपदेशात्मक गद्य-ग्रंथ में एक प्रकार की टीका का ही अनुसरण हुआ है। इसमें संस्कृत, प्राकृत तथा लोक भाषा (राजस्थानी) का प्रयोग है। संस्कृत और प्राकृत के अंशों को लोकभाषा में समझाया गया है। एक एक शब्द के साथ शब्द का जो अर्थ है उसकी व्याख्या साधारण से साधारण व्यक्ति को समझाने के दृष्टिकोण की गई है जैसे-प्राकृत अंश "अन्नाणी किं काही किंवा नाही छेय पावगंती संस्कृत-अंश 'अज्ञानी किं करिष्यति' लोकभाषा "किसी करसइ" अथवा "किसउ जाणिसइ इत्यादि।

भाषा पर पूर्ण अधिकार होने के कारण आचार्य तरुणप्रभ सूरि को इस ग्रंथ की व्याख्यात्मक शैली में सफलता मिली। प्रसंगानुसार दृष्टान्त रूप में अनेक कथाओं का प्रयोग इसमें किया गया है। ये कथायें इस ग्रंथ का महत्वपूर्ण अंश हैं। इस "षडावश्यक बालावबोध" की रचना के उपरान्त बालावबोध-लेखन की बाढ़ सी आ गई। ये बालावबोध राजस्थानी गद्य के अच्छे उदाहरण हैं।

इस ग्रंथ की भाषा प्रौढ़ एवं परिमार्जित राजस्थानी का सर्वप्रथम उदाहरण है। सम्पूर्ण ग्रंथ में कहीं भी भाषा-शैथिल्य नहीं है उसमें एक प्रकार का प्रवाह है जो उससे पूर्व की रचनाओं में नहीं मिलता। शब्द-चयन सरल होते हुए भी उसमें भाव प्रकाशन की अद्भुत शक्ति है। पांडित्य प्रदर्शन की भावना से यह सर्वथा मुक्त है।

गद्य का उदाहरण—

इसी परि महाविपाक करतउ जिनदत्तु लोकि जाणिउ। किं बहुनी राजेन्द्रि पुणि जाणिउ। परमु जिनदत्तु जु इसी परि भावना भावइ। तदा

... ...

१—द्वितीय प्रकरण

२—तरुणप्रभ सूरि षडावश्यक बालावबोध सं १४११ वर्षे दीपोत्सव दिवसे शनिवारे श्री मदणहिल्ल पतने — —षडावश्यक वृत्ति सुगमा बालावबोध कारिणी सकल संतोषकारिणी लिखिता।

तिथि नगरी केवली आविउ। राजादिक लोक थोड़ी पूछिउ—भगवन जिनदत्तु पुण्यवन्तु, किंवा अभिनवु पुण्यवन्तु? केवली कहीइ जिनदत्तु पुण्यवन्तु। लोक कहइ—भगवन अभिनवु पाराविउ जिनदत्तु न पाराविउ।

आचार्य श्री तरुणप्रभ सूरि से पूर्व राजस्थानी गद्य लड़खड़ाता हुआ उठने का प्रयत्न कर रहा था। उन्होंने उसे यह शक्ति प्रदान की कि यह उठकर चलने में समर्थ हो गया। अब राजस्थानी-गद्य ने एक दिशा प्राप्त करली जिस पर यह वेग से बढ़ चला और थोड़े ही समय में यह पूर्ण प्रौढ़ता को प्राप्त हो गया।

२—सोमसुन्दर सूरि[1] सं० १४३० से १४९९

आचार्य तरुणप्रभ सूरि के उपरान्त श्री सोमसुन्दर सूरि[2] का कार्य महत्त्वपूर्ण है। यह अपने युग के एक बहुत बड़े आचार्य हुए। इनका जन्म प्रह्लादनपुर[3] (गुजरात) में सं० १४३० वि०[4] में हुआ। इनके पिता का नाम सज्जन श्रेष्ठि[5] तथा माता का नाम माल्हणदेवी[6] था। दोनों धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। कुछ बड़े होने पर अपने पुत्र सोमकुमार को सज्जन श्रेष्ठि ने एक विद्वान तथा तेजस्वी उपाध्याय के पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए रखा।[7] कुमार ने शीघ्र ही लिंगानुशासन एवं व्याकरण शास्त्र की शिक्षा प्राप्त करली। एक बार जयानन्द सूरि उस नगर में आये। उनके उपदेशों को सुनकर सोमकुमार को वैराग्य हो गया।[8] जयानन्द सूरि भी उनसे प्रभावित हुए और सज्जन श्रेष्ठि से यह बालक उन्होंने दीक्षा के लिए मांगा। सं० १४३७ वि० में जयानन्द सूरि ने इनको दीक्षा दी और इनका दीक्षा

१—प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ पृ० ६७
२—देसाई जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास टिप्पणी—६४२, ६४३, ६५८, ७०८, ७०१, ७२१, ७०८, ७२९, ७४६, ७४३, ७८८
३—सोम-सौभाग्य काव्य पृ० ४ श्लोक ८२
४—वही पृ० २६ श्लोक ११
५—वही पृ० १४ श्लोक ४०
६—वही पृ० १९ श्लोक ५०
७—वही पृ० ३४ श्लोक ४६, ४७, ४८, ४९
८—वही पृ० ३८ श्लोक १६ वही पृ० ६८ श्लोक ६०

नाम सोमसुन्दर रखा गया। इन्होंने सं० १४५०[1] वि० में वाचक पद तथा सं १४५७[2] में सूरि पद प्राप्त किया।

जैन धर्म के इतिहास एवं साहित्य के क्षेत्र में श्री सोमसुन्दर सूरि का बहुत ही प्रभावशाली व्यक्तित्व रहा है। इन तीनों क्षेत्रों में समान रूप से अधिकार रखने वाले उनके समान आचार्य बहुत कम हुए हैं। अपने जीवनकाल में इन्होंने अनेक भव्य एवं कलाकौशल पूर्ण जैन मन्दिरों के निर्माण में प्रेरणा दी, प्राचीन ताड़पत्र पर लिखी हुई कृतियों का जीर्णोद्धार किया और नवीन प्रतिलिपियाँ तैयार करवाकर उनकी सुरक्षा की व्यवस्था करवाई। साहित्य-सृजन को इनके द्वारा बड़ा भारी प्रोत्साहन मिला। उन्होंने विपुल मात्रा में स्वयं साहित्य की रचना की तथा दूसरों को भी उसके लिए प्रेरित किया। उनकी शिष्य-मण्डली बहुत बड़ी थी। उनकी शिष्य परम्परा में संस्कृत प्राकृत और भाषा के अनेकों महत्वपूर्ण लेखक हुए। उन्होंने खम्भात के प्रसिद्ध प्राचीन पुस्तक भण्डारों की व्यवस्था की।[3]

साहित्यिक गति विधि के मेरुदण्ड होने के नाते सोमसुन्दर सूरि का समय "सोमसुन्दर-युग" (सं १४५६ से सं १५०० तक) कहा गया है। इन्होंने स्वयं कई ग्रंथों का निर्माण किया। उनके द्वारा राजस्थानी-गद्य में लिखे गये ८ बालावबोध हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं—१-उपदेशमाला बालावबोध (र० सं० १४८५)[4] २-षष्टि शतक बालावबोध (र० सं० १४९६)[5] ३-योगशास्त्र बालावबोध ४-भक्तामर स्तोत्र बालावबोध ५-नवतत्व-बालावबोध ६-पर्यन्तारावना-आराधना-पताका बालावबोध ७-षडावश्यक बालावबोध ८-विचार ग्रंथ बालावबोध।

उदाहरण के लिए उपदेशमाला बालावबोध तथा योगशास्त्र बालावबोध को लिया जा सकता है।[6] प्रथम प्राकृत का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है जिसमें सदाचार के उपदेशों का संग्रह है। इसमें छोटी बड़ी कथाओं का प्रयोग किया गया है। श्रावकों को धार्मिक उपदेश देने के लिए इस ग्रंथ की

१—सोम-सौभाग्य काव्य पृ ७५ श्लोक १४
—वही पृ ८६ श्लोक ५१
३—नमिचन्द्र : षष्टि शतक प्रकरण पृ ११
४—ह प्र अभय जैन पुस्तकालय बीकानेर में प्राप्त
५—ह प्र० अभय जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान
६—द एम० मुन्शी गुजरात एण्ड इट्स लिटरेचर पृ ११२

रचना हुई है। मूल गाथा के प्राकृत प्रयोगों का पहले उल्लेख कर पश्चात् उनकी व्याख्या की गई है। योगशास्त्र की रचना जैन श्री हेमचन्द्र सूरि ने संस्कृत में की थी उसी पर प्रस्तुत बालावबोध लिखा गया है इसमें योग का स्वरूप, उसकी महिमा एवं माहात्म्य के ५ महाव्रत, इन पांचों में प्रत्येक की पांच पांच भावना तथा योगपुरुष के लक्षण बतलाए हैं। इसके अतिरिक्त श्रावक के ३ गुण चार व्रत के अतिचार तथा श्रावक के कृत्य-सम्यक्त्व का स्वरूप, श्रावक के ५ अनुव्रत, ५ इन्द्रियों की शुद्धि का स्वरूप, ८ भावना तथा नवआसन का विवरण है।

इन दोनों बालावबोधों की कथाओं में तरुणप्रभ सूरि का "षडावश्यक बालावबोध" की कथाओं से साहित्यिक तत्व कम है फिर भी भाषा के विकास की दृष्टि से श्री सोमसुन्दर की बालावबोध की कथायें महत्वपूर्ण हैं।

गद्य का उदाहरण--

१—चाणाक्य ब्राह्मणि चन्द्रगुप्त क्षत्रीपुत्र राज्य योग्य भणी संगठियो कइ। अनइ एक पर्वतक राजा मित्र कीधओ छइ। तेहनइ बलि चाणक्यइ कन्द करा पाडलिपुरि आवी नंदराय कन्ही राज्य लीधउं। पर्वतक आप राज्यनु लेणहार भणी एक नंदरायनी बेटी तलये करी विषकन्या आंणी नइ परणाविओ चन्द्रगुप्त तिमना उपचार करतओ वारिओ। तिम अनराइ आपणों मत मरिवा पूंठि मित्र हुइ अनर्थ करइ।

(उपदेशमाला बालावबोध)

गद्य का उदाहरण--

२—वेणावट नगरि मूलदेव राजा। एक वार लोके जिनबिउ-स्वामी को पक चोर नगर मूसइ छइ पुण चोर आणीइ नहीं राजइ कहिउं-थोड़ा दिहाड़ा मांहि चोर प्रगट करिसु तुम्हें असमाधि म करिसउ। पछइ राजाइ तलार तडि हाकिउं। तलार कहइ मइं अनेक उपाय कीधा पुण ते चोर पराइ नहीं। पछइ राजा आपण पइ रात्रिइं नीलउ पछेउ पहिरि नगर बाहिर स जे चोर न स्थान के फिरते चार योवउ पकइ स्थान फि जइ सूतउ। ततलइ मंडिक चोरिइं ईन्ड जगाविउ पूछिउ-कउण तउं तीणि कहिउं हुं आपडी भीषारी। मंडिक चोरि कहिउं आवि तउं मूं साथिइ त्रिम सूहइ सस्मीर्यत करउं। (योगशास्त्र बालावबोध)

१—मेरुसुन्दर (खरतरगच्छ)

श्री मेरुसुन्दर[1] खरतरगच्छ के पांचवें आचार्य श्री जिनचन्द्र सूरि (सं० १४८७–१५३०) के शिष्य थे।[2] इनके जीवन-वृत्त के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। राजस्थानी के टीकाकारों में सबसे अधिक टीकायें इन्हीं की मिलती हैं। अब तक इनके १७ बालावबोध उपलब्ध हुए हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं — १–शीलोपदेश माला[3] बालावबोध (सं० १५२५) २–पुष्पमाला बालावबोध[4] (सं० १५२८) ३–षडावश्यक बालावबोध[5] (सं० १५२५) ४–शत्रुंजय-स्तवन[6] बालावबोध (सं० १५१८) ५–कर्पूर प्रकरण[7] बालावबोध (सं० १५३४) ६–योगशास्त्र बालावबोध[8] ७–पंच निर्ग्रंथी बालावबोध[9] ८–अजितशान्ति बालावबोध ९–भावारिवारण बालावबोध १०–वृत्त-रत्नाकर बालावबोध ११–सम्बोधसत्तरी बालावबोध[10] १२–श्रावकप्रतिक्रमण बालावबोध १३–कल्पप्रकरण बालावबोध १४–[illegible] बालावबोध १५–षष्टिशतक[11] बालावबोध १६–वाग्भटालंकार[12] बालावबोध (सं० १५३५) १७–विदग्धमुखमंडन[13] बालावबोध।

इन बालावबोधों के अतिरिक्त मेरुसुन्दर की दो गद्य रचनायें

१—युग प्रधान जिनदत्त सूरि पृ० ६६, ७ । देसाई जैन गूर्जर कविओ भाग ३ पृ० १५८२ । जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास टि० ७१४
२—नेमिचन्द्र भंडारी षष्टि शतक प्रकरण पृ० १५
३—अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर । मुनि विनयसागर संग्रह कोटा
४—संघ भंडार वखत जी शेरी पाटन । अभय जैन पुस्तकालय बीकानेर
५—डोसाभाई अभयचन्द संघ भंडार, भावनगर
६—भंडारकर इंस्टीट्यूट, पूना
७—पुराना संघ भंडार, पाटण
८—विवेक विजय भंडार, उदयपुर
९—गोड़ीजी भंडार, उदयपुर । मुनि विनयसागर संग्रह, कोटा
१०—डूंगर जी यति भंडार जैसलमेर । मुनि विनयसागर संग्रह कोटा
११—संघ भंडार वखत जी शेरी पाटण
१२—नेमिचन्द्र भंडारी षष्टि शतक प्रकरण पृ १६
१३—पार्श्वनाथ भंडार नागपुर

१–अंजना-सुन्दरी-कथा[1] और २–प्रश्नोत्तररत्न य[2] प्राप्त हैं।

इन रचनाओं के निर्माणकाल को देखने से श्री मेरुसुन्दर का समय सोलहवीं शताब्दी का प्रारम्भ निश्चित होता है।

श्री मेरुसुन्दर की यह सभी रचनायें राजस्थानी प्राचीन गद्य के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। उदाहरण के लिये शीलोपदेशमाला बालावबोध को देखा जा सकता है। इस ग्रन्थ का मूल लेखक श्री जयकीर्ति है। इस ग्रन्थ में शील (ब्रह्मचर्य) सम्बन्धी उपदेश दिये गये हैं।

गद्य का उदाहरण–

आबाल ब्रह्मचारी आजन्म चतुर्थ व्रतधारी श्री नेमिकुमार बावीसमा तीर्थंकर तिहां ने नमस्कार करी ने शील रूप उपदेश तेहनी माला नी बालावबोध मूर्ख जनना उपकार भणी हूँ करिसु नेमिकुमार ए नाम स्वामणी जे गृहस्थ वास मे त्रिणी स परम पर रही राज अने राजीमती परहरी कुमार पणइ चारित्र लीधा। वली केहवा छै जयमार जय कही छै त्रिभुवन ते माहि शील रूप धरवाइ सु एक सार प्रधान छै अथवा बाल अने ब्रह्मचर्य रंग धयरो सोपवइ कर सार छै। (शीलोपदेशमाला बालावबोध)

४–पारश्वचन्द्र सूरि (सं० १५३७–१६१२)

राजस्थानी गद्य के इतिहास में श्री पारश्वचन्द्र सूरि का नाम भी महत्व का है। इनका जन्म सं० १५३७ में हुआ। दीक्षा सं० १५४६ में उपाध्याय पद सं० १५५४ में तथा युगप्रधान पद सं० १५६६ में प्राप्त किया। इन्होंने सं० १५६४ में अपने गुरु बृहत्तपा-नागोरी-तपागच्छ के साधुरत्न सूरि की आज्ञा से आगमानुसार क्रिया उद्धार किया। मारवाड़ के मालदेव राजा को जैन धर्म का उपदेश दिया। मुहणोत गोत्रीय क्षत्रियों को जैन धर्म का बोध करवा आमवाल श्रावक बनाया।[3] इस काल के अधिक बालावबोध लिखने वालों में मेरुसुन्दर के उपरान्त इन्हीं का स्थान है।

१—मिश्र बंधु साहित्य मन्दिर पालीताना।
२—महिमा भक्ति भंडार बीकानेर।
३—बृहत्तपागच्छ पट्टावली पृ ४४

इनकी निम्नलिखित ११ बालावबोध प्राप्त हैं —१–आचारांग बालावबोध[1] २–दशवैकालिक सूत्र बालावबोध ३–औपपातिक सूत्र बालावबोध[2] ४–षडावश्यक प्रकीर्ण बालावबोध (सं० १४६७) ५–जम्बू चरित्र बालावबोध[1] ६–नवतत्व बालावबोध ७–प्रश्न व्याकरण बालावबोध ८–रायपसेणी सूत्र बालावबोध ९–साधु प्रतिक्रमण बालावबोध १०–सूत्रकृतांग सूत्र बालावबोध[4] ११ तंदुलवैयालिय बालावबोध[5]। इनके अतिरिक्त इनकी स्वतन्त्र गद्य रचना "प्रश्नोत्तर ग्रंथ" भी मिलती है।

गद्य का उदाहरण–

हिव तेहना नाम कहइ छइ। ते अनुक्रमइ जाणिवा। नारी समान पुरुष नइ अनेरउ अरि न थी इणि कारणी नारि कहीयइ। नाना प्रकार कर्मइ करी पुरुष नइ मोहइ तिणि कारणि महिला कहियइ। अथवा महान्तकलनी उपजावणहार तिणि कारणी महिला कहीयइ। पुरुष नइ मद करइ मद चाडइ तिणि कारणी प्रमदा कहियइ। पुरुष नइ हावभावादिक करी माहइ। तिणि कारणि रामा कहियइ। पुरुष नइ अंग ऊपरि अनुरक्त करइ तिणि कारणी अंगना कहियइ। (तंदुलवैयालीय)

इन चारों जैन विद्वानों ने इस काल के गद्य लेखन को बहुत प्रोत्साहन दिया। उसके लिए नवीन विषय प्रस्तुत किए तथा नवीन शैली प्रतिपादित की। इनमें सोमसुन्दर सूरि का शिष्य मंडल उल्लेखनीय है। इन शिष्यों में श्री मुनिसुन्दर सूरि, श्री जयसुन्दर सूरि, श्री भुवनसुन्दर सूरि, श्री जिनसुन्दर सूरि आदि प्रमुख हैं तथा इनकी शिष्य परम्परा में जिनमण्डन, जिनकीर्ति सोमदेव सोमजय, विशालराज, उदयनन्दि, शुभरत्न आदि अनेक विद्वानों ने साहित्यिक जागृति को मन्द नहीं होने दिया। उपरान्त के जैन आचार्यों का ध्यान इस ओर गया इससे भाषा का स्वरूप विकसित हुआ।

१—सीमन्धर भंडार तथा लोकागच्छ भंडार। मुनि विनयसागर भंडार, कोटा

२—सीमन्धर भंडार

३—वही

४—वर्धमान

५—अभय जैन पुस्तकालय बीकानेर

अन्य जैन गद्य लेखक :—

इस युग के अनेक जैन गद्यकारों में श्री जयशेखर सूरि (सं० १४० — १४६२) आंचलगच्छ के श्री महेन्द्रप्रभ सूरि के शिष्य थे इन्होंने गद्य और पद्य के ग्रन्थ मिला कर १८ ग्रंथों की रचना की जिनको देखने से पता चलता है कि यह कैसे विद्वान आचार्य थे।[1] प्रबोध चिन्तामणि के विषय पर स्वतन्त्र रूप से इन्होंने जो त्रिभुवन दीपक प्रबन्ध नामक ग्रंथ लिखा वह पन्द्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की राजस्थानी का उल्लेखनीय उदाहरण है। गद्य-ग्रंथों में "श्रावक बृहदतिचार"[2] महत्वपूर्ण है।

"नवतत्व विवरण बालावबोध[3] (सं० १४५६ के लगभग) के रचयिता श्री साधुरत्न सूरि (तपागच्छ) श्री देवसुन्दर सूरि के शिष्य थे।[4] श्री साधुरत्न सूरि अपने समय के मान्य विद्वानों में से थे इनके गद्य में प्रौढ़ भाषा के उदाहरण मिलते हैं।

हेमहंसगणि तपागच्छ सोमसुन्दर सूरि मुनिसुन्दर सूरि आदि के शिष्य थे इन्होंने सं० १५०१ में षडावश्यक बालावबोध[5] की रचना की।

शिवसुन्दर वाचक सोमध्वज क्षेमराज के शिष्य थे। इनकी गद्य रचना "गौतमपृच्छा बालावबोध"[6] श्रीमालपुर में सं० १५९१ में लिखी गई।

जिनसूरि तपागच्छीय सोमसुन्दर सूरि विशालराज, विद्याभूषण आदि के शिष्य थे। इनकी "गौतमपृच्छा बालावबोध" शिवसुन्दर की बालावबोध जैसी ही है। दोनों में केवल दृष्टान्तों के व्यक्तित्व का अन्तर है। इसमें कुछ दृष्टान्त नये जोड़ दिये गये हैं और कुछ कम कर दिये गये हैं।

१—देखिए जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास पृ० ४५०, ४६१, ५०६, ५१२, ५१४ ५१५ ८ ५ ९०६ ९८१

२—देखिए जैन गूर्जर कविओ भाग ३ पृ० १४०३

३—गोडीजी भंडार बम्बई

४—देखिए जैन गूर्जर कविओ भाग ३ पृ० १४५२

५—अभय जैन पुस्तकालय तथा महरचन्द भंडार नं० १ बीकानेर

६—अभय जैन पुस्तकालय बीकानेर

संवेगदेव गणि[1] तपागच्छीय श्री सोमसुन्दर सूरि के शिष्य थे। इनकी ३ गद्य-रचनायें प्राप्त हैं जिनमें दो बालावबोध और १ टब्बा है। "पिण्डविशुद्धि बालावबोध"[2] (सं० १५१३) तथा "आवश्यकपीठिका बालावबोध" सं० १५१४ में लिखी गई। इनका चउसरण टब्बा[3] भी प्राप्त है।

राजवल्लभ धर्मघोषगच्छीय श्री धर्म सूरि की शिष्य परम्परा में श्री महीचन्द्र सूरि के शिष्य थे।[4] इनकी सं० १५३० में लिखी हुई "षडावश्यक बालावबोध"[5] मिलती है। जिसकी सारी कथायें संस्कृत में हैं। जहाँ जैन धर्म के नियम, सिद्धान्त आदि की व्याख्या का प्रसंग आया है वहाँ संस्कृत एवं प्राकृत के अतिरिक्त राजस्थानी का प्रयोग किया गया है।

अज्ञात लेखक रचनायें —

इस काल में "श्रावक व्रतादि अतिचार"[6] (सं १४६६) और "[illegible]-कथा"[7] (सं० १४८२) नामक दो रचनायें ऐसी हैं जिनके लेखकों का नाम ज्ञात नहीं है। प्रथम का सं० १३६९ में लिखित "अतिचार" से विषय-साम्य है। दूसरी रचना के गद्य में पद्य का सा लालित्य एवं माधुर्य भरने का प्रयास किया गया है। शब्द योजना को इस प्रकार संवारा गया है कि अनुप्रास बड़ा आकर्षक हो गई है। जैसे —जिसिउ चंचल बीज नु झबकार। जिसिउ चंचल इन्द्रधनुष नु आकार। जिसिउ चंचल मन मउ व्यापार। जिम रोहि तउ तिणहु धार ऊपरि आवतो बिन्दु ठाहिउ ये भारिम। जिसउ चंचल ठाकुर नउ अधिकार। जिसउ पीपल नु पान। तिसी चंचल राज्य-लक्ष्मी जाणी गुरु सरीखा सुविवेकी प्राणी इणिया संसार रूपीया कूआ माहि काइ पडइ दुर्गति काउ रडवडइ।

१—देसाई जैन-गूर्जर-कविओ भाग ३ पृ १५८०
२—मुनि जिनयसागर संग्रह कोटा
३—अभय जैन पुस्तकालय बीका
४—देसाई जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास पृ० ५१६
५—अभय जैन-पुस्तकालय बीकानेर। मुनि जिनयसागर संग्रह कोटा
६—प्राचीन गुर्जरनी गद्य संदर्भ पृ ६६
७—अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर

२—ऐतिहासिक गद्य साहित्य

जैन-श्वेताम्बर तपागच्छीय श्री जिनवर्धन की सं० १४८२ में लिखित "गुर्वावली"[1] इस काल की एक मात्र ऐतिहासिक गद्य-रचना है। जैन-शासक-संघ के तपागच्छ आचार्यों की नामावली और उनका वर्णन इसका विषय है। इसमें जैनों के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी से सं० १४८२ में होने वाले पचासवें पट्टधर आचार्य श्री सोमसुन्दर सूरि तक के आचार्यों का विवरण है।[2]

ऐतिहासिक महत्व के साथ साथ इस गुर्वावली की भाषा अधिक आकर्षक है। इसमें पद्यानुकारी अर्थात् अन्त्यानुप्रास युक्त गद्य का प्रयोग हुआ है। इसकी भाषा में प्रवाह गति एवं रोचकता है। क्रिया पदों की अपेक्षा समास प्रधान पदावली का प्रयोग अधिक किया गया है।

गद्य का उदाहरण—

जिम देव माहो इन्द्र जिम ज्योतिश्चक्र माहि चन्द्र।
जिम वृक्ष माहि कल्पद्रुम, जिम रक्त वस्तु माहि विद्रुम।
जिम नरेन्द्र माहि राम, जिम रूपवन्त माहि काम।
जिम स्त्री माहि रंभा, जिम वादित्र माहि भंभा।
जिम सती माहि सीता जिम स्मृति माहि गीता।
जिम साहसीक माहि विक्रमादित्य जिम ग्रहगण माहि आदित्य।
जिम रत्न माहि चिन्तामणि जिम आभरण माहि चूड़ामणि।
जिम पर्वत माहि मेरु भूधर जिम गजेन्द्र माहि ऐरावत सिंधुर।
जिम रस माहि घृत जिम मधुर वस्तु माहि अमृत।
तिम सामतिकाक्षि सकल गच्छ अन्तरालि।
ज्ञानि विज्ञानि तपि जपि शमि दमि संयमि करी अनुपम,
॥ श्री तपागच्छ आर्चद्रार्क जयवंतउ वर्त्तइ।

१—अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर
२—मोहनलाल दुलीचन्द देसाई "भारतीय-विद्या" वर्ष १ अङ्क ४ पृ० १३३

३—कथात्मक गद्य साहित्य

इस काल में लिखित कथात्मक-गद्य-साहित्य की दो महत्वपूर्ण रचनायें मिलती हैं। पहली एक जैन आचार्य की लिखी हुई धर्म कथा है और दूसरी एक चारण कवि की वीर-रसात्मक-गाथा। दोनों वचनिका, शैली में लिखी गई हैं जिसमें गद्य में भी पद्य की भांति अन्त्यानुप्रास का प्रयोग हुआ है। यह रचनायें निम्न प्रकार हैं —

१—पृथ्वीचन्द्र वाग्विलास[1]

इसकी रचना आंचलगच्छीय माणिक्यसुन्दर सूरि[2] ने सं० १४७८ वि० में की थी। यह आचार्य श्री मेरुतुंग के शिष्य थे।[3] श्री जयशेखर सूरि (सं० १४००–१४६२) इनके भाई थे। श्री माणिक्यसुन्दर सूरि के जीवन के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं है। इनकी रचनायें गुणवर्मा चरित्र, सत्तरभेदी पूजा कथा, चतुःपर्वी कथा, शुकराज कथा, मलयसुन्दरी कथा, संविभाग व्रत कथा पृथ्वीचन्द्र चरित्र हैं। इन सब में अंतिम रचना बहुत अधिक महत्व की है। यह राजस्थानी गद्य साहित्य में कथात्मक गद्य का सर्वप्रथम उदाहरण है।

"पृथ्वीचन्द्र-चरित्र' में महाराष्ट्र के पद्मठाणपुर पट्टण के राजा पृथ्वीचन्द्र तथा अयोध्या के राजा सोमदेव की पुत्री रत्नमंजरी की प्रणय-कथा है। रत्नमंजरी को प्राप्त करने की दैवी-प्रेरणा पृथ्वीचन्द्र को स्वप्न द्वारा मिलती है। उसके स्वयंवर में यह ससैन्य पहुंचकर वरमाला प्राप्त करता है। इसी समय वैताल माया का प्रसार कर उसे (रत्नमंजरी) ले जाता है। किन्तु अन्त में पृथ्वीचन्द्र देवी की अनुकम्पा एवं सहायता से उसे पुनः प्राप्त करता है।

इस छोटे से कथानक पर विद्वान लेखक ने अपनी रचना को आधारित किया है। एक ओर वैताल जैसी अलौकिक शक्तियों की ओर भी

१—कस्तूर सागर भंडार भावनगर : प्राचीन गुजराती-गद्य-संदर्भ में कुछ अंश प्रकाशित।

२—देसाई जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास टि ४८१, ७०८, ७१४

३—देसाई जैन गुर्जर-कविओ भाग पृ० ७४

उसका ध्यान गया है। नायक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जैन आचार्य तथा देवी जैसी सात्विक शक्तियों की सहायता से वह सफल होता है। इन कठिनाइयों के तीन प्रमुख स्थल हैं - १-वन २-संग्राम ३-स्वयंवर। इन तीनों स्थलों पर रुकता हुआ कथानक प्रधान कार्य "रत्न मंजरी की प्राप्ति" की ओर बढ़ जाता है। इस प्रकार धर्मनिष्ठा एवं कष्ट सहिष्णुता से वांछित फल की प्राप्ति होती है। यह इस कृति की रचना का मूल उद्देश्य है।

वस्तु वर्णन इस रचना की विशेषता है जिसमें वस्तु-परिगणन-शैली का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार की शैली प्राय अरोचक एवं मन को उकता देने वाली होती है। किन्तु माणिक्यसुन्दर ने इन दोनों में से एक भी दोष नहीं आने दिया है। सात द्वीप, सात क्षेत्र, सात नदी, ६ पर्वत, बत्तीस सहस्र देश नगर, राज सभा नायक,नायिका वन सेना, हाथी, घोड़ा रथ युद्ध, स्वयंवर, लग्नोत्सव भोजन-समारम्भ स्वप्न आदि का विस्तृत विवरण माणिक्यसुन्दर ने दिया है। उदाहरण के लिये वन का चित्र देखिये —

"मार्ग जातां आवी एक अटवी। हिव ते किसी परि वर्णविवी। जेह अन्वी माहि तमाल ताल (आदि अनेक वृक्षों की नामावली) प्रमुख वृक्षावली दीसइ बीहतां सूर्य तणा किरण माहि न पइसइ। अनइ किहांइ सिंघ तणा फेत्कार, घूक तणा घूत्कार, व्याघ्र तणा घुरहराट, न लाभइ वाट नइ घाट। मांहि वानर परम्परा उछलइ मदोन्मत्ता गमेन्द्र गुलगलइ। सिंहनाद भयभीत समस्त सलसलइ। जिस्या दृष्टि दापा लोल तिस्या मीस। सूअर घुरकइ चीता वुरकइ। बेताल किलकिलइ, दावानल प्रज्वलइ। रीछ सोचरइ निरुतणा मृग विचरइ। इसी महा रौद्र अटवी।

ऋतुवर्णन और प्रकृति चित्रण बहुत ही स्वाभाविक एवं रोचक है। ऋतु विशेष में प्रकृति का कैसा शृंगार होता है इसका सूक्ष्म विवेचन यहां पर मिलता है। इससे पूर्व इस प्रकार के प्रकृति-चित्रण के उदाहरण नहीं मिलते। अनुकरणात्मक शब्दों का चयन, रूपक एवं उपमाओं का हृदय-ग्राही प्रयोग इसकी विशेषता है। प्रकृति के सुन्दर शब्द चित्र सजीव एवं आकर्षक बन पाये हैं। उदाहरण के लिए वर्षा और वसंत के चित्र देखे जा सकते हैं। दोनों स्थलों पर अनुकूल शब्दावली के कारण अनुपम दृश्य प्रस्तुत हुए हैं।

वर्षा–

“ ...... विस्तारित वर्षाकाल जे पंथी तणइ दुःकाल आविउ वर्षाकालि। मधुर-ध्वनि मेघ गाजइ, दुर्भिक्ष तणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्ष भूपति आवतां जयढक्का वाजइ। चहुँ दिशि बीज झलहलइ, पंथी घरभणी चलइ। विरीत आकाश, सूर्य चन्द्र परिवास राति अंधारी छाजइ तिमिरी। उत्तरनउ ऊनमण छायउ गयण। दिसि घोर, नाचइ मोर। सघर वरसइ धराधर। पाणीतणा प्रवाह खलहलइ वाडि ऊपर वेल वलइ। चीखलि चालतां शकट स्खलइ लोक तणा मन धर्म ऊपरि वलइ। नदी महापूरि आवइ पृथ्वी पीठ प्लावइ। नवा किसलय गहगहइं वल्ली वितान लहलहइं। कुटुम्बी लोक माचइ महात्मा बइठा पुस्तक वाचइ। पर्वत नीझरण विछूटइ, सरिता सरोवर फूटइ –

वसंत–

महरिया सहकार, चंपक उदार बेउल वकुल भ्रमर संकुल पाडल करइ कोकिल तणा कुल। भमर प्रियंगु पाडर निर्मल जल विकसित कमल। रातां पलास, सेवंत्री वास। कुंद मुचकुंद महमहइ नाग पुन्नाग गहगहइ। मानस तणी मे खिलिखिलि वासीइ कुसुम रेणि लोक तणां हाथि वीणा वस्त्राडम्बर कीणा। चन्दन शृंगार सार मुक्ताफल तणा हार। सघला सुन्दर, वन माहि रमइ सोग पुरंदर हिंडोलइ हींचइ मीठां वाचिइ, सखिइ गीतइ।

भाषा की दृष्टि से इस ग्रंथ का महत्त्व बहुत अधिक है। सम्पूर्ण रचना में अनुप्रासान्त-पदावली का प्रयोग किया गया है। राजस्थानी भाषा की कोमलता एवं औदारिता के उदाहरण इस ग्रंथ में देखे जा सकते हैं। यह ग्रंथ राजस्थानी का सबसे पहला साहित्यिक रूप है। अनुप्रासमय शब्दावली का उदाहरण निम्नलिखित है —

“कडुमंताणं संखाणं संगीयाणं खरमुहीयाणं महन्तवाणं पणवाणं पडहाणं भम्भासिम्भंताणं संभाणं झल्लरीणं दुंदुमीणं सखिणवंताणं मुसाणं मुत्तिगाणं नदीमुत्तिगाणं”

इस प्रकार के उदाहरण इस कृति में कई जगह मिलते हैं।

सम्पूर्ण कथा का दृष्टिकोण धार्मिक है। धार्मिक-शिक्षा के उद्देश्य से ही इसकी रचना हुई है। सदुपदेश एवं चरित्र-निर्माण इसका आधार

है। पाप और पुण्य की मीमांसा की गई है। धार्मिक गद्य का उदाहरण देखिये —

"महो सत्य सीत्र। ए धर्मां घमनां फल आखिश्वा। कवण कवण पहिलु तो उत्तमकुलि अवतार ए धर्मे तणां फल सार। जइ जीव नीच कुलि अवतरइ, तु किसउ पुण्य करइ। यइ विश्व मांहो एक माळी तणा कुल, मीस तणा कुल कोली तणा कुल। इणि परि धोहरी व्याहडी धागुरी मान्को पचप घांची घोर वेश्या वावरी मेय कुन पापपरखीयां तणा पाप सर्णा कुल आखियां।

अचलदास खीची री वचनिका[1]

इस वचनिका के रचयिता श्री शिवदास हैं। यह जाति के चारण थे। गागरोण (कोटा राज्य के अन्तर्गत) के राजा अचलदास मीची इनके आश्रय दाता थे। इनके जीवन वृत्त के विषय में इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता।

इस वचनिका में शिवदास ने अपने आश्रयदाता अचलदास खीची के यश का चित्रण किया है। मांडू के मुसलमान शासक ने गागरोण पर घेरा डाला। अचलदास अपनी राजपूत मर्यादा के अनुसार उसके आगे सिर नहीं झुका सके। उसमे लोहा लेन के लिए उन्होंने अपने किले के द्वार बन्द करवा दिये। इसके उपरान्त दोनों में घोर युद्ध हुआ जिसमें अचलदास वीर गति को प्राप्त हुए। अन्य राजपूत सरदारों ने जौहर किया। शिवदास चारण भी युद्ध के मैदान में उपस्थित थे किन्तु राजकुमारों की सुरक्षा के लिये जीवित रहकर वे अपने राजा को काव्य रचना के द्वारा अमर कर सकें इस उद्देश्य से वे जौहर में सम्मिलित नहीं हुए। उन्होंने सम्पूर्ण युद्ध को अपनी आंखों से देखा तथा अपने आश्रयदाता को अमर करने के लिए यह रचना की।[2] इस वचनिका का रचनाकाल निश्चित रूप से निर्धारित नहीं किया जा सकता पर इतना निश्चित है कि इसकी

१—ह० प्र० अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर, में विद्यमान

२—Tentom.— A Description catalogue of Bardic and Historical Mac Sect. II

—Bardic Poetry p. I Bikaner State Page 11

कुण की मुक्ति, कुण की प्राप्ति कुण की माइ वियाणी सू सामउ रहइ मणी पाणी।

इसके उपरान्त आपने आश्रयदाता का महत्व शिवदास ने बतलाया है।

अचलेसपर सउ किसउ, उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम कउ मइ किवाड़ आड़म्बा अजबपाल। आईकारि रावण दूसरउ भारउ। तीसरउ सिंघण हड़ दरसण आवा सावइ पासैड कउ आधार बालउ चक्रवत्ति। धन धन, हो राजा अचलेसर। भारउ जिमउ शिखि इइ पातसाह सउं खांडउ सिमउ।

गौरी की सेना का गागरोण पर आक्रमण खीची द्वारा उसका उत्तर, चतुरंगिणी-सेना का भिड़ना तोपों की गड़गड़ाहट रणभेरी का नाद आदि सभी मिलकर मानसिक चक्षुओं के सामने युद्ध का जीवित चित्र प्रस्तुत करते हैं। शैली में कहीं भी शिथिलता नहीं आने पाई है। युद्ध की एक झलक देखिये—

"एक पाखर घुले घूमे खड़े सउमहे आणक मतवालो मतवाले मिले। आणक बरसंतरित केसू फूल्या। रात-दिवस दीसे समान। गुहरत दिवा गढ़ि ढोवा दिवा। तीन लाख मड़ आया। इसा, मीरी आल मुख आकड़ जिसा। करै घात बोल पारसो, बागर तणा किले आयी आरसी। कबाणां कुआं जिम कुरबरिया, बी लाख महाजिम ओसरिया। काली निहाल, गाला मुहाल। गढ़ सिखर चढ़ी करणां रा जीव तुडी। सूरां आहरंग जोध चो अंग। गाहिमल गुरज गंगाहिउ चतुरंगणि बंका पंगा आइड। आड़ा अचल तणी आणिमाला पतरै सहस जोध पौयाला। सोइ संमाम का समरा अयी का समरा। गाहड़ि का गाडा फौजों का लाडा। आषरसी का बींद नरां का नरींद। चौसम आसकी आसण सुनी राव वासदण। महाराज मोगियों सो पायो। आवा बंधो सुरताण पातसाह आयो। रावजी सत्रो धरम रो किवारव कीजै, खंक प्रमाण गढ़ि गघगुरख लीजै। मोर मुगल साके आस धमधमो उडयो गढ़ि प्रमाण मोरचो बणायो। भारा पनका बलका मजका, पमाव तेग से हाम पल्या। इग्यारे हजार नर मजबाण हिन्दू मुसलमाण। राव सान्हदण हूँ गढ़ मोरचे खड़े तो सुरा सोहणां समसह। जो हूँ गढ़ पोलपां मरू, तो च्यार जुगा लाग उबरू। उबरे सो उबरो मरे सो मरो। गढ़ खड़े अपारो राव सान्हदण पधारो।"

इस गद्यांश में तुकांत प्रौढ़ गद्य की छटा दिखाई दे रही है। वाक्य छोटे छोटे हैं। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अभिव्यंजना का संभार है।

साधारण विवरणात्मक स्थलों पर गद्य प्रवाह-प्रधान हो गया है ऐसे स्थलों पर शिवदास ने शब्दों के द्वारा नक्काशी करना छोड़ दिया है। जैसे—

"तिवारइं तउ वार कहुणों वार लागइ असत्री जन सहस बात्तीस-कउ संघाट आइ संपन्नो हुवइ बाली भोली अबला, प्रौढ़ा पोडस वरस की राणी जन्नाणी आपणा आपणा देवर जेठ भरतार का पुरसारथ बखाणती फिरइ छई।

जहाँ इस प्रकार का सीधा सादा गद्य प्रयुक्त हुआ है वहाँ लेखक अपनी कला प्रदर्शन में नहीं उलझा है। जहाँ उसने अपनी कला का प्रदर्शन करना चाहा वहाँ वह रुका है और रुक कर अपने कलाकार होने का पूर्ण परिचय दिया है।

उक्त वचनिका चारणी गद्य का सबसे पहला उदाहरण है इसकी शैली की प्रौढ़ता को देखते हुए अनुमान लगाया जा सकता है कि पंद्रहवीं शताब्दी में इस प्रकार का गद्य-लेखन हुआ होगा। किन्तु अभी तक उसके उदाहरण नहीं मिल पाये हैं।

जैन वचनिका

सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जैन आचार्यों ने भी वचनिका के प्रयोग किए। ऐसी दो वचनिकायें मिली हैं–१-जिन समुद्रसूरि की वचनिका २ शान्तिसागर सूरि की वचनिका।[1]

प्रथम वचनिका में राव मालदेव के घर का वर्णन है जिसने जैसलमेर स्थित खरतरगच्छाचार्य श्री जिन समुद्र सूरि को सम्मान पूर्वक अपनी राजधानी में आमंत्रित किया। सं १५४८ के वैसाख मास में आचार्य श्री जोधपुर पधारे थे। इस वचनिका का वर्ण्य विषय इस प्रकार है —

१—राव सातल द्वारा खरतरगच्छाचार्य श्री जिन समुद्रसूरि को आमंत्रित किया जाना।

२—राव सातल का यश-वैभव का वर्णन।

३—आचार्य का नगर प्रवेश उनका स्वागत और उत्सव।

१—यह दोनों वचनिकायें 'राजस्थानी भाग २ पृ ७६ में प्रकाशित हो चुकी हैं।

दूसरी वचनिका खरतरगच्छाचार्य श्री शान्तिसागर सूरि से संबन्धित है। ये खरतरगच्छ की आद्य पक्षीय शाखा के प्रमुख आचार्य थे। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आप विद्यमान थे। सं० १५५६ वि० में श्री जिनहंससूरि को तथा सं० १५६६ में श्री जिनदेव सूरि को आपने आचार्य पद प्रदान किया था।

प्रस्तुत वचनिका का वर्ण्य विषय इस प्रकार है —

१—खरतरगच्छाचार्य श्री शान्तिसागर-सूरि का यश वर्णन
२—राव जोधा के पुत्र श्री सूजमल के वैभव का दिग्दर्शन
३—रिणमल के पुत्र कर्णराज द्वारा आचार्य को मेड़ता बुलाया जाना स्वागत समारोह तथा उत्सव।
४—जोधपुर में श्री विद्याराज ठाकुर द्वारा उनका प्रवेशोत्सव
५—जोधपुर में आचार्य का चातुर्मास

यह दोना वचनिकायें अन्त्यानुप्रास-प्रधान गद्य में लिखी हुई हैं। श्लोक संस्कृत में हैं। दोनों रचनाओं के लेखकों का नाम ज्ञात नहीं है। जैन-गद्य-साहित्य में वचनिका-शैली के यह प्रथम प्रयोग हैं।

गद्य के उदाहरण—

१—मोगइ माइस कीधउ मइउ पवाडउ पमीचउ बंधी छोडावी तउ इग्यारम तणउ पारणउ कीधउ। जिन शासन रिघ मुक्कार। शाखा अविचल कोट कल्क घन मवल। चूहड़िया मास अगमाल वीरम चउंडा रिणमल कुलमंडण श्री याधराणो नंदण। ... प्रतापी प्रचंड। आमण अखंड। राजाधिराज सारइ सर्व काज। —जिन समुद्रसूरि की वचनिका

२—"इसी परि श्री कर्ण दूदा आगलि गाइ हरखित थाई रुदि बुद्धि ठपाई कद्दवा लागउ लाई, अम्हे वाइरा न लाई राखि अम्हां-सर्व सगाई। आचरउ उरही आपि रिस वर न संतापि अम्ह का मोटा कर थापि सकल श्रावक नी भारिति कापि। —शान्तिसागर सूरि की वचनिका

४—व्याकरण गद्य

इस काल में व्याकरण ग्रंथ लिखे गये जिनमें तीन अभी तक उपलब्ध हो सके हैं—१-कुलमंडन कृत "मुग्धावबोध औक्तिक" (लेखन

समय सं० १४४) २—श्री सोमप्रभ सूरि कृत "मौक्तिक" ३-श्री तिलक कृत "उक्ति संग्रह" ।

१—मुग्धावबोध मौक्तिक[1]—

श्री कुलमंडन सूरि तपागच्छ श्री देवसुन्दर सूरि के शिष्य थे । इनका जन्म सं० १४०६ में, व्रत ग्रहण सं० १४१७ में, सूरि पद सं० १४४२ तथा स्वर्गवास सं० १४५५ में हुआ ।[2] इनकी रचनाओं में "मुग्धावबोध मौक्तिक अधिक प्रसिद्ध है इसमें राजस्थानी के माध्यम से संस्कृत व्याकरण को समझाने का प्रयत्न किया गया है । इस काल की भाषा के स्वरूप को समझने के लिए इससे अधिक सहायता मिलती है ।

संग्रामसिंह के "बाल शिक्षा' (सं १३३६) के उपरान्त यह राजस्थानी का महत्वपूर्ण व्याकरण-ग्रन्थ है । इसमें "बाल-शिक्षा की अपेक्षा अधिक विस्तार एवं विवेचना के साथ व्याख्या की गई है ।

गद्य का उदाहरण—

छ कारक, सातमउ सम्बन्धु, कर्त्ता कर्मु, करणु सम्प्रदानु अपादानु अधिकरणु, सम्बन्धु । जु करइ सु कर्त्ता ज कीजइ तं कर्मु । जायाकरी क्रिया कीजइ तं करणु । जेह दवावणी मांडा यं रूपइ कांइ । भरीइ कांइ तं कारकु सम्प्रदान संज्ञकु हुइ । जेह तउ आपाय विश्लेषु हुइ जेह तउ भय हुइ, जेह तउ आदान ग्रहणु हुइ तं कारकु अपादान संज्ञकु हुइ । जेह कन्हइ, जेह माझि, जेह पास जेह तणउ जेह तणी, जेह तणा जेह रहइं इत्यार्थे सम्बन्धु । गामि पसाइ, क्षेत्रि वनि पर्वति माझि बाहरि इत्यार्थे अधिकरणु ।

२—मौक्तिक—

इसके रचयिता सद्गुरु श्री सोमप्रभ सूरि तपागच्छीय जैनाचार्य थे । स्वर्गीय देसाई ने इनका जन्म सं १३१ दीक्षा ग्रहण सं १३२१ सूरि पद प्राप्ति सं० १३३२ और स्वर्गवास सं १३७३ में माना है ।[3] किन्तु

१—प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ पृ १७२
२—जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास टि० १४ ४४२ ४४३
३—देसाई जैन गूर्जर कविओ भाग २ पृ० ७१७

इनका व्याकरण ग्रन्थ 'मौक्तिक' पंद्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध की रचना है[1] अतः इनका समय पंद्रहवीं शताब्दी ही सिद्ध होता है।

गद्य का उदाहरण—

'पउ करउ तउ करइ लेइ इत्यादि हउ करउ लिउ दिउ इत्यादि तथा करावइ सिखावइ यथा लभावइ लंभयति संपावइ संपादयति उतारउ उत्तारयति इउ बीजइ तीग बीजइ यथा देवदत्ति मइ हुउ मइ सुइ मइ यथा सेहि आवश्यक पडिउ, पेउ सर्वहि रात्रि जागीइ तथा करतउ लेतउ देतउ इत्यादि तथा गुरि मणु जाणिउ चेलु व्याकरण पढउ ......।'

३—उक्ति संग्रह—

इस व्याकरण ग्रन्थ के लेखक श्री तिलक, देवभद्र के शिष्य थे। इनका उक्ति संग्रह उक्त दोनों व्याकरणों से मिलता जुलता है श्री तिलक के विषय में और अधिक ज्ञात नहीं है।

उपाध्यायु मइ पढावइ, देवदत्ति मनि पाणिउ पावइ। पापियउ सांपु मारइ। .... देवदत्तु पढीयइ देवदत्त करइ।

४—वैज्ञानिक-गद्य

वैज्ञानिक गद्य की दो रचनायें इस काल में प्राप्त होती हैं। इन दोनों का विषय गणित से सम्बन्धित है। १—गणित सार[2] २—गणित पंचविंशतिका बालावबोध।[3]

१—गणित सार :—

इसकी रचना मूल रूप में श्री राजकीर्ति मिश्र ने सं० १४४२ में अणहिलपुर में की। श्रीधर नामक ज्योतिषाचार्य ने इस संस्कृत कृति का

....

१—श्री डी सी दलाल पाचवी गुजराती साहित्य परिषद की रिपोर्ट पृ० ३६

२—श्री मोगीलाल ज सांडेसराना १४ वें गुजराती साहित्य सम्मेलन की रिपोर्ट, इतिहास विभाग पृ १६-२८।

३—हस्तप्रति अभय जैन पुस्तकालय, बीकानेर में विद्यमान

राजस्थानी में अनुवाद किया। अनुवादक एवं मूल लेखक का परिचय नहीं मिलता। इस छोटी सी रचना में मध्यकाल में गुजरात में व्यवहृत नाप तौल के उपकरण एवं सिक्कों का उल्लेख महत्वपूर्ण है।

गद्य का उदाहरण–

"किंतु जु परमेश्वरु, कैलास शिषरु मंडनु, पारवती हृदय रमणु, विश्वनाथु। जिणि विश्व नीपजाविउं तसु नमस्कारु करीउ। बालावबोधनार्थु, बाल मणीहिं अज्ञान टीइं अवबोध आपिवा तणउ अर्थि आत्मीय परोपकृतपणु श्रीधराचार्यु गणितु प्रकटीइतु।

२–गणित पंचविंशतिका बालावबोध–

यह इसी नाम के संस्कृत ग्रन्थ की टीका है। इसकी रचना शंभूदास मन्त्री ने सं० १४७५ में की थी। टीका के साथ साथ संस्कृत श्लोक भी इसमें दिये हुए हैं।

गद्य का उदाहरण–

'मकर संक्रांति थकी घस्त माणि दिन एकत्र करी त्रिगुणा कीजइ। पछइ पनरसइ त्रीसां मांहि घातीइ ऊनइ सार्ठि भाग दीजइ दिनमान लाभइ।

विकास काल की इन दो शताब्दियों में राजस्थानी गद्य की रूपरेखा ही बदल गई। अब उसका मार्ग निश्चित हो गया। चौदहवीं शताब्दी में केवल स्फुट टिप्पणियां लिखी गई थीं किन्तु पंद्रहवीं शताब्दी के आरम्भ से ही राजस्थानी गद्य में ग्रन्थ निर्माण की योजना होने लगी। जैन आचार्यों ने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व से इस कार्य में सक्रिय सहयोग दिया।

गद्य के विकास की तीन दिशायें इस काल में मिलती हैं—१–भाषा के क्षेत्र में २ शैली के क्षेत्र में ३–विषय के क्षेत्र में।

प्रवास काल की भाषा स्वाभाविक रूप से घुटनों चलते [illegible] की भांति भी जो उठने के प्रयास में कई बार गिरता है। इनन् [illegible] पतन इस काल की भाषा में हुए और [illegible] गई। शब्द-चयन और वाक्य-विन्यास [illegible] भाषा में प्रवाह एवं रोचकता आई।

टिप्पणी शैली का इस काल में सर्वथा अभाव मिलता है। बालावबोध की टीकात्मक शैली अधिक अपनाई गई। इस शैली की दो प्रमुख विशेषतायें हैं — १–सरल से सरल भाषा में अधिक से अधिक विचारों की अभिव्यंजना करना २–दृष्टान्त रूप में कथाओं का प्रयोग इसके अतिरिक्त चारणी गद्य की वचनिका शैली, व्याकरण शैली एवं ऐतिहासिक विवरणात्मक-शैली के प्रयोग हुए।

विषय के क्षेत्र में भी अभिवृद्धि हुई। जैन धार्मिक गद्य के अतिरिक्त चारणी ऐतिहासिक गणित तथा व्याकरण सम्बन्धी विषयों पर भी गद्य लिखा गया। चरित्र चित्रण, प्रकृति वर्णन युद्ध की तैयारियाँ और युद्ध, विवाह प्रेम आदि कई पक्षों में प्रौढ़ गद्य का प्रयोग हुआ। इस प्रकार विषय में विस्तार एवं विषय में अनेक रूपता आई।

चतुर्थ—प्रकरण

विकसित काल

१६०० से १९५० तक

राजस्थानी गद्य का विकास १

विकसित काल

राजनैतिक-क्षेत्र में इस समय तक शान्ति हो गई थी। मुसलमान शासक अपनी हिन्दू जनता को प्रसन्न रखने का प्रयास करने लगे थे। अब सामन्त-काल का संघर्ष समाप्त प्राय: हो चुका था। हिन्दू-मुसलमानों के सामाजिक संपर्क से दोनों संस्कृतियों में आदान-प्रदान के भाव जागृत हो रहे थे। लोक-मानस भक्ति की ओर झुक रहा था।

इस प्रकार के अनुकूल वातावरण में राजस्थानी गद्य का विकास भी हुआ। प्राय: सभी विषयों के लिये इसका प्रयोग किया गया। पिछले काल में जिन पांच धाराओं में गद्य का प्रवाह बह चला था अब वे धाराएँ गहरी और विस्तृत हो चलीं।

१—ऐतिहासिक-गद्य-साहित्य

सत्रहवीं शताब्दी के पूर्व का राजस्थानी ऐतिहासिक-गद्य बहुत ही कम मिलता है। केवल जैनों ने इस विषय पर लिखने का प्रयास किया था पर वह परिपाटी नहीं चल सकी। सत्रहवीं शताब्दी के उपरान्त ऐतिहासिक गद्य लिखा गया और बहुत लिखा गया। इसके दो विभाग किये जा सकते हैं १—जैन-ऐतिहासिक-गद्य २—जैनेतर-ऐतिहासिक गद्य। जैनेतर रचनाओं का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण ऐतिहासिक बातें तथा ख्यात-साहित्य है। जैन ऐतिहासिक-गद्य का क्षेत्र भी इस काल में विस्तृत हुआ।

१—जैन-ऐतिहासिक-गद्य-

जैन-ऐतिहासिक-गद्य ५ रूपों में प्राप्त है १—वंशावली २—पट्टावली ३—ऐतिहासिक टिप्पण ४—दफ्तर बही (डायरी) ५—उत्पत्ति ग्रन्थ।

वंशावली :—

मनुष्य की जीवित रहने प्रवृत्ति स्वाभाविक होती है। उसका जीवन सीमित होते हुए भी वह उसे असीम बनाना चाहता है। इसकी तुष्टि वह दो प्रकार से करता है, पहली संतान रूप में दूसरी इतिहास रूप में। स्वयं

मर्त्य होकर भी वह संतान या वंश परम्परा के रूप में अनन्त काल तक जीवित रहने का अभिलाषी रहता है। इसीलिये सन्तान काम्य होती है। इतिहास प्रसिद्ध होने के लिए वह असाधारण कार्य करता है। इन दोनों का एक समन्वित रूप भी है। जिसका उदाहरण "वंशावली" में मिलता है। अन्य जातियों की भांति जैनियों में भी प्राचीनकाल से वंश-विवरण लिखा जाता रहा है, कुलगुरु और भाट इस काम को करते रहे हैं। पीढ़ियों के नामों के साथ-साथ प्रत्येक पीढ़ी का संक्षिप्त इतिहास इनमें दिया जाता है। आज भी यह परम्परा अवरुद्ध नहीं हो पाई है। जैन श्रावकों की कई वंशावलियां आज इन लेखकों के पास प्राप्त हो सकती हैं। इन वंशावलियों के प्रमुख विषय निम्नांकित होते हैं —

१—श्रावकों के वंशों और पुरुषों के नाम तथा विवरण और उनके महत्वपूर्ण कार्य।

२—कौन वंश कहां से कहां फैला।

३—वंशों की महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख

४—कहीं कहीं वंशजों की विस्तृत नामावली

५—वंशजों के स्थान का पूर्ण पता आदि

"ओसवाल वंशावली"[1] "मुहतों बछावतां री वंशावली"[2] 'श्रीमाल वंशावली'[3] ये तीन वंशावलियां उदाहरण के लिये देखी जा सकती हैं। इन वंशावलियों में बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाता है—

गद्य का उदाहरण—

"करमचन्द सांगावत रा प्र० बेटा २ भागचन्द १ लखमी चन्द भागचन्द रो बेटा १ मनोहरदास १ राजा सूरजसिंघ मुहतो ऊपरि कोपिया तिवारे फौज विदा कीवी मारण १० मेली साथ पर दोला फिरीयो। भागचन्द पोतीया था लखमीचन्द अने मनोहरदास दरबार गया था। भागचन्द जी मूवा जाणीया तिवारे बहु मेवाड़ी जी मामिम कीयो राज ऊपरि फौज आई।— —मुहता बछावतां री वंशावली

१—अ० जै पुस्तकालय बीकानेर में प्राप्त

२—अ जै पु० बीकानेर में प्राप्त

३—अ-जैनाचार्य श्री आत्मानन्द जन्म शताब्दी स्मारक ग्रं पृ २ ४

आ-आत्माराम शताब्दी-ग्र व इ-जैन-साहित्य-संशोधक खंड १ अंक ४

४—युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि

पट्टावली—

पट्टावली लिखने की परिपाटी भी प्राचीन है। संस्कृत एवं प्राकृत में भी इनके लिखन की प्रथा प्रचलित थी। अतः कालान्तर में भाषा (राजस्थानी) में भी ये लिखी जाने लगी। इनके विषय निम्नलिखित हैं—

१—गच्छोत्पत्ति का वर्णन
२—एक गच्छ से निकले अनेक उपगच्छ तथा उनकी शाखा प्रशाखाओं का उल्लेख
३—विविध गच्छों के पट्टधर आचार्यों के जन्म दीक्षा आचार्य पद-प्राप्ति एवं मृत्यु आदि के संवत्
४—उनके द्वारा किये गये विहारों का वर्णन
५—उनके प्रमुख शिष्यों एवं उनके द्वारा लिखे गये ग्रंथों का विवरण
६—उनके चमत्कारों का उल्लेख
७—उनके समय के प्रमुख श्रावक उनके द्वारा किये गये धार्मिक-उत्सव आदि।

इन पट्टावलियों का ऐतिहासिक महत्व है। जिन आचार्यों के जीवन काल में इनका निर्माण होता था उन तक का पूर्ण विवरण इनमें मिल जाता है। इसके साथ साथ आनुषंगिक रूप से तत्कालीन इतिहास की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं पर भी इनके द्वारा प्रकाश पड़ता है। प्राचीन इतिहास की अनेक गुत्थियों को सुलझाने में ये पट्टावलियां सहायक हो सकती हैं।

ये सभी पट्टावलियां प्रायः एक ही शैली में लिखी गई हैं। इनमें कुछ बहुत संक्षिप्त हैं और कुछ बहुत विस्तृत। एक ही गच्छ की एक से अधिक पट्टावलियां मिलती हैं जिनमें प्रायः एकसा ही विषय रहता है।

उदाहरण के लिये विस्तार से लिखी गई ४ पट्टावलियों को लिया जा सकता है १-कडुआ मत पट्टावली[1] २-नागोरी लुंकागच्छीय पट्टावली[2] ३-खरतरगच्छ (खरतर) पट्टावली[3] ४-पिप्पलक शाखा पट्टावली।[4]

१—अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर
२—वहीं
३—वहीं
४—वहीं।

इनमें प्रथम पट्टावली सबसे प्राचीन है। इसकी रचना सं० १६८४ में हुई। इसमें कडुआ मत गच्छ के आचार्यों का विवरण है। प्रारम्भ में युग प्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि को नमस्कार किया गया है। दूसरी में नागौरी लुंकागच्छ के पट्टधर आचार्यों का इतिहास है। तीसरी पट्टावली में सं० १८८१ तक होने वाले ६० जैन आचार्यों का उल्लेख है। अन्तिम आचार्य श्री जिन उदयसूरि हैं। चौथी रचना गुर्जर ग्राम वासी गौतम गोत्रीय वसुभूति ब्राह्मण से प्रारम्भ होती है इसका रचना काल संवत् १८८ है।

इन पट्टावलियों का गद्य वंशावलियों के गद्य की भाँति जन-प्रचलित भाषा का उदाहरण है।

गद्य का उदाहरण—

१—"परम गुरु निर्भय प्रधान पंचाशत्तम पद धारिणी श्री जिनचन्द्र सूरिभ्यो नमः। कडुआमतनी भाग गच्छनी वार्ता पट्टी बद्ध यथा श्रुत लिखीइ छइ। नडोलाइ ग्रामे नागर ज्ञातीय वृद्ध शाखायां साह श्री ५ कान्हजी भार्या बाई कनकादे सं० १४६४ वर्षे पुत्र प्रसूत नामतः साह कडुआ बाल्यावस्थायाम् लोक दिन माहिं प्रमुख सूत्रो भणी चतुर्दशाब्द आश्रमा वर्षे श्री हरिहर ना पद गंध भरत केवल-ज्ञानादि विनान्तर पश्चात्तिक भाव लिख्यो।"

—कडुआ मत पट्टावली सं० १६८४

२—"तत्पट्टे श्री शिवचन्द सूरि सं० १८२१ हुवा शिष्य शिथिलाचारी स्थान पकड़ो ने बैठ्या रह्या। साधु रा व्यवहार मात्र सु रहित हुवा। सूत्र सिद्धान्त बांच नहीं राम नाम बांचण में लागा। त पछै अकस्मात शूल रोगे करी मृत्यु पाम्यो। जिणा र शिष्य केवलचन्द जी १ माणकचन्द जी २ शेष हुआ। जिणा माह रूपचन्द जी तो रूपसजी भाग अमल जरदो खावै। मर माणकचन्द जी जती रो आचार व्यवहार राख्यो।"

—नागोरी लुंकागच्छीय पट्टावली

३—" तत्पट्टे श्री जिनपद्म सूरि सं० १३९ वर्षे श्री देराउरे पट्टाभिषेक वाला धवल सरस्वती परात्पर महाप्रधान थया।

तत्पट्टे श्री जिनलब्धि सूरि सं० १४० वर्ष आषाढ़ वदि ६ दिने पट्टाभिषेक थया। तत्पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरि सं० १४०६ वर्षे माह सुदी १० दिन पट्टाभिषेक थया।

—बगड़गच्छ पट्टावली

४—विक्रमपत्तन वास्तिग साहवदेवि नन्दन। सं० ११३२ जन्म, सं० ११४१ दीक्षा, सं० ११६९ वैशाख वदि ६ दिनि श्री देवभद्राचार्य सूरिपद दीधउ। पट्टधर श्री जिनदत्तसूरि ज्योतिर्विद्या सम्पन्न विक्रमपुरी नगरि मारी निवर्त्तावी ५०० शिष्य दीक्षा दायक।

—पिप्पलक शाखा पट्टावली सं० १८९२

पट्टावलियां ख्यातों की अपेक्षा अधिक ऐतिहासिक हैं। कहीं कहीं आचार्यों के प्रभुत्व एवं चमत्कार को दिखाने के लिए अलौकिक एवं अलौकिक तत्वों का समावेश अवश्य मिलता है। इनको निकाल देने से यह शुद्ध इतिहास का अंग मानी जा सकती है।

३—दफ्तर बही (डायरी)

स्मृति-संचय के रूप में लिखी गई कुछ बहियें ऐसी भी मिलती हैं जिनमें रोजनामचे की भांति दैनिक व्यापार का संग्रह रहता है। इनमें विषय या घटनाक्रम नहीं होता। यह डायरी शैली में लिखी गई है। इस प्रकार की बहियें सामयिक उपयोगिता रखने के कारण अधिकांश रद्दी की टोकरी में डाल दी गई। उदाहरण के लिए अभय-जैन-पुस्तकालय में विद्यमान एक १२ पत्र की दफ्तर बही ली जा सकती है। इसमें सं० १७९१ से सं १९०४ तक विभिन्न समयों में विभिन्न व्यक्तियों द्वारा लिखी गई घटनाओं का उल्लेख है। जैसे:—

'संवत् १८ ६ वर्षे फाल्गुन वदि ११ इष्ट घट्य ११।७५ तदा गुलाब चंद रे शिष्य विजयचंद री दीक्षा दीधा रो म म रामचन्द्र चंद्रिम मंडार वासक्षेप कीधो।

४—ऐतिहासिक टिप्पण

जैन विद्वानों द्वारा संगृहीत ऐतिहासिक टिप्पणियों के संग्रह भी मिलते हैं। इनमें प्रकीर्णक ऐतिहासिक बातों का संग्रह होता है। ये संग्रह बांकीदास की ख्यात की शैली के हैं। उदाहरण के लिए आचार्य जिनहरिसागर सूरि के शास्त्र-संग्रह में एक पुराने गुटके[1] में संगृहीत

१—गुटका मुनि विनयसागर भंडार कोटा में विद्यमान

टिप्पण को लीजिए। इसके मुख्य विषय इस प्रकार हैं।—

१—पुराने शहरों की स्थापना का समय निर्देशन।
२—राठोड़ों से पूर्व मारवाड़ के प्रादेशिक भूमिपति।
३—नवकोट मारवाड़ का भौगोलिक परिचय।
४—राजपूतों की भिन्न भिन्न शाखाओं की नामावली।
५—उदयपुर के राज-वंश की सूची इत्यादि

गद्य का उदाहरण—

"सं० १६१४ चैत वदि ६ निबाब कासम खान जैतारण मारी राठौड़ रतनसिंघ सींवावत काम आयो। कोट माँहि हजरी हो। कोट तो ऊदा सूजावत करायो छै

५—उत्पत्ति-ग्रंथ

१—खंचसमतोत्पत्ति[1] २—रिपमतोत्पत्ति[2] इन दोनों उत्पत्ति ग्रंथों में मत विशेष की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है। मत की उत्पत्ति किस समय हुई कौन उसके आदि प्रवर्तक थे, उससे पूर्व वह मत किस अवस्था में था आदि का उल्लेख इन ग्रंथों में है।

१—इस प्रति अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान
२—इस प्रति अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान

१ जैनेतर ऐतिहासिक गद्य

ख्यात साहित्य

"ख्यात" का प्रारम्भिक रूप–

'ख्यात' वंशावली का विकसित रूप है। वंशावली लिखने की परम्परा पौराणिक काल से मिलती है।[1] यह परम्परा आज भी उसी प्रकार चली आती है। जब से पश्चिमी भारत में राजपूत-शक्ति का उदय हुआ, प्रशस्ति-लेखन के रूप में यह परिपाटी चलती रही। ईसा की चौदहवीं शताब्दी से यह प्रशस्ति-लेखन प्रारम्भ हुआ।[2] मालवा के परमारों की उदयपुर प्रशस्ति,[3] जोधपुर-प्रशस्ति[4] (प्रतिहारों की) गहलोतों की आबू प्रशस्ति[5] इसके प्रारम्भिक उदाहरण हैं। यह प्रशस्तियां भट्ट कहलाने वाले संस्कृत के विद्वान ब्राह्मण कवियों के द्वारा लिखी जाती थीं। ईसा की चौदहवीं-शताब्दी के उपरान्त संस्कृत के स्थान पर तत्कालीन लोक-भाषा में ये प्रशस्तियां लिखी जाने लगीं। फलस्वरूप भट्ट अपने संस्कृत ज्ञान को भूलने लगे। भाषा का ज्ञान प्राप्त करना उनके लिए आवश्यक हो गया।

ख्यातों का प्रारम्भ—

इस प्रकार प्रशस्ति और वंशावलियों के रूप में ख्यातों का प्रारम्भिक रूप मिलता है जो धीरे धीरे विस्तृत होता गया। सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अकबर के समय में अबुल फज़ल ने "आईने-अकबरी" की

१—टैसीटोरी ज० पी० ए० एस० बी० (न्यू सीरीज), खंड १५, नं० १ सन १९१९ पृ०

२—टैसीटोरी वही पृ० ७१

३—एपीग्राफिया इंडिका खंड १ पृ० २३३

४—जरनल एण्ड प्रोसीडिंग्स एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल सन् १८९४ पृ० १-३

५—इंडियन एन्टीक्वेरी खंड ११ सं० १८८५ पृ० ३४

रचना की इसके उपरान्त देशी राज्यों में भी ख्यातों का लिखा जाना प्रारम्भ हुआ[1]। अकबर ने अपने शासनारूढ़ होने के ५ वर्ष उपरान्त सन् १५६४ में एक इतिहास विभाग की स्थापना की[2]। तत्कालीन राजपूत-नरेश अकबर की इस इतिहास प्रियता से प्रभावित हुए। उन्होंने भी अपने अपने राज्यों में इतिहास लिखने के विभागों की स्थापना की। इससे पूर्व विस्तृत इतिहास लिखने की परिपाटी नहीं के बराबर थी।[3] अकबर की इच्छा या प्रेरणा से, इस प्रकार, देशी राज्यों में इतिहास लिखा जाना प्रारम्भ हुआ। इस इतिहास लेखन को प्रोत्साहन देने वाले दो प्रमुख कारण थे –१ अकबर के दरबार में राजस्थान के कुछ राजाओं को छोड़कर प्रायः सभी राजा रहते थे। अपने गौरव को बनाये रखने तथा दूसरों को नीचा दिखाने के लिए ये राजा अपने इतिहास को अतिशयोक्तियों से सजाकर प्रदर्शित करते थे। यह इतिहास इनकी मान मर्यादा का रक्षक समझा जाता था। २–अकबर के सम्मुख प्रतिष्ठा पाने के दृष्टिकोण से भी इन राजाओं ने अपने इतिहास संकलित किए। यह इतिहास ही ख्यात के नाम से प्रसिद्ध हुए।

ख्यातों के प्रकार—

प्राप्त ख्यातों को प्रधान रूप से २ भागों में विभक्त किया जा सकता है १–राजकीय ख्यातें—इसके अन्तर्गत वे ख्यातें आती हैं जो राजाश्रय में राजकीय विभागों में तैयार करवाई गईं। २–व्यक्तिगत ख्यातें—ये वे ख्यातें हैं जिनकी रचना स्वतन्त्र व्यक्तियों ने अपनी इतिहास प्रियता के कारण की।

१—राजकीय ख्यातें

राजकीय ख्यातों के लेखक राज-कर्मचारी मुत्सद्दी पंचोली थे। ये ख्यातें पक्षपात से भरी हुई हैं तथा इनमें असत्य घटनाओं की भरमार है।

१—ओझा गौ ही —नैणसी की ख्यात भाग २ पृ १ (भूमिका) जगदीश सिंह गहलोत राजपूताने का इतिहास पृ २६

२—टैसीटोरी बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल सोसाइटी आफ राजपूताना रिपोर्ट सन् १९१५ पृ ७

३—ओझा गौ ही —जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम भाग भूमिका पृ ५

पुरानी ख्यातों में बहुत कम ख्यातें उपलब्ध हैं क्योंकि १—अकबर और उसके उपरान्त लगभग एक शताब्दी तक मुत्सद्दी ख्यात लेखन का कार्य करते रहे और ये ख्यातें उन्हीं लोगों की व्यक्तिगत सम्पत्ति बन गईं २—राजपूत नरेशों ने इन लिखी जान वाली अमूल्य रचनाओं को सुरक्षित रखने की ओर ध्यान नहीं दिया फलतः ये ख्यातें राज्य के अधिकार से बाहर जाकर या तो नष्ट हो गईं या लेखकों की वैयक्तिक संपत्ति बन जाने के कारण प्रकाश में न आ सकीं। आज भी इन लेखकों के वंशज इन ख्यातों को प्रकाश में लाते हुए झिझकते हैं[1]।

मबसे प्राचीन उपलब्ध ख्यात—

सबसे प्राचीन उपलब्ध ख्यात "राठौड़ां री वंशावली – सीहै जी सू कल्याण मल जी ताईं"[2] है। इस ख्यात की रचना बीकानेर नरेश राव कल्याण मल के शासन के अन्तिम वर्षों में या उनकी मृत्यु (सं० १६३०) के ठीक उपरान्त हुई। क्योंकि इसमें राव कल्याणमल जी तक का ही विवरण है। अतः अकबर के समय की यह प्रथम ख्यात है। इसमें राठौड़ों के इतिहास की राव सीहो से राव कल्याणमल जी तक की प्रमुख घटनायें तथा वंशावली का उल्लेख है। प्रारम्भिक पंक्तियों में सीहो जी तक राठौड़ों की उत्पत्ति दिखाई गई है। गद्य-शैली सरल है।

गद्य का उदाहरण–

पछै बीरम जी की बहर भटियाणि जू बडै जी नू मेरिह ने सती हुई चोंपड़े जी नू घरती मू सोंपि ने ताहरा चारण अल्हो लै ने खसाऊ गया न गोगादेजी घरा वेवराम कन्हा रहा। पछै गोगादेजी मोटा हुआ। ताहरा आइया री हरो ऋणकियो ने आइयो धीर रे पूगल भाटी राणकदे रे परणीज गयो हुतो ने बांभिया गोगादेजी माय करि ने ओइयर पले ऊपरि गया सु मर्जा मूयतो। तेथ म रहै चोसी ठोड़ रहो पछै रुना बास गोगादेजी गया ताहरा माड वाहो सु रखे री आघाई चीकरी मूता हुवा ताह नू वाम्हो सु बाहरा रा ऊभया बास मांथा वाढि ने बड मारिया।

1—ज० पी० ए० एस बी० (न्यू सीरीज) खण्ड १५ सन् १९१९ पृ० ७८
2—ए डिस्क्रिप्टिव केटेलोग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल सर्वे आफ राजस्थान रिपोर्ट सन् १९१९ पृ २१ मेन्यु० न० २। अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय में विद्यमान

२—बीकानेर रै राठौड़ां री बात तथा वंसावली[1]

इस हस्त प्रति में तीन संग्रह हैं १—राठौड़ां री बात राव सीहै जी सू राजा रायसिंघ जी ताई २—जोधपुर रै राठौड़ राजावां री वंसावली ३—बीकानेर रै राठौड़ राजावां री वंसावली। इनमें अन्तिम दो में तो केवल वंशावलियां हैं। प्रथम में राव सीहै जी से राव कल्याणमल के पुत्र राजा रायसिंघ जी तक का वर्णन है। यह ख्यात रायसिंघ जी के शासन काल में (सं १६२८ से सं० १६६८ तक) लिखी गई अतः सत्रहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध इसका रचना काल माना जा सकता है।

गद्य का उदाहरण—

सीहै जी पेढ गाव आय नै रहीया। पछै श्री द्वारका जी री जात नु हालीया। बीच पाटण सोलंकी मूलराज री रजवाट, उठै डेरा कीया सु मूलराज चावोड़ां रो दोहितो चावोडां रै माटी लाखे फुलाणी सु वैर सु लाखे पेटे करण नै निबला पान दीया तै सु राजरो भणो मूलराज हुवो। सु मूलराज सीहै जी नु मिलीयो कह्यो मारे लाखे सु वैर छे, थे मारी मदद करो ।

३—बीकानेर री ख्यात-महाराजा सुजाणसिंघ जी सू महाराजा गजसिंघ जी ताई[2]

इस ख्यात में महाराजा सुजानसिंह जी से महाराजा गजसिंह (सं १७५७ से १८४४ तक) का विवरण है। बीकानेर नरेश महाराजा सुजानसिंह (स १७५५–१७९२) महाराजा जोरावरसिंह (सं १७९३–१८०१) तथा महाराजा गजसिंह (सं स १८४४) के शासनकाल का वर्णन जोधपुर से इनके द्वारा किये गये युद्ध आदि इसके वर्ण्य विषय हैं।

१—डिस्क्रप्टिव केटेलोग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स इ म अनूप० सं०-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान। मेन्यु नं० ४

२—ए डिस्क्रप्टिव कन्ट्रोल आफ बार्डिक एण्ड हिस्टारिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स भाग १ मोज क्रोनीकल्स भाग २ बीकानेर स्टेट पृ० २६

गद्य का उदाहरण—

"माहरी हाडा री सु बुध थी नै पालक था नै भाग आरोगतां तरी तरंगा उठती कपु माथ विचार कियो नहीं दीठा सु सं० १८८१ मिति आसाढ़ सुद १२ रात रा मुनां नै छिद्र माय चूक कियो सु हुणहार रा कारण पुरे मर्दां पहरपाणों हुवो ... ..."

जोधपुर रा राठौड़ां री ख्यात[1]

यह जोधपुर के राठौड़ वंशी नरेशों का विवरणात्मक इतिहास है। इसमें राठौड़ों की उत्पत्ति से महाराजा मानसिंह तक का विवरण मिलता है। इसके चार वृहद् भागों में प्रथम अप्राप्य है। महाराजा अजीतसिंह, महाराजा अभयसिंह, महाराजा रायसिंह, महाराजा बख्तसिंह, महाराजा विजयसिंह से महाराजा मानसिंह तक के जीवन वृत्त, शासन, रानियां आदि का विवरण दिया गया है। इसमें राव जोधा से पूर्व के दिये हुये सभी संवत अशुद्ध हैं आगे के राजाओं के सं० भी कहीं कहीं दूसरी ख्यातों से मेल नहीं खाते।[2]

गद्य का उदाहरण—

"जोधपुर महाराज अजीतसिंह जी स्वर्गलोक हुवा जोरा हुवा महाराज अभैसिंह जी री सिरी न बखतसिंह जी पछे महाराज स्वर्गलोक हुवां री दरबार अभैसिंह जी न सिरी रा दिसा [illegible] पाटवी तरै अभैसिंह जी संपाड़ा [illegible] जी पधारिया। सं० १७८१ रा सांवण वद ८ सुरत राजतिलक विराजिया

४ उदयपुर रा ख्यात[3]

इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में मेवाड़ के राजाओं की वंश परम्परा का उल्लेख किया गया है। १ [illegible] में राजा [illegible] तक प्रथम राजाओं के नाम मात्र का

... ...

१—[illegible] रिपोर्ट आन राजस्थान [illegible] भाग १ जोधपुर [illegible] पृ० ७ ग्रन्थ नं० ३ ४

२—आसोपा जोधपुर का इतिहास प्रथम खण्ड भूमिका पृ० ४

३—ह० प्र० अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान

उल्लेख है इसके पश्चात प्रत्येक राजा पर संक्षिप्त टिप्पणियां दी गई हैं। कुल १६६ राजाओं के नाम हैं। अन्तिम राजा रायसिंह हैं। टिप्पणियों में जन्म, गज, वाद्ययंत्र, रानियों आदि का विवरण है। राजा रायसिंह का राज्यारोहण संवत् १६१० दिया हुआ है इससे स्पष्ट है कि यह ख्यात बीसवीं शताब्दी की रचना है।

गद्य का उदाहरण—

'रावल श्री वैरसिंघ राणी हाडी पुरबाई रा पुत्र वास चत्रकोट, सेन जगत ७०० हस्ती १४ ० पदातिथ ४००० पजत्र ३ राजा बड़ा परवत्र सेवा करत समत १ २६ राजबैठो मारवाड़रा धणी राव महाराज श्री पुष प्रीत पोत्र संमर राज लोक राणी १६ खवास २ पुत्र ११ आयु वर्ष ३ मा ६"

६—जोधपुर रा महाराजा मानसिंघ जी री तथा तखतसिंघ जी री ख्यात[1]

इस ख्यात में महाराजा मानसिंहजी के अन्तिम ५ वर्ष तथा महाराजा तखतसिंह जी का सं १६० से १६२१ तक का विवरण मिलता है। श्री भीमनाथ द्वारा उपस्थित की गई कठिनाइयों, महाराजा मानसिंह की मृत्यु, महाराजा तखतसिंह का राज्यारोहण [illegible] तत्कालीन जीवन की झांकियां इसके विषय हैं।

स्फुट-ख्यातें

इन ख्यातों के अतिरिक्त कुछ ख्यातें स्फुट गुटकों में यत्र तत्र संग्रहीत हैं। 'किशनगढ़ की ख्यात[1]" जोधपुर के महाराजा मानसिंह के समय में लिखी गई। यह महाराजा किशनसिंह के जन्म तथा उनके द्वारा भासोप की जागीर प्राप्ति से प्रारम्भ होती है। किशनगढ़ के इतिहास के लिए यह ख्यात उपयोगी है।[2]

"जोधपुर की ख्यात"[3] में रावसीहो जी से महाराजा जसवंत सिंह जी की मृत्यु तक मारवाड़ के राठौड़ों का इतिहास है इसमें मंडोवर का विस्तृत विवरण है।[4]

"अजित विलास"[5] या महाराजा अजीतसिंह जी की ख्यात में

....

१—टैसीटोरी ए डिस्क्रप्टिव केटलाग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स सेक्शन १ प्रोज क्रोनीकल्स भाग १ जोधपुर स्टेट पृ० १६ सम्पु नं० १०

२—गद्य का उदाहरण—

'मोटा राजा उदेसिंघ जी रा बेटा कीसनसिंघ जी कछवाहा रा भाणेज राणी पनरंगदे रा पेट रा सं १५३६ रा जेठ सद २ रो जनम। मोटा राजा उदेसिंघ जी सं० १६४१ भासोप कीसनसिंघ ने पटे दीवी। .. ...."

३—टैसीटोरी ए डिस्क्रप्टिव केटेलोग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स सेक्सन १ प्रोज क्रोनीकल्स भाग १ जोधपुर स्टेट पृ० १७

४—गद्य का उदाहरण—

'आद सहर मंडोवर था। सासत्र मे पदमपुराण मे हुए समत नै मंडोवर सुमर रो बेटा कहे है तीणरो महातम घणो कहे छे मडलेश्वर महादेव नंदी नागदरी सुरजकुंड रा घणा महातम छे।

५—टैसीटोरी डिस्क्रप्टिव केटेलोग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स सेक्सन १ प्रोज क्रोनीकल्स भाग १ जोधपुर स्टेट पृ० १८

जोधपुर नरेश महाराजा अजीतसिंह के शासन का वृत्तान्त है। यह सेतराम और सीहा के कन्नोज आगमन से प्रारम्भ होता है।[1]

"जोधपुर की ख्यात"[2] (महाराजा अभयसिंह जी से महाराजा मानसिंह तक) इसमें जोधपुर नरेश सर्व श्री अभयसिंह, रामसिंह, बखतसिंह विजयसिंह भीमसिंह तथा मानसिंह का ऐतिहासिक विवरण है। उनके शासन की प्रमुख घटनाओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

"राव अमरसिंघ की ख्यात"[3] में जोधपुर के महाराजा गजसिंह के ज्येष्ठ पुत्र राव अमरसिंह के जीवन की एक झांकी है। उनको उत्तराधिकार से वंचित कर आगरा के इम्पीरियल कोर्ट में मृत्यु दंड दिया गया था। इस ख्यात के अंतिमांश से ज्ञात होता है कि प्रस्तुत हस्तप्रति सं० १७०२ में लिखी गई प्रति की वास्तविक प्रतिलिपि है। इस प्रकार इस ख्यात का रचनाकाल सं १७०२ निश्चित है।[4]

"खाबड़िया राठोड़ां री ख्यात [5] में खाबड़िया राठोड़ों का ऐतिहासिक विवरण है जिन्होंने पहले नीलमा और फिर गिराब को अपनी राजधानी

१—गद्य का उदाहरण—

"अथ राठौड़ मारवाड़ मै आया तीण री हकीकत लीखते। राव सीहोजी सेतराम रा राव सीहोजी कनवज सु आया सं १२१२ रा कार्ती सुद २ खाखा फुलांणी सु मार पाटण रा चावड़ा मूलराज नु फते दीराई नै मूलराज रे बेटा सोलंकणी परणीजिया—

२—टैसीटोरी : ए डिस्क्रिप्टिव केटलॉग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स सेक्शन १ प्रोज क्रोनीकल्स भाग १ जोधपुरस्टेट पृ० ११

३—वही पृ १

४—गद्य का उदाहरण—

अमरसिंघ जी रो जनम १६७० रो थो नै १६६० रा ... मै राजा श्री श्री गजसिंघ जी बारवटो दीयो जद पातस्यां खुरमसिंह लाहोर पधारीया थां सु महाराज पीण साथे लाहोर थां नै कंवर अमरसिंह श्री बरस २ री उमर मै थां।

५—टैसीटोरी ए डिस्क्रिप्टिव कैटेलोग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स सेक्शन १ प्रोज क्रोनीकल्स भाग १ जोधपुर स्टेट पृ० ३५

बनाकर खावड़ प्रदेश पर शासन किया। रिड़मल खंगमालोत ने खावड़ देश को जीत कर नीलमा को अपनी राजधानी बनाया। अन्त में रावत नराज एवं महाराजा विजयसिंह के समय में यह जोधपुर राज्य में मिल गया।[१]

"राठोड़ा री ख्यात"[२] में प्रारम्भ से महाराजा अजीतसिंह तक के राठोड़ राजाओं का विवरण है। इसमें राठोड़ राजाओं की वंशावली तथा संवत् ऐतिहासिक दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार अब जो भी राजकीय ख्यातें प्राप्त हैं वे इतिहास लेखन में बहुत अधिक सहायक हो सकती हैं। ये ख्यातें राजस्थानी-गद्य-साहित्य की अपूर्व निधि हैं।

२—व्यक्तिगत ख्यातें

राजाश्रय में लिखी गई इन उक्त-वर्णित ख्यातों के अतिरिक्त कुछ ख्यातें लेखकों की व्यक्तिगत रुचि एवं इतिहास प्रियता का परिणाम हैं। इनमें प्रमुख ख्यातें इस प्रकार हैं :—

१—नैणसी की ख्यात[३] (सकलन काल सं० १७०७–१७२२)

इस ग्रन्थ के रचयिता मुहणोत नैणसी राजस्थानी के सर्व प्रथम ख्यात लेखक हैं जिन्होंने राजस्थान के इतिहास के लिए प्रचुर सामग्री प्रस्तुत की है। यह मुहणोत गोत्र के ओसवाल महाजन थे। मुहणोत गोत्र की उत्पत्ति राठोड़ों से मानी गई है[४]। मोहन जी मुहणोत इस गोत्र के

१—गद्य का उदाहरण—

रिड़मल खगमालोत खावड़ न खावड़ में नीलमो सहर बसाय आप री नीलमे थांपी। पछे रिड़मल रा वंस में गांगी सावड़ियो हुओ।

२—डिस्क्रिप्टिव कैटेलोग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स सेक्सन १, प्रोज क्रोनीकल्स भाग १ जोधपुर स्टेट पृ० २६

३—राजस्थान-पुरातत्त्व-मन्दिर द्वारा मुद्रयमाण

४—गौरीशंकर हीराचन्द ओझा नैणसी की ख्यात (द्वितीय भाग) भूमिका पृ० १ हिन्दुस्तानी सन् १६४१ पृ० २५०–६८।

आदि पुरुष थे। सुभटसेन मोहन जी के छोटे भाई थे इनकी परम्परा में सत्तीसवें वंशधर जयमल हुए जो जोधपुर नरेश राजा सूरसिंह और राजा गजसिंह के समय में राज्य के प्रतिष्ठित पदों पर रहकर सं० १६८८ में जोधपुर राज्य के मंत्री बने। इनकी पहली पत्नी सरूपदे श्री नैणसी की माता थी। नैणसी का जन्म सं० १६६७ वि० मार्गशीर्ष सुदी ४ शुक्रवार को हुआ। बाल्यकाल में इनको पिता ने उपयुक्त शिक्षा दी। ये २२ वर्ष की आयु में उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने के पश्चात राज्य सेवा करने लगे। वीर प्रकृति के पुरुष होने के कारण इन्होंने अपने कार्यों से जोधपुर नरेश महाराजा गजसिंह को शीघ्र ही प्रसन्न कर लिया। संवत् १६८८ में इनको मगरा के मेरों का दमन करने के लिए भेजा गया, वहाँ ये अपने कार्य में सफल हुए। सं १६६४ में ये फलोधी के नियामक बनाये गए जहाँ उनको बिल्लोच से युद्ध करना पड़ा। सं १७०० में महाराजा जसवंतसिंह की आज्ञा से इन्होंने बागी महेचा महेसदास को राडधर में परास्त किया। संवत् १७०२ में रावल नारायणसिंह के विरुद्ध इनको भेजा गया। उसके उपद्रव को इन्होंने शान्त किया। संवत १७०६ में जैसलमेर के भाटियों का अधिकार पोकरण के परगने पर था। बादशाह शाहजहा ने यह परगना महाराजा जसवंत को प्रदान किया किन्तु भाटियों ने उसे नहीं माना। उनको दबाने के लिये सेना भेजी गई जिसमें नैणसी भी थे। इस प्रकार इनकी वीरता और बुद्धिमानी पर प्रसन्न होकर महाराजा जसवंतसिंह ने सं १७१४ वि म मियाँ फरासत के स्थान पर इनको अपना प्रधान अमात्य नियुक्त किया। संवत् १७२२ तक यह इस कार्य को करते रहे। इतने समय तक नैणसी ने अपना कार्य बड़ी ही योग्यता के साथ किया।

संवत् १७२४ में नैणसी तथा इनके भाई सुन्दरसी महाराजा जसवंत सिंह के साथ औरंगाबाद में रहते थे। किसी कारण वश महाराजा इन दोनों से अप्रसन्न हो गए[1] और दोनों को बंदी बना लिया गया। संवत् १७२५ में महाराजा जसवंतसिंह ने दोनों भाइयों को एक लाख रुपया दंड रूप में देने पर मुक्त कर देना चाहा। दोनों भाइयों ने इसे अस्वीकार

१—इस अप्रसन्नता का कारण स्पष्ट नहीं है किन्तु जन-श्रुति के अनुसार ऐसा प्रसिद्ध है कि नैणसी अपने सम्बन्धियों को उच्च पदों पर नियुक्त कर दिया करते थे जिससे स्वार्थी लोग राजकीय व्यवस्था में घुस आये थे। फलतः राजकार्य में बाधा पड़ती थी।

किया। इस सम्बन्ध में दो दोहे प्रसिद्ध हैं :—

> लाख लखारां नीपजै, बड़-पीपल री साख।
> नटियो मूंतो नैणसी, तांबो देण तलाक ॥१॥
> लेसो पीपल लाख, लाख लखारां लावसी।
> तांबो न्हांपा तलाक, नटिया सुन्दर नैणसी ॥२॥

इस प्रकार दया-याचना को अस्वीकार कर इन पर सं० १७२६ में दोनों को फिर बंदी बनाया गया। इनके कारावास की यातनाएँ बढ़ाई गई। दोनों भाइयों को औरंगाबाद से मारवाड़ भेजा गया। मार्ग में इनके साथ चलने वालों ने इनके साथ और भी कठोर व्यवहार किया। जिसके कारण दोनों को अपने एहिक-जीवन से घृणा सी हो गई अतः फूलमरी नामक ग्राम में भाद्रपद बदि १३ सं० १७२७ में दोनों भाइयों ने अपने पेट में कटारी मारकर अपने बन्दी जीवन का अन्त कर लिया। दोनों भाई कवि थे तथा अपनी बन्दी अवस्था में दोहे बना बनाकर अपने भाव प्रकट किया करते थे जैसे :—

> वहाँ निगर दब वहाँ बिन नहीं दब हैं।
> सुर नर करता सब नहा न आवे नणसी ॥ —नैणसी
> नर पै नर आवत नहीं आवत है धन पास।
> मा दिन कम पिछाणिये सहत सुन्दरदास ॥ —सुन्दरसी

नैणसी की सन्तति

नैणसी के करमसी, वैरसी तथा समरसी तीन पुत्र थे। नैणसी के आत्मघात के पश्चात जसवंतसिंह ने इन तीनों भाइयों को भी मुक्त कर दिया। मुक्त होने पर यह मारवाड़ में नहीं रहे। नागौर जाकर महाराजा रायसिंह के आश्रय में रहने लगे। रायसिंह ने करमसी को मौर दिया। एक दिन रायसिंह का अचानक मृत्यु हो गई। करमसी पर उन्हें विष देने का झूठा संदेह किया गया। फलस्वरूप करमसी जीवित दीवार में चुनवा दिये गये तथा उनके सम्पूर्ण परिवार को कोल्हू में कुचलवा देने की आज्ञा हुई। करमसी का पुत्र प्रतापसी अपने परिवार के साथ मारा गया। करमसी की दो पत्नियां अपने पुत्र संग्रामसी एवं सामन्तसी के साथ महाराज किशनगढ़ की शरण में भाग कर वहां से फिर बीकानेर चली गई।

महाराजा जसवंतसिंह के पुत्र महाराजा अजीतसिंह ने जब मारवाड़ पर अपना अधिकार स्थिर कर लिया तब उन्होंने सामन्तसी तथा संग्रामसी को फिर से मारवाड़ बुलाकर सान्त्वना दी।

जोधपुर किशनगढ़ एवं मालवा के सुलतान में अब भी नैणसी के वंशजों का निवास स्थान बताया जाता है, जोधपुर में उनके पास कुछ जागीरें भी हैं। कुछ राज्य-सेवा भी करते हैं।

नैणसी के ग्रंथ

नैणसी वीर होने के साथ साथ नीति निपुण इतिहास प्रिय तथा विद्यानुरागी भी थे। उनकी ख्यात उनकी इतिहास प्रियता की साक्षी है।

बाल्यकाल से ही मुहणोत नैणसी को इतिहास के प्रति अनुराग था। उन्होंने ऐतिहासिक वृत्तान्तों का संकलन सं० १७०७ से ही प्रारम्भ कर दिया था। उन्हें जो कुछ भी प्राप्त होता उसको ज्यों का त्यों वे अपनी डायरी में लिख लिया करते थे। चारण, भाट, अनेक प्रसिद्ध पुरुष कानूनगो आदि से उन्होंने अपनी सामग्री को समृद्ध किया। जोधपुर का दीवान नियुक्त होने पर उन्हें अपने कार्य में बहुत अधिक सुभीता हो गया। नैणसी के लिखे हुए दो ग्रंथ मिलते हैं १—नैणसी की ख्यात २—जोधपुर राज्य का सर्व संग्रह (गजेटियर)। इनमें प्रथम ग्रंथ विशेष महत्वपूर्ण है। सर्वसंग्रह में नैणसी ने पहले परगनों का विवरण दिया है। अमुक परगने का नाम अमुक क्यों पड़ा, उसके कौन कौन राजा हुए उनके महत्वपूर्ण कार्यों का उल्लेख जोधपुर के इतिहास में व क्यों और कब आये आदि का उत्तर इस सर्वसंग्रह में मिलता है। गाँवों के विषय में भी इसी प्रकार का उल्लेख है। अमुक गाँव का जागीरदार कौन है, उसकी जमा कितनी है कौन कौनसी फसलें होती हैं, तालाब नाले नालियाँ आदि कितनी हैं, उसके आस पास किस प्रकार के वृक्ष हैं आदि भौगोलिक वृत्तान्त इस सर्वसंग्रह में संग्रहित है।

नैणसी की ख्यात

"नैणसी की ख्यात राजपूताना तथा अन्य प्रदेशों के इतिहास का बहुत बड़ा संग्रह है। इसमें राजपूताना काठियावाड़, कच्छ, मालवा, बघेलखंड आदि के राज-वंशों का वृत्तान्त मिलता है। उदयपुर, डूंगरपुर बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ के सिसोदिया, रामपुरा के चन्द्रावत, ईडर के

गुहिलोत, जोधपुर बीकानेर, और किशनगढ़ के राठौड़ जयपुर के कछवाह, सिरोही के देवड़ा चौहान बूदी के हाड़ा-चौहानों की विभिन्न शाखायें गुजरात के चावड़ा एवं सोलंकी, यादव और उनकी सरवैया, जाड़ेचा आदि कच्छ और काठियावाड़ की शाखायें, बघेलखण्ड के बघेला, काठियावाड़ के मकवाणा, बड़िया गौड़ आदि का इतिहास इस ख्यात में संग्रहीत है[1]। राजस्थान के इतिहासकारों के लिये यह ख्यात बहुत ही महत्व की है।

ख्यात के प्रमुख विवरण इस प्रकार हैं :—

१–सिसोदियाँ री ख्यात— २–बूंदी रा धणियाँ हाडा री ख्यात— ३–बागड़ियाँ चहुवाणां री पीढ़ी— ४–हाड़ियाँ री वात— ५–बुंदेला री वात— ६–गढ़बंधव रा धणियाँ री वात— ७–सीरोही रा धणियाँ देवड़ां री ख्यात— ८–मालणां राजपूतां री वात— ९–सोमगरा चहुवाणां री वात— १०–साचौर रा चहुवाणां री वात— ११–कांपलिया चहुवाणां री वात— १२–खीचियाँ चहुवाणां री वात— १३–अणहलवाड़ा पाटण री वात— १४–सोलंकियाँ री वात— १५–जाड़ेचा फूलानु सोलंकी मूलराज मारियो री वात— १६—रुद्रमाळी प्रासाद सीधराज करायो तिण री वात— १७–कछवाहां री ख्यात— १८–गोहिलां खेड़ राधणियां री वात— १९–सांखला पवांरा री वात— २०–सौढा पवांरा री वात— २१–भाटियां री ख्यात— २२–रावसीहा री वात— २३–धनड़दे री वात— २४–वीरम जी री वात— २५–राव चूंडे जी री वात— २६–गोगा दे जी री वात— २७–अरड़कमल चूंडावत री वात— २८–राव रिणमल जी री वात— २९–रावल जगमाल जी री वात— ३०–राव जोधा जी री वात— ३१–राव बीके जी री वात— ३२–भटनेर री वात— ३३–राव बीके जी री वात (बीकानेर बसायो तै समय री) ३४–कांधल जी री वात— ३५–राव सीने री वात— ३६–पताई रावल री वात— ३७–राव सलखे जी री वात— ३८–गढ़ मंडिया तैरी ख्यात— ३९–राव रिणमल-महमद मारियो तै री वात— ४०–गोगा दे वीरम देवोत री वात— ४१–राठौड़ राजावां रै मरूधरा नाम— ४२–जैसलमेर री वात— ४३–दूदे जोधावत री वात— ४४–नेतसी रतनसी भोम री वात—४५–गुजरात देस री वात— ४६–पाबू जी री वात— ४७–राव गांग वीरमदे री वात— ४८–हरदास ऊहड़ री वात— ४९–नरे सूजावत सीमे पोहू करयो री वात— ५०–जैमल वीरमदे ओस राव मालदे री वात—५१–सीहे सीधल री वात— ५२–राव रिणमल जी री वात— ५३–नरवद सतावत सूपियार

[1]—ओझा : नैणसी की ख्यात प्रथम भाग-भूमिका पृ० ६

वे लायो तै समय री वात— ५४–राव सुरतांरण री वात— ५५–मोहिलां री वात— ५६–छतीस राजकुली इवरे गढ़ै राज करै तैरी वात— ५७–मेवारों री वंसावली— ५८–राठोड़ां री वंसावली— ५९–पातसाहां गढ़ लिया तैरा संवत— ६०–दिल्ली राजा बैठा तिणां री विगत— ६१–सेवराम परदाई सेनोत री वात— ६२–राठौड़ राजावां रै कंवरां नै सतियां रा नाम— ६३–किसनगढ़ री विगत— ६४–राठौड़ां री तेरे साखां री विगत— ६५–जैसलमेर री ख्यात— ६६–भ गौत नारणौत बगैरे बीकानेर रै सिरदारों री पाड़ियां— ६७–पातसाहां रा फुटकर संवत— ६८–चगताबां री वात— ६९–सिन्धरौ बहेल नै गयो रहै तै री वात— ७०–उदै उगवणावत री वात— ७१– दूदै भोज री वात— ७२–समसखान्या री खतपत— ७३–दौलताबाद रा उमरावां री वात— ७४–महकम्बर नै याकूब खां री पातहारत— ७५–सांगमराव राठौड़ री वात आदि।

ख्यात में दोष–

सं० १५०० से पूर्व की वंशावलियां जो प्रायः भाटों आदि की ख्यातों के आधार पर हैं कहीं कहीं पर ऐतिहासिक दृष्टि से अशुद्ध हैं। नैणसी को जो कुछ मिला उसको यथावत ही रख दिया है ऐतिहासिक दृष्टि से उनकी शोध नहीं की। इसी प्रकार एक ही विषय से सम्बन्ध रखने वाले वृत्तान्तों को वैसा का वैसा ही लिख दिया है जिनमें कुछ अशुद्ध भी हैं संवत भी कहीं कहीं गलत हो गये हैं।[1]

ख्यात का महत्व–

१–ऐतिहासिक – देखने से पता चल सकता है कि इतिहास की दृष्टि पर ख्यात बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसके संवत् तथा घटनाएं ऐतिहासिक आधार पर हैं। "वि० सं० १३०० के बाद से नैणसी के समय तक राजपूतों के इतिहास के लिये तो मुसलमानों की लिखी हुई तवारीखों से भी नैणसी की ख्यात कहीं कहीं विशेष महत्व की है। राजपूताने के इतिहास में कई जगह जहां प्राचीन शोध से प्राप्त सामग्री इतिहास की पूर्ति नहीं कर सकती वहां नैणसी की ख्यात ही कुछ कुछ सहारा देती है।[1] वस्तुतः

....

१—मामा —नैणसी की ख्यात-प्रथम भाग भूमिका पृ० ७

राजपूत नरेशों के इतिहास को जानने के लिये तो अन्य साधन मिल मिल सकते हैं किन्तु उनकी छोटी छोटी शाखाओं और सरदारों के विषय में जानने के लिये तो नैणसी की ख्यात के अतिरिक्त कुछ भी नहीं ।[1]

साहित्यिक–महत्व

ऐतिहासिक उपयोगिता के अतिरिक्त "नैणसी की ख्यात" का साहित्यिक महत्व भी कम नहीं। सं० १७०७ से १७२२ तक के १५ वर्ष के समय में नैणसी को जो भी वृत्तान्त मिला उसको उन्होंने लिख लिया। इस प्रकार इस ख्यात में ३०० वर्ष पूर्व की राजस्थानी भाषा पर प्रकाश पड़ता है। इसकी भाषा शुद्ध राजस्थानी है। राजस्थानी के गद्य के विकास को जानने के लिए "नैणसी की ख्यात" की भाषा बहुत काम की है। समय समय पर जो विवरण नैणसी को मिला उसे या तो उन्होंने स्वयं लिख लिया या दूसरों से लिखवाया जैसे राणा उदैसिंह और पठान हाजी खां के बीच हुये युद्ध का वर्णन सं० १७१४ में खेमराज चारण ने लिख भेजा। सीसोदिया की चूण्डावत शाखा का वृत्तान्त खींवराज खड़िया (चारण) ने लिखवाया बूंदी राज्य का वृत्तान्त सं १७२१ में रामचन्द्र जगनाथोत ने लिखवाया बुन्देला वरसिंह देव के राज्य का वर्णन सं १७१० में बुन्देला ठाकुरों के सेवक चकसेन ने संगृहीत किया। जैसलमेर का कुछ वर्णन विट्ठलदास से लिया सं १७२२ में परबतसर में रहते समय यहां के वड़िया राजपूतों का वृत्तान्त नैणसी ने संगृहीत किया इसी प्रकार नैणसी ने अपनी ख्यात का संकलन किया अत राजस्थानी के कई रूपों का संग्रह भी इसमें आप ही आप हो गया। जन प्रचलित राजस्थानी भाषा का एक उदाहरण यहां देखा जा सकता है —

"बूंदी सहर भाखर भाखर लागती बसी छै। रावला घर भाखर रै आयो परै छै। पिण मांहे पांणी मामूर नहीं। सहर री आयो बीजै भाखर बजारी सहर लागती कोड पणा बसा रै भाखर में पाणी पाणी। सहर मांहे पारुली पाणी घणो नहीं तलाब सूर सागर लिया री मोरी छूटे छै। तिण सू बागवाड़ी घणा पीवै बागे आंबा फड़ाद चंपा घणा। सहर री बस्ती बनमान घर-घर ५ थांणीयांरा घर १० बामण बिणजारां रा घर १०००

१—ओझा – नैणसी की ख्यात – द्वितीय भाग – भूमिका पृ० १

पांच भाई याही आगरा रा। राम भावसिंह नु हमार जागीर मे इवना परगना रो सिरारा गाम ३१६।[1]।

२—दयालदास री ख्यात[2]

दयालदास—जन्म तथा परिचय

दयालदास सिंढायच की लिखी हुई ख्यात 'दयालदास की ख्यात' के नाम से प्रसिद्ध है। 'सिंढायच' मारू चारण जाति की भादलिया शाखा की एक उपशाखा है। ऐसी प्रसिद्धि है कि नरसिंह भादलिया को माड़व राव पड़िहार ने, कई सिंहों को मारने के उपलक्ष में "सिंहदाहक" की उपाधि प्रदान की थी। सिंढायच उसी का अपभ्रंश है। इसी वंश में बीकानेर के कूविया गाव में सं १८४४ के लगभग सिंढायच दयालदास का जन्म हुआ[3]। दयालदास के विषय में इससे अधिक परिचय प्राप्त नहीं होता। दयालदास की मृत्यु ६ वर्ष की आयु में सं० १६४८ में हुई[4]।

दयालदास बड़ा विद्वान और योग्य व्यक्ति था। बीकानेर नरेश महाराजा रत्नसिंह सं० (१८८५ १६ ८) का वह विश्वास पात्र था। इसके अतिरिक्त महाराजा सूरतसिंह (सं १८२२ १८८५) महाराजा सरदारसिंह (सं० १८७४ १६२६) और महाराजा डूगरसिंह (सं १६४४) की भी उस पर बहुत कृपा रही। इतिहास का प्रेमी होने के कारण उसने बड़ा परिश्रम करके पुरानी वंशावलियों पट्टों, बहियों शाही फरमानों तथा राजकीय पत्र व्यवहार के आधार पर अपनी ख्यात की रचना की[5]। उसने किसी प्रकार के शिलालेख मुसलिम इतिहास आदि का उपयोग नहीं किया जिससे उसकी ख्यात में कहीं कहीं पर ऐतिहासिक अशुद्धियां रह गई हैं फिर भी उसका काम बड़ा ही महत्वपूर्ण है[6]।

१—नैणसी की ख्यात पृ ४६ अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय बीकानेर
—द्वितीय खण्ड अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर, द्वारा सादूल प्राच्य ग्र थ माला में प्रकाशित
३—ओझा बीकानेर का इतिहास द्वितीय भाग भूमिका पृ ७-८
४—ओझा बीकानर का इतिहास दूसरा भाग भूमिका पृ ८
५—ओझा बीकानर का इतिहास प्रथम भाग भूमिका पृ ४
६—डा दशरथ शर्मा दयालदास की ख्यात भूमिका पृ १६

दयालदास के ग्रंथ

दयालदास ने तीन ख्यातों की रचना की— १–राठौड़ों री ख्यात २–देश-दर्पण[1] ३–आर्यख्यान कल्पद्रुम[2]

इन तीनों ख्यातों में प्रथम अधिक महत्व की है। इसी को 'दयालदास की ख्यात' के नाम से पुकारा गया है। दूसरे ग्रंथ में भी बीकानेर का ऐतिहासिक विवरण है। इसमें प्रधानतः बीकानेर-नरेश महाराजा सरदार सिंह के शासन का विवरण अधिक है। तीसरी पुस्तक ख्यात की अपेक्षा [illegible] अधिक है। इसके अन्त में बीकानेर राज्य के गांवों की नामावली, उनकी आय, जनसंख्या आदि के साथ दी हुई है।

दयालदास की ख्यात

इस ख्यात की रचना दयालदास ने महाराजा सरदारसिंह की आज्ञा से की। इसके अन्त में महाराजा सरदारसिंह के राज्यारोहण (सं० १९०८) तक का वर्णन है। महाराजा रत्नसिंह की आज्ञा से यदि यह लिखी गई होती तो प्रारम्भ में उनकी स्तुति अवश्य ही की गई होती अतः इस सम्बन्ध में भी ओझा जी का मत[3] अमान्य ठहरता है।

ख्यात का ऐतिहासिक महत्व

यह ख्यात बीकानेर राज्य का सर्व प्रथम क्रमबद्ध इतिहास है। इसमें राव बीका (सं० १५४५ १५६१) से महाराजा सरदारसिंह के राज्यारोहण (सं० १९०८) तक का विस्तृत विवरण है। प्रारम्भिक पृष्ठों में स्तुति के उपरान्त नारायण से सूर्य-वंश की परम्परा चलती है। श्री रामचन्द्र (६४ वें) श्री जयचन्द्र (२४४ वें) आदि अनेक अनैतिहासिक नामों के उपरान्त बीकाजी का नामोल्लेख है। इस प्रकार के काल्पनिक वंशों का बोझ वहन के उपरान्त बीकानेर का शुद्ध इतिहास शुरू होता है। इस ख्यात का उपयोग श्री गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने बीकानेर राज्य का इतिहास लिखते समय

१–कैटलाग आफ दी राजस्थानी मैन्युस्क्रिप्ट्स इन अनूप-संस्कृत-लाइब्रेरी पृ० ७५
२–वही पृ० ७३
३–ओझा बीकानेर का इतिहास, प्रथम खण्ड, भूमिका पृ० ४

किया है जो इसकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता का प्रमाण है[1]। दयालदास यद्यपि नैणसी या अबुलफजल के समान इतिहासकार नहीं था किन्तु उसकी ऐतिहासिक रचनाएं अपना विशिष्ट अस्तित्व रखती हैं[2]।

ख्यात का साहित्यिक महत्व

यह बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक की रचना है। इस शताब्दी के राजस्थानी गद्य के उदाहरण इस ख्यात में मिलते हैं। नैणसी की ख्यात के उपरान्त इसकी रचना हुई अतः नैणसी के गद्य के उपरान्त दयालदास का गद्य राजस्थानी के विद्यार्थी के काम की वस्तु है। ऐतिहासिक रचना होने के कारण दयालदास ने इस ख्यात की भाषा को साहित्यिक रूप में नहीं सजाया जो कुछ उन्होंने लिखा वह तत्कालीन बोलचाल की भाषा में ही लिखा। स्वाभाविकता ही दयालदास की शैली की प्रधान विशेषता है।

गद्य का उदाहरण–

"पछै अमर चोभीज रावत जी पहीर हुवा। सू राजासर आया। अरु रावजी मी जैतसी आ अमम आया तिया ममे सिरदार सारा आपणा ठिकाणां

1—ओझा बीकानेर का इतिहास प्रथम खण्ड पृ ६ (भूमिका)

2—We might regard Dayaldas Sindhaynch as the last of the great bardic chroniclers of Bikaner With the advance of the Western system of education and increasing materialism their days are were speedily coming to an end. Dayaldas however was an honoured courtier trusted adviser and emissary besides being a state chrnicler He was no Abul Fazal but his position in the state affairs was high enough to suggest some comparison with that great Historian of the Mughal period. Like him Dayaldas was an erudite scholar He was an accomplished rhetoricaian a writer of excellent Marwari, only a little imperior to that of Nainsi Munot

—Dr Dashrath Sharma–Introduction of Dayaldas Rekhat Part 2. Page 15

गया परा था । सु किता एक नू किसनदास का सिन्मायट करी । तिण माथे लोक हजार दस भेलो हुवो । पीछे जोईय भाये पीगड़ रे नू सिहायसू बुलायो । तद भाटी फौज हजार भाय सामल हुवो । फौज हजार दस हुई । पीछे जोधपुर रा भाणा ऊपर चलाया । सु पहली सूरजकरण सर थाणो थाणो हो तठै आया ने अठै घणो झगड़ो हुवो । मारवाड़ रा राजपूत तीन सौ काम आया । अरु किता एक मारवाड़ रा भाज नीसरिया। ने रावजी री फतै हुई । अरु भाग फेरी । घोड़ा दो सौ ऊँट सौ मारवाड़ां रा लूट में आया' [1]

देशदर्पण[2]

"देशदर्पण' की रचना दयालदास ने बेद मेहता अमरचंदसिंह के आदेशानुसार सं० १९२७ में की ।[3] इसके पूर्वार्द्ध में बीकानेर नरेश महाराजा रत्नसिंह का वर्णन लम्बी पीढ़ियावली के उपरांत है । उत्तरार्द्ध में बीकानेर के गांवों की विगत है। कुछ खरीतों की नकलें भी इस में संकलित हैं ।

गद्य का उदाहरण–

"फेर पछीवो तारीख १२ अक्टूबर सन मजकूर कपतान फीरंच साहब इजेन्ट साहब अजेंट अजमेर रो श्री दरबार सामो आयो ता म खीच्यो । लफ्टन्ट गवरनर जनरल कप्तारक साहब बहादुर सहर्सं होय बावलपुर तक तसरीफ ले आवेंगे सो मोतमद हुसीयार वा वाकफ वा कुल इखत्यार सरसं मवाब साहब ममदु की पीदमत में जाय देवे ।[4]

आर्याख्यान कल्पद्रुम[5]–

महाराजा डूंगरसिंह जी को दयालदास की उक्त दोनों ऐतिहासिक रचनाओं से संतोष नहीं हुआ । अतः उन्होंने समस्त भारतवर्ष का इतिहास

....

१—दयालदास री ख्यात भाग २ पृ० ७०
२—अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय बीकानेर
३—ओझा बीकानेर का इतिहास द्वितीय खण्ड, भूमिका पृ० ८
४—हस्त प्रति पत्र ४३ (क)
५—ओझा बीकानेर का इतिहास द्वितीय खण्ड, भूमिका पृ० ८

प्रांतीय भाषा में लिखने की आज्ञा दी। इस पर दयालदास ने सं० १६५८ में इस ग्रंथ की रचना की।[1]

३ बांकीदास की ख्यात[2]

बांकीदास (सं० १८२८-सं० १८९०) जन्म तथा परिचय

बांकीदास का जन्म सं० १८२८ में आसिया जाति के चारण फतहसिंह के यहां हुआ। ये भांडियावास (परगना पचपदरा) के निवासी थे। बाल्यकाल से ही बांकीदास ने अपने पिता से मरुभाषा के गीत, कवित्त दोहे आदि बनाना सीखकर कविता करना प्रारम्भ किया। १२ वर्ष की आयु में ये अपने मामा ऊक जी के साथ भाखरी गांव के ठाकुर नाहरसिंह के पास गये। आशु कवि होने के कारण इन्होंने वहीं दो दोहे और एक सेयोर गीत की रचना कर सुनाई। इससे पता चलता है कि ये बाल्यकाल से ही प्रतिभाशाली थे। १६ वर्ष की आयु में इन्होंने अपने पिता से आश्रयदाता खोजने की अनुमति प्राप्त करली।

सर्व प्रथम ये रायपुर (मारवाड़) के ठाकुर अर्जुनसिंह चांपावत के समीप गये। इनकी प्रतिभा को देख कर उसने इनको जोधपुर पढ़ने के लिये भेज दिया। ४ वर्ष वहां अध्ययन करने के उपरान्त वापिस लौटे। सं० १८६० में जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह के गुरु आयस जी देवनाथ ने इनकी प्रशंसा सुनकर अपने यहां बुलाया तथा इनकी कवित्व शक्ति देखकर महाराजा से इसकी चर्चा की। महाराजा ने इनको पर्याप्त पुरस्कार देकर अपने दरबार में रख लिया।

बांकीदास डिंगल ब्रजभाषा और संस्कृत के विद्वान तथा इतिहास के मर्मज्ञ माने गये। इनके ऐतिहासिक ज्ञान के विषय में एक किंवदन्ती प्रसिद्ध है—"ईरान के बादशाह के वंशजों में से एक सरदार एक बार भारत की यात्रा करता हुआ जोधपुर पहुंचा। उसने महाराज से इच्छा प्रकट की कि कोई अच्छा इतिहास जाता उनके पास भेजा जाय। बांकीदास उसके पास

1—ओझा बीकानेर का इतिहास द्वितीय खण्ड, भूमिका पृ ८
2—नरोत्तमदास स्वामी बीकानेर, द्वारा संपादित तथा राजस्थान पुरातत्व मन्दिर द्वारा प्रकाशित।

पहु चाये गये। इनसे बात करके वह इतना प्रसन्न हुआ कि उसने महाराज से कहा आपने जो व्यक्ति हमारे पास भेजा है वह केवल कवि ही नहीं इतिहास का पूर्ण विद्वान भी है। वह तो मुझसे भी अधिक मेरी जन्मभूमि (ईरान) का इतिहास जानता है।

ये बहुत ही स्वाभिमानी तथा स्वतन्त्र प्रकृति के व्यक्ति थे। इनके स्वाभिमान की एक घटना उल्लेखनीय है। एक बार महाराज की सवारी के समय महारानी की पालकी से आगे इन्होंने अपनी पालकी निकलवा ली। ऐसा देखकर महारानी इन पर कुपित हुई तथा इस मर्यादा उल्लंघन का लिए इनको प्राण-दंड देने का आग्रह उन्होंने महाराजा से किया। इस पर महाराजा मानसिंह ने उत्तर दिया "मैं तुम्हारी जैसी दूसरी रानी ला सकता हूँ किन्तु बांकीदास के स्थान पर मुझे दूसरा कवि मिलना असम्भव है। इससे स्पष्ट है कि राज दरबार में इनका बहुत सम्मान किया जाता था।

उदयपुर के महाराणा भीमसिंह भी इनको आदर की दृष्टि से देखते थे। कवि के रूप में बांकीदास का व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था। कई कवियों से इनका शास्त्रार्थ हुआ जिनमें ये सदैव विजयी हुये। इनकी पद्य रचनाओं का संग्रह नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से बांकीदास ग्रन्थावली (तीन भाग) नाम से प्रकाशित हो चुका है। गद्य-लेखक के रूप में भी बांकीदास का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। इनका गद्य-ग्रन्थ 'बांकीदास की ख्यात' है।

बांकीदास की ख्यात

इस ख्यात में समय समय पर विविध विषयों पर लिखी हुई टिप्पणियों का संग्रह है। ये टिप्पणियां न तो विषयानुक्रम से लिखी गई हैं और न कालानुक्रम से ही। जैसे जैसे इनको रोचक विषय मिले उनको इन्होंने अपनी इस वृहद् डायरी में ज्यों का त्यों लिख लिया। भूगोल इतिहास नीति वेदान्त, जैन दर्शन नगर-परिगणन आदि शब्दों के अर्थ, प्रसिद्ध व्यक्ति, औषधि आदि अनेक विषयों पर इन्होंने अपने इस संग्रह में अनेक टिप्पणियां लिखी हैं।

ऐतिहासिक-विवरणों में सोलंकी वाघेला पवांर, चौहान हाडा सोनगरा देवड़ा गहलोत तुंवर भाला बुंदेला राठौड़ आदि राजपूत वंशों की वंशावलियां राव सूजा जैमल, राजा सूरसिंह, राजा गजसिंह,

महाराजा जसवंतसिंह, महाराजा अजीतसिंह, महाराजा अभयसिंह, महाराजा रामसिंह, महाराजा बखतसिंह आदि का विस्तृत वर्णन है। साथ में संवत भी दिये गये हैं जिनमें कई अशुद्ध हैं। मुसलमान बादशाहों में अलाउद्दीन खिलजी अकबर, बाबर, हुमायू, तैमूर, अहमदशाह दुर्रानी आदि का उल्लेख है।

उदाहरणत :—

सोलंकिया रे भारदवाज गोत्र, लैनज शाखा का दोय देवी महिपाल पितर, परवर तीन खिंखियो चारण, बागडियो भाट, कंकारियो जोसी, सोलंकियां रे कुलदेवी कन्ेस्वरी ! यही चारदेवी अरथ कुक्कट पहली लोक पढ़चरा कहे

सोलंकियों री साख री विगत :

वारिया १ माणगोती २ बाघेला ३ लहरा ४ पालखोत ५ बीसुरा ६ नाथावत ७ बाराह ८ लालीव ९ इत्यादिक हैं।

बांकीदास यहां आते वहां की विशेषताओं को अपनी इस बही में लिख लेते थे। इस प्रकार भौगोलिक विषयों में रहन-सहन, रीति रिवाज व्यवसाय आदि पर प्रकाश डाला गया है।

उदाहरणत :—

सिंध री तमाखू नव सेर बिके रु १ री। जठै मालवण सेर बिके। आंबा मुलताण रा आछा हुवे।

मुटिया लखनऊ को, गटा कनौज को, पेडा मथुरा को, औसरा सिकन्दरा का अद्भुत हुवे।

अभ्रक कपूर लोबान कृष्णागुरु प्रमुख यवनां रे देसां सू हिंद में आवे। कोमी पीतल प्रमुख धातु मारवाड़ सू सिंध में जावे।

धार्मिक-विषयों में कहीं वे हिन्दुओं के वेदान्त की चर्चा करते हैं तो कहीं जैनियों के जैनागमों की। कहीं पर कुरान की बातें उनकी टिप्पणियों का विषय है। जैसे—वेदान्त में बावन मत हैं जामें अद्वैतवाद प्रबल है।

"या" नैयायिक अनित माने सब्द नू मीमांसक वैयाकरण सब्द नू नित्य माने।"

फिरंगी मुसलमान, जैन चारण मिस्र फिरंगी आदि विविध जातियों के विषय में भी उल्लेख किया गया है।

इनके अतिरिक्त और भी कई विभिन्न विषयों पर बांकीदास ने अपनी लेखनी चलाई है।

बांकीदास की भाषा जन-प्रचलित-राजस्थानी है। उन्नीसवीं शताब्दी की राजस्थानी के प्रयोग इनकी ख्यात में देखे जा सकते हैं। नैणसी या दयालदास की ख्यात से भी इनकी ख्यात इतिहास के क्षेत्र में अधिक उपयोगी एवं प्रमाणित है।

दलपत विलास

इन ख्यातों के अतिरिक्त 'दलपतविलास' नामक एक अपूर्ण हस्त-प्रति अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर, में विद्यमान है। इसके लेखक का नाम भी अज्ञात है। इस ग्रंथ में बीकानेर के महाराजा रायसिंह के द्वितीय पुत्र श्री दलपतसिंह का विवरण है। आरम्भिक दो पृष्ठों में सृष्टि की उत्पत्ति दिखाने के बाद राव सीहा जी से राव जोधा जी तक तथा राव बीका से दलपतसिंह तक की वंशावली का उल्लेख है। श्री दलपतसिंह की किशोरावस्था रायसिंह जी के दीवान कर्मचन्द बच्छावत के प्रति रायसिंह जी के पुत्र भोपत का रुष्ट होना उसका मारा जाना दलपत सिंह जी को मारने का षड्यंत्र उनके द्वारा बाल्यकाल में दिखलाई गई वीरता अकबर के दरबार में की गई उनकी सेवायें आदि इसके विषय है। इस रचना में दलपतसिंह के विषय में ही अधिक मिलता है जिससे पता चलता है कि इस ख्यात की रचना इन्हीं के समय में हुई होगी। श्री दलपतसिंह का राज्यारोहण सं० १६६८ में हुआ तथा सं० १६७० में इनका स्वर्गवास हो गया अतः सत्रहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध इसका रचना काल माना जा सकता है। महाराजा रायसिंह जी के समय का गद्य का सर्वोत्तम उदाहरण इसमें मिलता है[१]।

१—डा० दशरथ शर्मा दयालदास की ख्यात भाग २ भूमिका पृ० ४

गद्य का उदाहरण—

'ताहरां कुंवर श्री दलपतसिंह जी री दृष्टि पड़ियो दलपत कुंवरे वस्त्र भर राव दुरगे नूं कहियां गुं श्री कणारी बाह मानसिंघ नूं दसो छ सूं मरस्यो। ताहरां राव दुरगे हाथ मारियो—"

ख्यातेतर-गद्य-साहित्य

ख्यातों के अतिरिक्त १—पीढ़ियावली (वंशावली) २—हाल, अहवाल, हकीकत यादवारत आदि ३—विगत ; ४—पट्टा परवाना ५—इकरारनामा ६—जन्म पत्रियाँ ७—वहीखाता आदि मिलती हैं जिनका संक्षिप्त विवरण यहां दिया जाता है —

१—पीढ़ियावली (वंशावली)

क—राठौड़ा री वंशावली–आदिनारायण से राठौड़ वंश की उत्पत्ति तथा उसकी एक अपूर्ण वंशावली।

ख—बीकानेर रा राठौड़ राजावां री वंशावली – आदिनारायण से महाराजा रतनसिंह (१६० वें) तक बीकानेर के राठौड़ों की वंशावली है जिसमें केवल नाम ही अंकित हैं।

ग—बीकानेर रा राठौड़ राजावां री पीढ़ियां राव बीका सूं महाराजा अनोपसिंह जी ताई —राव बीका जी से महाराजा अनूपसिंह जी तक की वंशावली इसके उपरान्त ईडर राठौड़ शासकों की सोनग से भगवानदास तक पीढ़ियावली अंकित है।

घ—खीचीवाड़ा रा राणोडां री पीढ़ियां– सूजा के पुत्र वईदास तथा उनके पुत्र हरराज के वंशजों की नामावली है। जो (हरराज) खीचीवाड़ा के पद में स्थिर हुआ। नामावली का संवत् १७६६ वि दिया हुआ है।

ङ—राठौड़ अखैराजोतां री पीढ़ियां – अखैराज राठौड़ के वंशजों की क्रमिक नामावली मात्र।

च—सीसोदियां री वंशावली तथा पीढ़ियां– ब्रह्मा से राणा सरूपसिंह तक की वंशावली। राणा सरूपसिंह के शासन काल में वंशावली लिखने

का कार्य समाप्त हुआ, ऐसा लिखा है। इसके उपरान्त गुहादित्य से राणाओं की वंशावली लिखी हुई है जिसके अन्तर्गत विभिन्न शाखाओं की पीढ़िया वली भी सम्मिलित हैं। इसमें सं० १७०१ वि० तक का वृत्तान्त मिलता है।

ड—कछवाहां री वंसावली'— कुम्तल से महाराजाधिराज जयसिंह तक की कछवाहा वंशावली अंकित है।

ढ—देवड़ा सीरोही रा धणियां री वंसावली तथा पीढ़ियां'— राव लाखणा से राव अखैराज तक सिरोही के देवड़ाओं की वंशावली।

ट—राठौड़ां ईडर रा धणियां री वंसावली तथा पीढ़ियां'— सोनग सिंहावत से कल्याणमलोत जगन्नाथ तक के ईडर शासकों की वंशानुक्रम सिक्त जिसमें रानियों के नाम भी लिखे हुए हैं।

ठ—सीसोदिया री वंसावली तथा पीढ़ियां नै जागीरदारां री फैरिस्त।— सीसोदिया राणा सिवसमसी से जगतसिंह (मृत्यु सं १७०६) तक की वंशावली तथा साथ ही उनके पुत्रों तथा पत्नियों की नामावली भी है। इसके उपरान्त शक्तावत एवं दूदावलिया वंश की पीढ़ियावली लिखी है। तत्पश्चात फिर जगतसिंह की मृत्यु एवं उसकी रानियों का उल्लेख है। अन्त में विभिन्न जागीरों की नामावली तथा उनसे होने वाली आय के साथ उनके जागीरदारों का भी उल्लेख है।

ड—जैसलमेर रा भाटियां री वंसावली'—भाटियों की तीन विभिन्न पीढ़ियां प्रथम में नारायण से रावल जसवन्त तक, द्वितीय में दुसाज से जैतसी एवं दयालदासोत सबलसिंह तक तृतीय में जैसल से रावल भीम (जन्म सं १६१८) तक की वंशावली है। द्वितीय वंशावली में जैतसी से सबलसिंह तक वंश की रानियों तथा राजकुमारों के भी नाम हैं। द्वितीय और तृतीय पीढ़ियावली में भाटियों को सूर्यवंशी बताया गया है।

ढ—हाडां री वंसावली'— सोमेश्वर (प्रथम) पृथ्वीराज से छत्रसालोत भावसिंह (२६ वां) तक हाडाओं की-वंशावली की सूची।

ण—राठौड़ां रा खांपां री विगत न पीढ़ियां' अमरसिंह के समय में बसी हुई राठौड़ों की विभिन्न खांपों का वर्णन उनकी उत्पत्ति तथा पीढ़ियावली।

च—राठौड़ां रे गनायतां री भांपवार पीढ़ियां —जोधपुर नरेश महाराजा जसवंतसिंह जी के समय के राठौड़ों के अतिरिक्त सरदारों की नामावली उनकी छोटी छोटी वंशावली के साथ।

छ—बाघवगढ़ रा धणी बाघेलां री वंशावली —बाघवगढ़ के (बघेलखंड में) बघेलों की वंशावली का संक्षिप्त परिचय जिसमें उनका उत्पत्ति स्थान गुजरात माना है। वहां से ये बीरसिंह के साथ बघेलखंड में आये (बीरसिंह प्रयाग की यात्रा के लिए गये वहां लाखा राजपूतों को मारकर बघेलखंड के अधिपति बन गये) इनकी पीढ़ी में विक्रमजीत से अकबर ने राज्य छीना तथा जहांगीर ने उसे फिर से सिंहासन पर बिठा दिया।

ज—राठौड़ां री पीढ़ियां राव सीहे जी सूं बीकानेर रे राव कल्याणमल जी ताई —इसमें बीकानेर के राठौड़ शासकों की वंशावली है जिसमें केवल नामों का ही उल्लेख है।

झ—राठौड़ां री पट्टावली आसपास सूं बीकानेर रे राजा सूरजसिंह जी ताई —आसपास के राजा सूरजसिंह तक बीकानेर के राठौड़ शासकों की नामावली मात्र।

न—कांधलोतां री पीढ़ियां —कांधलोत राठौड़ों की वंशावली के नामों का उल्लेख मात्र है।

प—जोधावत जोधपुर रे धणियां री पीढ़ियां —जोधा जी के वंशधारियों की नामावली जो सिंहासन के अधिकारी हुए। कहीं केवल नामों के स्थान पर विवरणात्मक लघु टिप्पणियां भी हैं।

फ—भाटियां री पीढ़ियां —जैसलमेर, देरावर बीकमपुर, पूगल हापासर के भाटियों की नामावली।

ब—राठौड़ां री वंसावली —राजा पदार्थ से कुंवर जगतसिंह की मृत्यु तक जोधपुर में राठौड़ों का ऐतिहासिक विवरण है।

२—हाल अहवाल, हगीगत याददास्त आदि

क—सांखलां दहियां सूं जांगलू लियो तेरो हाल —जांगलपुर (जांगलू) एवं पृथ्वीराज पर छोटी सी मनोरंजक टिप्पणी तथा सांखलों

ने किस प्रकार दहियों से जांगलू लीया इसका भी विवरण है।

ख—पातसाह औरंगजेब री हकीकत —आरम्भिक दो पृष्ठों में अकबर जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासनकाल की प्रमुख घटनाओं का उल्लेख है। औरंगजेब के शासन का विस्तृत विवरण है जिसमें उसके जोधपुर से युद्ध तथा विजय (सं० १७२३) का विवरण है।

ग—दिल्ली रै पातसाहां री याद :—सुलतान ममद गोरी से जहाँगीर (७३ वाँ) तक दिल्ली के मुसलमान सम्राटों की नामावली मात्र है। यह अपेक्षाकृत अर्वाचीन लिखी हुई ज्ञात होती है।

घ—राव जोधै जी री वेढा किधीं री याद —राव जोधा जी द्वारा किये गये युद्धों की नामावली।

२–विगत

क—महाराजा मानसिंघ जी रै राणियां पासवानां कंवरां बाई माई हुवा जिणां री विगत —महाराजा मानसिंह जी के पुत्रों की नामावली।

ख—महाराजा तख्तसिंह रै कंवरां री विगत —महाराजा तख्तसिंह जी के पुत्रों की नामावली।

ग—चारणां रा सासणां री विगत —इसमें मात्र स्वतंत्र टिप्पणियां हैं १—गोपलावास नामक गांव जिसको मारवाड़ में बीकानेर नरेश पृथ्वीराज तथा मारवाड़ नरेश सगर के समय में (१६७२ वि०) खिड़िया चीर को दिया गया था उसका विवरण है। २—सगर के द्वारा चारणों को आसिया गणेश मीसणबुर्गा तथा भिमाच खीड़ा इन तीनों गाँवों को दिये दान पर टिप्पणियां हैं। ३—राव रणमल के सम्बन्ध में कुछ पद्य एवं गद्य में वर्णन जो चित्तौड़ में मारा गया था खिड़िया चांनड़ के द्वारा बसाया गया बाद (खिड़िया चांनड़) मारवाड़ आया वहाँ सं० १२१८ वि० में राव जोधा ने उसे गोपलावास दिया। ४—चिरजी की लघु वंशावली का वर्णन ५—बुरली के चारण केसरा पर टिप्पणी ६—सुरधा तथा सालावास के आसिया चारणों पर टिप्पणी। ७—जगदीशपुरा के खिड़िया चारणों पर टिप्पणी।

घ—बूंदेलां री विगत—बुन्देलों की पीढ़ियावली जिसमें उनको

गरवार राजपूत बतलाया गया है तथा उनका बनारस से समीपवर्ती बूंदिया सेड़े गरवाड़ रायपरदे के समय में आना लिखा है । बूंदिया सेड़ से हाल (बसम का एक सरदार) के साथ गोंडवाणा यहां से कोरछा के समीप कुंडार आकर बस गये । पीढ़ियावली भू मरसिंह के पुत्रों तक चलती है जिनका (पुत्रों का) नाम नहीं दिया है ।

च—गढ़ कोटां री विगत —जोधपुर, मंडोवर, अजमेर, चित्तौड़ जैसलमेर जालौर सिवाणा, बीकानेर मोजड, मेड़ता जैतारण, फलोदी, सांगानेर, पोहकरण आगरा अहमदाबाद बुरहानपुर, सीकरी फतहपुर, कुंभलमेर उदयपुर एवं नागौर की स्थापना के विषय में टिप्पणियां हैं।

छ—जोधपुर रा देवस्थानां री विगत —जोधपुर के प्राचीन मन्दिरों का (उनकी स्थापना के विषय में विशेष रूप से) विवरण तथा उनकी नामावली है ।

ज—जोधपुररा निवाणां री विगत – जोधपुर शहर तथा उसके समीपवर्ती प्रदेश के तालाब कुवें बावड़ी, जंगल, कुंड आदि की नामावली ।

झ—जोधपुर बागायत री विगत – जोधपुर के प्रधान उद्यान उनकी स्थिति, वृक्ष, कुए आदि का वर्णन ।

ट—जोधपुर गढ थी जिके बिहरे कोसे छै त्यांरी विगत – जोधपुर तथा समीपवर्ती गाँव परगना तथा इसके स्थानों की दूरी कोसों में उल्लिखित है ।

ठ—गढा साका हुवा त्यां री विगत —रणथंभौर विजय (सं० १३५८ वि) तथा अन्य कुछ शहरों के विजय तथा युद्धों की तिथियों का वर्णन टिप्पणियों के रूप में है ।

ड—पातसाह साहजिहां रै बेटां उमरावां ने मनसप री विगत– शाहजहां के पुत्र तथा उनको मनसब का विवरण । इसका आरम्भ शाहजादा दारा से होता है तथा अन्त मोजराज कछवाहा से ।

ढ—पातसाह साहजिहां रै सूबां री विगत– शाहजहां के २१ प्रान्तों की नामावली उनकी आय तथा परगना के साथ ।

ण—पातसाही मुनसप री विगत– मनसबदारों की विभिन्न श्रेणियां पूर्ण विवरण के साथ ।

ठ—छत्रीवंस री साखां री विगत— पँवार, गहलोत चोहान भाटी, सोलंकी, परिहार गोहिया एवं राठौड़ की शाखाओं की नामावली।

ड—श्री जी रा डेरा री विगत— जोधपुर दरबार जब डेरों में होते थे उस समय विभिन्न मनुष्यों की विभिन्न मं खियों तथा स्थानों का विवरण।

ढ—मुजरारां रै गांव रोकड़ री विगत— सं० १६८७ से सं० १७०५ वि० तक के जोधपुर प्रधान कर्मचारियों की तथा गांवों की नामावली।

ण—राजसिंघ जी री बेटियां रा बनोला में दरबार सू मेलियो सिखरी विगत— सं० १६६६ वि० में राजसिंह की सात पुत्रियों के विवाह में महाराजा जसवंतसिंह द्वारा लाहौर से आसोप को भेजे गये उपहारों का वर्णन।

त—आमेर जैसिंघ जी रा मरणा पर टीको मेलियो तिण री विगत— जयसिंह जी की मृत्यु (सं० १७२४ वि०) पर उत्तराधिकारी रामसिंह के लिये जोधपुर नरेश द्वारा भेजा गया टीका– १ हाथी ७ घोड़े, कुछ वस्त्र उसका विवरण।

थ—तिंहवारां में मोताम पावै त्यांरी विगत— प्रमुख पर्वों पर महाराजा के द्वारा नाइ वैद्य भ्रमोतीदार आदि को दिये जाने वाले उपहारों का वर्णन।

फ—जैसलमेर रावल अमरसिंघ जी रा मरणा पर टीको मेलियो तिण री विगत— सं १७६१ वि० में जोधपुर नरेश अजीतसिंह के द्वारा जैसलमेर के रावल अमरसिंह जी की मृत्यु पर उत्तराधिकारी रावल जसवंतसिंह के राज्याभिषेक के समय पर भेजे गये (टीका) उपहारों का वर्णन।

ब—बहू जी सेखावत जी अम्नरंगदे जी री अघरणी री विगत— महाराज जसवंतसिंह जी की रानी सेखावत जी के अघरणी[1] के समय (सं० १७०८ वि०) दिये गये उपहारों का वर्णन।

भ—कंवर जी रै जनम उछब रा खरच तथा पटा री विगत— महाराजा जसवंतसिंह जी के राजकुवर पृथ्वीसिंह (जन्म सं० १७०६) तथा जगतसिंह (जन्म सं १७२३) के जन्मोत्सव के उपलक्ष में हुए व्यय तथा उनको दी गई जागीरों का वर्णन।

१—एक प्रकार का उत्सव जो गर्भावस्था के समय मनाया जाता है।

म—जातों री न्यातों री विगत— वैष्णव, पुरोहित ब्राह्मण, पल्ह चारण, जाट, कलाल रैबारी, कायस्थ जैन गच्छ, सुनार डूम, मुहणोत, बनिया आदि जातियों की शाखाओं की सूची मात्र तथा अन्त में राणा सांगा की सहायता से राठौड़ राव रिणमल द्वारा सं० १४८? वि० में मुगल मारनों, नागौर-विजय पर तथा नींबसी द्वारा उनको फुसलाने पर टिप्पणियां।

य—पैंडारी विगत।– जोधपुर से मेवाड़ के तथा कुछ भारत के नगरों की दूरी (कोसों में) की सूची।

र—भुज नै नवानगर रे जाडजा री विगतः–भुज तथा नवानगर के जाडेजों के स्थान पर टिप्पणी यह राव भारा के द्वारा भुज नगर बसाने से (सं० १६४४) प्रारम्भ होती है। जाम जोसा की पुत्री प्रेमां का जोधपुर के महाराज गजसिंह से विवाह (सं० १६८०) जाम के पुत्र लाखा के राज्याभिषेक का समय सं० १७०२ तथा रिणमल के भाइ रायसिंह का राज्याभिषेक का समय सं० १७१८ दिया है। शत्रपाता के युद्ध सं० १७१६ वि० के साथ साथ इसकी समाप्ति होती है।

ल—हिन्दुस्तान रा सहरां री छेटी तथा विगत– भारत के प्रमुख नगरों-मथानगर सागर (सगीब) का संक्षिप्त परिचय।

व—अणहिलपाटण रा चावड़ा भाया नै सोलंकी (राज बीज) तथा मूलराज री विगत– सोलंकी भाई राज तथा बीज अणहिलवाड़ा के अन्तिम चावड़ा शासक के विश्वास पात्र बने। उसने अपनी बहिन रुक्मणी का विवाह राज के साथ किया। राज के पुत्र मूलराज ने किस प्रकार अपने पिता को मारकर राज्याधिकार किया इसका विवरण है।

श—बीदावता री विगत– राव जोधा जी द्वारा जीत गया लाडणू, छापर तथा द्रोणपुर का वर्णन है जो उन्होंने अपने पुत्र बीदे जी को दिया। बीदेजी के सात पुत्रों की नामावली है। आगे बीदावतों और बीकानेर के राठौड़ शासक तथा नागौर के नरेशों से सम्बन्ध बताया गया है।

४—पटटा परवाना—

क—परवाना री तथा रुमरावां रे पटो।– महाराजा जसवंतसिंह जी (जोधपुर नरेश) के प्रधान सिंघावत राठौड़ की जागीर तथा उमराव सूरजमलोत महेशदास की जागीर का वर्णन।

ख—राणापरा री नेग तथा पर्दा— सूरजसिंह की रानी सौभागदे गजसिंह की रानी प्रतापदे जसवंतसिंह की रानी जसवंत दे को दिये गये उपहारों तथा आगारों का वर्णन ।

५-इलकाब नामा—

क—इलकाबनोमो अंगरेजां री तरफ सूं श्री हजूर साहिबां रै नामै आवै तथा श्री हजूर साहिबां री तरफ सूं आवै तिण री नकल— महाराजा जोधपुर एवं ब्रिटिश सरकार के पत्र व्यवहार की प्रतिलिपि ।

ख—कागदां रा इलकाब— जोधपुर के महाराजा गंगासिंह तथा जसवंतसिंह जी द्वारा जयपुर नरेश महाराजा जयसिंह को, बूंदी नरेश शत्रुसाल को बीकानेर नरेश कर्णसिंह तथा अन्य मारवाड़ के प्रमुख जागीरदारों को लिखे हुये पत्रों का संग्रह है। महाराजा अजीतसिंह के द्वारा दी गई एक सनद भी इसमें संलग्न है ।

ग—खरीतों री नकल— जोधपुर के महाराजा तथा उदयपुर के राणा के मध्य में हुये पांच पत्रों की प्रतिलिपि ।

१—महाराजा अजीतसिंह तथा राणा संग्रामसिंह के मध्य (सं० १७८४)
२—कुंवर विजयसिंह तथा राणा जगतसिंह के मध्य (सं० अज्ञात)
३—महाराजा विजयसिंह तथा राणा अड़सी के मध्य (सं० १८२१)
४—राणा अड़सी तथा महाराजा विजयसिंह के मध्य (सं० १८२९)
५—राणा संग्रामसिंह तथा महाराजा अजीतसिंह के मध्य (समय अज्ञात)

६—जन्मपत्रियां—

क—राजा री तथा पातसाहां री जनम पत्रियां— राजा से लेकर मानसिंह के पुत्रों तक जोधपुर के शासकों की; चौहान पृथ्वीराज कच्छवाहा सवाई जैसिंह तथा प्रतापसिंह एवं अकबर से लेकर औरंगजेब तक के देहली सम्राटों की जन्मपत्रियां इसमें हैं। जसवंतसिंह (द्वितीय) की जन्मपत्री पश्चात किसी दूसरे से बढ़ाई है ।

७—वर्द्धीखान—

क—जयपुर कारखाना री वद्धीखान री पोथी – इसमें जयपुर में होने वाली घटना का विवरण है ।

२—धार्मिक-गद्य साहित्य

"पिछले काल में धार्मिक-गद्य केवल जैन आचार्यों द्वारा ही लिखा गया था किन्तु इस काल में ब्राह्मण-विद्वानों ने भी धर्म-प्रचार के लिये राजस्थानी-गद्य का प्रयोग किया। इस प्रकार इस काल के धार्मिक-गद्य-साहित्य को दो भागों में विभक्त किया गया है —

क—जैन-धार्मिक-गद्य-साहित्य

ख—पौराणिक-गद्य-साहित्य

क—जैन-धार्मिक-गद्य-साहित्य—

इस काल में जैन-धार्मिक-गद्य ६ रूपों में मिलता है —१—टीकात्मक २—व्याख्यान ३—प्रश्नोत्तर-ग्रन्थ ४—विधि-विधान ५—तत्त्व-ज्ञान ६—कथा-साहित्य।

टीकात्मक-गद्य —

बालावबोध लेखन की परम्परा इस काल में भी चलती रही। अब गुजराती और राजस्थानी दोनों अलग अलग भाषायें हो गई थी अतः जैन-आचार्यों ने दोनों भाषाओं के प्रयोग अपने बालावबोध में किये। राजस्थानी के प्रमुख बालावबोधकार इस प्रकार हैं —

१—साधुकीर्ति[1] (खरतरगच्छ)

इनके पिता ओसवाल वंशीय सचिंती गोत्र के शाह वस्तिग थे। श्री दयाकलश जी के शिष्य श्री अमरमाणिक्य जी इनके गुरु थे। बाल्यकाल

१—देखिये — क—जैन-गूर्जर-कविओ भाग २ पृ ७१६
ख—वही, भाग ३ पृ० १४१६
ग—जैन-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास टिप्पणी ८२१ ८८२, ८८४ ८८६-८७
घ—युग-प्रधान जिनचन्द्र सूरि पृ १६२
ङ—ऐतिहासिक-जैन-काव्य-संग्रह पृ ४४

से ही इन्होंने अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया था। सं १६२५ में आगरे में अकबर की सभा में इन्होंने तपागच्छीय आचार्यों को पोषद की चर्चा में निरुत्तर किया।[1] बैशाख सुदी १५ सं० १६३२ में श्री जिनचन्द्र सूरि ने इनको उपाध्याय पद प्रदान किया। सं० १६४६ में जालोर पहुँचने पर वहीं इनका स्वर्गवास हुआ। यहां पर संघ ने इनका स्तूप भी बनवाया है।

इनके लिखे हुए गद्य और पद्य दोनों के ग्रन्थ मिलते हैं। गद्य-ग्रन्थों में "सप्तस्मरण बालावबोध"[2] है इसकी रचना सं० १६११ में हुई।

वाचक विमलतिलक साधुसुन्दर, महिमसुन्दर आदि इनके शिष्य थे जिन्होंने अपनी विद्वता का परिचय अपने ग्रन्थों में दिया है। साधुसुन्दर का 'उक्तिरत्नाकर'[3] उल्लेखनीय है।

९–सोमविमलसूरि[4] (लघुतपागच्छ)

इनका जन्म सं० १५७० मे हुआ। सं १५७४ वैसाख शुक्ला ३ को श्री हेमविमल सूरि द्वारा अहमदाबाद में इनका दीक्षा संस्कार हुआ। सं १५९० मे इन्होंने गणि-पद प्राप्त किया। सं० १५९५ मे इनके वाचक-पद प्राप्त करने के उपलक्ष मे महोत्सव मनाया गया। आचार्य श्री सौभाग्यहर्षसूरि ने इनको सूरिपद प्रदान किया। सं० १६ २ मे अहमदाबाद मे सं १६०४ मे स्तम्भतीर्थ मे सं १६०८ मे राजपुर मे सं १६१ म पाटण मे इन्होंने अपने चातुर्मास किये। सं० १६३७ मे इनका स्वर्गवास हुआ। अपने जीवनकाल में इन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की। गद्य ग्रन्थों में २ बालावबोध और एक टब्बा प्राप्त है —

१—इस शास्त्रार्थ की विजय का वृत्तान्त कनकसोम कृत "जयतपद वेलि" मे विस्तार से दिया गया है।

२—ह० प्र० अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर मे विद्यमान

३—ह० प्र० श्री मुनि विनयसागर-संग्रह, कोटा मे विद्यमान।

४—देखिये — क-लघु पोसालिक पट्टावली पृ० ४५-५०
ख-जैन-गूर्जर-कविओ भाग ३ पृ० १५५६
ग-जैन-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास टि ७११, ७७१ ८८१, ८८९, ९७३

१—दशवैकालिक सूत्र बालावबोध[1] २—कल्पसूत्र बालावबोध[2] (रचना सं० १६२५) ३—कल्पसूत्र टब्बा[3]

३—चारित्रसिंह[4] (खरतरगच्छ)

यह खरतरगच्छ श्रीमतिभद्र के शिष्य थे। इनकी गणना परम विद्वानों एवं उच्च कोटि के कवियों में की जाती थी। इन्होंने गद्य और पद्य दोनों में ८ रचनायें की हैं। गद्य रचना सम्यक्त्वविचारस्तवन बालावबोध सं० १६३३ में कनकपुर में लिखी गई। इसके अन्तिम २ पत्र अभय-जैन पुस्तकालय में विद्यमान हैं।

४—जयसोम[5]

श्री जिनमाणिक्यसूरि ने सं० १६ ५ में इनको दीक्षित कर इनका नाम जयसोम रखा। इससे पूर्व की प्रशस्तियों में इनका नाम जयसिंह मिलता है, ये क्षेमशाखा में प्रमोदमाणिक्यजी के शिष्य थे। कहा जाता है कि इन्होंने अकबर की सभा के किसी विद्वान को शास्त्रार्थ में निरुत्तर किया था। यह इनकी विद्वत्ता का प्रमाण हो सकता है। इनके, संस्कृत प्राकृत एवं लोकभाषा के लगभग १२ ग्रंथ मिलते हैं। लोकभाषा-गद्य की कृति प्रश्नोत्तर ग्रंथ है जिसकी रचना सं० १६५० में की गई थी[6]।

५—शिवनिधान (खरतरगच्छ)

यह श्रीजिनदत्तसूरि की शिष्य-परम्परा में श्री हर्षसार के शिष्य थे। इनके शिष्यों में महिमसिंह, मतिसिंह आदि प्रमुख शिष्य थे जिन्होंने

१—ह० प्र० सेठिया-संघ-भंडार में विद्यमान
२—ह० प्र० सीमंधरी-भंडार में विद्यमान
३—ह० प्र० अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान
४—देखिये— क जैन-गूर्जर-कविओ भाग १ पृ० १५१४ १५२६
ख—वही भाग २ पृ० ७३१
ग—जैन-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास टि० ८७६ ८८२
घ—युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि पृ० १८७
५—देखिये— क—जैन-गूर्जर कविओ भाग १ पृ० १४६७
६—युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि पृ० १८७-२ ३
७—जैन-गूर्जर-कविओ भाग ३ पृ० १४१८

कई पद्य ग्रंथों की रचनायें की। अपने पूर्वज मेरुसुन्दर की भाँति इन्होंने भी कई उपयोगी ग्रंथों की लोक भाषा में टीकायें की। इनकी गद्य पुस्तकों में ४ बालावबोध इस प्रकार हैं १-शाश्वत-स्तवन पर बालावबोध[1] (सं० १६५२ में शाकम्भरि में लिखित) २-लघु संग्रहणी बालावबोध[2] (सं० १६८२ में अमरसर में लिखित) ३-कल्पसूत्र पर बालावबोध[3] (सं० १६८२ में अमरसर में लिखित) ४-गुणस्थान गर्भित जिनस्तवन बालावबोध[4] (सं० १६९२ में लिखित) ५-कृष्ण वेलि पर बालावबोध। इनके अतिरिक्त निम्नलिखित गद्य-ग्रंथ और मिलते हैं १-योगशास्त्र टब्बा+ २-कल्पसूत्र टब्बा[5] ३-चौमासी व्याख्यान ४-विधि प्रकरण[6]। ५-कालकाचार्य-कथा।

६-विमलकीर्ति[7]

इनके पिता हुंबड़ गोत्रीय श्री चन्द्रशाह और माता गवरा देवी थीं। सं० १६५४ में इन्होंने उपाध्याय साधुसुन्दर से दीक्षा ग्रहण की। श्री जिन राजसूरि ने इनको वाचक पद पर प्रतिष्ठित किया[8]। सं० १६९२ में किरहोर में इनका स्वर्गवास हो गया[9]।

इनकी लिखी हुई १० गद्य-कृतियों में ६ बालावबोध हैं। "विचार पट्त्रिंशिका (दंडक) बालावबोध" एवं पडिशतक बालावबोध अभय-जैन पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान हैं। इनके अतिरिक्त श्री देसाई ने अपने "जैन-गूर्जर कवियो" भाग ३ में निम्नांकित रचनाओं का उल्लेख किया है- १-जीवविचार बालावबोध २-नवतत्व बालावबोध ३-दंडक

१—म० जै० वि० में ह० प्र० विद्यमान।
२—ह० प्र० अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान।
३—ह० प्र० बीजापुर में विद्यमान।
४—ह० प्र० सांगानेर में विद्यमान।
५—ह० प्र० अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान।
६—ह० प्र० अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान। मुनि विनय सागर संग्रह, कोटा।
७—जैन-गूर्जर-कवियो भाग ३ पृ० १६०२।
+—ह० प्र० तपा भंडार जैसलमेर में विद्यमान।
८—ऐतिहासिक-जैन-काव्य-संग्रह पृ० ४६
९—युग प्रधान जिनचन्द्र सूरि, पृ० १९३

बालावबोध ४–पक्खीसूत्र बालावबोध ५–दशवैकालिक बालावबोध ६–प्रतिक्रमण समाचारी बालावबोध ७–उपदेशमाला बालावबोध ८–प्रतिक्रमण टब्बा।

७–समयसुन्दर[1] (खरतरगच्छ)

इनके पिता श्री पोरवाड़ शाह रूपसी और माता लीलादेवी थी। बाल्यकाल में ही इन्होंने श्री जिनचन्द्रसूरि से चारित्र ग्रहण किया। इनके विद्या गुरु वाचक श्री महिमराज एवं श्री समयराज वाचक थे। इनकी विद्वत्ता भी विख्यात थी। सं० १६४६ में यह श्री जिनचन्द्रसूरि के साथ लाहौर गए वहाँ अकबर की सभा में अष्टलक्षि नामक ग्रन्थ सुनाकर वाचक पद प्राप्त किया। सिन्ध में विहार करके वहाँ गो रक्षा का प्रशंसनीय कार्य किया। जैसलमेर में रावल श्री भीमजी को उपदेश देकर मीणों के हाथों से सांड नामक जीवों को मारने से बचाया। सं १६७१ में श्री जिनसिंहसूरि ने लवेरे नामक ग्राम में इनको उपाध्याय पद प्रदान किया। चैत्र शुक्ला १३ सं १७०२ में अहमदाबाद में इनका देहावसान हो गया।

यह राजस्थानी साहित्य के एक बहुत बड़े लेखक थे। इन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की। गद्य-ग्रन्थों में 'षडावश्यक-सूत्र-बालावबोध'[2] (र सं १६८३) एवं 'यति आराधना भाषा'[3] (रचना सं १६८५) उल्लेखनीय हैं।

८–पूरचन्द्र[4]–

इनके जन्म-स्थान माता एवं वंश आदि के विषय में कुछ भी नहीं

१–देखिये —क–जैन-गूर्जर-कविओ भाग ३ पृ १६०७
ख–जैन-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास टि ४६ १३ ३३४ ३४६, ३७४ ८४१ ८४४ ८४० ४०७, ८६४, ८०८, ८६४, ६ ४ ६०६ ६१ ६६६, १८०, ६६६
ग–युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि पृ० १६७–६८

२—ह प्र० ज्ञान भंडार जैसलमेर मे विद्यमान।

३—ह प्र मुनि विनयसागर संग्रह कोटा मे विद्यमान।

४—देखिये —क–कविवर सूरचन्द्र और उनका साहित्य – 'जैन-सिद्धान्त भास्कर' भाग १७ किरण १ पृ २४
ख–जैन-गूर्जर-कविओ भाग ३ पृ ११ ६

मिलता। संस्कृत एवं लोकभाषा में इन्होंने लिखा है। राजस्थानी-गद्य में लिखी हुई 'चातुर्मासिक व्याख्यान बालावबोध' सं १६६४ की रचना है।

मतिकीर्ति[1] (खरतरगच्छ)

यह श्री गुणविनय (खरतरगच्छ) के शिष्य थे। इनके गद्य-ग्रंथों में प्रश्नोत्तर-ग्रंथ का उल्लेख स्वर्गीय श्री देसाई ने अपने जैन-गूर्जर-कविओ भाग २ पृ० १६०६ मे किया है।[2]

इन लेखकों के अतिरिक्त अनेक जैन-विद्वानों ने अपनी गद्य-रचनाओं मे राजस्थानी का प्रयोग किया है। इन गद्य लेखकों एवं इनकी रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं —

लेखक	गद्य-रचना	लेखन-समय
१०—चन्द्रधर्म गणि (तपा०)	युगादिदेव स्तोत्र बाला०	१६३३ वि०
११—पद्मसुन्दर (खरतर०)	प्रवचन सारोद्धार बाला०	१६५१ वि०
१२—नगर्षि (तपा०)	संग्रहणी टबार्थ	१६५३ लगभग
१३—श्रीपाल (ऋषि)	दशवैकालिक सूत्र बाला०	१६६४ वि०
१४—कमललाभ (खरतर०) जिनचन्द्रसूरि, समयराज अभयसुन्दर शि०	उत्तराध्ययन बाला०	
१५—कल्याणसागर	दानशील तपभाव तरंगिनी	१६६८ वि०
१६—नयविलास (खरतर०)	लोकनाल बाला०	१६८० लगभग
१७—ब्रह्मर्षि (ब्रह्ममुनि)	छोकमासिक बाला०	
१८—विनयविमल शि०	जीवाभिगम सूत्र बाला०	
१९—धनविजय (तपा०)	छ कर्म ग्रंथ पर बाला०	१७०० वि०
२०—श्री हर्ष	कर्म ग्रंथ पर बाला०	१७०० वि०
२१—विमलरत्न सूरि	वीर चरित बाला०	१७०२ वि०
	जय तिहुअण बाला०	
	बृहत संग्रहणी बाला०	
	शत्रुंजय स्तवन बाला०	
	नमुत्थुणं बाला०	
	कल्पसूत्र बाला०	

१—युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि पृ० २०२
२—इ० प्र० ज्ञान भंडार बीकानेर में विद्यमान

२-राजसोम	भावप्रराधना बाला०	
	इरियावही मिथ्यादुष्कृत स्तवन बाला०	
३-हंसराज	द्रव्य संग्रह बाला०	१७०६ वि०
४-कुंवर विजय	रत्नाकर पंचविंशति बाला०	१७१४ वि०
५-पद्मचन्द्र	नवतत्व बाला०	१७१० वि
६-वृद्धिविजय	उपदेशमाला बाला०	१७२३ वि०
७-विद्याविलास	कल्पसूत्र स्तवन	१७२६ वि०
८-यशोविजय उपा०	पंच निर्ग्रंथी बाला०	
	महावीर स्तवन स्वोपज्ञ बा०	१७३१ वि०
	ज्ञानसार पर स्वोपज्ञ बा०	
९-जीवविमल	अनुपम पंचाशिका बाला०	१७४४ वि
१०-विजयजिनेन्द्रसूरि शि०	स्थूलिभद्र चरित्र बाला०	१७६२ वि०
११-अमृतसागर	सर्वज्ञशतक बाला०	१७४६ वि०
१२-सुखसागर	कल्पसूत्र बाला०	१७६२ वि०
	दीपाली कल्प बाला०	१७६३ वि
	नवतत्व बाला०	१७६६ वि
	पाक्षिक सूत्र बाला	१७७३ वि०
१३-क्षमाचन्द्र	ज्ञानसुखड़ी	१७६७ वि०
१४-रामविजय	उपदेशमाला बाला०	१७८१ वि
	नेमिनाथ चरित्र बाला	१७८४ वि०
१५-ज्ञानविजय	योगशास्त्र बाला०	१७८८ वि
१६-मोहनसागर	आचार प्रदीप बाला	१७९८ वि०
१७-भानुविजय	पार्श्वनाथ चरित्र बाला	१८ ० वि०

इन रचनाओं के अतिरिक्त कई रचनायें ऐसी प्राप्त हैं जिनके लेखकों के नाम अज्ञात हैं। यह रचनायें राजस्थानी एवं गुजराती गद्य में मिलती हैं क्योंकि राजस्थान और गुजरात यह दो क्षेत्र ही जैन आचार्यों की निवास भूमि हैं। सोलहवीं शताब्दी के उपरान्त जब राजस्थानी और गुजराती दोनों स्वतन्त्र भाषायें हो गईं तब भी इन जैन आचार्यों की रचनाओं की भाषा और शैली में कोई आकस्मिक अन्तर दिखाई नहीं पड़ता। धीरे धीरे उपरान्त की रचनाओं में यह भेद विस्तृत हो गया।

२-व्याख्यान

इन व्याख्यानों के विषय पर्व-विधि और पद-अनुष्ठान के माहात्म्य

है। यह व्याख्यान टीका और स्वतन्त्र दोनों रूपों में मिलते हैं। सौभाग्य-पंचमी, मौन एकादशी, दीपावली होलिका, ज्ञान पंचमी अक्षय तृतीया आदि सभी पर्वों पर इन व्याख्यानों का पठन पाठन होता है। पर्व को मनाने की विधि उस दिन किये जाने वाले अनुष्ठान आदि का विवरण इस प्रकार के ग्रन्थों में दिया जाता है। उदाहरण के लिए "दीपावली-कल्प और "सौभाग्य-पंचमी" व्याख्यानों को लीजिए। प्रथम में दीपावली से सम्बन्धित व्रत एवं आचार विचारों को कहानियों द्वारा दृष्टान्त देकर समझाया गया है। इसी प्रकार 'सौभाग्य पंचमी' व्याख्यान में कार्तिक सुदी पंचमी का माहात्म्य और उसकी तपस्या का फल दृष्टान्त देकर बताया है।

इनका गद्य समझने के लिये कुछ उदाहरण यहां दिये जाते हैं:—

१—श्री आदिनाथ पुत्र प्रथम चक्रवर्ति श्री भरत तेहनउ मरीचि इसी नामिइ पुत्र हूयउ। अनेरइ दिवस आदिनाथ नइ केवलज्ञान ऊपनइ हुतइ अयोध्या आव्या देवताए समोसरनी रचना कीधी, तिणि अवसर पन पालिकि आवी भरत नई वधावणी दाधी[1]।

२—श्री फलवधी पार्श्वनाथ मतें नमस्कार करी न कार्ती सुद पांचम तप नी महिमा वर्णवीये छी। भविक प्राणी ने उपगार भणी जिम पूर्वेले आचार्य कह्यों छे तिम हु पिण कहिस्यु। भुवन कहितां तीन त्रिभुवन मे सब अर्थनो साधक सी करणहार ज्ञान छे। ज्ञान सेती मुक्ति पामी जे। ज्ञान सती देवलोक का सुख पामा जें। तिण वास्ते भविक प्राणियो प्रमाद छांडी ने कार्ती सुदि पाँचम तपस्या करो भला दर आराधउ। जिण भांति से गुण मंजरी अने वरदत्तें जिम पाँचम आराधी। दृष्टांत [2]

३–प्रश्नोत्तर-ग्रन्थ

प्रश्नोत्तर रूप में ग्रन्थ लिखना जैन धर्म में एक परिपाटी सी ही चल पड़ी है। संस्कृत और प्राकृत प्रश्नोत्तर ग्रन्थों के अनुवाद राजस्थानी भाषा में भी हुए साथ ही उसी अनुकरण पर स्वतन्त्र प्रश्नोत्तर ग्रन्थ लिखे जाते रहे। इन प्रश्नोत्तर ग्रन्थों में जिज्ञासु प्रश्न करता है और आचार्य उसका उत्तर देकर उसकी जिज्ञासा का समाधान करते हैं। उदाहरण के

---

[1]—"दीपावली माया कल्प" ह० प्र० अ० म० पु० बीकानेर म विद्यमान

[2]—"सौभाग्यपंचमी व्याख्यान" ह० प्र० अ० पा० पु० बीकानेर म विद्यमान

लिये समयकल्याण द्वारा रचित "प्रश्नोत्तर-सार्द्ध-शतक[1] (रचना सं० १८७४) तथा "विशेष-शतक[2] (रचना काल १८८१) रखे जा सकते हैं। पहले ग्रन्थ में भगवान तीर्थंकर व्याख्यान दे रहे हैं, जिज्ञासु प्रश्न करता है, और तीर्थंकर उसका समाधान करते हैं। इस ग्रन्थ में कुल १५० प्रश्नों के उत्तर संग्रहीत हैं[3]। दूसरा संस्कृत का अनुवाद है। इसमें १०० प्रश्नों के उत्तर हैं।

भाषा की दृष्टि से प्रथम रचना पर गुजराती का तथा द्वितीय पर खड़ी बोली का प्रभाव दिखाई देता है। उदाहरणार्थ —

१— चौबीस में बोले समय २ अनंती हानि थै ए वचन सूत्र अनुसार छै। जिस कारण मात्र हीज नहीं थै समय २ एकेक वस्तु ना २ पर्याय घटै थै। पंचकल्पभाष्य में जंबूद्वीपप्रज्ञप्तीसूत्र में वृत्ति में विस्तारै ये विचार कह्यो छै।

प्रश्नोत्तरसार्द्ध शतक पत्र २ (ख)

२—प्रश्न-धोया फूल से जिनराज जी की पूजा होय के नहीं तब उत्तर कहे है-धोया फूल से जिनराज की पूजा होय। भाद्रविनकल्पसूत्र टीका में ऐसे ही कह्यो है।

-विशेष शतक पत्र ६ (ख)

४–विधिविधान

यह जैनियों के कर्मकाण्ड के ग्रन्थ हैं। इनमें पूजा-विधि, सामायिक, उपरचर्या प्रतिक्रमण पौषध, उपधान दीक्षा विधि आदि पर प्रकाश डाला गया है। 'श्वेताम्बर दिगम्बर ८४ बोल[3]' में दिगम्बर और श्वेताम्बर के ८४ भेदों को समझाया गया है। "खरतर तपा समाचारी भेद[4]" में खरतर-गच्छ तथा तपागच्छ के समाचारी भेद को स्पष्ट किया गया है। इस प्रकार

१—ह० प्र अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर तथा मुनि विनयसागर संग्रह कोटा में विद्यमान

२—ह० प्र अभय-जैन-पुस्तकालय, बीकानेर तथा मुनि विनयसागर संग्रह कोटा में विद्यमान

३—ह० प्र० अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर में विद्यमान।

४—ह० प्र० अभय-जैन-पुस्तकालय, बीकानेर में विद्यमान।

के ग्रन्थ भी कई मिलते हैं। क्षमाकल्याण कृत "श्रावक विधि प्रकाश[1] और शिवनिधान कृत "श्राद्धमार्गविधि[2] आदि इसी प्रकार के ग्रन्थ हैं।

गद्य का उदाहरण—

१—केवली ने आहार न मानै दिगम्बर, श्वेताम्बर मानै, केवली ने नीहार न मानै दिगम्बर, श्वेताम्बर मानै। केवली ने उपसर्ग न मानै दिगम्बर, श्वेताम्बर मानै। + + + + आभरण सहित प्रतिमा न मानै दिगम्बर, श्वेताम्बर मानै। चवदै उपगर्ण दिगम्बर न मानै, श्वेताम्बर चवदै उपगर्ण साधु राखै।

—दिगम्बर श्वेताम्बर ८४ बोल

२—खरतर विहार में अचित पाणी लै सचित पाणी लै तपा सचित न लै। आंबिलै पिण्ड सचित नो विसेष नहीं खरतर रै। खरतर उपवास ति विहार कीधै पाळते पहरै तिविहार चोविहार करै। तपा परमात रो पचपाण सूरज ऊगते ताइ करै।

—खरतर तपा समाचारी भेद

४—तत्वज्ञान

इसके अन्तर्गत जैन दार्शनिक-विचार धारा के ग्रन्थ आते हैं। इन जैन-दर्शन के ग्रन्थों की संख्या बहुत बड़ी है। 'आत्मनिंदा-भाषा[3] और "आत्म-शिक्षा-भावना[4] यह दोनों ग्रन्थ उदाहरण के लिए उपयुक्त हो सकते हैं। दोनों का विषय आत्मा से सम्बन्ध रखता है। प्रथम में आत्मा को चिन्तन एवं मनन में बाधक मान कर कोसा गया है। दूसरी में आत्मा को सन्मार्ग पर चलने के लिये समझाया गया है। दोनों की शैली में बहुत अन्तर है। दोनों के लेखकों के नाम अज्ञात हैं। इन दोनों के गद्य को देखने के लिये क्रमशः २ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

१—हे आत्मा है चेतन, पे कुदृष्टां पे कुमन्त्रायां, पे अयप्रवृत्ति, पे

१—ह० प्र० मुनि जिनकृपाचन्द्र-संग्रह कोटा में विद्यमान
२—ह० प्र० अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान
३—ह० प्र० अभय-जैन-पुस्तकालय, बीकानेर में विद्यमान
४—ह० प्र० अभय-जैन पुस्तकालय, बीकानेर में विद्यमान

गुणभद्र तथा हेमचन्द्र ने संस्कृत में, श्री शीलाचार्य श्री भद्रेश्वर आदि ने प्राकृत में और पुष्पदन्त आदि ने अपभ्रंश में बड़ी बड़ी कहानियों की रचना की।

प्रकरण-ग्रंथ

दसवीं शताब्दी से तो जैन-मौलिक-कथा-ग्रन्थों की रचना का क्रम चल पड़ा। आ० हरिषेणसूरि का "बृहत्-कथा-कोष"[1] (रचनाकाल सं ९८९) ग्य० श्री जिनेश्वरसूरि एवं आ० देवभद्रसूरि आदि के कथा-संग्रह इस काल में मिलते हैं। प्रकरण-ग्रन्थों में धर्मोपदेश के दृष्टान्त या महापुरुषों के गुण स्मरण रूप में अनेक व्यक्तियों के नाम आये हैं। जिनका विस्तृत निर्देश टीकाकारों ने अपनी कथाओं में किया है। इस प्रकार के पचासों प्रकरण-ग्रंथ ऐसे हैं जिनमें अवांतर कथाओं के रूप में कई कथायें संग्रहित हैं। "भरतेश्वर-वृत्ति" '[illegible]-वृत्ति', 'ऋषिमण्डल-वृत्ति' आदि अनेक वृत्तियों में सैकड़ों कथायें हैं। मौलिक-प्रकरण-ग्रन्थों में सदाचार एवं धर्मोपदेश के उदाहरण-रूप से कथाओं का प्रयोग हुआ है।

तेरहवीं शताब्दी से रास चौपाई बेलि आदि में पद्य-कथा-ग्रंथ लिखे गये। प्रारम्भ में ढाल-वर्णित-वृत्तियां छोटी ही रहीं।[2] राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी इन में मिलता है।

राजस्थान में जैन कथायें—

इस प्रकार जैन-साहित्य में कहानियों की परम्परा देखने के लिये डाली गई इस विहंगम दृष्टि से स्पष्ट होता है कि जैन-कथा साहित्य बहुत प्राचीन एवं विस्तृत है। पंद्रहवीं शताब्दी से राजस्थानी-गद्य में लिखी गई जैन-कथायें मिलने लगती हैं। यह सब कथायें प्रायः धार्मिक ही रहीं जिनका मूल उद्देश्य धर्मोपदेश या धर्मशिक्षा रहा। यह कथायें दो रूपों में

१—जैन-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास पृ० ८८१-८९, ७३८ से ४०१, १५८।
श्री नाथूराम प्रेमी का "दिगम्बर-जैन-ग्रन्थकर्ता और उनके ग्रन्थ।"
इस दिगम्बर संप्रदाय की सुविख्यात 'अनेकान्त' में प्रकाशित।
पंडित कैलाशचन्द्र शास्त्री का "जैन-सिद्धान्त-भास्कर" में प्रकाशित लेख
२—[illegible]-जैन-ग्रन्थमाला में प्रकाशित

सती है — १-मौखिक एवं २-अनुवाद। टीकाकारों ने व्याख्या करने लिये इस प्रकार की कहानियों का सहारा लिया। इन कथाओं के अनेक रूपान्तर मिलते हैं। इन कथाओं का लेखन समय एवं लेखकों का पता नहीं चलता क्योंकि इस ओर जैन आचार्यों का ध्यान ही नहीं गया। समय, अवसरानुसार उपयुक्त कहानी का प्रयोग कर आचार्यों ने अपने उद्देश्य को पूरा किया। यह कथायें ४ प्रकार की हैं —

१—बालावबोध की कथायें
२—चरित्र कथायें
३—व्रत उपवासों की कथायें
४—हास्य-विनोदात्मक कथायें

इन कथाओं का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है —

बालावबोध की कथायें—

'बालावबोध' के अन्तर्गत आई हुई कथायें उपदेशात्मक हैं। इनकी रचनायें पन्द्रहवीं शताब्दी से प्रारम्भ हो चुकी थीं। सोलहवीं, सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में इनकी बहुत रचना हुई इसके उपरान्त इनके लेखन कार्य में शिथिलता आने लगी।

कोरे उपदेश की शिक्षा पालंड हो सकती थी। उसका स्थायी प्रभाव अधिक समय तक नहीं रह सकता था अतः उपदेशों के साथ दृष्टान्त रूप में कथाओं को गुम्फित कर देने से जैन आचार्यों को अपने कार्य में अधिक सफलता मिली। इन कहानियों के तीन प्रकार हैं —

क-पारम्परिक
ख-परिवर्तित
ग-नव-रचित

पहले प्रकार की वे कहानियां हैं जिनका उदाहरण के लिये परम्परा से प्रयोग चला आता था। यह कहानियां बहुत ही लोक प्रसिद्ध हो चुकी थीं। दूसरे प्रकार की कथायें जैनेतर धर्म-कथाओं लोक प्रचलित कथाओं ऐतिहासिक कथाओं आदि में आवश्यक परिवर्तित कर धार्मिक शिक्षा के उपयुक्त बनाई गई। तीसरे प्रकार की कथाओं के लिये जैन-आचार्यों को कहीं बाहर नहीं जाना पड़ा। जब उनको उपयुक्त दोनों प्रकार की

कहानियों से उद्देश्य सफल होता दिखाई न दिया तब उन्होंने अपने अनुभव, कल्पना एवं बुद्धि बल से नवीन कथाओं की सर्जना की।

यह सभी कहानियाँ रूपक या दृष्टान्त रूप में लिखी गई हैं। पिण्ड-नियुक्ति, आवश्यक दशवैकालिक, उत्तराध्ययन एवम् प्रतिक्रमण आदि पर रचे गये बालावबोध-ग्रन्थों में सहस्रों की संख्या में यह संग्रहीत हैं। इन कथाओं का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है —

क—पाप और पुण्य की कहानियाँ—

ऐसी कहानियों में पाप का दुष्परिणाम एवं पुण्य का सुफल दिखलाया गया है।

ख—श्रावकों की कहानियाँ:—

जैन-तीर्थंकरों के अनुयायी बन कर जिन श्रावकों ने संसार त्यागा तथा मुक्ति प्राप्त की उनके जीवन की प्रमुख घटनाओं को लेकर लिखी गई कहानियों का प्रयोग भी जैन-आचार्यों ने अपने बालावबोधों में किया है।

ग—सतियों की कहानियाँ :—

इसके अन्तर्गत उन साध्वी स्त्रियों की कहानियाँ आती हैं जिन्होंने शील की रक्षा के लिए यातनायें सहीं। इस कष्ट सहन के परिणाम स्वरूप ही उनकी वंदना की गई है तथा इसके आधार पर कई उपदेशों की सृष्टि की गई।

घ—मनोविकारों के दमन की कहानियाँ —

क्रोध अहंकार लोभ मोह आदि मनोविकारों के दमन के लिये जैन-धर्म में बहुत सी शिक्षायें दी गई हैं। इन मनोविकारों को जीत लेना ही जीवन का प्रधान उद्देश्य है। इसीलिए जैनाचार्यों ने कई दृष्टान्तिक कहानियों के आधार पर अपनी शिक्षाओं को आधारित किया है।

च—पारमार्थिक कहानियाँ —

सदाचार का आचरण करने वाले व्यक्तियों को प्राप्त होने वाले फल

का दिग्दर्शन इन कहानियों में किया है। नवकारण से जो पारमार्थिक लाभ होता है उसकी महिमा ही इन कहानियों का यथार्थ विषय है।

छ—जन्मजन्मान्तर की कहानियाँ—

कर्मकाण्ड एवं पुर्नजन्म पर जैन-मत आस्था रखता है। अन्य कर्मों का फल कई जीवन तक कैसा मिलता है इसका दिग्दर्शन कराने वाली कहानियों के प्रयोग भी जैन विद्वानों ने किये हैं।

ज—कष्ट सहन की कहानियाँ —

परोपकार, अहिंसा आदि का स्थान जैन-मत में बहुत ऊँचा है। इनके पालन करने में जो कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं उनका परिणाम अंततः अच्छा होता है। समाज में इन सद्‌गुणों की प्रतिष्ठा करने के लिये ऐसी कई कहानियाँ मिलती हैं जिनमें उदाहरण देकर इस प्रकार कष्ट सहने का माहात्म्य बताया गया है।

झ—चमत्कारिक-कहानियाँ —-

जैन-आचार्यों, महापुरुषों विद्याधरों आदि के द्वारा दिखलाये गए उन चमत्कारों से सम्बन्ध रखने वाली कहानियाँ भी मिलती हैं जिनसे प्रभावित होकर अनेक राजा महाराजाओं ने जैन-मत ग्रहण किया। इन कहानियों में अलौकिकत्व का प्रधानता पाई जाती है।

इनके अतिरिक्त और भी कई विषय हैं जिन पर दृष्टान्त या रूपक के माध्यम से सदाचार की शिक्षा देने के लिय जैन-शीक्षकों ने अपने बालावबोधों में कहानियों के प्रयोग किये।

चारित्रिक कथायें

चारित्रिक कथायें प्रायः अनुवाद रूप में मिलती हैं। इनमें जैन महापुरुषों एवं तीर्थंकरों आदि तथा उन श्रमण-अनुयायियों के जीवन की झाँकियों के रूप में कथायें आती हैं। संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश में कल्पसूत्र आदि रूपों में लिखी गई कहानियों की भाँति राजस्थानी में भी इस प्रकार की कहानियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। उदाहरण के लिये

"श्रीपाल-चरित्र[1] "नेमिनाथ-चरित्र' (टब्बा[2]) "पार्श्वनाथ या अष्ट गणधर-चरित्र[3] "जम्बू-चरित्र[4] "उत्तमकुमार चरित्र[5] "मुनिपति चरित्र" आदि रखे जा सकते हैं ।

व्रत उपवासों की कहानियां :—

व्रत और उपवास जैन-सम्प्रदाय के अत्यन्त आवश्यक अंग रहे हैं। आत्मशुद्धि अहिंसा आदि की साधना के लिये इनका उपयोग किया जाता रहा है। धार्मिक-पर्वों का महत्व बताने के लिये किये गये व्याख्यानों में भी इस प्रकार के व्रत और उपवासों का प्रसंग आता है। इन कथाओं की परम्परा भी प्राचीन है। संस्कृत में भी ऐसी कई कहानियां मिलती है[6]।

ऐसी कथाओं में व्रत और उपवास का महत्व दिखाया जाता है। यह कथायें दृष्टान्त रूप में लिखी गई है। इनके प्रमुख विषय इस प्रकार हैं:—

१—व्रत विशेष का माहात्म्य
२—व्रत विशेष का पालन करने से पूर्व श्रावक की दशा
३—उसके द्वारा व्रत विशेष एवं अनुष्ठान आदि
४—उस व्रत की फल प्राप्ति के रूप में मनोकामना पूर्ण होना।

लोकभाषा में 'सौभाग्य-पंचमी की कथा", "मौन एकादशी की कथा' 'ज्ञानपंचमी की कथा' आदि अनेक कथाओं के अनुवाद मिलते है ।

हास्य विनोदात्मक कथायें —

उपदेशात्मक कहानियों के अतिरिक्त जैन-कथा-साहित्य में हास्य और विनोद की कहानियां भी मिलती हैं, किन्तु वह हास्य और विनोद धर्म से बाहर नहीं जाता अत हास्य और विनोद में भी धार्मिक तत्व अन्तर्निहित होता है। उदाहरण के लिये 'धूर्तोपाख्यान" देखिये —

१—ह प्र अभय-जैन-पुस्तकालय, बीकानेर में विद्यमान। नं १ ५९
२—ह प्र अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान। नं १ ०६
३—ह प्र अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान। नं० १ ८१
४—ह प्र अभय-जैन-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान। नं १११४
५—ह प्र अभय-जैन-पुस्तकालय, बीकानेर में विद्यमान नं ११ ४
६—विशेष अध्ययन के लिये देखिये—जैन-सिद्धान्त-भास्कर, वर्ष ११ अंक १

इस कथा म ४ धूर्तों द्वारा सुनाये गये व्याख्यानों का उल्लेख है । ये धूर्त अपनी कथाओं में ऐसे कथानक लाते हैं जिससे आश्चर्योन्मुख मनोरंजन होता है जैसे हाथी से भयभीत होकर तिल्ली के पेड़ पर चढ़ना, उस पेड़ को हिलाया जाना उसके फलों का नीचे गिरना, हाथी के पैरों से कुचले जाने पर उसमें से तेल निकलना, उसकी नदी बह जाना, हाथी का उस नदी में बहकर मर जाना, उपरान्त धूर्त का नीचे उतरना, उस तेल को पी जाना और उसमें न पड़ु चकर धूर्तों का मुखिया बनजाना आदि । इसी प्रकार की और भी अनेक कथायें इस कथा ग्र थ में आई हैं । इन कथाओं के सत्य होने का समर्थन दूसरे श्रोता-धूर्त रामायण महाभारत आदि के पुष्ट प्रमाण देकर करते हैं । इस 'धूर्तोपाख्यान" का दूसरा पक्ष भी है । यह ग्र थ केवल निरर्थक हास्य के लिये ही नहीं लिखा गया । इसका मूल उद्देश्य अप्रत्यक्ष रूपों में जैनेतर धर्मों में प्रचलित उपहासास्पद प्रकरणों का दिग्दर्शन कराना भी है । इस प्रकार इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति इस ग्रथ में हुई है ।

प्रसंग रूप में आई हुई इस प्रकार की और भी कई कहानियां हैं जो हास्य के साथ साथ शिक्षा जैन-मत का समर्थन जैनेतर धर्मों की रूढ़ियों का खण्डन या उपहास करने में सहायता करती हैं ।

ख—पौराणिक-गद्य-साहित्य

पौराणिक-धार्मिक-गद्य अनुवाद टीका तथा कथाओं के रूप में मिलता है । पुराण, धर्मशास्त्र, माहात्म्य-ग्र थ स्तोत्र ग्र थ आदि के अनुवाद राजस्थानी भाषा में प्राप्त हैं । इसके उदाहरण उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व के नहीं मिलते । इन अनुवाद और टीकाओं में एक सी भाषा और शैली को अपनाया गया है । यहाँ तक कि एक ही मूल के कई अनुवाद भी मिलते हैं । वास्तव में न तो विषय की दृष्टि से और न भाषा की दृष्टि से यह साहित्य के विद्यार्थी के काम के हैं । केवल धार्मिक-साहित्य की एक विशेष गद्य-शैली के रूप में ही इनका महत्व है । उदाहरण के लिए उक्त विषयों के कुछ अनुवाद एवं टीकाओं का उल्लेख ही अलम् होगा ।

पौराणिक विषयों में गरुड़ पुराण तथा भागवत के दसम स्कन्ध के अनुवाद लिये जा सकते हैं । इनमें प्रथम के ८ अनुवाद मिले हैं[1] जिनमें

१—यह सभी हस्त प्रतियां अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान हैं ।

१ अनुवाद सो लक्ष्मीधर व्यास श्रीकृष्ण व्यास तथा श्री हीरालाल रवामी ने क्रमश: सम्वत् १८७७, सं० १८८६ सं० १९१२ में किये। चौथे अनुवाद का लेखन समय सं० १९१४ मिलता है। शेष ४ अनुवादों के न तो लेखक का पता चलता है और न उसके लेखन समय का।

धर्मशास्त्र विषयक "कर्मविपाक" तथा प्रतिष्ठानुक्रमणिका २ अनुवाद हैं। कर्मविपाक में कर्ममीमांसा तथा दूसरे में प्रमुख प्रतिष्ठानों का उल्लेख हुआ है। माहात्म्य ग्रंथों में स्कन्धपुराणान्तर्गत एकादशी माहात्म्य तथा इसी विषय का बारह एकादशी के माहात्म्य से सम्बन्ध रखने वाले अनुवाद मिलते हैं। दूसरा अनुवाद अपनी मरुनोधरी भाषा के लिए उल्लेखनीय है। स्तोत्र ग्रंथों में १–किसन-ध्यान-टीका[1] २–रामदेव जी महाराज रो सिलोको[2] ३–विष्णु-सहस्रनाम-टीका[3] आदि हैं। इनमें टीकाओं के साथ साथ संस्कृत में मूल पाठ भी दिया है।

वेदान्त के विषयों में भगवद्गीता की टीकायें भी महत्वपूर्ण हैं। "अरजन गीता[4] में अर्जुन द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर भगवान कृष्ण संक्षेप में उसे गीता का सार समझाते हैं। इसका कलेवर बहुत ही छोटा है। भगवद्गीता की दो टीकायें "भगवद्गीता-टीका[5] तथा "भगवद्गीता-संक्षेपानुवाद[6] भी इसी प्रकार की हैं। इनमें प्रथम अधिक प्राचीन प्रतीत होती है। इसके प्रारम्भिक एवं अन्त के कुछ पत्र नष्ट हो गये हैं। दूसरी प्रति अर्वाचीन है इसमें संस्कृत का मूल पाठ नहीं है किन्तु इसकी भाषा प्रथम की अपेक्षा कम प्रौढ़ है। दूसरी कृति से मिलती जुलती "भगवद्गीता सार[7] नाम की एक संक्षिप्त टीका और है जिसमें अर्जुन और कृष्ण के पारस्परिक संवाद हैं। इसमें अध्याय का क्रम नहीं रखा गया है।

१—ह० प्र० अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर में विद्यमान
२—वही
३—वही
४—वही
५—वही
६—वही
७—वही

कथायें—

ये कथायें २ प्रकार की हैं १—व्रत-कथायें २—पौराणिक-कथायें।

धार्मिक-उपदेश नैतिक-परम्परा तथा कर्मकाण्ड की महत्ता दिखाना ही व्रत-कथाओं का उद्देश्य है। ये कथायें पर्व विशेष, तिथि विशेष या वार (दिन) विशेष से सम्बन्ध रखती हैं। व्रत-कर्मकाण्ड इनका महत्वपूर्ण भाग है। जैन-कथाओं या बौद्धों की जातक कथाओं का प्रयोग जिस प्रकार धार्मिक उद्देश्य से किया गया है उसी प्रकार दृष्टान्त रूप में इन कथाओं का उपयोग हुआ है। व्रत-कथाओं में व्रत का माहात्म्य इस प्रकार दिखाया जाता है कि साधारण जनता इनकी ओर स्वाभाविक रूप से आकर्षित हो जाती है। ये कथायें परिणाम रूप में मनोवांछित फल प्रदान करने वाली होती हैं। इन कथाओं का प्रारम्भ प्रमुख देवताओं से माना गया है। जैसे अमुक व्रत-कथा सूर्य ने याज्ञवल्क्य से कही, कृष्ण ने युधिष्ठिर से कही या कृष्ण ने नारद से कही इत्यादि। उस व्रत के पालन करने का किस को कौनसा फल मिला उस व्रत पालन की क्या विधियाँ हैं क्या अनुष्ठान हैं ये सभी बातें इन कथाओं में मिलती हैं। एकादशी नृसिंह-चतुर्दशी, जन्माष्टमी रामनौमी, सोमवती अमावस्या ऋषि-पंचमी दुर्गाष्टमी, गणेश चतुर्थी आदि अनेक कथायें इसी प्रकार की हैं[1]। ये सभी कथायें संस्कृत कथाओं पर आधारित हैं।

व्रत कथाओं के अतिरिक्त कुछ अनूदित कथायें ऐसी भी हैं जो पुराण महाभारत रामायण आदि की कथायें हैं। जैसे—नासिकेत री कथा, ध्रुव चरित्र, रामचरित री कथा, तत्व-भागवत शान्ति पर्व री कथा इत्यादि[1]।

इन कथाओं की भाषा और शैली प्राय मिलती जुलती है। चलती भाषा ही काम में लाई गई है। देशज शब्दों का प्रयोग भी अधिक मिलते हैं। एक उदाहरण देखिये—

"गंगाजी रो तट छै। विसंपायन रिषेसुर वारै वरसां री तपस्या करने बैठा छै। वरत सूं ध्यान करने बैठा छै। उठै राजा जनमेजय आवो। आय नें विसंपायन जी सूं निमस्कार कीवो। निमस्कार करि नै राजा पूछियो श्री रिषेसुर जी थें मोटी बुध रा धनी छो। रिषेसुरां में वडा छो। श्री व्यास जी रा सिष छो थें मोनूं पाप मुकती कथा सुनाओ।"

—नासिकेत री कथा[1]

१—ह० प्र० अनूप-संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर में विद्यमान

३—कलात्मक गद्य

क—कथा-साहित्य

कहानी का बीज-बिन्दु

मानव की रागात्मक प्रवृत्ति में ही साहित्य-सर्जना की मूल शक्ति अन्तर्निहित है। संसार का सम्पूर्ण साहित्य मानव के मनोभाव एवं मनोविकारों का इतिहास है। कहानी साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसमें मानव की औत्सुक्य-वृत्ति को मनोरंजनात्मक शान्ति मिलती है। मनोवैज्ञानिक धरातल पर चाहे वह वैयक्तिक हो अथवा सामूहिक, कहानी की रूपरेखा बनी है—उसका विकास और विस्तार हुआ है। संक्षेप में कहानी का बीज-बिन्दु मानव के भावना-क्षेत्र की जिज्ञासा एवं कुतूहल का निकटतम सम्बन्धी है।

आदि मानव और आदि प्रवृत्ति

आदि मानव की आदि प्रवृत्ति तथा उसके व्यापार इतने विस्तृत नहीं थे। इस अवस्था तक पहुँचने के लिये उसे कई ऊँची नीची भूमियां पार करनी पड़ीं। प्रारम्भ-काल में प्रकृति ही उसके लिये सब कुछ थी। उसने प्रकृति को समझना प्रारम्भ किया। इस प्रकार उसे कई अवस्थाओं में से निकलना पड़ा होगा। इन अवस्थाओं का आनुमानिक अनुक्रम इस प्रकार हो सकता है —

१—प्रकृति और आदिमानव का सम्पर्क।
२—उसके द्वारा प्रकृति में देवत्व एवं आत्मवत्व का आरोप।
३—प्रकृति में परा-प्रकृति की अवधारणा।
४—मानव प्रकृति और परा-प्रकृति में पारस्परिक सम्पर्क तथा कार्य-कारण साम्य, अंश-अंशी की कल्पना।

प्रथम अवस्था में आदि मानव को प्रकृति से भय हुआ। आतंक से पराभूत होकर दूसरी अवस्था तक पहुँचने तक उसने प्रकृति की उपासना आरम्भ करदी। सूर्य इन्द्र अग्नि आदि में उसे देवत्व दिखाई पड़ा। यह अवस्था अधिक स्थायी नहीं रह सकी। उसकी समझ में धीरे धीरे आने

क्रम और उसको प्रकृति का रहस्य ज्ञात हुआ। परिणामत: उसका आतंक कम होने लगा। वह प्रकृति के विविध उपादानों को अपनी ही भाँति सचेतन समझने लगा। तीसरी अवस्था में उसने अस्पष्ट प्रकृति की सीमा से बाहर झाँका। उसे किसी अन्य कर्तव्य-शक्ति का आभास हुआ। इसके बाद वह चौथी अवस्था में आ पहुँचा तथा अपने में भी वह एक असीम शक्ति का अस्तित्व समझने लगा। उसे कार्य कारण का ज्ञान हुआ तथा उस असीम शक्ति के साथ उसने आत्मा ही का सम्बन्ध स्थापित किया।

मानव की ज्ञान-भूमियाँ—

आदि काल से अर्जित मानव का ज्ञान-स्रोत प्रधान रूप से २ धाराओं में प्रवाहित हुआ। १—विशिष्ट और २—साधारण, पहले प्रकार का ज्ञान उसका निर्माता ऋषि-महर्षियों की थाती बना जिसके आधार पर उन्होंने समाज की व्यवस्था की। इसके लिये उनके पास दो अमोघ शस्त्र थे। श्रद्धा और भय। धार्मिक शिक्षा के लिये श्रद्धा बहुत आवश्यक वस्तु थी जिसके बिना आगे नहीं बढ़ा जा सकता था। दूसरा था दण्ड का आतंक। यह भी एक ऐसा अंकुश था जिसके कारण पीछे नहीं हटा जा सकता था। पाप और पुण्य के परोक्ष निश्चित हुए। सामाजिक ज्ञान से समाज में परस्पर नैतिक सम्बन्ध एवं मनोरंजन की सामग्री एकत्रित की गई।

यह सब काम कहानी के द्वारा ही सम्पन्न हुआ। वैदिक काल, उपनिषद्-काल पौराणिक-काल रामायण तथा महाभारत-काल सभी में कहानियों का प्रमुख रहा है। बौद्ध धर्म की जातक कथायें तथा जैनों के धर्म-ग्रन्थों की कथायें भी धार्मिक शिक्षा के महत्वपूर्ण अंग रही हैं।

भारत के प्राय सभी प्रान्तों में इस प्रकार की धार्मिक, नैतिक या मनोरंजनात्मक-कथायें किसी न किसी रूप में लोक भाषा में मिलती हैं। इनके अतिरिक्त प्रान्त की स्थानीय सभ्यता एवं संस्कृति के आधार पर भी कहानियाँ बनती रहीं। यह क्रम अब भी चल रहा है।

राजस्थान भी इसका अपवाद नहीं रह सका। यहाँ की राजनैतिक परिस्थिति, सभ्यता एवं संस्कृति के साथ प्रचलित आचार-व्यवहार आस्था आदि का प्रभाव यहाँ की कथा-साहित्य पर पड़ा। इन्हीं के आधार पर पारम्परिक कथायें बनती रहीं तथा सर्वथा नवीन कहानियों की रचना भी बन्द नहीं हुई। इन कहानियों के असंख्य रूप-रूपान्तर प्राप्त होते हैं

राजस्थानी-वार्तों पर सांस्कृतिक प्रभाव

राजस्थान की कहानियों पर प्रमुखतः चार संस्कृतियों का प्रभाव पड़ा। १–ब्राह्मण-संस्कृति २–जैन-संस्कृति ३–राजपूत संस्कृति तथा ४–मुस्लिम संस्कृति। इनमें प्रथम दो संस्कृतियों का प्रभाव प्राचीन है। ब्राह्मण कथा साहित्य में पौराणिक, आनुष्ठानिक एवं नैतिक वा उपदेशात्मक रही[1]। जैन कथा-साहित्य में दृष्टान्त रूप में इनका उपयोग हुआ है[1]। राजपूत संस्कृति से प्रभावित होने वाली कहानियां ऐतिहासिक वीर पुरुषों से सम्बन्ध रखने वाली हैं। इनमें राजपूतों के आदर्शों का चित्रण हुआ है। मुसलमानों के आने पर उनकी संस्कृति का प्रभाव यहां के (राजस्थान के) कथा साहित्य पर भी पड़ा। फलस्वरूप कुछ ऐसी कहानियां भी मिलती हैं जिनमें वासनात्मक प्रेम आदि की छाप दिखाई पड़ती है।

राजस्थानी-वार्तों का वर्गीकरण

सम्पूर्ण राजस्थानी वार्तों को स्थूल रूप से दो भागों में विभक्त कर सकते हैं — १–मौलिक और संग्रहीत २–पारम्परिक, नवरचित एवं अनूदित

मौलिक और संग्रहीत—

कहानी सुनने और सुनाने का एक नैसर्गिक व्यापार है। राजस्थान में भी अनेक कहानियां सुनी और सुनाई जाती हैं। यह कहानियां 'वात' नाम से पुकारी गई हैं। कहानियां कहने और सुनने वालों की तीन कोटियां मिलती हैं १–घर के भीतर २–चुहटा या गांव की चौपाल में ३–धनियों के रंग महल में।

घर में भोजन कर लेने के उपरान्त बच्चे और बूढ़े जब सोने की तैयारी करने लगते हैं तब बच्चे अपनी बूढ़ी दादी नानी या मां से कहानी सुनाने का आग्रह करते हैं। बच्चों का मन रमाने के लिए कहानियां सुनाई जाती हैं। एक दो कहानियों से बच्चों का मन नहीं भरता। उनका "एक और" कथन तब तक समाप्त नहीं होता जब तक उनको नींद नहीं आ जाय। कहानी कहने वाले के पास भी इनका अक्षय भंडार होता है।

१ पिछले पृष्ठों में इनका विवरण दिया जा चुका है।

गांवों में रात्रि के समय प्रमुख रूप से शीतकाल की दीर्घ-रात्रियों में भोजन करने के उपरान्त चौक में आग जलाकर जब ग्राम वासी अग्नि के आस-पास गोलाकार रूप में बैठकर ठंड से छुटकारा पाने का प्रयास करते हैं तब इधर उधर की चर्चा के उपरान्त कहानियों का रंग जमता है। कहानी कहना भी एक कला है और सुनना भी। एक व्यक्ति कहानी कहने लगता है और श्रोताओं में से कोई एक 'हु कारा' देता है। इस "हु कार" के बिना कहानी में रस नहीं आता + तथा कहने वाले का उत्साह भी ठंडा पड़ जाता है। इसीलिये राजस्थान में यह कहावत प्रसिद्ध हो गई है 'बात में हु कारा, फौज में नगारा'

धनिकों का मन बहलाने के लिये कहानी भी एक साधन है। यहां वचित वेतन पर व्यवसायी कहानी कहने वाला नियुक्त किया जाता है। भोजन आदि से निवृत्त होकर मसनदों के सहारे बैठे हुए रईस कहानी सुनते हैं उनके आसपास कुछ आदमी और बैठ जाते हैं। पेशेवर कहानी कहने वाले की कहानियों में कला एवं रसात्मकता अधिक होती है। लम्बी चौड़ी भूमिका के उपरान्त कहानी का आरम्भ होता है। प्रसंगवश आये हुए वर्णनात्मक स्थानों का बड़ी सजावट के साथ चित्रण किया जाता है। यह कहानियां छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी होती हैं यहां तक कि एक-एक कहानी कहने में रातें बीत जाती हैं पर सुनने वालों की उत्सुकता में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आता।

यह मौखिक बातें श्रुति-परम्परा के आधार पर फलती फूलती रहती हैं। लोक-रुचि एवं लोकरंजन के अनुसार समय-समय पर परिवर्तित एवं परिवर्धित होती रहती हैं।

इन मौखिक बातों में से कुछ को लिपिबद्ध करने का प्रयास अत्यन्त आधुनिक है। लिखित रूप में आ जाने पर इन बातों का कलेवर निश्चित हो गया है, अब उसके परिवर्तन का कोई कारण नहीं रहा। अब वे पठन पाठन की वस्तु हो गई हैं। इन संग्रहों के लेखक एवं रचना-समय का उल्लेख नहीं मिलता इसीलिए इनका लिपि काल निश्चित नहीं किया जा सकता फिर भी यह कहा जा सकता है कि अठारहवीं शताब्दी से पूर्व के ऐसे प्रयास अब उपलब्ध नहीं हैं।

पारम्परिक-नव-रचित एवं अनूदित

संगृहीत बातों में तीन प्रकार की कथायें मिलती हैं — १-पारम्परिक

२–नव-रचित एवं ३–अनूदित। पारम्परिक वार्ते तो मुख-परम्परा से मौखिक रूप में चली आती हुई वार्ता का यथावत संग्रह है। कुछ कहानियों की नवीन सृष्टि भी हुई क्योंकि कथा-सृजन लोक-मानस की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इनके अतिरिक्त पौराणिक काल की कथाओं के भाषानुवाद भी राजस्थानी में किये गये। रामायण और महाभारत की कथायें उल्लेखनीय हैं।

राजस्थानी के संगृहीत वात साहित्य को २ प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है–क–अर्द्ध ऐतिहासिक वार्ते ख–अनैतिहासिक या काल्पनिक वार्ते।

क–अर्द्ध ऐतिहासिक-वार्ते

अर्द्ध ऐतिहासिक वे वार्ते हैं जिनमें पात्र एवं घटनाओं में से एक ऐतिहासिक हो ये कहानियां इतिहास से भिन्न होती हैं। इनमें या तो पात्र ऐतिहासिक होते हैं और घटनायें अनैतिहासिक या ऐतिहासिक घटनाओं में कुछ काल्पनिक परिवर्तन अनैतिहासिक पात्रों के प्रयोग से कर दिये जाते हैं।

राजस्थान सदैव से ही अपनी वीरता तथा बलिदान और वैभव के लिये प्रसिद्ध रहा है। राजपूतों के युद्ध और प्रेम आत्मसम्मान की भावना, *शरणागतिनी शक्ति, प्रजा-पालन आदि साहित्य के लिये शाश्वत प्रेरणा* के मनोहर स्रोत हैं। राजपूत रमणियों के जौहर उनकी सतीत्व निष्ठा एवं वीरता आदि आज भी अलौकिक वस्तु मान पड़ती है। इस प्रकार जीवन के स्पन्दन का अनुभव इन कथाओं में मिलता है। ये अर्द्ध ऐतिहासिक कथायें दो प्रकार की हैं — अ–वीर गाथात्मक, आ–प्रेम गाथात्मक।

अ–वीर गाथात्मक अर्द्ध ऐतिहासिक कथायें

वीरता राजस्थान का आदर्श रहा है अतः कहानियों में किसी न किसी प्रकार से यह तत्व पाया जाता है। व्यक्ति का व्यक्ति[illegible]
इसी को केन्द्र मान कर चल[illegible] म, [illegible] वीरता
आत्म-सम्मान आदि के लिये अप[illegible]
प्रधान आदर्श रहा। इस प्रकार की[illegible]

"राव अमरा[illegible] ने मार

१—भारतीय-वि[illegible] १

में राव अमरसिंह से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं पर प्रकाश डाला गया है। जैसे, जोधपुर-नरेश महाराजा गजसिंह द्वारा अमरसिंह को जोधपुर से निष्कासित किया जाना, अमरसिंह का बादशाह शाहजहां के समीप पहुंचना, बादशाह द्वारा उनको नागौर जागीर में मिलना, बीकानेर से युद्ध, सलावत खां से उनकी खटपट तथा भरे दरबार में उसको कटार से मार डालना, असावधान अवस्था में उन पर खलील खां का आक्रमण, उसकी असफलता, अर्जु नसिंह गौड़ द्वारा धोखे से अमरसिंह का मारा जाना। बादशाह द्वारा उनका शव उनके साथियों को देना, उनके साथियों द्वारा युद्ध, अर्जु नसिंह द्वारा बादशाह को भड़काना बादशाह का क्रोधित होकर राजपूतों को लुटवाना, कुछ राजपूतों का मारा जाना, अमरसिंह की रानियों का सती होना आदि स्थानों पर अमरसिंह का व्यक्तित्व व्यक्त हुआ है। 'फमे धारंधार री बात' में फमे नामक एक वीर राजपूत जुबाग्रजी का राजा था। जींदरे मीची ने पाबूजी की गायें चुराई। पाबू जी ने युद्ध करके गायें छीनलीं। इस युद्ध में बूड़ो जी अपने १२ साथियों के साथ मारे गये। जींदरा अपने को असमर्थ पाकर फमे की शरण में आया। पाबू जी और फमे में युद्ध हुआ जिसमें पाबू जी मारे गये। और फमा धीरंधार कहलाया। "महाराजा करणसिंह जी रा कुंवरां री बात" में बीकानेर नरेश महाराजा करणसिंह जी के चारों पुत्रों अनूपसिंह जी केसरीसिंह जी पदमसिंह जी और मोहनसिंह जी का वीरता पर प्रकाश डालने वाली घटनायें हैं। इस समय औरंगजेब देहली का सम्राट था। इन चारों कुंवरों ने उसकी सहायता की थी। केसरीसिंह जी की वीरता पर तो उसे विश्वास एवं गर्व था। इस विषय में २ दोहे प्रसिद्ध हैं—

केहरिया करणेश का तै सूंडी भगै सार
दिसी सुपन दस्त सी गयो समुं दा पार।
पिंड सूंडी पाधारिया औरंग लियो उबारि
पतिसाहो राखी परी केहर राजकुमार।

इसीलिये औरंगजेब के राज्य में नाबद करने वाले ३२ कमाइयों को इन्होंने मौत के घाट उतार दिया और औरंगजेब ने उनका कोई प्रतिकार नहीं किया। मोहनसिंह जी ने भरे दरबार में शहर कोतवाल का वध कर दिया था। बात बहुत छोटी सी थी, इस मुसलमान कोतवाल ने मोहनसिंह जी के हिरन को अपने दगरत पर बांध लिया था तथा उसको लौटाने से इन्कार किया था। पदमसिंह जी की वीरता से सम्बन्ध रखने वाली कथा

काल्पनिक सी जान पड़ती है। इस कथा में दिखाया गया है कि इन्होंने अपनी वीरता से किसी भूत को परास्त किया था।

इसी प्रकार 'राठौड़ सीहै जी नं आसथान री वात" में कन्नोज से सीहै जी के गमन से आसथान द्वारा खेड़ विजय तक का वर्णन है। 'गोहिल अरजन हमीर री वात में अनहिलवाड़ा पाटण के सोलंकी राजा के दोनों पुत्र अरजन और हमीर की कथा है। "जैसलमेर री वात" में जैसलमेर के राज रावल रतनसिंह के शासन काल में जैसलमेर पर अलाउद्दीन द्वारा किये गये आक्रमण से रावल केहर के राज्यारोहण तक का विवरण है। "नाराइन मीढ़ा खां री वात में मांडव के पठान राजा मीढ़ा खां का मृत्यु के नारायणदास के द्वारा मारा जाना दिखाया है। "राजा भीम री वात अनहलवाड़ा पाटण के शासक भीम तथा उसके उत्तराधिकारी करण की कथा है। 'सीचियों री वात में औरंगजेब के समय में राजा भगवतसिंह चतरमालोत की विजय का चित्रण है। "नानिग छावड़ री वात" में नानिग, वेगड़, अजैसी और विजैसी इन चारों छावड़ भाइयों का सिहारगढ़ से पोकरण आना तथा नानिग का वहां का अधिपति बनना है। "माहलों री वात" में राणा मोहिल सुरजणोत के समय से वैरसल तथा नरबद की राय गोये द्वारा पराजय, बीदो का अधिपति होना वर्णित है। "रामसिंघ खींवावत री वात" में रामसिंह खींवावत जोधपुर नरेश जसवंतसिंह जी का एक सरदार था। महाराजा गजसिंह जी की मृत्यु के उपरान्त वास्तविक उत्तराधिकारी अमरसिंह जी के स्थान पर जसवंतसिंह जी को राजा बनाने में इन्होंने सहायता की थी। इसके अतिरिक्त मुहणोत नैणसी द्वारा की गई आर्थिक-अव्यवस्था को इनकी सहायता से जसवंतसिंह जी ने ठीक किया।

"तु वरां री वात" हरदास मोकलोत बीरमदे दूदावत री वात' 'गोपाल दास गौड़ री वात' "राठौड़ ठाकुरसी जैतसीहोत री वात' आदि इसी प्रकार की व्यक्ति प्रधान वातें हैं।

इन वातों म ऐतिहासिक घटनाओं के अतिरिक्त कल्पना तथा अलौकिक तत्वों की सहायता भी ली गई है जैसे 'तु वरां री वात" म रामदे जी का अलौकिक एवं दिव्य पुरुष बतलाया गया है। पोकरण में भैरव राक्षस के रहने के कारण अजैसी उसे त्या । कर चले। बाद में उनके पुत्र हो गया जिसका नाम रामदे रखा गया। इन्होंने (रामदे) बाल्यकाल

मे ही अपने चमत्कार दिखाने प्रारम्भ किये। सात वर्ष की अवस्था में एक लकड़ी की सहायता से ही इन्होंने उस सर्प को परास्त कर दिया।

कुछ बातें युद्ध की जीवित झाँकियाँ बन पाई हैं। "चौहान सामन्त सोम री वात" में समीयाणा गढ़ के शासक सातल एवं सोम का अलाउद्दीन से "राव मण्डलीक री वात" में गिरनार के राव मण्डलीक का गुजरात के बादशाह महमूद से "मारवाड़ री वात महाराजा रामसिंघ जी री" में जोधपुर के महाराजा रामसिंह जी के जीवन काल में हुये युद्धों के चित्र हैं। "जैसे-सरवहिय री वात" में चारण के उकसाने पर अहमदाबाद के बादशाह का गिरनार के शासक जैसे-सरवहिय पर आक्रमण सरवहिय की पराजय "पाबूजी री वात" में पाबू जी द्वारा किये गये युद्धों का विवरण है।

युद्ध के चित्र इन कहानियों में सजीव हुये हैं। उदाहरण के लिये "पाबूजी री वात" का एक उदाहरण देखिये–

...... अर पहलड़ी लड़ाई माहे चाँदे म्हीची नू सरचार वाही हुती। तद पाबू जी तरवार आपड़ लीवी। कनी मारा मता। बाड़ रोड हुसी तद चाँदे कही राज आप तरवार आपड़ी सु बुरा कीवी। थे दोड थे। मरिया मता। पण पाबूजी मारण दिया नहीं। तरे फाज आइ। चाँदे कही राज, जा मरिया हुवा होत सा पाप कम्यो हुतो। हरामखोर आयो। तरे पाबूजी मुहा (पद) न लड़ाइ कीवी। मढो रिट पाड़या सगू पाबू जी काम आया।

आ–प्रेम गाथात्मक अद्ध ऐतिहासिक वातें

राजपूतों के युद्ध के साथ प्रेम और विवाह भी संलग्न हैं। दोनों में आप चारण का सम्बन्ध है और ओरण सगुण राजपूत के सिद्धान्त को मानकर राजपूत चलते थे। ये विवाह के लिये सगुन नहीं मनाया करते थे[1]। वीर और शृंगार के इस अद्भुत संयोग से जीवन में एक प्रकार का उन्माद भरा रहता था। पद्य में इस का उदाहरण मिलते हैं। गद्य में भी ये

१—सगुन विचारें ब्राह्मण बानया मिरधरि भार दियादन जाहि
सगुन बिचारें हम सा गत्री जा रण चढ़ कर लाह पचाहि।
(आल्हाखण्ड अजनिक)

कथानक उपयोगी सिद्ध हुए। इस प्रकार के प्रेमाख्यानों में "अचलदास खीची री वात", "जगमाल मालावत री वात", "कागड़दे री वात", "कांपल जी री वात", 'आंवेपा फूल री वात' 'हरदास उहड़ री वात' "कोडमदे री वात", "वृन्दावन री वात' आदि प्रमुख हैं। उदाहरण के लिये अचलदास खीची री वात[1] देखिए।

अचलदास खीची री वात

"अचलदास खीची री वात राजस्थानी की अच्छी कहानियों में से है। इसमें ४ प्रमुख पात्र हैं— १-गागरोण गढ़ के अधिपति अचलदास खीची २-मीमी चारणी ३-अचलदास खीची की प्रथम रानी मेवाड़ के मोकल की पुत्री लाला तथा ४-उनकी दूसरी रानी जांगलू के सीखसी की पुत्री उमा सांखली। वस्तुतः यह जांगलू और गागरोण के बीच लाला और उमा की कहानी है।

इसके कथानक में ऐतिहासिक साहित्यिक एवं अलौकिक तत्व मिलते हैं। ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर साहित्यिक चित्रण के लिये इसमें कल्पना का सहारा लिया गया है।

ऐतिहासिक-भूमि –

अचलदास खीची (खीची राज्य के अन्तर्गत गागरोण के नरेश) ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। ये मेवाड़ के राजा मोकल के जामाता थे। इनका विवाह जांगलू के सीखसी की पुत्री से भी हुआ था। कहानी के अन्त में अचलदास पर मुसलमान बादशाह का आक्रमण, राजपूतों के द्वारा किये गये जौहर का आधार भी ऐतिहासिक ही है। इसी विषय पर अचलदास खीची की वचनिका[2] लिखी गई है।

साहित्यिक भूमि –

मीमी चारणी का इस कथा में वही स्थान है जो जायसी के "पद्मावत" में हीरामन तोते का (उसके पारलौकिक अंश का छोड़कर)।

१—"अचलदास खीची की वचनिका" से इसका कथानक भिन्न है।
२—अनूप संस्कृत पुस्तकालय बीकानेर

राजा अचलदास खीची से वह जांगलू के सीखसी की पुत्री उमा सौंखली के रूप का वर्णन करती है। इस रूप वर्णन को सुनकर राजा को उमा के प्रति पूर्वराग होता है। यह पूर्वानुराग उसको राजा रत्नसेन की भाँति उच्छृंखल नहीं बना देता। राजा झीमी चारणी की सहायता से उमा साँखली से विवाह करने के लिए प्रस्तुत हो जाता है। झीमी चारणी ने उमा का रूप वर्णन बड़े ही स्वाभाविक ढंग से किया है —

"उमां सापुली मारवणी रो अवतार। आसमान सूं ऊतरी जायो इन्द्र री अपछरा। सरोवर रो हंस। सारद को कमल। भर्सत की मंजरी। मावका की बावली। बादलां की बीज मेह को ममोलो। बावनो चंदन। सोलमो सोनो। राजहंस को भम। हंस को बचो। लछमी को अवतार। प्रभता को सूर। पूनम को चांद। सरद की चांदणी की क्रिया। सनेह की लहर। गुण को प्रवाह। रूप को निधान। गुणवंत की मूल। जोबन को लेखणो। चौसठ कला री जाण ... ...।

उमा के इस सौन्दर्य के प्रति राजा आकर्षित होता है। अतुल धन राशि देकर वह झीमी चारणी को विदा करता है। झीमी चारणी जांगलू पहुँचकर विवाह संबन्ध निश्चित करती है। इस विवाह की स्वीकृति के लिये अचलदास अपनी पहली रानी लालां मेवाड़ी के महलों में जाता है। रानी वचन लेती है। उसकी केवल एक शर्त है कि विवाह के उपरान्त उसकी अनुमति के बिना राजा उमा के महलों में न जाय। अचलदास इसे स्वीकार कर लेते हैं।

विवाह होता है किन्तु विवाह के उपरान्त राजा गागरौण नहीं लौटता। लालां को चिन्ता होती है। वह पत्र-वाहक के साथ संदेशा भजती है कि यदि राजा नहीं लौटेंगे तो वह जल जायगी। वह रूप-गर्विता है, प्रणय-गर्विता है और वचन-गर्विता है। पत्र राजा तक नहीं पहुँच पाता। उमा उसे बीच में ही चोर कर फेंक देती है। लालां जलने को प्रस्तुत होती है। मन्त्री उसे रोकते हैं तथा स्वयं राजा को लिवाने के लिए जांगलू प्रस्थान करते हैं। वहां पहुँचकर वे राजा को बतलाते हैं कि उनकी अनुपस्थिति में किस प्रकार राज्य-व्यवस्था शिथिल हुई जा रही है। मन्त्री के आग्रह से राजा लौटता है।

गागरौण पहुँचकर राजा अपने वचन का पालन करता है। मास पर्यंत तक वह उमा के महलों में नहीं जाता। उमा को चिन्ता होती है। वस्तु जगत के प्रति प्रतिघात से हटकर वह धार्मिक क्षेत्र की ओर झुकती है। एक

दिन उसे स्वप्न होता है, जिसमें एक देवी आकर उसे गायत्री का व्रत करने का आदेश देती है। उमा उस आदेश का यथावत् पालन करती है।

अन्त में सातवें वर्ष में उस व्रत की सफलता निकट आती है। गायत्री देवी स्वयं प्रकट होकर उमा को हार का उपहार देती है। यह हार ही राजा को उसके महलों में इस प्रकार लाता है—

उमा उस दिव्य हार को पहन कर बैठी है। लालां की एक दासी उमा के इस हार को देख लेती है। यह लालां से उसकी चर्चा करती है। लालां केवल दर्शन के लिए उस हार को मंगवाती है। उमा इस शर्त पर हार देने को तैयार हो जाती है कि लालां एक दिन के लिये राजा को उसके महलों में भेज। लाला स्वीकार कर लेती है। उसे हार मिल जाता है। हार पहनकर लालां अचलदास के सम्मुख आती है। राजा उस हार के विषय में पूछते हैं। रानी झूठा उत्तर देती है कि यह हार उसे मन्त्री से प्राप्त हुआ है। लालां अचलदास को एक प्रतिज्ञा पर उमा के महलों में जाने की अनुमति देती है कि राजा वहां जाकर वस्त्र नहीं उतारें, कटारी नहीं खोलें और उमा की ओर पीठ करके सोवें। उमा के यहां पहुँचकर राजा को हार की कथा ज्ञात होती है। वे लालां के प्रति उदासीन हो जाते हैं और लाला भी आजीवन उनसे नहीं बोलती।

अन्त में राजा युद्ध में मारा जाता है। उमा और लालां दोनों सती हो जाती हैं।

इस प्रकार इस कथानक में अचलदास लालां और उमा के चरित्र चित्रण के अच्छे अवसर आये हैं अचलदास इस कथा का आदर्श नायक है। राजाओं में बहु विवाह की परम्परा तो प्राचीन है ही फिर भी वह अपने दूसरे विवाह की अनुमति लालां से लेता है। जांगलू से लौटने पर वह अपनी प्रतिज्ञा का पालन करता है। वह सौन्दर्य का उपासक है किन्तु साथ ही रणक्षेत्र में तलवार चलाना भी जानता है। वह जौहर कर सकता है और करता भी है। संक्षेप में अचलदास सौन्दर्योपासक, प्रतिज्ञा-पालक एवं आदर्श राजपूत है।

लालां और उमा का सम्बन्ध सौत का है नारी सुलभ सौतिया डाह दोनों में है। सतीत्व की रक्षा दोनों ने की है। अचलदास के शव के साथ दोनों सती होती हैं। आभूषण प्रेम लालां में अधिक है। उपासना की निष्ठा उमा में।

भीमी पारखी भी इस कथा का महत्वपूर्ण पात्र है किन्तु उसका चरित्र चित्रण ठीक नहीं हो पाया। इस कथा में अनावश्यक विस्तार नहीं मिलता।

इस कहानी की भाषा प्रौढ़ एवं परिमार्जित राजस्थानी-भाषा है। वर्णन के शब्द चित्र इसमें बहुत ही सुन्दर बन पाये हैं। गोधूली की लगन में अचलदास एवं उमा का विवाह होता है। राजा मण्डप के नीचे बैठे हैं इसका एक चित्र देखिये—

"गोधूलि रो लगन छै। अचलदास री आई नै चु री माहे बैठा छै। उमा सापुली सिणगारि नै सखियां ल्यायां छै। गीत गाइजै छै। हथलेवो लीजियो। ब्राह्मण वेद भणे छै। पला बांधा छै। अचलदास परणीया छै। ब्राह्मण नु घणो दीयो छै। परणीज न महल माहे पधारिया छै। —

छोटे छोटे वाक्यों में यह चित्र उत्तम बन पाया है। इसी प्रकार की भाषा सम्पूर्ण कहानी में व्यवहृत हुई है।

ख—मनोविज्ञानिक या काल्पनिक बातें

इस प्रकार की कथायें राजस्थानी में बहुत मिलती हैं। इनकी कुछ विशेषतायें इस प्रकार हैं —

१—इनके पात्र या घटनायें सभी काल्पनिक होते हैं। कभी कभी ऐतिहासिक व्यक्तियों के नामों का प्रयोग भी कर लिया जाता है। जैसे राजा भोज विक्रमादित्य भर्तृहरि शालिवाहन आदि कई कहानियों के नायक हैं। ये नाम प्रायः भारत की सभी लोक-कथाओं में आते हैं।

२—अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये कहानीकार लौकिक एवं लोकोत्तर सभी प्रकार की सामग्री का उपयोग करता है। इन कहानियों में आये हुए कुछ तत्व इस प्रकार हैं।—भूत बैताल पिशाच भैरव कंकाली जोगणी (योगिनी) साधु, तन्त्र-मन्त्र सिद्ध पार उड़न खटोला, आरोी-करवत लेना पाषाण से प्राणी हो जाना प्राणी का पाषाण प्रतिमा हो जाना शीश दान देकर जीवित होना उड़न घोड़ी खड़ाऊं उड़न थाली तथा किसी का जीव किसी में रहना आदि।

३—यह बातें मानव-लोक तक ही सीमित नहीं होतीं यहां पशु पक्षी भी मनुष्य की भाषा बोलते हैं। मनुष्य के साथी होते हैं। दुःख सुख सभी अवसरों पर उनकी सहायता करते हैं। इस प्रकार अनन ही नहीं अचतन-

जड़-जगत भी उसी प्राण-वायु से स्पन्दित होता दिखाई देता है।

वर्गीकरण—

इन कथाओं का वर्गीकरण कई प्रकारों में किया जा सकता है। सुविधा के लिये कुछ विभाग इस प्रकार हैं —

क—प्रेम की कथायें—

इन कथाओं में प्रेमी और प्रेमिकाओं के संयोग और वियोग के चित्र होते हैं। प्रेम बालकपन का साथी, यौवन का सहचर और वृद्धावस्था का सहारा होता है। इसीलिये मनुष्य के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है। यौवन में उसका रूप अधिक आकर्षक एवं उन्मादक हो जाता है उसके अनेक व्यापार तथा अवस्थायें हैं। शिशु-स्नेह तथा वृद्धानुराग की कथायें भी राजस्थानी में मिलती हैं किन्तु यौवन प्रणय के तो असंख्य चित्र हैं। इस भौतिक लोक की सीमाओं को छोड़ कर उस लोक तक भी इसकी पहुँची हैं। यह प्रेम जन्म-जन्मान्तरों का बन्धन है। इस प्रकार की कुछ प्रणय कथाओं का उल्लेख यहाँ किया जाता है।

"रतना-हमीर री बात"

यह एक शृंगारिक रचना है। लेखक ने प्रारम्भ में ही इसका स्पष्टीकरण कर दिया है—

कुसुम तणा सर पांच कर, जग जिण लीनों जीत।
तिण रो सुमिरण करतणां, रस भण्या री रीत॥

यह कथा चम्पू शैली में लिखी हुई है। इसके महत्वपूर्ण स्थल इस प्रकार हैं :—

१—रतना चम्पूगढ़ की राजकुमारी, उसका विवाह चित्रगढ़ के नरेश इन्द्रभाण चूड़ावत के पुत्र लखमीचन्द के साथ होना। विवाह के समय रतना और उसकी भाभी का संवाद।

२—रतना विवाह से असन्तुष्ट।

३—ससुराल में रतना के द्वारा सूरजगढ़ के राव दलपति के पुत्र हमीर का चित्र देखा जाना तथा उसका उसके रूप पर मोहित हो जाना।

४—चित्रगढ़ की राजकुमारी चित्रलेखा का सम्बन्ध हमीर से होना।

५—हमीर का बरात लेकर चित्रलेखा की ओर प्रस्थान। इधर रत्ना का अपने पितृ-गृह को लौटना। मार्ग में दोनों का चंपा बाग में ठहरना। शिव मन्दिर में दोनों का साक्षात्कार होना। दोनों का एक दूसरे पर आसक्त होना। रत्ना द्वारा विविध शृंगारिक चेष्टाओं द्वारा उसे आकर्षित करना।

६—हमीर द्वारा रत्ना को पत्र लिखा जाना तथा रत्ना द्वारा उसका उत्तर दिया जाना।

७—हरियाली तीज पर दोनों का मिलने का निश्चय करना। रत्ना द्वारा मिलने के उपाय बतलाया जाना।

८—मिलने की निश्चित वेला में हमीर द्वारा आखेट के मिस सूरजगढ़ से चलकर चन्द्रगढ़ पहुंचना।

९—रत्ना की प्रतीक्षा। घोर वर्षा। हमीर का चन्द्रगढ़ पहुंचकर फूल बाग में ठहरना।

१०—चतरू द्वारा रत्ना को हमीर के आगमन की सूचना मिलना।

११—निश्चित समय में दोनों का फूल बाग में साक्षात्कार आदि।

इस प्रकार यह कथा संयोग शृंगार का उदाहरण है। इसका गद्य भी कलात्मक है जैसे रत्ना का स्वरूप वर्णन देखिये—

"सरूप रै भार मरियो नाजक भ ग। मिण आगे कोमड़ के सर में कंचन रो रंग। नाजेर जिसा सीस उपर केसां रो भार तिके आये तम रा ही स बार। विणरा मुख री ओपमा तो पूरण चंद्रमा ही न पावै। कहां कठा ताई दीठा ही अ चल आवै। नैण तो के अमृतरा ही अ नैण। वेण जिके कोयल री ही अ वैण। चनप म्यू ही गुहां री लष। नासिका जिका सुवा री चुंच। अधर प्रवाली जिसा लखियां। दांत आये हारा री कणियां। बांह तो चंपा री डाल। हाथ पग जिके कमल सू ही सुकुमाल। जिका हालीती लजावै हंस री गति ने। जिण री रूप गुणां री ओपमां रंभा अर रत न ओर ही हय नू दूयो ओपमा किसड़ी ... ."

वियोग शृंगार का उदाहरण "सयणी चारणी[1] री बात" देखी जा सकती है। सयणी चारणी कच्छ के बेकरे ग्राम के निवासी वेधा की पुत्री है। बीजाणंद चारण उसका प्रेमी है। प्रेमी अपनी प्रेमिका को प्राप्त करना चाहता है। प्रेमिका सवा सवा करोड़ के सात गहने पाने के उपलक्ष में विवाह के लिये प्रस्तुत होती है। इस इच्छा की पूर्ति करने के लिये प्रेमी दूर देश चला जाता है। प्रेमिका बड़ी उत्कंठा से उसकी प्रतीक्षा करती है। अवधि समाप्त हो जाती है पर प्रेमी लौटकर नहीं आता। प्रेमिका की विरहातुरता बढ़ती है। उसका हृदय कलश के रूप में फूट पड़ता है। निराश होकर अन्त में वह हिमालय में गल जाने के लिये चली जाती है। कुछ समय उपरान्त उत्सुकता एवं प्रसन्नता से भरा हुआ उसका प्रेमी अपने कार्य में सफल होकर लौटता है। पर अपनी प्रेमिका को वहां न पाकर वह भी हिमालय की ओर प्रस्थान करता है। इस प्रकार इस कहानी का अन्त बहुत ही करुणाजनक है।

'बींझै सोरठ री बात', "दिनमान रै फता री बात", "रतन सम्मन सेन री बात" "वेघरे नामक वैरी बात", "जोगराज चारण री बात "सोहणीरी बात" "बीजड़ बीजोगण री बात", "ढोला मारू री बात "जलाल गहाणी री बात" (मुस्लिम प्रेम) आदि बातें इसी प्रकार की प्रेम गाथायें हैं।

ख—स्त्री चातुर्य की कथायें

कुछ कहानियां ऐसी मिलती हैं जिनमें स्त्री के चातुर्य को प्रदर्शित करने का प्रयास हुआ है। इन कहानियों में विभिन्न परिस्थितियों में डाल कर स्त्री के चरित्र को ऊंचा उठाया गया है। जैसे "मिणजारा बणजारिन री बात"[2] में स्त्री ने पुरुष को सुधारा है। अपने पति के कहने पर पत्नी अपनी चतुरता का परिचय देती है। यह अपना संयोग एक फूहड़ लकड़हारे पर करके उसे सभ्य पुरुष बना देती है। यही स्त्री की विजय है। "साहूकार री बात[3] में भी वह इसी प्रकार अपने को चतुर सिद्ध करती है। वाणिज्य के लिये १२ वर्ष तक बाहर जाने वाला पति (साहूकार) अपनी

१—राजस्थान भारती भाग १ अंक २-३ पृ० ८१-६२

२—राजस्थान भारती भाग १, अंक १, पृ० ८१-८३

३—राजस्थानी भाग ३, अंक ३ पृ० ७४।

पत्नी से ३ इच्छायें प्रकट करता है १-पतिव्रत-धर्म की रक्षा करते हुए पुत्र उत्पन्न करना २-सुन्दर भवन बनाना ३-मरण संगवाकर उनके लिये मरण शाला का निर्माण करवाना। इनमें प्रथम कार्य अधिक कठिन है किन्तु पत्नी अपनी चतुराई से ग्वालिन का वेश धारण कर विदेश में उसी साहूकार के पास पहुँचती है। वह उसे पहचान नहीं पाता तथा अपने चरित्र से गिर जाता है। इस प्रकार उस कठिन कार्य में भी वह सफल होती है। ठीक इसी प्रकार की कहानी बुन्देल खन्ड में वीर विक्रमादित्य की कहानी के नाम से प्रसिद्ध है। जिसमें साहूकार के स्थान पर विक्रमादित्य के नाम का प्रयोग किया गया है।

"फोफरांद री बात[1]" तथा "राजा भोज, माघ पंडित तथा डोकरी री बात" भी इसी प्रकार की बातें हैं। प्रथम कहानी में महाधनी पारखी और फोफानन्द की वार्ता है। पुरुष मांगकर अपने असामर्थ्य को प्रदर्शित करता है किन्तु स्त्री उसे इस कार्य के लिये भर्त्सना देती है तथा अपने सामर्थ्य से अपने वैभव के उपकरण जुटाती है। दूसरी कथा मे राजा भोज और माघ नामक पंडित डोकरी (बुढ़िया) से चतुराई मे पार नहीं पाते।

इनके अतिरिक्त अधिकांश कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें नारी के चरित्र चित्रण में सूक्ष्म-दृष्टि से काम लिया गया है।

ग—साहसिक एवं पराक्रम सम्बन्धी कथायें—

इस प्रकार की कहानियों में साहस पराक्रम आदि को अधिक स्थान मिला है। साहसिक रचनाओं में "सींवे वीजे री बात"[2] एवं "राजा भोज अर खापरा चोर री बात"[3] रखी जा सकती हैं। "सींवे वीजे री बात" संयोग एवं दैव घटना प्रधान है। सींवा और वीजा दोनों प्रसिद्ध डाकू हैं। एक मारवाड़ रहता है और एक सोझित। दोनों ने एक दूसरे के विषय में सुन रखा था किन्तु एक दूसरे को देखा नहीं था दोनों का मिलन बड़े ही आकस्मिक रूप से होता है। वीजा एक दिन सींवे के घर सेंध लगाता है। दीवार में छेद करने की आहट से सींवा जग जाता है। वह नंगी हुई तलवार उठाकर सावधान होता है। तलवार उठाने से एक मक्खी उड़ती

१—राजस्थानी भाग ३ अंक ४,
२—अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान
३—वही

है। बीजा समझ लेता है कि भीतर जागरण हो चुका है। अतः वह भी जागरूक हो जाता है। छेद पूरा होने पर वह एक काली हंडिया को लकड़ी में लटका कर छेद में डालता है। सीसा उस पर तलवार से प्रहार करता है। हंडिया टूट जाती है। सीसा भीतर से हंसता है बीजा बाहर से। दोनों का परिचय होता है। इसके उपरान्त दोनों सम्मिलित डाके डालते हैं जिनमें १–चित्तौड़ से जय विजय नाम घोड़िया चुराना एवं २–पाटण के सतयुगी मन्दिर से स्वर्ण कलश उतारना मुख्य हैं। इन दोनों में उन्हें सफलता मिलती है।

इस कथा में चोरी की क्रिया के स्वाभाविक चित्र मिलते हैं। बीजा चित्तौड़ से जय-विजय घोड़ियां लेने जाता है सात तालों में यह घोड़ियां रखी जाती हैं। पहरेदार अपने सिर के नीचे ताळियां रख कर सोता है। किन्तु बीजा अपने कार्य में असफल नहीं होता।

"अमावस री रात्रि रो आद नै बीजो लागो घड़ीयाळै री घड़ी बाजै तरी सूटी ५–६ मारै। घड़ी घड़ी बाजै तरै सूटी मारै। इसु करतां जय पडकोट लापि ने पगथा रोखो आड़ फिरियो। आड़ फिरि नै पड़वे ऊभो रहीयो। पड़वे चढ़ि नें एके वाली चिपता कोलू उतारिया।

पसवाड़े धरती मूकीया मूकि नै बांहू वालि पकड़ि ने मांहि सूं पाखी पस सु उतारियौ। उतरि नै दीयो कुमकुम दीयो। दियौ कुमकुम ने माथा रा पागा हाथ उपरा थकाइ पारवती कीया। पारवती करि ने सिरहाणै सु कूसे कूसे कूची लीधी कूची ले ने साते दरवाजा खोलीया। खोलि ने जय रै लगाम देर काढ़ी।

इसी प्रकार सीसे के घर चोरी करने जाते हुए बीजे का एक स्वाभाविक चित्र इस प्रकार है—

"माघ भादवा री आधी रात गई छै। ताहरां काला कांबल री गाती मारि; टोपी माथे मेलि आंधीयो पहिरि छुरी काढ़ि कटि बांध घर साहर माहे चोरी नू चालीयो।

"राजा भोज अर खापरा चोर री बात" में धारा नगरी का राजा भोज चौदह विद्याओं का जानने वाला है। खापरा नामक चोर उसके यहां नौकर है। वह नगर में चोरी करता है और उसकी चोरी पकड़ी नहीं जाती। राजा नगर में ढिंढोरा पिटवाता है कि यदि चोर उसके पास पता लावे तो राजा

उसके सब अपराधों को क्षमा कर दूंगा। लाफरा उसके पास जाता है। राजा उसे अपनी प्रतिज्ञानुसार क्षमा कर कुछ जागीर दे देता है। एक दिन राजा उस चोर से चोरी की कला सीखने की इच्छा प्रकट करता है। दोनों शरीर में तेल लगा तथा आवश्यक उपकरण लेकर नगर में प्रविष्ट होते हैं। एक साहूकार के घर में उन्होंने चोरी की। प्रातःकाल जब सेठ को उस चोरी का पता चलता है तब राजा भोज के पास वह इसकी सूचना पहुंचाता है। राजा उसकी सम्पूर्ण खोई हुई पूंजी के उपलक्ष में धन देता है। इसके उपरान्त लाफरे की कुछ चालें —उसका मर जाने का बहाना करना, पुनर्जीवित हो जाना, तथा अन्य कई घटनायें साहसिकता के अच्छे उदाहरण हैं।

इनके अतिरिक्त "वीपालदे री वात[1]" "दूदे जोधावत री वात[2]" "सातल सोम री वात[3]" भी इसी प्रकार की कहानियां हैं।

वीपालदे री वात पुरुषार्थ, दान, और परोपकार की कहानी है।—

१—अमरकोट के राजा वीपालदे का जैसलमेर की भूमि में अपनी पत्नी को ले जाना।

२—मार्ग में एक चारण को हल जोतते हुए देखना।

३—चारण द्वारा हल में एक ओर बैल तथा दूसरी ओर अपनी पत्नी को जोतना।

४—यह देखकर चारणी के स्थान पर वीपालदे का जुत जाना तथा चारणी को भेजकर अपने रथ के बैल मंगवाना।

५—बैलों के स्थान पर खेती करना। उपरान्त अच्छी उपज होना।

६—जिस स्थान पर राजा जुता था उस स्थान पर मोती पैदा होना।

दूदे जोधावत री वात में वैर प्रतिशोध की भावना है। जोधा का पुत्र दूदा नरसिंहदास के पुत्र मेघा को मारकर अपने पुराने वैर का बदला

१—राजस्थानी भाग ३, अंक २ पृ ७३

२—वही पृ० ७४

३—राजस्थान भारती भाग २, अंक २, पृ० ६०

लेता है। दोनों जब युद्ध भूमि में अपनी सेनायें लेकर पहुँचते हैं तो दूदा मेघा को द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारता है। मेघा उसे स्वीकार कर लेता है तथा द्वन्द्व युद्ध में दूदा के हाथ से मारा जाता है।

'सातल सोम री वात' वीरता की कहानी है। कुभटगढ़ नरेश चौहान सातलसोम देहली के सुलतान अलाउद्दीन की सेवा में रहते हैं। नित्य दरबार में अलाउद्दीन गर्वोक्ति करता है कि ऐसा कौन वीर है जो उससे लोहा ले सके। एक दिन सातलसमाम से यह नहीं सहा गया और उन्होंने अलाउद्दीन से लोहा लेने का निश्चय किया। दोनों में युद्ध होता है। १२ वर्ष तक भी अलाउद्दीन गढ़ को नहीं जीत पाता है। अन्त में गढ़ का द्वार खुलता है तथा सातलसमाम युद्ध में काम आते हैं।

इस प्रकार की और भी कई कहानियां हैं जिनमें पराक्रम सम्बन्धी विवरण मिलता है।

घ—भोज और विक्रमादित्य सम्बन्धी कथायें—

राजा भोज विक्रमादित्य, शालिवाहन गन्धर्वसेन, भर्तृहरि आदि इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियों के नामों का प्रयोग कथाओं में हुआ है। लोक-कथा साहित्य में विक्रमादित्य का नाम बहुत प्रसिद्ध है[1]। इनमें से कुछ कथायें लिपिबद्ध भी की गई हैं। "राजा वीर विक्रमादित्य अर मसत्र आनीक री बात आदि में विक्रमादित्य के नाम से कई घटनाओं का सम्बन्ध जोड़ा गया है। राजा भोज भी कई कहानियों के नायक हैं। वे कहीं खापरा चोर, भागिया वैताल, कथड़िया कुम्हारी माविकदे स्वपाण के मित्र बनते हैं और कहीं राक्षसी के पास स्वर्ण-भरिक्य।

"राजा भोज माप विकत अर डोकरी री बात" "चौबोली" "राजा भोज खापरा चोर' 'राजा भोज री पनरवीं विद्या' "त्रिया च रत्र' 'राजा भोज री च्यार बातां" 'भोज री बात', "जसमा ओड़णीरी बात" आदि में भोज का नाम आता है। 'पिंगला री बात तथा "गन्धर्वसेन री बात[2] में पिंगला और गन्धर्वसेन के नामों का साथ अनैतिहासिक कथायें जोड़ी गई हैं।

१—शान्तिचन्द्र द्विवेदी विक्रम स्मृति-ग्रन्थ पृ० १११

२—यह सब बातें अनूप संस्कृत-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान हैं।

घ—अद्भुत-कथायें—

राजस्थानी कहानियों की यह विशेषता है कि उनमें आप्सरिक एवं वैताभिक तत्व तो कहीं न कहीं घुस ही जाते हैं। कहानी की विलक्षणता, मोहकता एवं आकर्षण शक्ति को बढ़ाने के लिये इनका प्रयोग होता है।

"राजा मानधाता री बात" में अप्सरा लोक का चित्रण हुआ है। भजनपाल की जादू की लकड़ी मानधाता को सात समुद्र पार ले जाती है। वहां मानधाता को ६ धूनियों के सम्मुख चार योगी दिखाई देते हैं। योगी उसे खड़ाऊं देते हैं। उनको पहिनते ही मानधाता अप्सरालोक में जा पहुंचता है। ये अप्सरायें इन्द्रलोक की हैं। उनमें से एक उसको परमात्मा पहिचानती है—

"देखै तो आगै राजा मानधाता सूता छै। अपछरायां कह्यो भाणेज मामा मेलहीयो, कह्यो जी मामा मेलहीयो। ताहरां एके अपछरा भाणेज रै परमात्मा पाली छै। सु अपछरां सु सुख भोगवै छै। यु करतां मास ६ हुवा। छठे महीने कोठार री कुञ्च्यां दाया छै। अपछरायां कह्यो ये चार कोठार मती खोल ज्यो। यु कहि अपछरायां इन्द्र रै मुजरै गया छै।

मानधाता प्रति छै मास में एक एक कमरा खोलता है। क्रमशः प्रत्येक कमरे में उसे गरुड़पंख मोर, भरथ एवं गधा मिलता है। गरुड़पंख उसे इन्द्र के अखाड़े में ले जाता है। मोर उसे सारे नागलोक में घुमाता है। भरथ उसे मृत्युलोक एवं यमपुरी की प्रदक्षिणा करवाता है। गधा उसे पीछा ही उसके मामा भजनपाल के पास अजमेर पहुंचा देता है।

"बीरम दे सोनगरा" की कथा में पाषाण की प्रतिमा का एकाएक अप्सरा हो जाना ध्यान आकर्षित करता है —

"देहरै में पाखाण री पूतली। सो घणी रूड़ी फूटरी। कान्हड़दे री उपरै रूप दिसी घणो गौर करि जोवण लागा। तिण समै कोई देव रै जोग उवा पूतली थी तिका अपछरा हुई। तरै रावजी कह्यो थें कुण छो। तरै उवा बोली अपछरा छू। मैं थाने वरिया छै। पिण म्हारी आ बात किणी आगै कही तो परी जासू।"

इस प्रकार कान्हड़दे की रानी के रूप में यह रहती है। बीरम दे उसका पुत्र है। एक दिन की बात है कि बीरमदे को कोई मस्त हाथी उठाने

ही घास डालता है। गवाक्ष में बैठी हुई रानी उसे देखती है। वहीं से वह अपने हाथ फैलाकर अपने पुत्र को उठा लेती है। इस प्रकार अलौकिक व्यापार देखकर उसके अप्सरा होने की बात प्रकट होती है, फलस्वरूप अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार वह वहीं अन्तर्ध्यान हो जाती है।

पाबू जी री बात में भी इसी प्रकार धांधल जी किसी अप्सरा से विवाह करते हैं। इस अप्सरा से सोना नाम की लड़की और पाबू नाम का लड़का उत्पन्न होता है।

"जगमाल मालावत" की कहानी में बैतालों की सहायता से जगमाल अहमदाबाद के बादशाह मुहम्मद बेग को परास्त करता है। पाटण से १२ योजन दूर सोमटा नामक नगर का अधिपति तेजसी तुंवर मुसलमानों के हाथ से अपने तीन सौ साथियों के साथ मारा जाता है। म्लेच्छों के हाथ से मारे जाने के कारण ये सभी राजपूत प्रेत योनि में पड़ते हैं। जगमाल मालावत तेजसी तुंवर को प्रेत योनि से मुक्त कराता है। तेजसी तुंवर प्रसन्न होकर अपने साथी तीन सौ प्रेतों को जगमाल की सहायता करने का आदेश देता है। ये बैताल जगमाल मालावत की सहायता करते हैं।

कंधली भैरव एवं जोगनियों आदि का वृत्तांत "जगदेव पंवार री बात' में आता है। जगदेव पंवार अपने आश्रयदाता सिद्धराज (नरेश) की रक्षा भैरव और जोगनियों से करता है। जब वह रात्रि के समय राजा सिद्धराज जोगनियों का हंसना और रोना सुनता है और उसका कारण जानना चाहता है तब जगदेव पंवार ही उसका पता लगाकर सूचना देता है कि यह पाटन और दिल्ली की जोगनियां हैं —

तरै उवै बोली पाटण री जोगणियां छां। जिके प्रभात सवा पोर दिन चढ़तै सिधराज जै सिंह री मरणु छै। जिण सूं रुदन करां छां।........ तरै कह्यो म्हे दिल्ली री जोगणियां छां जिकै राजा जै सिंह नै लेण न आई छां। जिण सूं वधावा गीत गावां छां।

जगदेव ने जिस प्रकार से राजा की रक्षा की थी उसका स्वरूप इस प्रकार चित्रित हुआ है —

"राजा पौढ़िया था। नै काला भैरू लूंगी रो लंगोट पहरियां केस

तेल माहे गरक कीयाँ, सिंदूर लागो गुरज[1] हाथ माहें लीयाँ, चोसा पेराक[2] माहे मैमंत हुवो थको सिपराव है तिठे आय नै हाथ पकड़ नीचे गालि पगाँ नीचे दे नै आडे जी कर्ने मेरू पीड़ रहयो।'

इसी कथा में वर्णित कंकाली का स्वरूप भी देखिये —

"सिर काली बीगी[3] मोटा दांत, कूबली घणी बराबणी, माथारा छुटा बिखरिया, पग्गाँ तेल माहें चबली पबता केस माथे निशाह सिंदूर पेचरकियो थको लोवड़ी[4] काली काछो घावेला[5] कांचली तेल माहे गरकाव थकी, बधाई माथे कीयाँ, हाथ माहे त्रिसूल मकसियाँ दरबार आई।"

यह कंकाली जगदेव पंवार की दान प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए दरबार में आती है। सिद्धराज से वह दान की याचना करती है। सिद्धराज उत्तर देते हैं कि जितना जगदेव देगा उससे चौगुना वह दान करेगा किन्तु जब जगदेव अपना सिर उतार कर कंकाली को अर्पण करता है तब सिद्धराज अपनी असमर्थता पर लज्जित होता है। कंकाली प्रसन्न होकर जगदेव को पुनर्जीवित कर देती है।

राक्षस का स्वरूप "चौबोली" एवं "सूरां अर सतवादियां" की कथा में दिखाई देता है। "चौबोली" में राजा भोज किसी राक्षसी की जटा में स्वर्ण मक्षिका बन कर रहता है। "सूरां अर सतवादियां" में फूलमती राक्षस की नगरी में निवास करती है जिसने सारे नगर को जन-रहित कर दिया था। राजा वीरमाण उस राक्षस को मार डालता है।

अाप्सरिक एवं वैतालिक तत्व राजस्थानी कहानियों में कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में मिल ही जाते हैं। इन कहानियों के लिये कुछ भी असम्भव नहीं।

राजस्थानी का सम्पूर्ण कथा साहित्य कौतूहलत्व-वृत्ति का ही पोषक रहा है। इतिवृत्तात्मक-कथा-तत्व घटनाओं के वर्णनात्मक विस्तार पर

१—अस्त्र विशेष
२—मदिरा
३—लम्बी
४—ओढ़ने का वस्त्र
५—लहंगा

आधारित रहा। इसके कथानक में आश्चर्य, कुतूहल, जिज्ञासा आदि मानसिक मनोवृत्तियों को पुष्ट करने वाले तत्व ही प्रधान रूप से आये। लौकिक-अलौकिक, ऐतिहासिक-अनैतिहासिक झूठे-सच्चे, काल्पनिक वास्तविक आदि व्यापारों के विचित्र संश्लिष्ट रूप-विधान इनमें पाये जाते हैं। इन कहानियों में पात्रों के चरित्र-चित्रण की ओर ध्यान बिल्कुल नहीं गया है। स्वाभाविक या मनोवैज्ञानिक आधार पर बहुत कम पात्र खड़े हुए दिखाये पड़ते हैं। कथानक के तार-तम्य एवं प्रवाह की रक्षा करने के लिये पात्रों को कठपुतली बनना पड़ा है। आसुरी दैवी या मानवी वृत्तियों में लिपटे हुये पात्र भाग्य या अप्रत्याशित परिणामों की शरण में छोड़ दिये गये हैं। इनमें जीवन का स्पन्दन नहीं दिखलाई पड़ता। देश और काल का ध्यान भी इन कथाओं में बहुत कम रखा गया है। अर्द्ध ऐतिहासिक बातें यद्यपि इतिहास के स्थूल धरातल पर खड़ी की गई हैं तथापि उनमें कल्पना एवं अद्भुतात्मक तत्वों के उपयोग करने का अधिकार उपेक्षित नहीं किया गया है। देश और काल की स्थूल सीमाओं में दैवी या आकस्मिक घटनाओं का स्फुरण प्राण वायु से वंचित रह जाता है अतः नवीन कल्पनालोक के उन्मुक्त गगन में इन कथाओं को श्वास लेने की आवश्यकता हुई। मनोरंजन ही इन कथाओं का एक मात्र उद्देश्य रहा। इसीलिये सामाजिक नैतिक आदर्शों, यथार्थ आदि की ओर ध्यान जाना अस्वाभाविक था। प्रासंगिक या आकस्मिक रूप से जहाँ कहीं इनका निर्वाह हो पाया है वहाँ कहानी के सौष्ठव में कुछ कला के दर्शन भी होते हैं।

o

३—चारण अपने आश्रयदाता नायक की वीरता का चित्रण कर उसे अमर करने का प्रयास करता है।

४—चारण को नायक अपने पुत्र के संरक्षण में छोड़ जाता है।

५—दोनों का आधार ऐतिहासिक घटना है।

ऐतिहासिक भूमि—
सन् १६५८ में शाहजहाँ के दो पुत्र औरंगजेब और मुराद विद्रोही होकर आगरा की ओर चले। शाहजहाँ ने जोधपुर नरेश महाराजा जसवंतसिंह को सेना देकर उन्हें रोकने के लिये भेजा। सन् १६६० ई० के लगभग उज्जैन के समीप दोनों सेनाओं की मुठभेड़ हुई जिसमें महाराजा जसवंतसिंह पराजय हुये। महाराजा जसवंतसिंह के सरदारों में श्री रतनसिंह भी थे जो इस युद्ध में काम आये। ये ही इस वचनिका के नायक हैं।

इस वचनिका में गद्य-अंश बहुत ही कम है। प्रारम्भ में शिव और शक्ति का स्मरण है। इसके उपरान्त— क–रतनसिंह जी का वर्णन ख–औरंगजेब और मुराद का सेना लेकर आना ग–शाहजहाँ द्वारा महाराजा जसवंतसिंह को भेजा जाना, घ–दोनों सेनाओं में युद्ध, ङ–रतनसिंह की मृत्यु, च–ब्रह्मा विष्णु, इन्द्र, महेश आदि का आना, छ–रतनसिंह का बैकुण्ठ पहुँचना ज–रतनसिंह की रानियों एवं चार खवासों का सती होना आदि का विस्तार पूर्वक विवरण इस वचनिका में मिलता है।

भाषा और शैली की दृष्टि से यह वचनिका शिवदास चारण की वचनिका से समानता रखती है। भाषा परम्परा से मुक्त नहीं है। अतः प्रासाद गद्य का एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है।

"दिया देखा दातार म्हु म्हार राजा रतन मू क्यों पर हाथ बोले।
तरुवार तोड़ी।
आगे संभ कुरखेत महाभारत हूआ
देव दाणव क्रवि मूआ।
द्वारिजुग कथा रही।
वेद व्यास वाल्मीक कही।
यु तीसरो महाभारत आगम कहता उजेणि खेत
आगनि सोर गाजसी।
पवन वाजसी॥

गजबंध छत्रबंध गजराज गुड़सी ।
हिन्दु असुराइण सड़सी ॥
विग्रह तो वात साम्धबंध भाइ तिरे पड़ी
हुइ राह पातिसाहां री फौजां पड़ी
दिल्ली रा भर मारव मुजे दिया
कमधज मुद्रै किया
वेद सासत्र बताया सु भासाण्ण भाया ।
धर्मेरिख सेव धारा धोरय भणी री भरम सिरी री परम पावणी छै
सोहां रा बोह सेसां रा भरमंभ सीजै
सांगां री साट सहि मारम्हि बरणाहरि खेलीजै
पातसाहां री गजघटा मड़ां बीभड़ां मारि ठेसीजै ।

ग-दवावेत

इस प्रकार की रचनायें राजस्थानी में कम मिलती हैं। जो प्राप्त हुई हैं उनमें किसी पर फारसी का प्रभाव है तो किसी पर हिन्दी का। सभी प्राप्त दवावैत अठारहवीं शताब्दी के उपरांत की रचनायें हैं। इससे पूर्व की दवावैत नहीं मिलती। इस काल की कुछ उल्लेखनीय दवावैत इस प्रकार हैं —

१—नरसिंहदास की दवावैत[1]

इसका लेखनकाल अठारहवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध है। इसके लेखक का नाम भाट माधोदास मिलता है। इस पर हिन्दी का प्रभाव स्पष्ट झलकता है —

गद्य का उदाहरण—

'जरबफत पाटवा है। का बर फटते हैं। समा बिराजती है। कीरत राजत हैं। घोड़े फिरते हैं। पायक चकते हैं। गुणीजण राग धरता है। बाह बयत बणावा है। सोभा बणती है। श्री दिवाणं पधारते हैं। कुसमण को वारत हैं। वेमों दूर करते हैं। माहो काम सरते हैं। कवीसुर बोलते हैं। भरना बोलते हैं।

२—जिनसुखसागर जी की दवावैत[2]

यह जैन रचना है। श्री उपाध्याय रामविजय ने सं १७८२ में इसकी रचना की। इसका दूसरा नाम 'मजलस' है।

१—श्री अगरचन्द नाहटा कल्पना मार्च १६५३ पृ २१०।
२—वही

गद्य का उदाहरण—

"दुस्मन दूर है सब दुनी में हुक्म मजूर है। मगरूरों की मगरूरी दफै करते हैं, छत्रधारी की सी रौंस धरते हैं। बड़े बड़े छत्रपती, पट्टपती वेसोल बंडोव करते हैं, जिकारे पुकारे मु ख मरते हैं। (और) भी कैसे हैं – गुनु के गाहक हैं, गुनु के जान हैं, गुनु के कोट हैं, गुनु के जिहाज हैं। दिवैजिन के राज हैं पट्टदरान के महाराज हैं, सब दुनियाँ बीच जस नगारे की आवाज है।

३—जिनलाभ सूरि की दवावैत

यह उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ की रचना है। पाठक विनय भक्ति (वस्तपाल) ने इसे बनाया। यह जिन सुखसूरी की दवावैत से चौगुनी बड़ी है। गद्य के अतिरिक्त इसमें गीतों के प्रयोग भी किये गये हैं।

गद्य का उदाहरण—

"फिरि जिनु का जस का प्रकास मनु हंस का सा विकास।
किधु हरख का हास, किधु सरद पुन्यु का सा उजास।
फिरि जिनु का रूप अति ही अनूप, मनु सकल रूपवंतु का रूप
जाकु देखत चाहै सुरन के भूप। कामदेव का सा अवतार,
किधु देव का सा कुमार। तेज पुंज की झलक मनु कोटिक
सूरज की झलक।

अंतिम दोनों दवावैतों पर फारसी का प्रभाव है। इनकी रचना सिन्ध में हुई[1] अत: फारसी के शब्दों का आजाना अस्वाभाविक नहीं है।

४—दुरगादत्त की दवावैत[2]

ईसरदा ठिकाने के किसी जागीरदार से उचित इनाम न पाने पर दुर्गादास ने इस दवावैत की रचना की। उक्त सरदार को दुर्गादत्त ने अपनी

१—कल्पना मार्च १६५३, पृ० २१६

२—यह दवावैत मुझे आदरणीय डा० श्री मथुराप्रसाद जी शर्मा, एम० ए० डी० लिट०, की अनुकम्पा से प्राप्त हुई है। इस लेख के द्वारा यह सब से पहले प्रकाश में आ रही है।

इस दवावैत में भरसक मिन्दा की है। इसके 'गद्य में समोसा प्रवाह है पद्य-गत "बयण सगाई" अलंकार की भाँति इस दवावैत में वर्ण-मैत्री मिलती है। इस पर हिन्दी का बहुत अधिक प्रभाव दिखाई पड़ता है।

गद्य का उदाहरण—(१)

"जाय...... से दबा पड़ी। उस कोसी आँखसे सामा जोया। एक तो जमी एक आसमान को चढ़ी। हाथ से मान सनमान दिया। सिर तो जमीन से लगाय लिया। पुस्त से पूण हाथ मलहार ऊँचा किया। जिस राम से वीर आसन बैठा न गया। पछाड़ी कू दस्त टेक अगाड़ी कूं पांव पसार दिया। उस वक्त ....ऐसा नजर आया। मुखी चिराक सा रोशार दिखाया। टोप्ले से सिर पर पगड़ी के व द। लकड़ी के लु टे पर मकड़ी के फंद। सूना सा बबूला दूना सा बदन। बड़म्मक के कोरे के करारे के पान। मोखी सी मूमी पर कोसी सी आंख। पाली सी भीतू में खोखी सी पांख। गाडा सा देखण में वाशमा सहंत। इंगाया पागा के साका सा महंत। भूले में मरियोड़ी पूले मी मूछ जंबूक की सभा के गधे की पूछ।

२—पूरब की तरफ ... बसू का देस। रोमं का रैवास। मांड़ का भेस। जिस देस मैं .... दो नाम गाँव। बेवकूफों का वास॥ पूरबू का पास। मगतू का मोहल्ला। कंगालु का कोट। डीडहु का सहर। वाल का जेट। सुगल का चबूतरा। रुगतू का रैवास। कुकरमू का ठेठार। आलसू का पैवास। मूख का मांडा। मालजादू का मुकाम। अनीत का अखाड़ा। अवतू का आराम। हराम का हटवाड़ा। हरामजादू की हाट। खोटू का खजाना। परेलू का पाट। बिपत का बगीचा बुराई का वास। कलह का कुं वाड़ा मरी का मेवास। आदि.......

घ—वर्णक ग्रंथ

इस काल में कुछ ऐसे ग्रंथों की भी रचना हुई जिनमें वर्णन के प्रमुख स्थलों की रूप रेखायें दी हुई हैं। वर्णक ग्रंथ इस प्रकार है —

१—राजान राउत रो बात वणाव

यह एक वर्णन-विषयात्मक निबन्ध है इस लेख में बतलाया गया है कि राजाओं का वर्णन करते समय कौन कौन से प्रमुख स्थलों पर किस प्रकार प्रकाश डालना चाहिये। चार अध्यायों में यह पूर्ण हुआ है। प्रारम्भ में स्तुति है। ओंकार महादेव उनका हिमाचल पर्वत और आबू के वर्णनो परान्त राजराजेश्वर, पटरानी तथा राजकुंवर का विरद गाया है।

सूर्य वंशी राजा उनका वैभव उनके सिंहासन छत्र, चंवर, निशान आदि के विषय में कह चुकने के उपरान्त प्रथम अध्याय का वर्णन-क्रम इस प्रकार चलता है :—

१—राजपाट—पौष कोट बाग, बावड़ी कुआं, सरवर बड़ पीपल आदि।

२—गढ़कोट—परकोटे के कंगूरे आकाश को निगल जाने के लिये मानों होठ उनकी ऊंचाई समीपवर्ती खाई की गहराई। गढ़ के भीतर के कुआ, सरवर धान, घृत, तेल नमक, ईंधण प्रमल आदि

३—नगर—देवालय कथा कीर्तन, नाटक, धूप, दीप आरती, केसरचंदन अगर, मल्लार मनकार।
धर्मशाला दानशाला योगेश्वर त्रिकुटी साधक एवं धूम्रपान करने वाले, दिगम्बर, श्वेताम्बर, निरंजनी, कनफटे, जोगी, सन्यासी अवधूत फकीर। निवासी लखपति, करोड़पति सौदागर छत्तीस इतर आदि।

बाजार—सोना, रूपा, जवाहर, कपड़ा रेशम, पटकूल पमम शराफ बजाज जौहरी, दलाल, वेस नायिका (वेश्या) आदि।

४—राजकुमार के सम्बन्ध के लिये विभिन्न स्थानों से आये हुए भारियल

५—विवाह की तैयारियाँ (बरात गमन) हाथी, घोड़े बैल, रथ पैदल आदि कलस बंधाना, माला मीला बांस, केलि-खंभ चौरी, पाणिग्रहण संस्कार मंगलाचार आशीर्वाद विधि-१-तंत्री २-वीणा ३-किन्नरी ४-तम्बूरा ५-नीसाण ६-ढोल ७-दमामा, ८-भेरि ९-मृ गलिक १०-नफेरी ११-सवन भेरि १२-झाँझ १३-मजीरा १४-मादल, १५-मी मंडल १६-डफ १७-ढक्क १८-रंगतंग १९-मु हचंग २०-साज २१-कंसाल २२-तंबूर २३-मुरली २४ रिणतूर २५ शंख २६-ढोलक, २७-रावणहत्थी, २८ रबाब २९-रा वण हत्थो ३०-पू गी, ३१ भगलबो ३२ मृदंग ३३-पिनाक, ३४-वरपू ३५-सारंगी, ३६ करनाल।

६—भोज—दो प्रकार के अन्न अ-स्थायी आ-व्ययक। तीन प्रकार के मांस-अ-जलजीव आ-थलजीव, इ-आकाश जीव। पांच प्रकार के साग-अ-तरकारी आ-कन्दमूल, इ-शाक कोंपल, ई-पान-पत्र उ-फलफूल गोरस-अ-दूध आ-दही, इ-अन्य प्रकार। मिठाई, नमक, तेल, हींग, वेसवार, चरकाई।

७—दहेज—हाथी, घोड़ा सुखासन, रथ, पायक, जवाहर, हीरा मोती माणिक्य सोना रूपा, दास, दासी।

८—बरात लौटना भांति भांति के उत्सव

९—रानियों के सोलह शृंगार बारह आभूषण राजकुमार के सोलह शृंगार (पद्य में) द्वितीय अध्याय में ऋतु वर्णन एवं प्रकृति चित्रण

१०—विवाह के उपरान्त रंगरेलियाँ ऋतु विहार, ऋतु चर्या, ऋतु के अनुसार आचार व्यवहार, षद् ऋतु वर्णन

११—ऋतुओं के अन्तर्गत आये हुये पर्व नवदुर्गा दशहरा, देवोत्थान, एकादशी, होली दिवाली।

तृतीय अध्याय में युद्ध और आखेट वर्णन

१२—राजकुमार के बत्तीस लक्षण—१-सत २-शील, ३-गुण, ४-रूप, ५-विद्या ६-तप ७-अल्पाहारी, ८ उदारचित्त ९-तेज, १०-धनकर, ११-दीर्घदर्शी १२-सकलनायक, १३-दयालु, १४-विचारशील १५-वाचा १६-बुद्धिमानी १७-प्रमाणिक १८-यश, १९-उद्यम २०-आज्ञा २१-धीरज २२-राजसम्मान

२३ शूर, २४-साहसी, २५-बलवान, २६-भोगी २७-योगी, २८ गुणायण, २९-भाग्यवान, ३०-चतुर, ३१ ज्ञानी, ३२-देवभक्त,

१३—मुगल सम्राट से उनका युद्ध—मुगल सेना का सजना, राजपूत सेना का सजना, छत्तीस आयुध, १-सर सीगणि, २-छुरी, ३-कुन्त ४-साग ५-गोफिया ६-मोगर, ७-गोली ८-गोफण ९-शंख १०-गुरज ११-मूसल १२-पाश, १३-फासी, १४-चक्र, १५-खड्ग १६-गदा, १७-चाबक, १८-फरसा १९-कुद्द, २०-कवाण २१-बन्दूक, २२-ढाल, २३-कटार, २४-झपटसो, २५-सेल्ह, २६-त्रिशूल २७-सांठो, २८-धको, २९-बन्सहत्थी ३०-मुद्गर ३१-बाहुलिसुलो ३२ घटक ३३-ईबायुध, ३४-मली ३५ कनीत गण ३६-तोमर। युद्ध की तैयारी, युद्ध का आरम्भ, युद्ध वाद्यों का बजना दोनों ओर से आयुधों के प्रयोग घमासान युद्ध रौद्र रस का प्रकोप मतवाले सामन्तों के वार गज एवं अश्वों का चिंघाड़ना घायलों का रण-क्षेत्र में कराहना आदि। राजपूतों की विजय विजय के उत्सव

१४—राजकुमार का आखेट-वर्णन—आखेट की तैयारी साथ में सेना विविध आयुध। गज उनकी सजावट आदि चातुर्मास के विश्राम स्थल वर्षा वर्णन। साथ के पिंजर-बद्ध अनेक पक्षी अनेक शिकारी पक्षी तथा अन्य आखेट में सहयोगी पशु पक्षी।

१५—चतुर्थ अध्याय में आखेट के उपरान्त विश्राम विविध आयुधों का खोला जाना भोजन बनाना दोपहर का भ्रमण आदि भ्रमणोपरान्त अवस्था का चित्रण। दोपहर-समाप्ति लौटने की तैयारी लौटना प्रतीक्षा में प्रासाद के गवाक्षों से देखती हुई रमणियों के चित्र महल में प्रवेश रंगमहल के प्रेमालाप आदि।

वस्तु चित्रण प्रथम अध्याय में अधिक हुआ है। दूसर अध्याय में प्रकृति चित्रण उल्लेखनीय है, तृतीय एवं चतुर्थ अध्याय प्रायः विवरणात्मक हैं।

कुछ उदाहरण

क—वस्तु चित्रण (नगर वर्णन)

गंदाल सहर गढ कोट बाजार पौलि पगार बाग बावड़ी बगीचा कूआ

सरवरां री, भडो भीपता री छिबि । सहर री पालवी विराज ने रही छै । पारवती भरटा री भींगटि चीग रही पढी ने रही छै । बहा रो भटाभे लागि नै रहियौ छै । पालवी पोल जमि नै रही छै ......गढ कोट चोफेर कांगुरा लागा चक्र विराजै छै । जाणे आकास गिलण नूं दांत दिया छै । ऊंची नजर करि जोइजै तो माथा रो मुगट खड़हड़ । तिण भटरी लागी ऊंडी ग्रह नागद्रही सरीखी । जड छेक पाताल री जडां सूं लागि नै रही छै ।

ख—प्रकृति चित्रण

ऋतु वर्णन शरद् ऋतु से प्रारम्भ होता है । राजन राजकुमार विवाह के उपरान्त आनन्द मनाते हैं । संयोग शृंगार में प्रकृति के कुछ पार्श्व देखिये—

"सरोवरां रा जल निरमल हुआ छै । कमल पोइणी फूलि रहिया छै । सरग रा देवां नै पितरां नूं मातलोक प्यारो लागे छै कामधेनु गायां छै सूं धरती री पाकी औषधि रा रस चरै छै । दूधां रा सवाद अमृत सरीखा लागै छै ।"

"सरद रित रै समै री पूनिम रो चन्द्रमा सोलै कला किया समपूरण निरमली रैण रो उजली चांदणी रै किरण करि नै हंस नूं हंसनी देखै नहीं नै हंसणी हंस देखै नहीं छै । मिलि सकता नहीं छै । वारो वार वार मांहो मांहि बोलि बोलि नै मेरद गमावता छै । अण चांदणी री सपेदी करि नै महादेव नंदी धवल दूं ढता फिरै छै । सो लाभता नहीं छै । इन्द्र ऐरावति जोतो फिरै छै । इण भांति री सरद रित री सपेदी चांदणी री सोभा विराज नै रही छै ।"

हेमन्त

हिमन्त रित लागी । पवन री वाव फिरियौ । उतरादो वाव वाजियो । हेमन्त रा बरफ रूपाछिया टाढो टमकियो, मारवीं पड़ण लागो ।...... ... हेमाचल रा पहाड़ रा टूंक ऊपरे ऊजला बरफ रा ढूंक चमण लागा । बड़ाई पाव दिन लघुता पाई । सदां नदियां रा जल जमि ठंठ हुआ । मही सीय पड़ी घटी । ....अगनी जल सारिखी ठंडी लागै छै । जल आग पाट सरीखी लागै छै ।"

शिशिर

"............सिसिर रित री माह मास री रावि रो माली पड़े छै। उत्तराध रो पवन स्वामस्रो टोपी खाइ नै रहीओ छै। तिण रित मांहे छोड़ वासिमां ऊंचा मोहरां माहे ऊंचा वहसाना मांहे केर कोइलां री मफलां जगाड़ी जे छै। तपन तापन रा सुख लीजे छै।

वसंत

"...... ......दक्षिण दिसा मलयाचल पहाड़ रो पर्वत वाजिओ छै। सीत मंद सुगंध गवि पवन मलयाला में गल न्या परिमल मेलेला लावतो वहे छै भहार भार धनसपती मकरंद फूलादि रा रस मारुती भको वहे छै। भंवर मोरीजे छै। फूल फूलां फूली छै। वणराइ मंजरी छै। वासावली फूट रही छै। केसू फूलि रहिया छै। रितराज प्रगटीया छै। वसंत आयो छै। भमर मधुकर झंकार करी रहीया छै। मधुरी वाणी रा सुर करि कोकिला बोलि रही छै। बाग बगीचां वरसव गुलझरी झिमि फूल रही छै।

दिस दिस केसरियां पिचकारी छूटि रही छै। आकास ऊपरै अबीर नै गुलाल री भंवरै भंवरी लागि रही छै।

चंग मंग मुरचंग वाजि नै रहिया छै। वीणा ताल मृदंग वाजि रहिया छै। बांसली बाज रही छै। ढोलां बाजि रही छै। फाग गाइ जै छै। फाग खेली जे छै। नाची जै छै। हास विनोद कीजे छै। हास रस हुइ नै रहिया छै।

ग्रीष्म

"...... ......नैरत दिसा रो ऊनो पवन वाजिओ छै। उष्णकाली प्रगटीओ छै। जेठ मास लागो छै। सूरिज मस मकान्ति आयो छै। लु बाजीजे छै। सूरिज मलां न वरसणां रा आलो ताके छै। तो बीजा लोकां री केण बात।

तरवरा रा पान झड़िया छै। सुआरी वस्त्र विना नागा डिगंबरां सरीखा नजर आवे छै। निवाणां रा पाणी मीन्दिया छै पाइणी बाल ने रही छै। आछे जल मोझला तड़फडी रहीया छै। गजराज सूका सरोवर ढूंढता फिरे छै सादूला केसरी सिंह ज्वालानल अगनी सूं बलता धर्भ

बीम्ह घन रा हाथिया री पेट रा छाया सूना विसराम करे छै । भुजंग सर्प नीसरिया छै । मा छ ने तावड़े री आगनी सू बलता थका ठौड़ि ठौड़ि नै हाथीयां रै सीतल सू डाहला माहे पैसि पैसि रहीया छै । इण भांति रा सबल जीव विकै निबल हुइ नै रहीया छै ।

वर्षा का वर्णन इस ऋतु वर्णन के साथ नहीं हुआ है । इसका तो केवल नामोल्लेख ही कर दिया है । इसका प्रसंग तीसरे अध्याय में आया है—

"तठा उपरान्ति करि नै राजान सिलामति चौमासा री आवणी हुइ छै । आगम रित आयी छै । आसाढ़ धूधलीयो छै । इन्द्राय री घटा काली कांठलि ऊपडी छै । आडंगरी गुहलि मांहे ऊंडी गाजीयो छै । बगला पातस बैठ छै । पंखीया मालास मरिया छै । पावस पड़ित रहिया छै परभात सास पहाड़ खड़कीया छै । पात्रग मोर बोलि न रहिया छै ।

ऋतु वर्णन में पृथ्वीराज का "बेलि कृष्ण-रुकमणी री" का अनुसरण किया गया है । ऋतु वर्णन में पर्व एवं त्यौहारों की ओर भी लेखक का ध्यान गया है । यद्यपि इस 'बांठ बजार' में स्वतन्त्र प्रकृति चित्रण नहीं हुआ है तथापि यदि प्रसंग को ध्यान में रखा जाय तो इसकी स्वतन्त्रता में तनिक भी सन्देह नहीं होता ।

२—खीची गंगव नींबावत री दोपहरी

इसमें गंगव नी बावत खीचा की दोपहर वर्षा का विस्तृत विवरण है । विषय की दृष्टि से इसके २ विभाग किए जा सकते हैं

१—आखेट सम्बन्धी (पूर्वार्द्ध में)

२—भोज सम्बन्धी (उत्तरार्द्ध में)

प्रथम में आखेट की तैयारी एवं उसकी सफलता दिखलाई गई है । दूसर में जलाशय के तट पर नींबावत द्वारा किये गये भोजन का दृश्य है । यह विवरणात्मक चित्र शैली में लिखा गया है । इसकी भाषा प्रौढ़ एवं परिमार्जित है कहीं कहीं पर पद्यानुकारी गद्य के भी अच्छे उदाहरण मिलते हैं —

एक उदाहरण देखिये—

"अरध्यारितु लागी विरहण जागी । आभा भरहरे बीजां आभास

करै। नहीं ठैवो मावै समुद्र न ममावै। पहाडां पाम्मर पड़ी। घटा ऊपड़ी मोर सोर मंडे इन्द्र भार न संडे। भामो गाजै सारंग बाजै। प्रावस मेघ नै श्रवी हुवी सु दुखियारी री भाँम हुवी। मढ लागो मधी रो दलद्र मागो दादुरा डहिकडे माषण प्रापरै री सिम कढ़े। इसी समझवो मथा रह्यो छै। परला मड ने रही छैं बिजली मजीमिल करिनै रही छै। बादलां मड लागो छै सेहरां सेहरां बीज चमक नै रही छै। जाये कुसदा नायका घर सू नीसर भ ग त्रिखाय दूसरे घर प्रवस करे छै। मोर कुहके छै केहरां कहके छै। माखरां रा नाला बोल नै रह्या छै। पाणी नाला भर नै रह्या छै। चीटड़ियाल कहकत रही छै। बनस्पती सू वेसां लपट नै रही छै। प्रमाव रो पोर छै। गाज आवाज हुई नै रही छै। जाये धरा भये हरस सू धमी सू मिलण आयी छै।

इस प्रकार के वातावरण में नौवावत का आखेट प्रारम्भ होता है। वर्षा ऋतु के ऐसे समय में नौवावत की आखेट (सैल-सिकार) की इच्छा स्वाभाविक है।

आखेट वर्णन—

आखेट वर्णन में नौवावत का आखेट के लिये १—तैयारी करना और उसके उपरान्त २—शिकार करना ये दो महत्वपूर्ण कार्य आते हैं। इनमें पहले की अपेक्षा दूसरे का वर्णन अधिक विस्तार से हुआ है। प्रथम के अन्तर्गत नौवावत का एक सहस्र घोड़े प्रस्तुत करना, उसके सरदारों का अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित होकर आना नौवावत का बाहर निकलना है। द्वितीय का चित्रण नगारे के साथ होता है। एक ओर शिकारी कुत्ते, चीते, घोड़े बाज, सिकरा कुही आदि हैं दूसरी ओर सूअर, हिरन खरगोश तीतर, लवा, बटर आदि हैं। शिकार का वातावरण बन रहा है जिसके कई शब्द-चित्र आकर्षक हैं जैसे—

"घोड़ां रा पगासू धमी गूंज रही छै। खेह रो घोरो आकास नै जाय लागो छै। घूघरमाल घोड़ां री बाज रही छै। हींस कसल होफ हुई नै रही छै। बहलियां रा भूमरां अंगा रो मलकार हुइ नै रह्यो छै। बहलां रा वास पइयां रो खड़खड़ाहट हुइ नै रह्यो छै। होकारा हुइ नै रह्या छै। नगारे इकंके हुइ नै रह्या छै। सहनायां मे मलार राग हुइ नै रह्यो छै। निसाण सु हरे आगे फरहर नै रह्या छै।.............

भोज वर्णन

आखेट के श्रम दोपहर की धूप तथा रात्रि के श्रमण की खुमारी एवं थकान से नौबावत और उसके साथियों को प्यास लगती है। अपने सारे शिकार को एकत्रित कर वे निकटवर्ती जलाशय के समीप पहुंचते हैं। सरोवर पर घोड़ों से उतरना, अपने वस्त्र एवं अस्त्र शस्त्र खोलना विश्राम करना आदि का विस्तृत वर्णन है। इसके उपरान्त नौबावत का अपने साथियों के साथ भ्रमण करना मज्जन और खयाल सुनना सरदारों द्वारा जानवरों का शिकार किया जाना बकरों का काटा जाना, शिकार किये गये जानवरों का मांस तैयार करना भोजन करना आदि के चित्र हैं। भोजनोपरान्त नौबावत अपने साथियों के साथ लौटते हैं महलों में रानियां उनकी प्रतीक्षा करती हैं :—

"स्त्रो का मस्तक हाथ पांव जंघा कदली का थम, बांह चंपा री डाल, सिंघ सी कमर, कुच नारंगी नख सावा ममोला, ग्रीवा मोर सी, बोली कोयल सी, अधर प्रवाली, दांत दाड़मी कुली नाक सुआ की चोंच नाभ रसाली जाणे सुक त्रिवलपत्र सारखा दीसे छे। जाणे काम कंवल री सुखपोष लोयण सेत भंवर आया छे भ्रम सा नेत्र मीन जिसा चपल। मुख जाणे इन्द्र धनुष छे। मुख पूनम रे चन्द ज्यूं सोलहे कला संपूरण छे। पेट पीपल री पान छे। पांसी माखन री लोथ छे। स्तन कटोरा सा छे। नाभी मंडल गुलाब री फूल सो छे। ——

उक्त वर्णित दोनों ग्रंथों की भांति कुछ ऐसे भी ग्रंथ मिलते हैं जिनमें केवल वर्णन के उदाहरण ही उपस्थित किये गये हैं। ऐसे ग्रंथों में कुछ इस प्रकार हैं —

२—वाग्विलास या मुत्कलानुप्रास[1]

इसके वर्ण्य-विषय इस प्रकार हैं— १-नरेश्वर वर्णन २-नगर वर्णन ३-माहात्म्य वर्णन ४-समभूमि ५-सरोवर ६-राजसभा ७-वैमानिक देव

१—यह ग्रन्थ जैसलमेर के भंडार से प्राप्त हुआ है। इसके कुल ८ पत्र हैं जिनको देखने से इसकी रचना काल सौलहवीं शताब्दी हो सकता है। प्रति प्राप्ति स्थान यति लक्ष्मीचन्द्र जी का उपासरा खरतरगच्छ जैसलमेर

८-जिनवाणी ९-मुनि १०-देशनाम ११-नायिका १२-जिन वर्णन १३ शील १४-तप १५-भावना १६-चोर १७-मंत्री १८-सुजन १९-दरिद्री २०-राज २१-ये कियाकाम रा (ये किस काम के) (निरर्थक वस्तुयें) २२-सुभाषक २३-रावण राज्य २४-कारवी २५-गुरु २६-सुभाविका २७-तपोधना (महासती) २८-देव गुरु का आशीर्वाद २९-सौराज्य ३०-धर्म-आराधना ३१-द्रव्य ३२-पुण्य वृक्ष । ३३-मरुधर-यात्री ३४-नाटिका ३५ प्रमाद ३६ विरहिणी ३७-श्रावस मास वर्णन ३८-चतुर्दश स्वप्न वर्णन ३९-राजा ४०-राजकुमार ४१-मन्त्री ४२-शरीर सकलायु (अ ग राग) ४३-खाद्य वस्तु ४४-पकवान ४५-वस्त्र ४६-आभरण ४७-प्रधान वृक्ष ४८-सगर्भ स्त्री ४९ वियोगिनी ५०-कृत्रिम स्नेह ५१-युद्ध ५२-शाकिनी ५३-वैताल ५४-मरण ५५-नगर सेठ ५६-पुत्र के प्रति माता का स्नेह ५७-सहजवाक्य ५८-शोभा निलय ५९-वेश्या वर्णन ६०-चवलगृह ६१ चन्द्रोदय ६२ सूर्योदय ६३-असोमनीय वस्तुयें ६४-प्रसिद्ध वस्तुयें (लीला परमेश्वर की) सृष्टि ब्रह्मा की आदि ६५ चंचला लक्ष्मी ६६-कलि प्रवर्तन ६७-तुलसी (प्रतिमा) ६८-नार वर्णन ६९-शोक वर्णन ७०-युवराज वर्णन ७१-सत्पुरुष प्रतिज्ञा ।

इस वर्णक ग्रन्थ में कहीं कहीं संस्कृत का भी प्रयोग हुआ है। कोई वर्णन दो बार भी आगया है किन्तु उसमें पुनरुक्ति दोष नहीं आने पाया। भाषा में अन्त्यानुप्रास का ध्यान रखा गया है।

गद्य का उदाहरण—

वनभूमि का वर्णन

शिवा तणा फेत्कार घूघड तणा घूत्कार। सिंह तणा गुञ्जारव व्याघ्र तणा घुर्घुराट। सूअर घुरकइ चित्रक बरकई वैताल किलकिलइ दावानल प्रज्वलइ। रीछ उछलइ भमणी भ्रमइ मृग रमइ जिसा हुइ दविया रूख, इसा दीसइ भीख। इसी वनभूमि।

४—कुतूहलम्[1]

इस प्रति के अन्त में "इति कोतूहलम्" शब्द लिखा है जिससे पता चलता है कि कुतूहल उत्पन्न करने वाले वर्णनों के कलात्मक उदाहरण यहां

१—अगरचन्द नाहटा (राजस्थान भारती) वर्ष ३ अंक ३ पृ० ४३

मिलते हैं। एक उदाहरण—

वर्षाकाल–

ऊमटी घटा, बादला होइ एकठा, पवन छटा माजइ गटा, बीजइ छटा।
मेह गाजइ, आयो मास गोसा वाजई दुकाळ भाजइ,
सुकाल वाजइ, इन्द्र राजइ, ताप पराजइ।
बीज झबके मेह टबके होवा दबके, पाणी भमके, नदी धबके,
जलचर खबके आयो चमके।
बोलइ मोर, ढेड करे सोर, घ धार घोर, पैइसइ चोर बीजइ डोर।
झलके ताल, चढे परनाल, घूमे माल, सौंप गया पयाल।
झड़ लागी लोक सुखा जागी
घर पड़े, लोग ऊंचा चढ़े–

४–समाप्त गार[1]–

इस ग्रंथ की प्राप्त प्रति सं० १७६२ में महिमा विजय द्वारा लिखी गई है। इसमें वर्णन बहुत अधिक तथा आकर्षक है।

गद्य का उदाहरण—

वर्षा—

वर्षा काल हुए, वहितौ रहिउ कुमार
वापि पाणी भरता रया। बादल वनया।
मेघ तणा पाणी चढ़े पंथी गामइ आवा रहे।
मूर्छना वाजइ वाय लोक सहु हर्षित थाय।
आकाश धड़हड़े सास खड़हड़े।
पंखी तड़फड़इ, बड़े मायस लड़थड़इ।
काठ सड़इ, हाथी हल सड़इ।
आपणा घरि कादम फेड़इ, बीजा काय मेड़इ।
पार न लीइ। साप विहारन छोड़इ।
अनेक जीव नीपजै विविध धान ऊपजै।
लोकनी आस पूजै गाय भैंस दूजै आदि

1—राजस्थान भारती – वर्ष ३ अंक ३ पृ० ४४

६—दो अनामक अपूर्ण प्रय

१—वर्णनात्मक बड़ी प्रति[1]

यह प्रति प्राप्त वर्णकमों में सबसे बड़ी है। इसके ? पत्र प्राप्त हैं। वर्षा-वर्णन का एक दृश्य देखिये—

गद्य का उदाहरण—

"अब भाद्रपद मास, पूरइ विरह नी आस लाक मइ मनि थाइ उल्लास।

बिह नइ आगमि वरसइ मेह, न लाभइ पाणी नो छेह, पुनर्नव थाइ देह। भला हुइ दही, परी ला कोइ कइ नहि सही, पृथ्वी रही गहगही। सावइ कादम मावइ करसणि नाचइ। नीपजइ सावइ धानि देखता प्रधान। नासइ दुकाल, माझवे हुइ सुगाल आदि—

२—दूसरी अपूर्ण प्रति

यह प्रति श्री अगरचन्द नाहटा को केशरियानाथ भंडार, जोधपुर का अवलोकन करते हुए मिली[2]। इसमें कुल १४७ वर्णन हैं १४८ वां अपूरा ही रह गया है—

गद्य का उदाहरण—

विहरणी—

हार त्रोड़ती, वलय मोड़ती। आमरण मोलती वस्त्र गाँठती किंकणी कलाप छोड़ती, मस्तक फोड़ती। वक्षस्थल ताड़ती कंचुक फाड़ती। केशकलाप रोलावती पृथवी तलि लोटती। आंसू करि कंचुक भींचती छोकती दृष्टि मींचती दीनवचन बोलती सम्मोहन अपमानती।

१—ह० प्र० डा० भोगीलाल सांडेसरा बड़ौदा विश्व विद्यालय के पास विद्यमान

२—अगरचन्द नाहटा राजस्थान भारती वर्ष ३ अंक ३-४ पृ० ४१

मोवइ पाणी मोछली जिम तालोचलि माठी शोक विकल वाली।
कणि रोयइ, कणि रोयइ। कणि हंसइ, कणि रूसइ।
कणि भाक पइ, कणि निंदइ। कणि भूमइ, कणि भूमइ।
तेह तनु, संताप पंचराय। भादि

कविवर सूर्यमल्ल

(जन्म सं० १८७२ मृत्यु सं० १९२५[1])

सूर्यमल्ल बीसवीं शताब्दी के प्रौढ राजस्थानी लेखकों में हैं। इनके पिता चंडीदास एवं माता भवानबाई थी। बूंदी निवासी श्री चण्डीदास जी स्वयं डिंगल और पिंगल के प्रसिद्ध विद्वान थे। इनके गीतों का संग्रह "वस-विमइ' के नाम से प्रकाशित है। वंशाभरण (कोष) तथा "सार सागर' इनके अप्रकाशित ग्रंथ हैं।

पिता की भांति भी सूर्यमल्ल जी ने अपनी प्रतिभा का परिचय बाल्य-काल से ही देना प्रारम्भ किया। दस वर्ष की आयु में इन्होंने 'राम रजाट'[2] नामक ग्रंथ की रचना की। एक वर्ष में इन्होंने संधि ज्ञान प्राप्त कर लिया[3]। तथा १२ वर्ष की अवस्था तक ये व्याकरण में पद-ज्ञान के अधिकारी हुये[4]। इसके उपरान्त सूर्यमल्ल की कवित्व शक्ति का क्रमिक विकास होता गया।

इन्होंने कुल ६ विवाह किये जिनसे केवल एक कन्या उत्पन्न हुई। उस शिशु-कन्या को प्यार करते करते शराब के उन्माद में इतना हिलाया डुलाया कि वह भी मर गई। श्री मुरारी दान को इन्होंने दत्तक पुत्र बनाया।

१—द्रष्टव्य —

वीर सतसई भूमिका पृ० १२

कवि रत्नमाला पृ० ११४

राजस्थान साहित्य की रूपरेखा पृ० १४५

डिंगल में वीर रस पृ० ६८

वंश भास्कर

२—इसमें बूंदी नरेश श्री रामसिंह जी के दौरे एवं आखेट का वर्णन है।

३—वंश भास्कर प्रथम राशि प्रथम मयूख पृ० १६

४—वही पृ० १७

इनकी सबसे महत्वपूर्ण रचना "वंशभास्कर" है जो सात भागों में प्रकाशित है। इसमें राजपूतों को ९ वंशों का इतिहास है। प्रासंगिक रूप से कई अपतरण बीच बीच में आये हैं। यह पद्य ग्रंथ है किन्तु कुछ स्थानों पर गद्य का भी प्रयोग है। अपने जीवन काल में सूर्यमल्ल इस ग्रंथ को पूरा नहीं कर सके। बूंदी नरेश की आज्ञा से दत्तक पुत्र मुरारीदान ने इसे पूरा किया।

कविवर सूर्यमल्ल ने अपने वंश-भास्कर के चतुर्थ पंचम, षष्ठ एवं सप्तम राशियों में गद्य का प्रयोग किया है[1]। यह गद्य कुल १८३ पृष्ठों में

१—चतुर्थ राशि —

पृ० ११८९–१२१३,	४।१	२,	३,	११०-११ १२	=२८
१२६१–१२६७,	४।६,			११५	= ७
१३४१–१३४६,	४।१५,			१२४	= ६
१३४९–१३८२,	४।१५,	१६,	१७	१२४-५-६	=३४
१६१०–१६२८	४।३५,	३६		१४४-४५	=१९
					९४

पंचम राशि —

१७६२–१७७२,	५।७९		१५४।५५	=१०
१८११–१८२६,	५।११	१२	१५८-५९	=१६
१८४१–१८५०,	५।१३		१६०	=१०
१९६०–१९७६,	५।१५			=१०
				४६

षष्ठ राशि —

२०७३।२०७४	७।२६		= २

सप्तम राशि —

२२२४–२२३७	६।११	१९४	=१४
२६६१–२६७३	७।१०	२२२	=१३
२६७४–२६८७	७।११	२२३	=१४
			४१

है। इसके साथ दोहे और छप्पय भी हैं। गद्यांश को "संभरण गद्य" नाम दिया गया है। इस गद्य में प्रौढ़ राजस्थानी के रूढ़ शब्दों का प्रयोग मिलता है।

गद्य का उदाहरण—

इणरीत आपरा भोर भी विसेस वीरां नूं बधाई करता प्रारं रो कंवाक होइ सेना समेत सलेम ४१। १ छठै ही आडो रहियो।

अर इकै भी पुसियार होइ प्राची १ रो परिकर इक्ट्ठो करि फेर भी दिल्ली पर चलावण दढ़ मात गहियो।

इण मात रै हाके पहली सितारा १ बीजापुर भागनगर प्रमुख दक्खिण पच्छिम रा अधीस वो ही साहजादा मिळिया तिके तूंआ अमज रै अनुसार साथे संकल्प दिल्ली रा दायाद होइ साम्हां चलाया।

अर दिल्लीस भी प्रणा साहस भी आपरा जनमण में आडो होइ चलावो इसडा पाडा कुमार दारा न सूं साम्हें पुगाय रो विदेस वेर विदा कीयो। जवरे बापि नूं लांघि नर्मदा नदी रै नजीक आया।१२।

—सप्तम राशि दशम मयूख पृ० २६६१

४–वैज्ञानिक गद्य

वैज्ञानिक गद्य दो रूपों में मिलता है–क अनुवादात्मक और ख-टीकात्मक। अनुवाद या टीकायें संस्कृत से की हुई हैं। राजस्थानी में स्वतन्त्र रूप से लिखे गये वैज्ञानिक गद्य के उदाहरण बहुत कम मिलते हैं। प्राप्त अनुवाद एवं टीकायें योग शास्त्र, वैद्यक तथा ज्योतिष से सम्बन्धित हैं।

योग-शास्त्र—

योग-शास्त्र के अन्तर्गत दो टीकायें उल्लेखनीय हैं— क–गोरख शत टीका[1] और ख–हठ-प्रदीपिका-टीका[2]। पहली में हठयोग की क्रियाओं पर प्रकाश डाला गया है। संस्कृत मूल पाठ भी साथ में दिया हुआ है। दूसरी में हठयोग का प्रमुख ग्रन्थ हठ-प्रदीपिका पर टीका की गई है। इसका लेखनकाल भन्तसाक्ष्य के आधार पर सं० १८८० निश्चित है। बीकानेर में पुरोहित श्रीकृष्ण ने यह टीका लिखी। इन दोनों ग्रन्थों में विषय साम्य है।

गद्य के उदाहरण—

क–"एक तो आसन दूजो प्राण संरोध तीजो प्रत्याहार, चौथी धारणा पांचमों ध्यान छठ्ठो समाधि। ये छह योग का अंग छै।

—गोरख शत टीका

ख–'श्री गुरु ने नमस्कार कर स्वात्माराम योगीश्वरे। केवल नि केवल राजयोग की ताई हठ विद्या उं मु उपदिशी जिये छै। कहोये छै।"

—हठयोग प्रदीपिका टीका

वैद्यक—

वैद्यक विषय के प्राप्त अनूदित ग्रन्थ इस प्रकार हैं— क) ऋतु चर्या (अपूर्ण) (ख) योग चिन्तामणि-टीका (ग) रसाधिकार (घ रसायन विधि

१—ह प्र० अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय बीकानेर में विद्यमान।
२—वही

(च) पालकाप्य गजायुर्वेद टबार्थ, (छ) घोड़ी वाली विवरण (ज) शालिहोत्र (झ) प्रताप सागर[1]।

प्रथम ग्रंथ में विभिन्न ऋतुओं के अनुसार वात, पित्त और कफ की अवस्थाओं का उल्लेख है। ऋतु-चर्या पर प्रकाश डालने के उपरान्त रस प्रशंसा का प्रसंग भी आया है। दूसरा ग्रंथ हर्षकीर्ति उपाध्याय द्वारा लिखित योग चिन्तामणि (संस्कृत में) की टीका है। इसमें पाक विधान चूर्ण गुटिका (गोली) क्वाथ घृत तैल, भस्म, मृगांक, आसव आदि के तैयार करने की प्रणाली बताई गई है। तीसरे और चौथे ग्रंथ में रस और रसायन पर विचार हुआ है। पांचवीं रचना गज चिकित्सा से सम्बन्ध रखती है। इसमें हाथियों के प्रकार, उनकी जाति लक्षण, गुण, रक्षा-विधि तथा उपचार प्रणाली पर प्रकाश डाला गया है। छठी में घोड़ों की चौसठ व्याधियां और उनके उपचार बताये हैं। सातवीं में घोड़ों की जाति रंग, गुण शुभा शुभ लक्षण शरीर निर्माण, नाड़ी परीक्षा रोग और उनके उपचार का उल्लेख है। यह घोड़ा वाली विवरण की अपेक्षा अधिक विस्तार से लिखी गई है। आठवीं रचना जयपुर नरेश महाराजा प्रताप सागर "ब्रजनिधि" द्वारा तैयार करवायी गई है। इसका प्रचार तथा प्रसिद्धि दोनों ही अधिक हुई है।

ज्योतिष

वैद्यक की भांति ज्योतिष के भी अनूदित ग्रंथ ही मिलते हैं। इनको तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है – (१) राशिफल आदि (२) शकुन शास्त्र (३) सामुद्रिक शास्त्र।

प्रथम विभाग के अन्तर्गत १-माठ संवत्सरी फल[2] २-चक्र मुहूर्त ज्ञान विचार[3] ३-द्वादश राशि विचार[4], ४-पंचांगविधि[5] ५-रत्नमाला टीका[6]

१—इन सबकी हस्त प्रतियां अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय में विद्यमान हैं।
२—ह० प्र० अनूप संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर, में विद्यमान।
३—वही
४—वही
५—वही
६—वही

६—लीलावती[1] भाषा है इनमें राशि और उनके फल पर ही अधिक प्रकाश डाला गया है। १—देवी शकुन[2] २—शकुनावली[3] ३—पासाकेवली शकुन[4] ये शकुन शास्त्र से सम्बन्धित हैं। प्रथम दो की रचना रावल जसैराज ने की है। तीसरी जैन समयसुन्दर गणि की है। इन तीनों में शकुन के ऊपर विचार व्यक्त किये गये हैं। १—सामुद्रिक टीका तथा[5] २—सामुद्रिक शास्त्र[6] में सामुद्रिक विज्ञान के रहस्यों का उद्घाटन किया गया है।

१—ह० प्र० अनूप-संस्कृत पुस्तकालय, बीकानेर, में विद्यमान।
२—वही
३—वही
४—वही
५—वही
६—वही

५—प्रकीर्णक गद्य

इस काल में निम्नलिखित चार नए क्षेत्रों में राजस्थानी गद्य का प्रयोग हुआ—(क) अभिलेखीय, (ख) पत्रात्मक, (ग) नीति विषयक (घ) यंत्र मंत्र सम्बन्धी।

क—अभिलेखीय—

जैसलमेर में पन्थों के यात्री-संघ का वर्णन करने वाला शिलालेख अभिलेखीय गद्य का अच्छा उदाहरण है[1]। इस यात्री संघ का प्रतिष्ठा महोत्सव बड़ी धूमधाम से हुआ था। इस शिलालेख से पता चलता है कि इस उत्सव में ढाई लाख यात्री सम्मिलित हुये थे। उदयपुर, कोटा, बीकानेर किशनगढ़, बूंदी, इन्दौर आदि के नरेशों ने भी इसमें भाग लिया था। इसमें संघ का भोज, उसका वैभव आदि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

गद्य का उदाहरण—

"जैसलमेर उदैपुर कोटे सु कुकुम पत्रयां सर्व दसावरा में दीधी। चार पार सीमख किया। नाल्हेर दिया। पछे संघ पाली भेलो हुवो। उठे ओमणा ४ किया। संघ तिलक करायो। मिति माह सुदी १३ दिने। श्री जिन महेन्द्र सूरि जी श्री चतुर्विधि संघ समक्ष दीयो। पछे संघ प्रमाण कीधो। मार्ग में देहरा सुपरां पूजा पडिकमणां करतां सात क्षेत्र में द्रव्य लगावतां आमगा आवगा समसा होवा... ...मारगमाहे सहरा रो गामारो सर्व देहरा जुहारया।

ख-पत्रात्मक —

सत्रहवी से बीसवी शताब्दी तक के हजारों पत्र श्री नाहटा जी के संग्रहालय में विद्यमान हैं। सामयिक महत्व होने के कारण ऐसे असंख्य पत्र नष्ट हो गये होंगे। पत्रों में बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग होता है

[1]—जैन-साहित्य-संशोधक भाग १ अंक २ पृ १ ८

भत' भाषा के विकास का अध्ययन करने के लिये ये पत्र अत्यन्त महत्व के हैं। इन पत्रों के ३ विभाग किये जा सकते हैं—

१—बीकानेर नरेश तथा जैन-आचार्यों का पत्र-व्यवहार
२—जैन आचार्य या साधुओं एवं श्रावकों के पत्र
३—जन साधारण के पत्र

नरेशों द्वारा जैन आचार्यों की सुविधा के लिये आज्ञा-पत्र निकाले जाते थे। इनमें वे अपने राज्य के अन्तर्गत आये हुए जैन आचार्यों को कोई कष्ट न हो ऐसी इच्छा प्रकट करते थे। जैसे—

। छाप

'महाराजाधिराज महाराज श्री जोरावरसिंघ जी वचनात् राठौड़ भीमसिंघ जी कुशालसिंघ जी सु इता रघुनाथ योग्य सुप्रसाद वाचजो। विधा सरसे में जती अमरसी जी छै सु यान काम काज कहै सु करदीज्यो। ऊपर चयो राखज्यो। फागुण वदी ४ स० १७९६

जैन आचार्य भी आवश्यकतानुसार समय समय पर नरेशों को पत्र लिखते रहते थे इनके कई विषय होते थे। एक विज्ञप्ति का उदाहरण—

"श्री परमेसर जी सत्य छै"

स्वस्ति श्री भट्टारक सिरीपूज श्री जिनलाभ सूरि जी योग्य राजाधिराज श्री गजसिंघ जी लिखावतां नमसकार पंचगमो ... ...। तथा वासारस मैणसी जी राजरूनै आया छै। ये महाजोग्य छै। पंडित छै। इणानै उपाध्याय पद दिराय नै सीख दिराज्यो – संवत् १८०४ रा फागण वदि १३"

दूसरे और तीसरे प्रकार के पत्र बहुत अधिक संख्या में हैं इन पत्रों का उद्देश्य व्यवहारिक है। उदाहरण के लिये तीसरे प्रकार के एक पत्र का उदाहरण देखिये—

'स्वस्ति श्री पार्श्वजिन प्रणम्य रम्य मनसा श्री बीकानेर नगरे सर्वगुण निधान सत्क्रिया सावधान पं प्र भाई श्री हीरानन्द जी गणि गजेन्द्रान् श्री मुलतानथ' राम चन्द लिखि सं सदा वंदना मालिणी ... तथा पत्र १ आगे थीयो छै ते पहुतो लिप क्यो तथा तुहे कुशल षेम पहुता रो पत्र वेगो देजो जी। अमु मनसाताम्य मे श्री तुहाने जीमती वेला सदा चीता रीये छै। तुम्हारा सौजन्य गुण घटी मात्र विस बीसरता नहीं छै। जी भली पल विस

मे सुहाने घीवा रां को जी अहवो स्नेह प्यार राखो को विया घी विशेष राखेजो जी। तुहै सम्हारे घणी बात को सनेही छो। साजन छो। परम मीता छो। परम हितकारी छो। पत्र में लिख्यो प्यारो लागे छै। पत्र वेगा २ दीजो जी। आधिक्य खुलरासनी ने घणी दिलासा आसासना दे जो तुहां बधै हु निश्चित छु जी।। घणी जाबता राखे जो वस्त का मागे तो दे जो जी। मिति मिगसर सुदि १३ दोरहर की बस कंसक रै छै सांमबी रु० १३ मुगव स जो पं० सापए सी जी ने यंपना कहजो जी[1]।

इसके अतिरिक्त जैनियों के १—विनती पत्र २—विज्ञप्ति पत्र भी मिलते हैं। विनती-पत्र एक प्रकार से प्रार्थना पत्र के रूप में होता है जैसे राजबनी के संघ का विनती-पत्र[2]। विज्ञप्ति पत्र प्रसिद्धि बढ़ाने के लिये लिखा जाता था जैसे विमुचविमल सूरि का विज्ञप्ति पत्र[3]।

ग—नीति विषयक

जैन और पौराणिक कथाओं में नैतिकता पर अधिक प्रकाश डाला गया है। उनके अतिरिक्त कुछ ऐसे अनुवाद भी हुए जिनमें हत् आदि भ थों में प्रवाहित नैतिक आदर्शों की अभिव्यक्ति हुई। चौरासी बोल[4], भरथरी सबद[5] और भरथरी उपदेश[6] वत्पूर्वी साधु बालकदास की रचनायें हैं। चाणक्य नीति टीका[7] में चाणक्य की नीति (संस्कृत में) की टीका भाषा में की गई है।

घ—यत्र मंत्र सम्बन्धी

पंदा कर्णकल्प[8], विष्णु रो मत्रो[9] के अतिरिक्त कुछ स्फुट मंत्र भी

१—अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय बीकानेर।
२—जैन-साहित्य-संशोधक खण्ड १ अ० १
३—जैन-साहित्य-संशोधक खण्ड १ अ० ३
४—ह० प्र० अनूप-संस्कृत-पुस्तकालय में विद्यमान।
५—वही
६—वही
७—वही
८—वही
९—वही

रचनायें यंत्र मंत्र सम्बन्धी गद्य के उदाहरण हैं। इनमें मंत्रों के साथ यंत्र (रेखाचित्र आदि) भी दिये हुए हैं।

इस मध्य काल में गद्य बहुत अधिक मात्रा में लिखा गया। भाषा, शैली तथा विषय तीनों की दृष्टि से यह गद्य महत्व का है। प्रथम काल की लड़खड़ाती हुई भाषा अब पूर्ण रूप से समर्थ हो गई। टिप्पणी-शैली इस काल में बहुत कम दिखाई देती है। शैली के नये नये प्रयोग ध्यान आकर्षित करते हैं। जैन-शैली के अतिरिक्त चारणी एवं ब्राह्मण-शैली का उद्भव हुआ। चारणी-शैली में लिखा गया ख्यात-साहित्य इस युग की देन है। वर्णनिका-शैली के अधिक उदाहरण नहीं मिलते। व्याकरण-शैली का इस काल में नितान्त अभाव रहा। कथा साहित्य की रचना इस काल में बहुत हुई। कई कथाओं के संग्रह इस समय किये गये। वचनिका-शैली में पुष्ट एवं प्रौढ़ गद्य के उदाहरण मिलते हैं। यह इस काल का नवीन प्रयास था। इसके गद्य में पद्य का सा आनन्द मिलता है। इस युग के लेखकों का ध्यान वर्णक-गद्य की रचना करने की ओर गया। यह उनकी नई सूझ का परिणाम था। गद्य-लेखन की परिपाटी चल पड़ी थी अतः कुछ ऐसे विवरणात्मक गद्य के ग्रन्थ लिखे गये जिनके किसी भी अंश का प्रयोग प्रसंगानुसार किया जा सकता था। ब्राह्मण-शैली यद्यपि टीकात्मक रही तथापि विषय एवं भाषा की दृष्टि से यह उल्लेखनीय है। धार्मिक एवं प्रकीर्णक विषयों में टीकात्मक-गद्य का प्रयोग हुआ। योग शास्त्र, वैद्यक ज्योतिष जैसे विषयों का प्रतिपादन करने के लिये गद्य काम में लाया गया। अभिलेखीय एवं पत्रात्मक गद्य के अच्छे उदाहरण इस काल में मिलते हैं। यंत्र-मंत्र सम्बन्धी गद्य के स्फुट प्रयास हुये। शैली का अपनापन इस काल की विशेषता है।

पंचम प्रकरण

आधुनिक काल

(सं० १९५० से अब तक)

आधुनिक - काल

राजस्थानी-साहित्य का आधुनिक काल भारत के राष्ट्रीय जागरण का युग है। इसका प्रारम्भ सं० १९५० के लगभग होता है। इस समय प्रदेश में भी राष्ट्रव्यापी विचार धारा का प्रभाव राजस्थानी साहित्य पर अनिवार्य रूप से पड़ा। राजस्थानी के साहित्यकारों का सम्पर्क अन्य भाषाओं के नवीन साहित्य से हुआ जिसका प्रभाव उन पर पड़ना अवश्यम्भावी था। राजस्थानी के कलाकार भी हिन्दी की ओर झुके तथा उसकी रचना में सक्रिय सहयोग दिया।

संवत् १९०० के पूर्व ही राजस्थान अंगरेजों के शासनाधीन हो चुका था। अंगरेजी शासनकाल में न्यायालयों की भाषा उर्दू तथा शिक्षा की भाषा हिन्दी हो गई। अब राजस्थानी के लिये कोई स्थान नहीं था। उसका राज्याश्रय समाप्त हो चुका। न वह शिक्षा की भाषा रही और न साहित्य की। फलस्वरूप मध्यकाल में राजस्थानी-साहित्य का जो निर्माण बड़ी तत्परता से हो रहा था उसकी गति मंद हो गई। नवीन शिक्षा का प्रारम्भ एवं राजस्थानी पठन पाठन के उठ जाने से नव शिक्षित समाज हिन्दी की ओर बढ़ा। राजस्थानी को वह गंवारू भाषा समझने लगा। राजस्थानी साहित्य उसके लिए पूर्ण रूप से अपरिचित हो गया।

इतना होने पर भी राजस्थानी साहित्य की रचना बिल्कुल बंद नहीं हुई। गद्य और पद्य दोनों में मातृभाषा के उत्साही भक्त उसमें साहित्य रचना करते रहे।

राजस्थानी के अभ्युत्थान के उन्नायकों में जोधपुर निवासी श्री रामकरण आसोपा का नाम सर्वप्रथम उल्लेखनीय है। इनका जन्म सं० १९१८ में हुआ। ये राजस्थानी के धुरंधर विद्वान और मर्मज्ञ थे। इनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर डा० सर आशुतोष मुकर्जी ने इनको कलकत्ता विश्वविद्यालय में लेक्चरार बनाकर बुलाया था। डिंगल भाषा के ग्रंथों की खोज में ये डा० टैसीटोरी के प्रधान सहकारी रहे। इन्होंने आज से ४० वर्ष पूर्व राजस्थानी का एक व्याकरण बनाया जो इसका प्रथम व्याकरण होने पर भी वैज्ञानिक है। वृद्धावस्था में घोर परिश्रम करके इन्होंने डिंगल भाषा का वृहत् कोष तैयार किया।

दूसरा महत्वपूर्ण नाम श्री शिवचन्द भरतिया का है। ये जोधपुर राज्य के डीडवाणा नगर के निवासी थे पर अधिकांश बाहर ही रहे। अन्तिम दिनों में इन्दौर में वास किया था। श्री भाषे पा विद्वान थे किन्तु भरतिया श्री कलाकार। इन्होंने अनेक सुन्दर सुन्दर रचनायें करके राजस्थानी को लोकप्रिय बनाने और उसकी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयत्न किया। इन्होंने कई पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे तथा नाटक, उपन्यास आदि भी लिखना प्रारम्भ किया। ये राजस्थानी के भारतेन्दु कहे जा सकते हैं।

पैठण निवासी श्री गुलाबचन्द नागोरी की अमूल्य सेवायें भी नहीं भुलाई जा सकती। ये राष्ट्रीय कार्यकर्ता थे। बड़े उत्साह एवं लगन के साथ ये कार्य-क्षेत्र में आये। राजस्थानी को सर्वप्रिय बनाने के लिये इन्होंने विविध पत्र पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित किये राजस्थानी के प्रचार के लिये काफी जोर दिया।

धामणा गांव (बराड़) के "मारवाड़ी हितकारक" पत्र ने राजस्थानी के प्रचार-कार्य में महत्वपूर्ण सेवायें की। राजस्थानी का यह सर्व प्रथम मासिक पत्र था जो सर्वथा राजस्थानी में छपता था। इसके सम्पादक श्री छोटेलाल शुक्ल तथा संचालक श्रीयुत नारायण बड़े ही उत्साही एवं कर्मठ व्यक्ति थे। इनके प्रयत्नों से इस समय राजस्थानी लेखकों का एक खासा मण्डल तैयार होगया था।

इस प्रकार के उत्साह एवं प्रचार कार्य से राजस्थानी के प्रति लोगों का ध्यान गया। उसमें नवीन साहित्य-रचनायें होने लगी। नाटक, कहानी उपन्यास निबन्ध, गद्यकाव्य रेखाचित्र, संस्मरण, एकांकी भाषण आदि सभी क्षेत्रों में राजस्थानी गद्य के प्रयोग हुवे।

नाटक

श्री शिवचन्द भरतिया ने नाटक रचना का सूत्रपात किया। इन्होंने १—केसरविलास २—बुढ़ापा की सगाई और ३—फाटका जंजाल नामक तीन नाटक लिखे। जो राजस्थानी के सर्वप्रथम नाटक हैं। इन तीनों नाटकों में भरतिया जी ने मारवाड़ी समाज की रूढ़ियों का दिग्दर्शन किया है। विधा-भाव, अनमेल विवाह स्त्री-अशिक्षा आदि सामाजिक बुराइयों को दूर करने का आन्दोलन इन नाटकों द्वारा प्रारम्भ किया गया। ये नाटक भाषा की दृष्टि से बहुत ही सफल उतरे हैं।

श्री गुलाबचंद नागोरी का "मारवाड़ी मोसर और सगाई जंजाल" नाटक सं० १९७३ में प्रकाशित हुआ। इस नाटक में मरविया जी के नाटकों की भांति समाज सुधार का उद्देश्य ही रहा। "मोसर" और "सगाई" इन दोनों रूढ़ियों की इस नाटक में तीव्र आलोचना है। इस नाटक की भाषा ओज पूर्ण है।

श्री भगवान प्रसाद दारुका का जन्म खेतड़ी राज्य के अन्तर्गत असपुरा नामक ग्राम में सं० १९४१ में हुआ। इनके पिता का नाम सेठ बालकृष्ण दास था। ६ वर्ष की आयु में ही पिता की मृत्यु हो जाने पर इनका बाल्यकाल सुख में नहीं बीता। ये तीन भाई हैं तथा तीनों कलकत्ते में गल्ले के व्यौपारी हैं।

श्री दारुका ने राजस्थानी में पांच नाटक लिखे १—वृद्ध विवाह (सं० १९६०) २—बाल विवाह (सं० १९७५) ३—कलजुगी फिरती छाया (सं० १९७०) ४—कलकतिया बाबू (सं० १९७६) और ५—सीठणा सुधार (सं १९८२) इन पांचों नाटकों का प्रकाशन सं० १९८८ में "मारवाड़ी पंच नाटक" के नाम से हुआ। ये सभी नाटक सामाजिक बुराइयों के सुधार की प्रेरणा से लिखे गये। इन नाटकों में कलकतिया-बाबू अन्य नाटकों से अच्छा है।

श्री सूर्यकरण पारीक का जन्म सं० १९६० में पारीक ब्राह्मण कुल में हुआ। हिन्दू विश्व-विद्यालय काशी में इन्होंने अध्ययन किया। वहीं से अंगरेजी और हिन्दी में एम० ए० पास किया। बिड़ला कालिज (पिलानी) में आप हिन्दी व अंगरेजी के प्रोफेसर एवं वाइस प्रिंसिपल थे।

अपने जीवन काल में पारीक जी ने राजस्थानी की स्मरणीय सेवायें की हैं। "वेलि क्रिसन रुकमणी री" "ढोला मारू रा दूहा" राजस्थानी के लोक गीत राजस्थानी वार्ता आदि अनेक ग्रन्थों का सम्पादन सफलता पूर्वक किया। इन्होंने "बोलावण" नाम का एक छोटा-सा नाटक लिखा था जो राजपूत वीरता का जीवित चित्र प्रस्तुत करता है।

सरदार शहर निवासी श्री शोभाराम जम्मड़ ने "वृद्ध विवाह विदूषण" नाम का एकांकी प्रहसन सं० १९८० में लिखा। इस नाटक में भगवती-प्रसाद दारुका के "वृद्ध विवाह" नाटक की भांति मारवाड़ी समाज के अनमेल विवाह का सुधारवादी चित्र है।

श्री बा० ना० वि० जोशी के "जागीरदार" में जागीरदार और किसानों के संघर्ष की कथा है। यह नाटक राजस्थानी का सर्व श्रेष्ठ नाटक है। राष्ट्रीय जागरण की भावना इसका बीज बिन्दु है। इस नाटक की भाषा पर मालवी का प्रभाव है।

श्री सिद्ध का "जयपुर की ज्योनार" नाटक शास्त्री और जम्मड़ के नाटकों की भांति सामाजिक है। निर्धन होने पर भी समाज की रूढ़ियों के निर्वाह के लिये ऋण लेना, स्त्री शिक्षा का अभाव, उनकी आभूषण प्रियता एवं भोज में सम्मिलित होने की अभिलाषा आदि इस नाटक का विषय है।

श्री श्रीनाथ मोदी का "गोमा जाट" नामक नाटक ग्राम जीवन से सम्बन्ध रखता है। महाजनी प्रथा और उसका परिणाम इस नाटक का मूलाधार है।

श्री मुरलीधर व्यास के दो एकांकी 'सरग नरक' और "पूत" स्त्रयोपयोगी एवं शिक्षाप्रद हैं।

श्री पूरणमल गोयनका तथा श्री भीमसेन कुमार व्यास ने कई छोटे छोटे एकांकी नाटक लिखे हैं। गोयनका के नाटक सामाजिक हैं तथा व्यास के ऐतिहासिक और राजनीतिक।

कहानी

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शिक्षात्मक तथा मनोरंजनात्मक कहानियां प्रकाशित हुई, जिसमें श्री शिवनारायण तोष्णीवाल की "विद्या-परम वेवत[1]" (सं० १९७३) "स्त्री शिक्षण को ओनामो[2]" (सं० १९७३) श्री नागोरी की "बेटी की बिक्री और बहू की खरीदी[3]" (सं १९७३), श्री छोटेराम शुक्ल की "चंमुमें म[4]" (सं० १९७३) उल्लेखनीय हैं। श्री मक्खलाल तिवाणी ने 'सीता हरण" (सं० १९७४) कहानी रामायण की कथा के आधार पर लिखी।

१—पंचराज वर्ष २ अंक २ पृ० ५५
२—वही वर्ष २ अंक ४-५ पृ ११६
३—वही १ वर्ष २ अंक ३ पृ० ६०
४—वही वर्ष २ अंक ७ पृ० २०३

इक्कीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक पहुंचते पहुंचते कहानियों का ढांचा बदला। उपदेश के स्थान पर कलात्मक तत्व प्रधान हो गया। इन कहानीकारों में श्री मुरलीधर व्यास अधिक यशस्वी रहे हैं। इनका जन्म सं० १६५६ वि० में बीकानेर में पुष्करना परिवार में हुआ। आरम्भ में ये राज कर्मचारी रहे। अब "सादुल राजस्थानी इन्स्टीट्यूट' बीकानेर में कार्य कर रहे हैं। इन्होंने कई कहानियां लिखी हैं जिनमें से कुछ समय समय पर पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इनकी कहानियों का एक संग्रह "बरसगांठ' मुद्रणाधीन है।

इनकी "बरसगांठ[1]" एक निर्धन की करुण कहानी है। मोती की वर्षगांठ है। धीसू २५ रु० उधार लाता है जिसमें ५ रु० काटे के, १ रु० कोथली खुलाई का, आठ आने कबूतर की ज्वार का तथा लिखाई आदि के पैसे कट १८ रु० उसके हाथ में आते हैं। बरगांठ मनती है। रुपये सभी खर्च हो जाते हैं। इसी समय ज्योंही धीसू भोजन करने बैठता है तभी दूसरा महाजन कंधी के रुपयों के लिये आ पहुंचता है। रुपये नहीं मिलने पर वह मोती के हाथ में से चांदी के कड़े खोल कर ले जाता है मोती चिल्लाता रहता है और उसकी मां सिर पकड़ कर गिर जाती है। एक ओर निर्धनों में उधार लेने की प्रथा, व्यर्थ आडम्बर में व्यय करने का अ ध विश्वास है दूसरी ओर महाजनों की शोषण वृत्ति एवं क्रूरता है। दोनों का वास्तविक चित्र इस कहानी में अ कित है।

"मेहमामो[2]" कहानी में मरुदेश में वर्षा के महत्व पर चित्र बनाये गये हैं। वर्षा न होने से मारवाड़ी गरीबों की कैसी दशा हो जाती है उन को अपने जीवन के प्रति कितनी आशा शेष रहती है आदि के अच्छे चित्रण इस कहानी में हुये हैं। साथ ही वर्षा होने पर बालक 'मेहमामो आयो" कहकर नाच उठते हैं। उनका इस प्रकार प्रसन्न होना स्वाभाविक ही है।

श्री मुरलीधर व्यास की कहानियों में विषय और शैली दोनों ही उल्लेखनीय हैं। समाजवादी धरातल में इनकी कथायें आधारित हैं। श्री व्यास की शैली अपनी निजी है। भाषा पर अधिकार होने के कारण चित्रण में उन्हें अधिक सफलता मिली है।

१—राजस्थानी भाग ३, अंक १ पृ० ६५
२—राजस्थानी भाग ३ अ क ४ पृ० ८६

उदाहरण—

"बैसाख बाजे। बिरखा रो आवक जोग नहीं। लोग-बाग आंख्यां फाड्यां आभै सामी जोवै। ब्यार मिनख भेळा हुवै जठै आई बात क फलाणी जागां सौ डांगर मरग्या फलाणी जागा दो सौ। अेक भैंसो छायोड़ो। सगळां रा मूँडा लुक्खा लुक्खा लागे। घास हुतो मूँघो के लोग बापरै सीराबे। डांगरां सारू जागां जागां घास रो बंदोबस्त हुवे। दिन में पचास बाळे पण सिम्भ्या पड़ी पाछो वोइ बैसाख[1]।"

समाज के जीवन को घुमने वाली हानिकारक रूढ़ियों, पूंजीवाद की विषमताओं तथा वर्तमान समाज की व्यवस्था आदि के प्रति विद्रोह की भावना इनकी कहानियों में भरी है। इन बड़ी कहानियों के अतिरिक्त इन्होंने लघुकथायें भी लिखी हैं।

श्री चंदराम की ३ लघुकथायें १—बांदरा ने गंभीर २—सेठाणी जी ३—कागी रो चौधरी[2] छोटे छोटे चित्र हैं। श्री मुन्नालाल पुरोहित की "ऊँट रो माजो" नामक कहानी राजस्थानी की अच्छी कहानियों में से है।

श्री श्रीमंत कुमार नरसिंह पुरोहित आदि अनेक नये लेखक इस क्षेत्र में अवतीर्ण हो चुके हैं इनकी रचनायें प्रायः प्रगतिवादी दृष्टिकोण से लिखी हुई होती हैं।

श्री नरसिंह पुरोहित के 'कथा-संग्रह' में ७ कहानियां हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं— १-धुम रो काम २-खेत सीख्या, ३-कालू री मां ४-राज वालो ५-चोरी ६-धोळी टोपी ७-अहिंसा परमोधर्मः— ये सभी कहानियां अच्छी हैं। श्री प्रेमचन्द की वर्णन शैली एवं मनोवैज्ञानिक चित्रण इन कहानियों का आधार है।

गद्य का उदाहरण—

'भोर अजीत पसाव सेठां रे घरै दीवाळी मनावण नै कचहरी मां मत्र एक सुली सलगाई भोर कुक ने दीवारी बाट रे भगामदी, भ्यारे मुं का। धु धील निकलगी — म्हारो बाप! म्हारो बाप!! मुं का धु निकल्योरो हूं क

१—मेहमासो पृ० ८६
२—राजस्थानी भाग १ अंक २ पृ० ५१

दीपा रै लागी श्रोर रूप करतो दीसो बुमायो जितरै आपरा मरवन माते दीवा हुवेणा चाहिजे।"

उपन्यास

राजस्थानी में उपन्यास नहीं लिखे गये। केवल एक उपन्यास "कनक सुन्दर" श्री शिवचन्द भरतिया का मिलता है। इस उपन्यास के पूर्वार्द्ध का प्रकाशन सं० १६७२ में हुआ और सम्भवतः उत्तरार्द्ध लिखा ही नहीं गया। इसमें मारवाड़ी जीवन का सुन्दर चित्र अ कित किया गया है। आदर्शवादी दृष्टिकोण से यह उपन्यास लिखा गया है सामाजिक सुधार भाव इसका प्रधान ध्येय रहा है। नाटकों की भांति श्री भरतिया के इस उपन्यास की भाषा में प्रवाह एवं शक्ति है।

गद्य का उदाहरण—

दोपहर दिन को वखत चारयाकानी लू चाल रही छै हवा का जोर सू चालू धनी की धनी न उड़ उड़ कर धीका नवा नवा टीबा हो रया है और भीजरा भी रह या छै। मुह ऊंचो कर सामने चालणों मुस्कल छै। लू कपड़ा मांहि बड़कर सारा सरीर ने सिकताप कर रही छै। धूप इसी जोर की पड़ रही छै के जमी ऊपर पग दयणा मुस्कल छै। रास्ता मांह दूर दूर कठ ही मांड़ को नांव नहीं। चालू उड़कर जगा जगा नवा टीबा होय्या सू रस्ता को ठिकाणो नहीं। आदमी तो दूर रस्ता मांह कोई जीव जिनावर को भी दरसण नहीं।"

रेखाचित्र एवं सस्मरण—

रेखाचित्र एवं संस्मरण लिखने का प्रयास बहुत ही आधुनिक है। श्री मुरलीधर व्यास और श्री भंवरलाल नाहटा ने इस क्षेत्र में अपनी लेखनी चलाई है। श्री भंवरलाल नाहटा का जन्म सं० १६६८ में हुआ। इनके पिता का नाम श्री भैंरूदान नाहटा है। ये राजस्थानी के प्रसिद्ध लेखक श्री अगरचन्द नाहटा के भतीजे और साहित्यिक कार्य में उनके सहयोगी रहे हैं। प्राचीन लिपि एवं कला से इनको अधिक प्रेम रहा है। इनके प्रकाशित रेखाचित्रों में 'लामू बाबा'[1] सब श्रेष्ठ है। यह 'लामू'

१—राजस्थानी भाग १ पृ ८६

इनके घर का पुराना नौकर था। चालीस वर्ष तक उसने इसके यहाँ कार्य किया। दो रुपये महीने का नौकर होते हुए भी इनके घर में उसका अच्छा सम्मान था। इस रेखाचित्र को सब पढ़ने वालों ने पसंद किया तथा इसकी प्रशंसा भी खूब हुई। श्री मुरलीधर व्यास के रेखाचित्र भी बहुत रोचक होते हैं। इनके रेखाचित्रों के पात्र यद्यपि श्री नाहटा के रेखाचित्रों की भाँति पूर्ण रूप से व्यक्ति विशेष नहीं होते उनमें कुछ आलीन तत्वों का समावेश भी कर दिया जाता है। "रामलो भंगी[1]" "नंदो बोद[2]" व्यास जी के रेखाचित्रों के अच्छे उदाहरण हैं। इनके गद्य में चित्र खड़ा करने की क्षमता है। कुछ उदाहरण देखिये—

१—"दूर री गली में अवाज मारियोड़ी इसी आख्या पड़ती बाज्यो म्हारी ई गली में भारी होवे। मदरसे आपथियां छोड़ छोरी चढ़ा-चूड़ा साके सरीक लगाये ऊमा रैवता थोड़ी देर होती देख र से उथपथ लागता पण नानकड़ा टाबरियां रै तो मामक ई छटापण को होवो भी, पछ पचाइए लागता तो कोये भर भर भरमीखिये बाई मूं को चणाय रा वो। वा ने राजी करण सारू घर वाला "आवो बोहरदास जी बेगा आवो, मनिये ने वही दो। इयां घड़ी-घड़ी कैवा। इतेई में तो रंग चढ़्योड़ी मैली २ पागड़ी, हजामत बधियोड़ी, खांधे पर एक पुराणो मैलो र आगा आगा फाटियोड़ो गमछो जिके ऊपर भजमोलियो धरियोड़ो, एक हाथ में आडो गड़ियो गोळ साळनी मैला पछियो भर पगां में आगा चूंच, हरदास, 'आयोई आयोई' कैतो आय धमक्यो।'

२—नंदे री बहू बेगी बड़ी बाजरी रा सोगरा सेकती। जिके ऊपर घोटियोड़ो लूण-मिरच नाख-नाखेर सगळे जीमण लागता पछे गायां पर पाचड़ा ऊजाला मांफ, भर टांकरां वोड़ी थोड़ा सोगरार लूण मिरच मेल र नंदा लुगायां टाबरां समेत कमठाणे हूकतो। बेइयां री आगा डेरा लगावतो, पछे सगळे काम में लागता। मोटियार डिगलो खोद र धूर सळूसावता। टाबर-लुगायां धूळोई रा गधा भर र साहर परकोटे रै बारे नाखण जावता। ऊपर सूं ताप बरसे धमधाड़े सूं पवन सीरा व्यावे, सरीर ऊपर परसीवे रा परनाळा बहे। पर कोई मजाल के थोड़ो फेट खाइले। हां, तिस लागती जद नीगरयोड़ी हांडी मायलो पाणी रो मोटो लोटो भर'र ऊमाई बच्छ

१—राजस्थान भारती भाग ३ अ० १ पृ० ११३

२—वही भाग ३ अंक २ पृ० ५२

बकरा पी लेवता। कद सूरज मेळ बैठ्यो'र कद थापका बिसराम लेता। मेरो खाटी मजूर हो।

श्री मुरलीधर व्यास ने कुछ संस्मरण भी लिखे हैं। संस्मरण लिखने का प्रयास सबसे पहले सेठ श्री कन्हया जी तोष्णीवाल ने किया था। इनका लिखा हुआ "पूना में ब्याव[1] (सं० १९७५) नामक संस्मरण है। जिसका विषय पूना का विवाह है। किन्तु श्री मुरलीधर व्यास के संस्मरण बहुत ही परिष्कृत रूप हैं। श्री व्यास जी के "सत सेठ श्री रामरतन जी बागा[2] तथा "हरदास बहीवाला[3] नामक संस्मरण बहुत प्रसिद्ध हो गये हैं। श्री भंवरलाल जी नाहटा ने भी कुछ संस्मरण लिखे हैं जिनका प्रकाशन अभी नहीं हो पाया है। एक उदाहरण देखिये—

'थांरो नाम तो है हजारीमल पण लोक थानें लंबू सेठ केवता, सीधा सादा लंबा लेजड़े सा दीखता। साठ बरस रा बूढ़ा पण काम काज रो आलस को होनी मद बकरता काम रो ऊपर का देवतो नी। कोई थाने कथे ज्यूं केयो हंसी मजाक करो पण गरम को हुवतानी।........

—लम्बू सेठ अप्रकाशित

निबंध

पत्र-पत्रिकाओं के अभाव के कारण राजस्थानी में निबन्ध का विकास नहीं हो पाया। प्रकाशित निबन्धों में अधिकांश विषय प्रधान हैं। इन निबन्धों में पीपलगांव निवासी श्री अनन्तलाल कोठारी का "समाजोन्नति का मूलमन्त्र[4] (सं० १९७६) धुनध्वी का 'पख गहायो स्वराज होग्यो[5]" (सं० १९७२) मरुपालक का "धनवानां की लक्ष्मी[6]" (सं० १९७५) प्रमुख हैं। इधर कुछ नये निबन्धकार भी देखने में आ रहे हैं इनके निबन्ध अभी तक प्रकाशित नहीं हो पाये पर इनके निबन्धों के संग्रह को देखने से पता चलता है कि निबन्ध शैली में प्रौढ़ता आन लगी है।

१—पंचराज वर्ष ४ अंक १ पृ० ३६
२—राजस्थान भारती भाग ३ अंक १ पृ० १२६
३—वही भाग ३ अंक २ पृ० ७३
४—पंचराज वर्ष ५, अंक १२ पृ० ३११
५—वही वर्ष २ अंक १२ पृ० १७५
६—वही वर्ष ४ अंक ८८ पृ० ३८४

श्री अगरचन्द नाहटा का "राजस्थानी साहित्य रा निमाण और संरक्षण में जैन-विद्वानां री सेवा[1] उल्लेखनीय है। ऐसे निबन्ध बहुत ही कम लिखे गये हैं। श्री कु० नारायणसिंह के "कल्पना" "प्रेम" "कला" आदि भावात्मक शैली के तथा "राजस्थानी गीत" "डिंगल भाषा रो निकास" साहित्यिक शैली के विषय प्रधान लेख हैं। श्री गोवर्धन शर्मा (जोधपुर) के "बो कलाकार" "साहित ने कला", कविता कांई है" "कला एक परिचय" विवेचनात्मक तथा "कविराजा बाकीदास और डिंगल कविता" "महात्मा गांधी और ललित कला" विचार प्रधान निबन्धों के उदाहरण हैं।

उदाहरण १–

आपणो समाज रोगी है। या बात कबूल करवाने कांई इन्कार नहीं करसी। रोगी भी इसो नहीं महान रोगी है। महान रोगी तो है ही परन्तु बीकां साथ साथ छोटा छोटा रोग भी अनेक रया करे है। वैदराज जठां तक रोगी का मुख्य रोग को पत्तो तथा निदान नहीं जाणसी बठां ताई बीको दवा दारू कुछ भी काम देसी नहीं। बस इसी ही तरह आपणा समाज की है।

(समाजोन्नति को मूल मंत्र सं० १९७६)

उदाहरण २–

"कल्पना एक मांति री हंसणी है मान बण मायें सवारी किया करे है। ने इण हंसणी न बुद्धि री छडी सू घेरता रेवे है। आ बात जरूर है के कोई बेला छडी ने थोड़ी काम में ल तो कांई पणी।

इसु तो सुख दुख दोनों री कल्पना होया करे है ने व सुख दुख में ईज पूरी हो जावे है। आप जे मन में कल्पना करो के म्हें आगले महीने सू हजार रुपयां री तिवखा पावण रूक जांगला तो आपरो मन घणो प्रसन्न होवेला ने आपरे मूं के मायें ई इसी भांत खुशी रा भाव आवेला।

(कल्पना सं० २०१०)

गद्य काव्य

श्री ब्रजलाल बियाणी ने गद्य काव्य के कुछ प्रयास आज से कुछ

१—राजस्थानी भाग १ पृ १७

पहले किये ये जिनका प्रकाशन "पंचराज" में हुआ था। "गुलाबकली[1] (सं० १६७३) 'मोगराकली'[2] (सं० १६७३) गद्य काव्य के अच्छे उदाहरण हैं। सर्व श्री चन्द्रसिंह, कन्हैयालाल सेठिया विद्याधर शास्त्री ने भी सुन्दर गद्य काव्य लिखे हैं। शास्त्री जी का "नागर पान[3] "आज भी बैल मेरो चावे नागर पान' को उसी प्रकार दुहरा रहा हैं। श्री कन्हैयालाल सेठिया के गद्य काव्यों का संग्रह "पाखड्ल्यां' के नाम से प्रकाशित होने वाला है।[4] इनका गद्य रोचक और प्रभावपूर्ण है।

कुछ उदाहरण— १

"बड़ी फजर की बखत। संधि प्रकाश हो गयो है। रात को अंधेरो दिन का चांदणा ने जगा दे राख्यो है। तारा आपणा शक्ति और मन्द तेज ने सूरज नारायण का उष्ण और प्रखर तेज के सामने लोप कर राख्यो है। निरभ्र आकाश में सूर्य भगवान का आगमन का प्रमाण गुलाली छाई हुई है। पूर्व दिशा लाल वस्त्र धारण करकर पती का आगमन की बाट जोय रही है।

—विद्यार्थी सं० १६७३

२—सिंध्या होण वाली ही। धोरों की रेत ठंडी होगी ही आज में अकेलो ई टीबा के बीच बीच में खींप सणिया और बांसों की म्हार देखतो पेखतो दूर वाली पस्यो आयो। मैं जद जद टीबा में घूमण जाया करू हू जदे ई कोई न कोई ऊंचो सो टीबो हूं ढ कर बीं के ऊपर बैठ रे बारह धनी की प्राकृतिक छटा ने देख्या करूं हू[5]।

—नागर पान

३—"आसोज रो महीनो। नान्हीं सी क एक बदली ओसरगी। देवड़ पाले रो मवगोखो गू ज उठ्या। रिमझिम रिमझिम मेघलो बरसे। बरसे में ही अचाण चूके पूरबो एक लहरो आयो अर बदली बहगी। करड़ी तावड़ी निकळ आई। खेत में निनाण करतो करसो बोल्यो आसोज्यां रा तप्या

१—पंचराज : भाग २ अंक १
२—पंचराज : भाग २ अंक ४-५ पृ० १२६
३—राजस्थानी भाग ३ अंक १ पृ० ६५
४—कल्पना वर्ष ४ अंक ३ पृ० २१७
५—राजस्थानी भाग ३ अंक १ पृ० ६४

तापड़ा कर्या सोहा पिघल ग्या। मिनख री बखान में कठेई बलखेनी।
—श्री कन्हैयालाल सेठिया

भाषण

अन्यान्य गद्य रचनाओं में ठाकुर रामसिंह और अगरचंद नाहटा के अभिभाषण उल्लेखनीय हैं। ठाकुर श्री रामसिंह बीकानेर के निवासी हैं इनका जन्म सं० १९५१ में तंवर राजपूत वंश में हुआ। ये हिन्दी और संस्कृत के एम० ए० तथा संस्कृत हिन्दी और राजस्थानी के विद्वान हैं। ये सं० २० १ में अखिल भारतीय राजस्थानी साहित्य सम्मेलन दिनाजपुर के प्रथम अधिवेशन के सभापति निर्वाचित हुये, इसी पद से इनका राजस्थानी में दिया हुआ भाषण प्रकाशित हुआ।

"ओ ख्याल बिलकुल ही मूठो है के प्रान्तीय भाषा सू राष्ट्रीयता री भावना नै नुकसाण पूगै। प्रान्तीय भासावां री उन्नती सू राष्ट्रीयता नै नुकसाण पूगणो तो दूर रयो उलटी वा सबल और पुस्ट हुवै। इण बात रो परतक उदाहरण आज रूस रो है। रूस में रूसी राष्ट्रभाषा है पण प्रांतीय भासावा भी उठै फल फूल रही हैं। रूस रा नवा प्रान्तीय भासावां रो नास को करयो नी उलटी अबी भासावा नास हो रही वां रो उद्धार करयो[1]।"

श्री अगरचन्द नाहटा राजस्थानी के प्रसिद्ध अन्वेषक एवं पोषक हैं। इनका जन्म सं १९६० में हुआ। पांचवीं कक्षा तक इनको पाठशाला की शिक्षा मिली। सं १९८४ वि० में श्री कृपाचन्द्र सूरि ने इनके यहां चातुर्मास किया। इनके उपदेश एवं प्रेरणा से इनका ध्यान राजस्थानी साहित्य की ओर गया। तभी से ये इस कार्य को बड़े अध्यवसाय एवं रुचि के साथ करते आ रहे हैं। इन दो बराम्बियों में इन्होंने बड़े परिश्रम से हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रन्थों के विशाल पुस्तकालय तथा कला भवन की स्थापना की। ये जैन साहित्य, प्राचीन साहित्य एवं राजस्थानी साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान हैं। खोज सम्बन्धी सैकड़ों ही निबन्ध आपने लिखे हैं जिनमें ४० से ऊपर हिन्दी गुजराती तथा राजस्थानी की विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। राजस्थानी में लिखित आपके दो भाषण महत्वपूर्ण हैं —

१—बीकानेर साहित्य सम्मेलन के रतनगढ़ अधिवेशन में राजस्थानी

१—सभापति का भाषण पृ २१ सं० २००१

परिषद् के सभापति पद से दिया हुआ भाषण ।

२—उदयपुर के राजस्थान विश्वविद्या पीठ के तत्वावधान में सूर्यमल व्यास पीठ से दी हुई भाषण माला के तीन भाषण ।

उदाहरण—

राजस्थानी जैन-साहित्य मरुभाषा में घणियो है। इसमें श्वेताम्बर सम्प्रदाय-खरतरगच्छीय विद्वानां रो साहित अधिक है। अर वैरो प्रभाव व्यक्तियां के विहार मारवाड़ में ई अधिक बने इयां भी मारवाड़ी भाषा राजस्थान री प्रसिद्ध साहित री भाषा है ई। कई दिगम्बर विद्वानां दू ढाड़ी भाषा में भी साहित रो निर्माण कियो है क्यों के इयै सम्प्रदाय रो जोर जैपुर कोटे आदि री तरफ ई रयो है।[1]

पत्र-पत्रिकायें

इस काल में राजस्थानी की निम्नलिखित पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित हुई—

पंचराज

पंचराज (मासिक) का प्रकाशन सं० १६७२ में हुआ । यह पत्र ही मासिक था। हिन्दी और राजस्थानी दोनों की रचनायें इसमें छपती थी। श्री कर्णश्री ने मासिक से इसको प्रकाशित किया। समाज-सुधार जातीय-उत्थान राजस्थानी-भाषा-प्रचार आदि इसका उद्देश्य रहा । यह ६–७ वर्षों तक बड़ी सज-धज के साथ निकलता रहा। रंगीन चित्र एवं व्यंग चित्रों से यह जनता का ध्यान आकर्षित करता रहा। राजस्थानी के प्रचार कार्य मे इस पत्र ने बहुत सहायता की।

मारवाड़ी हितकारक

यह पत्र बराड़ के पारवा गांव से श्री छोटेलाल शुक्ल के सम्पादकत्व (सं० १६७४ के आसपास) मे प्रकाशित होता रहा। इस पत्र के द्वारा राजस्थानी लेखकों का अच्छा मण्डल तैयार हो गया था जिसका उद्देश्य मारवाड़ी भाषा का प्रचार करना तथा पुस्तकें आदि निकालना था। इस मंडल के कर्माही सेठ श्री नारायण जी अग्रवाल थे।

---

[1]—शोध पत्रिका भाग ४ अंक ४ पृ० ६–१

आगीवाण (पाक्षिक)

यह पाक्षिक श्री बालकृष्ण उपाध्याय के सम्पादन में ब्यावर से सं० १९९० मे प्रकाशित हुआ। यह राष्ट्रीय पत्र था। हिन्दी और राजस्थानी इस पत्र की भाषा थी।

जागती जोत (साप्ताहिक)

यह साप्ताहिक सं० २००४ मे कलकत्ता (१४३ काटन स्ट्रीट) से प्रकाशित हुआ। श्री मुगल इसके सम्पादक थे। समाज सुधार इसका प्रधान उद्देश्य था। बंद हो जाने पर जयपुर से इस नाम का दैनिक होकर यह पत्र निकला किन्तु अधिक नहीं चल सका।

मारवाड़ (साप्ताहिक)

यह पत्र सं० २००० मे प्रकाश मे आया। श्री वृद्धिचन्द्र बड़वाला ने जोधपुर से इसका सम्पादन किया पर यह भी अधिक दिनों तक नहीं चल सका। श्री श्रीमंतकुमार के सम्पादकत्व मे सं० २००४ मे "मारवाड़ी" नाम का पत्र निकल कर थोड़े समय मे ही बन्द हो गया।

ये सभी पत्र-पत्रिकायें राजस्थानियों की उदासीनता के कारण अधिक नहीं चल सकीं।

शोध-पत्र

इसी समय राजस्थानी के शोध सम्बन्धी पत्र भी प्रकाशित किये गये जिनका उद्देश्य राजस्थानी के प्राचीन साहित्य की शोध एवं नवीन साहित्य रचना को प्रोत्साहन देना था। इन पत्रों के नाम इस प्रकार हैं—

राजस्थान

यह पत्र राजस्थान रिसर्च सोसाइटी कलकत्ता की ओर से प्रकाशित किया गया। इसके सम्पादक श्री किशोरसिंह बार्हस्पत्य थे। दो वर्ष चलने के उपरान्त यह पत्र बन्द हो गया।

राजस्थानी

राजस्थान के बन्द हो जाने पर श्री सूर्यकरण पारीक के प्रयत्नों से

उनके सम्पादकत्व में यह पत्र निकला किन्तु प्रथमांक के छपकर तैयार होने के बाद ही उनका देहावसान हो गया। उनके मित्रों ने इस अंक को वर्ष भर चलाया।

राजस्थानी (त्रैमासिक)

राजस्थान रिसर्च सोसाइटी कलकत्ता का त्रैमासिक मुखपत्र "राजस्थानी" श्री शम्भूदयाल सक्सेना एवं श्री अगरचन्द नाहटा के सम्पादकत्व में सं० १९९५ में प्रकाशित हुआ। इस पत्र के द्वारा राजस्थानी का प्राचीन साहित्य प्रकाश में आया तथा इसने कई नवीन साहित्यकारों को प्रोत्साहित किया।

मरुभारती

यह राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन की राजस्थानी साहित्य और संस्कृति पर चतुर्मासिक शोध पत्रिका है। सर्व श्री अगरचन्द नाहटा, ब्रह्मदत्त शर्मा, कन्हैयालाल सहल एवं डा० सुधीन्द्र इसके सम्पादक थे।

राजस्थान साहित्य

यह राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन का पत्र था जो श्री जनार्दन नागर, उदयपुर के प्रयत्नों से निकला किन्तु आर्थिक कठिनाइयों के कारण नहीं चल सका।

चारण

यह अखिल भारतीय चारण सम्मेलन का मुखपत्र था जिस को श्री ईसरदान आशिया और रेवतसी मिमण ने सम्पादित किया। किन्तु अर्थाभाव के कारण यह कुछ समय चलकर बंद हो गया।

राजस्थान भारती

यह सं० २००३ में सादूल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट (बीकानेर) का मुख पत्र है। सब श्री डा० दशरथ शर्मा एम० ए डी लिट, अगरचन्द नाहटा तथा नरोत्तमदास स्वामी के सम्पादकत्व में यह पत्र प्रकाशित हुआ। राजस्थानी लोक साहित्य, प्राचीन साहित्य तथा आधुनिक साहित्य का प्रकाशन इस पत्र ने किया। राजस्थानी के अतिरिक्त हिन्दी-साहित्य के महत्वपूर्ण निबन्ध इस पत्र में प्रकाशित होते हैं। आज भी यह पत्र हिन्दी तथा राजस्थानी की सेवा कर रहा है।

शोध-पत्रिका (त्रैमासिक)

यह त्रैमासिक पत्रिका साहित्य संस्थान उदयपुर द्वारा प्रकाशित है। सर्व श्री डा० रघुबीरसिंह, अगरचंद नाहटा कन्हैयालाल सहल तथा डा० सुधीन्द्र ने इसका सम्पादन कार्य किया। हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की शोध इसका प्रधान लक्ष्य है। अपनी शोध सम्बन्धी सेवाओं के आधार पर आज यह अपना महत्त्व सिद्ध कर चुकी है।

मरुवाणी

५० रावत सारस्वत जयपुर से इसका प्रकाशन कर रहे हैं।

उपसंहार

इस प्रकार मध्यकाल में गद्य साहित्य का विकास जिस मार्ग पर हुआ आधुनिक काल में यह मार्ग बदल गया। समाज-सुधार तथा राष्ट्र जागरण के गीत राजस्थान में गाये जाने लगे। इस क्षेत्र में गद्य साहित्य ने भी बहुत सहायता की। आरम्भिक नाटकों में समाज-सुधार की भावना का ही स्पन्दन प्रधानतया मिलता है। कहानियों की कथा वस्तु भी नया बाना पहिन कर आई। पूंजीवाद तथा सामंतवाद जो जन मानस की ज्वलंत समस्यायें हैं राजस्थानी कहानियों में भी इनके विरुद्ध आन्दोलन की आवाज सुनाई देने लगी है। प्रगतिवाद या दलित वर्ग से सहानुभति रखने वाली गद्य रचनायें इस काल की अपूर्व देन हैं। रेखाचित्र एवं संस्मरण के प्रयोग नये होने पर भी इनमें प्रौढ़ता के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। गद्य काव्य में पद्य की भी मधुरता आने लगी है। इनको किसी भी भाषा के सम्मुख तुलना के लिये रखा जा सकता है। राजस्थानी में समालोचना साहित्य का पूर्ण अभाव है। निबन्ध बहुत ही कम लिखे गये हैं जो लिखे गये हैं वे सब या तो विवरणात्मक हैं या वर्णनात्मक। गवेषणात्मक, भावात्मक लेखों का अभाव है। इस क्षेत्र में नवीन प्रयास किये जा रहे हैं।

नवयुवकों का ध्यान भी राजस्थानी-गद्य-साहित्य के प्रणयन की ओर जाने लगा है। अब उनकी भावनायें बदल रही हैं। राजस्थानी का उत्थान एवं इसमें रचना करने की प्रेरणा उनको मिल रही है। इससे आशा की जा सकती है कि निकट भविष्य में राजस्थानी-साहित्य अपनी उपयोगिता को प्रकट कर सकेगा।

इस गद्य के युग में जब कि हिन्दी-गद्य का विकास सर्वतोमुखी हो रहा है राजस्थानी के गद्य लेखक भी अपनी प्रतिभा के प्रयोग कर रहे हैं।

आधुनिक-भाषा की वर्तमान प्रगति को देखते हुये कह सकते हैं कि राजस्थानी-गद्य-साहित्य का सर्वतोमुखी विकास बहुत शीघ्र ही हो सकेगा। उसकी उपयोगिता एवं महत्ता देखने के लिये अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। आज से ५०-६० वर्ष पूर्व जो गद्य-रचना के प्रयास हुए थे उनसे आज गद्य साहित्य का स्तर बहुत ही ऊपर उठ चुका है।

परिशिष्ट (क)

राजस्थानी गद्य के उदाहरण

सं० १३३० (आराधना)

सात नरक तणा नारकि, दशविध भवनपति, अष्टविध व्यंतर, पंचविध जोइषी द्विविध वैमानिक देवा किं बहुना। इह भवइ ज्ञात अज्ञात, श्रुत अश्रुत, स्वजन परजन मित्र शत्रु, प्रत्यक्षि परोक्षि जे केइ जीव चतुरासी लक्ष योनि रूपना चतुर्गति कउ संसारि भमंता मइं दुमिया बंधिया संतोडिया दुसिया निंदिया किलामिया दामिया पाडिया चूकिया भवि भवांतरि भवसति भवसहस्र भवलक्षि भवकोटि मनि वचनि काइ तीह सर्वेहं मिच्छामि दुक्कडं।

सं० १३३६ (बालशिक्षा)

लिंगु ३ पुल्लिंगु स्त्रीलिंगु, नपुंसकलिंगु, अस्तु पुल्लिंग, असौ स्त्री लिंगु, अदु नपुंसकलिंगु—

(स्यादि शब्दक्रमा)

सि एक वचनु औ द्विवचनु, जस बहुवचनु

(कारक शब्दक्रमा)

अथ प्रत्यय विभक्ति मामि माइ-करइ लिखइ दियइ इत्यादौ वचमाना—

सं० १३४० (अतिचार)

बारि भेदि तपु। छहि भेदि बाह्य अणसणु इत्यादि, उपवास आंबिल नीविय एकासणु पुरिमड्ढ बेयासणं यथा शक्ति तपु तथा ऊनोदरितपु वृत्तिसंक्षेपु। रस त्यागु कायक्लेशु संलीनता कीधी नहि तथा प्रत्याख्यान पच्चखणां विपुरिमड्ढ साढपोरिसि पोरिसमंगु अनीपाक नीविय आंबिल उपवासि कीधइ विरामइ सचित्त पाणीउ पीधउ हुयइ पव्व दिवसमांहि।

स० १३५८ (व्याख्यानम्)

मंगलार्थं च सव्वेर्सि पढम होइ मगलं ॥८॥
ईणि संसारि दधि चंदन दूर्वादिक मगलीक भणियइ। तीह मंगलीक सर्वही-माहि प्रथमु १ गलु पच्छु। ईणि कारणि शुभ काय आदि पहिलउं सुमरेवउ, जिव ति कार्य एह तणाई प्रभावइ वृद्धिमंता हुयइ। यउ नरुस्कारु अतीत अनागत वर्तमान चउवीसी आदि त्रिलोक साइ मुनुमुहे विसेपाइ हिवडा तणउ प्रस्तावि अर्थयुक्तु व्येयु व्यातव्यु गुरोपउ पढेवउ।

स० १३५६ (सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन)

अथ मनुष्यलोकि नविसर वरि दीपि बावन च्यारि कुण्डलवरि, च्यारि रुचकि वरि च्यारि मनुष्योत्तरि पर्वति, च्यारि इकार पर्वतिं पंचम्हपी पाँच मेरे, वीस गजदंत पर्वति दस कुरु पर्वति त्रीस सेलसिहरे; सरिसउ वैताढ्य पर्वत ए च्यारि सउ त्रिसट्ठि त्रिणाणइ परिसं, एव आठ कोडि छप्पन लाख सत्ताणवइ सहस च्यारि सउ छियासिया विम्बलुकडे शाश्वतानि महा-मंदिर त्रिकाल तीह नमस्कारु करउ ॥

स० १३६६ (अतिचार)

हिव दुष्कृतगरिहा करउ। जु अणादि संसार माहि दीस्वइ हुयउ इणि जीवि मिथ्यात्वु प्रवर्तावउ। कुतिर्थं संस्थापिउ कुमार्गं प्ररूपिउ, सम्मार्ग अपलापिउ। हिवु उपार्जि मेल्हि सरीरु कुटुम्बु जु पापि प्रवर्तिउ, त्रि अधिगरण्ड हलऊ खल घरट घरटी खांडा कटारी अरहट्ट पावटा कुप तलाव कीधां तीर्थजात्रा रथजात्रा कीधी पुस्तक लिखाव्यां, सार्धर्मिकवत्सल कीधां तप नीयम देव व दन पांरणाइ अनेराइ धर्मानुष्ठान तणाइ विषइ जु उजमु कीधउ.

पांदहवीं शताब्दी (विक्रमी) का आरम्भ
(धनपाल कथा)

उज्जयना नामि नगरी। तहिठे भोजदेवु राजा। तीणहि-तणइ पंचइ सयइ पंडितइ माहि मुख्यु धनपाल नामि पंडितु। तीयहिं तणइ घरि अन्यदा कदाचित साधु विहरण निमित्त पइठा। पंडितहणी भार्या भोजा विषसदणी दधि लेउ ऊठी। पीजनु अर्थ त्रिणि प्रस्तावि प्रतिषध विहरायण सारीतेऊ न हू तउ प्रतिया भणियउ। एता दिवसह ए ही दधि। तिणि ब्राह्मणी भणियां

त्रीजा दिवसइ घी इपि । महामुनिहिं भणियउ त्रीजा दिवसइ घी इपि न उपगरी ।

चौदहवीं शताब्दी (तत्वविचार प्रकरण)

जीव किसा होहि जिण्ह चेतना संज्ञा आई हुइ ति जीव भणियहिं । ते पुणु अनेक विधि हुहिं । इस्ये पुणु पंच विधु भणियहु एकेन्द्रिय बेइंद्रिय, तिइंद्रिय चउरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय जि ऐकेंद्रिय ति दुविधा सूक्ष्म बादर । बादर ति मोकला । बेइंद्रियादिक बादर । संकल्प ज मनि घचनि काइइ न हणउ न हणावउ आरंभु सापराधु मोकलउ । एउ पहिलउ अणुव्रतु ।।१।।

सं० १४११ (षडावश्यक बालावबोध)

वसंतपुर नामि नगरु । जिणदासु नामि श्रावकु । तेह तणउ महेसरदत्त नामि मित्रु । जिणदासु आगास गामिणी विधा तणइ बलि नंदीश्वरि द्वीपि शाश्वत चैत्य वांदिवा गयउ । आविउ हूँतउ महेसरदत्ति भणिउ मित्र ताहरइ देहि अपूर्व सुगन्धु गंधाइ । तिणि नंदीश्वर-यात्रा-वृत्तान्तु कहिउ । तउ महेसरदत्तु भणइ मूरहइ पुणि आकाश गामिनी विधा आपि तउ भणिनि वंधि कीधइ हूतइ जिणदासि महेसरदत्त रहइ विधा दीधी ।

सं० १४४६ (गणितसार)

किसा यु परमेश्वरु कैलाश शिपर संगतु, पारवती हृदय रमणु, त्रिजगनाथु । त्रिर्थ त्रिरथ मीपत्रावितं वसु नमस्करु करीउ । बालावबोधनार्थ बाल मयीहिं अज्ञान तीह अवबोध जाणिवा तणउ अर्थि, आत्मीय यशोर्थपुं भी श्रीधराचार्यु गणितु प्रकटीकरु ।

सं० १४५० (मुग्धावबोध औक्तिक)

जेहनइ कारणि क्रिया कर्त्ता कर्म्म हुइ । जनइ जेह रहइ, दान दीजइ, कोप कीजइ, तिहां संप्रदानि चतुर्थी । विनेकिंउ मोक्षनइ कारणि जपइ । जपइ इसी क्रिया इत्यादि । क्रिया कर्त्ता कर्म्म पूर्वम् कारणनइ कारणि मोक्षनइ । तिहां तादर्थ्ये चतुर्थी ।

सं० १४६६ (श्रावक व्रतादि अतिचार)

पढवइ गुणवइ विनय वेयावच्चि देवपूजा सामायिक पोसहि दान शील तप भावनादिकि धर्मकृत्य-मन वचन काय तणाँ छतां बल छतां वीय

गोपविउ। समासरण दीधा नहीं। वांदणाना आवर्त विधिइ साचविया नहीं पडुई पडिक्कमणं कीधउं। चीयाचार अनेरु अ को अतिचार।

स० १४७५ (गणित पंचविंशतिका बालावबोध)

मकर संक्रांति थकी पल्ल आखि दिन एकत्र करी त्रिगुणा कीजइ। पछइ पनरसइत्रीसां मांहि घालीइ अनइ साठि भाग दीजइ दिनमान लाभइ।

सं० १४७१ (अचलदास खीची री वचनिका)

कुल वंस पधारे साम सुधारे, दीन पख तारे।
महाराज, सतमो पर मोह कीजे आपणो कर लीजै।
महाराजा गढ़ रिणथंभरि अलावदीन पातसाह आव्या
राव हंमीर बारह बरस विग्रह कराया।
पातसाह परदल सूझ विमान तूटा, गढ़ छूटा।
बोलियो बगडी सूर साह,
दूसरो विजैराव,
पंच दसा दिव्य पाव।
यह तो आपणी स्यागे जोडिया तन आंणी आगे।
जुध जुडै कुलाय आगे, राव तल्हण अरथ लागे॥

सं० १४७८ (पृथ्वी चरित्र)

तिहां अछइ नगरी अयोध्या। जिसी ते नगरी धनकनक समृद्ध, पृथ्वी पीठि प्रसिद्ध। अत्यन्त रमणीय, सकललोक स्पृहणीय। पृथ्वी रूपिणी कामिनी तणइ तिलकसमान सर्व सौन्दर्य निधान। लक्ष्मी लीला निवास, सरस्वती तणउ आवास। अतुल देव कुलि मंडित, परचक्रि अखंडित। सदा महोत्सवि पावित, रमणीय राजमार्गि शोभित उत्तुंग प्राकारवेष्टित। सदा आश्चर्य तणउ निलय वसुधा वनितावलय। निरुपम नागरिक तणउ ठाम, मनोभिराम। अनिव दुर्जन क्षोभ सज्जनोत्पादित शोभ। पुण्य रत्नोत्पत्ति रोहिणाचल, कुल वधू कल्पलता रत्नाचल।

१४८२ (जैन-गुर्वावली)

चारित्र लक्ष्मी कंठ कंठाभरण, निरुपम ज्ञान भण्डार
सकल सूरिशिरोमणि, श्री तपोगच्छ नमोमणि

कुमाविव मतंगज सीह, निर्मल क्रियापंत माहि लीह
चतुर विद्या आगर, गंभीरिम वर्जित सागर
अज्ञान तिमिर निराकरण सूर, कषाय दावानल वारिपूर
निजदेशना विबोधितानेक देश मन, निजगुण लक्ष्मीप्रक्षीत सज्जन।
भवकम्प विहार, बहुतालीस दोष वर्जित आहार
श्री जिन शासन शृंगार, युग प्रधानावतार—

सं० १४८५ (उपदेशमाला बालावबोध)

पाडलीपुरि धन सार्थवाहनइ घरि रही महासतीनइ मुखि श्री वयर स्वामिना गुण सांभली सार्थवाहनी बेटी इसी प्रतिज्ञा करइ आंपइ मनि श्री वयरस्वामि टाली बीजनउं पाणिग्रहण न करउ इसी एक बार श्री वयरस्वामी तीणइ नगरि पाउधारिया। धन सार्थवाह अनेक सुवर्ण रत्ननी कोडि सहित आपणी कन्या लेई श्री वयरस्वामि कन्हइ आविउ। भगवंति ते सार्थवाह पूरुविउ। तेहनी बेटी बूझवी दीक्षा लेवरावी, लगारइ मनि लोभ नाणिउं।

सं० १४९७ (संग्रहणी बालावबोध)

असुर कुमार माहीं बिहन्द्र केहा एक चमरेन्द्र बीजू बलेन्द्र, नागकुमार माहीं बि इन्द्र केहा धरणेन्द्र बीजू भवानन्द। सुवर्णकुमार माहीं बिइन्द्र केहा वेणु देव १ वेणुदाली २। विद्युत्कुमार माहीं बिइन्द्र केहा हरिकन्त १ हरिस्सह २।

पन्द्रहवीं शताब्दी (उत्तरार्द्ध)

चाणक्य ब्राह्मण चन्द्रगुप्त क्षत्रीपुत्र राज्य योग्य भणी सगठियो हइ अनइ एक पत्र तक राजा मित्र कोपयो हइ। तेहनइ बलिं चाणक्य कटक करी पाडलिपुरि आवी नंदराय ऊठी राज्य लीधउं। पर्वतक आप राज्यनु लेणहार भणी एक नंदरायनी बेटी तरुणी करी विषकन्या जोणी मइ परणा विओ, चन्द्रगुप्त विमना उपचार करउओ वारिओ। तिम अनेराइ आपणां काम सरिया पूठिं मित्र हुइ अनर्थ करइ।

—उपदेशमाला बालावबोध

बेणायट नगरि मूलदेव राजा। एक बार लाकें विनविउ-स्वामी का एक चोर नगर मूसइ छइ पुण चोर जाणीइ नहीं। राजाइं कहिउ-थोडा दिहा।। कीइं चोर प्रगटि करिसु तउं असमाधि न करिसउ। पछइ राजाइं तलार तेडी हाकिउ। तलार कहइ मइं अनेक उपाय कीघा पुण ते चोर धराइ

मही। पछइ राजा आपण पई रात्रिइं नीलउ पटलउ पहिरि नगर बाहरि जे ते चोर ते स्थान के फिरने, चार आवइ एकई स्थान कि अइ सूतउ। तेतसइ पांडिक चोरइ दीठउ जगाविउ पूछिउ-कउण तउं, तीणि कहिउ-हुं कापडी भीपारी। मंडिक चोर कहिउं भावि तउं मू सामिइं मिम सुइइ सदमीवंत करउं। —योगशास्त्र बालावबोध

सं० १५०१ (षडावश्यक बालावबोध)

पासंदि मगरी कोशिपाल राजा, भीम बटउ, राजा नइ मित्र सिंघ श्रेष्टि। एक वार दूत एक आवी राजा हुइ वीनवइ। स्वामी नागपुरि नगरि नागचन्द्र राजा तयउ गुणमाला कन्या। ते ताहरा पुत्रहइ। देव आवइ प्रसाद करउ। पुत्र मोकलउ। राजा सिंघश्रेष्टि नइ कहिउ। ताउ कुमारनउ विवाहमहोत्सव करि आवउ। श्रेष्टि कहइ नागपुर इहां थकउ सो जोयण मध्मेइउ हुइ मक्ष रइ तउ सी जोयण ६पहुरउ आवा नीम छइ। तेह भणी नहीं आवउं। राजा कुपिउ कहइ सउ नहि जांच तउ तु दंडइ छूटे पाछो जोयण सहस परइ मूकाविसु।

सं० १५२५ (शीलोपदेशमाला)

जाणे पूर्वे यथोक्त वीतरागनो भाख्यो मार्ग ते किसी एकलो जोंवि स रहे अनइ जीव आगलि धर्म्मे नो तत्व कहे उपदिसें अने आरे भावना भापणो चित्त भावे अने सब संसार मा में अनेक जरा मरण जन्मादिक भय छे तेह थका चपू बीहें लिये करी कायर थें पड़ता हूंती शील व्रत ने अंगीकार करी पाली नसके ये अवकार्य कह्या।

सं० १५३० (षडावश्यक बालावबोध)

बीयउ अणुव्रति परि मूस मोटा अलीक वचन त्रिसइ करी अपकीर्ति थाइ ते पांचे प्रकारे हुइ। पहिलो कन्यालीक जे निर्दोस कन्या सदोस कहे अथवा सदोस निर्दोस कहइ ते कन्यालीक पटलें द्विपद विपइन्यो कुडो आरपो ।११। बीजो गवालीक-चोसी गायनइ चतुष्पद विपइन्यो कूडो सर्व पइ मांहि आवइ। त्रीजो भूम्यालीक- पारकी भुइ आपणी कहइ। द्रव्यादिक विपइन्यो कूडो पइ मांहि आवइ।

स० १५३५ (वाग्भटालंकार बालावबोध)

कवीश्वर काव्य करइ। कीर्तिनइ भाजि। साधु दोष रहित शोभन छइ

बे शब्द मइ अर्थ तेह तणु संदर्भ रचना विशेष भइ । गुण सौंदर्यादिक अलंकार उपमादिक तेहि भूषित अलंकृत छइ । स्फुट प्रकट छइ जे रीति पांचालादिक अनइ रस शृंगारादिक तेहि उपेत संयुक्त छइ ।

स० १५४८ (जिनसमुद्रसूरि की वचनिका)

मोटइ साहस कीधउ, बडउ पवाडउ पसीधउ, मंत्री डोडावी तउ, श्रयरस तराउ पारखउ कीधउ । किन दातार रिण कुम्भार माथा अविचल कोटि कटक मन सबल । भूहडिया माझ जगमाल वीरम चउंडा रिणमल कुलमंडण श्री योधराजा नंदण + + + । प्रतापी प्रचण्ड । माथ अखंड । राजाधिराज, सारइ सर्व काज ।

स० १५६६ (गौतमपृच्छा बालावबोध)

स्वस्तिमती नामि नगरी तिहां धनवंतराज मानीतउ पद्मश्रेष्ठि वसइ । ते श्रेष्ठि सत्यवादी निर्म्माय पुन्यवंत विनयवंत, न्यायवंत छइ । तेहनइ पद्मनी नाम भार्या रूपवंत पुष्टि कर्म्मनइ यागि काइलउ स्वर हूअउ । ते स्त्री कपट कूड घणउ करइ । हिवइ ते स्त्री नइ मुख मध्युम कर्म लगि अनेक रोग ऊपना । श्रेष्ठि घणा उपचार करावइ गुण न ऊपजइ । एकदा तीथि स्त्री माया करतीइ पद्मश्रेष्ठि नइ आमइ कइ येउ तिम करी जिम नवी स्त्री नउ पाणि ग्रहण करउ ।

सोलहवीं शताब्दी (उत्तरार्द्ध)

इसी परि श्री कथा वृद्धा आगलि गाइ हरखित थाई
रूडी बुद्धि उपाइ कहवा लागउ साई, अम्हे ताहरा ज साई
राखि अम्हां-सउ सगाई ।
अवरज कही आपि रिस-भर म सवापि,
अम्ह कइ मोटा करि थापि सकल मानव नी भारित कांपि ।

—शान्तिसागर सूरि की वचनिका

हिव तेहना नाम कहइ छइ । ते मनुष्यमइ आणिया । नारी समान पुरुष नइ अनेरउ अरि म थी इणि कारिणी नारि कहीयइ । नाना प्रकार कर्म्मइ करी पुरुष मइ मोहइ तिणि कारणि महिला कहियइ । अथवा महास्वभावनी उपजावण हार तिणि कारणि महिला कहीयइ । पुरुष मइ मत्त करइ मद चडवइ तिणि कारिणी प्रमदा कहियइ । पुरुष नइ हाव-

आभारिकइ करी माछइ तिणि कारणि रामा कहियइ । पुरुष नर ऊग ऊपरि अनुरक्त करइ तिणि कारणि अ गना कहियइ ।

—तंदुलवैयालीय

सं० १६०६ (साधुप्रतिक्रमण बालावबोध)

एवं गुरुपति तेत्रीस आसातना संबन्धी जे अतिचार लागु ते पडिक्कमु । इम गुरु नी दृष्टि पाखठी बांधइ । अट्टहास करई । गुरु पाहीं सवार वस्त्र वापरइ । अण पूछि संथारइ । पडिक्कमणु करता गुरु पहिलउ खमासमण पारइ । आंगुलीइ कटका मोडइ । आगलि पाछलि पडिक्कमइ । अणया चार बोलइ । रीस करइ । गुरुराग भेदइ । इ गिणारिक न आयइ । रीस ऊपनइ पगे लागी न खमावइ । साहमू न आइ । ऊभू न थाइ । लाज भय न आणइ अनेराइ दोस तेत्रीस आसातना माहि अन्तरभवइ ।

सं० १६३०

राठौड़ां री वंसावली (सीहै जी सूं कल्याणमल जी तांई)

पछै वीरम जी री बहर भटियाणी चूण्डै जी नूं लेनिह ने छती हुई । चांपवदे जी नूं धरती नूं सोंपि, ने ताहरा पारस आप्हो हो मे कसाड़ गयो, नै गोगादेजी पस देवराज कन्हा रहा । पछै गोगादे जी मोटा हुआ । ताहरा जोइयां री डेरो कराणियो ने जोइयो पीर दे पूगल भाटी राणकदे रै परणीज गयो हुतो ने वांसिया गोगादेजी साथ करि ने जोइये दले ऊपरि गया, सु दलो सूतो तथ न रहै भीखी ठौड़ रहो । पछै ऊठा ढाल गोगादे जी गया ताहरा पाउ बाहो सु दले रो भाभाई बीकरी सुता हुता तोह नूं बाहो सु पारस रा ऊभण बांस मांचो बाढि ने बैर मारिया ,

सं० १६३२ (कुतुबदीन साहजादे री बात)

पातसाह कू सिकार सूं बोत प्यार, सिकार बिना रहै न एक तिगार पातसाह बूढा भया । सिकार खेलने से रहया तब सिकार का हुनर कीया मीर सिकार कू हुकम किया । कास की नली कीधी एक एक बिलस्त लांबी कीधी । तिसमें एक एक मकड़ी रखावे चौवसी की चादर बिछावे । उस बिसायत पर सक्कर नखावे । तिस पर मक्खी दौड़ आवे तब उस मक्खी पर मकड़ी छोड़ावे । मक्खियों का सिकार करावे पातसाह देख देख राजी रहै, सिकार की तम्हा न रहै ।

सं० १६८३ (षडावश्यक बालावबोध)

वली दुर्विनीत पुत्र शिष्य शिक्षा निमित्त क्रोध । सबल उपसर्गे थातो पणी ज गीकार कीधा ते व्रत लेने निर्वाह निमित्त मानू । व्रत लेवा बांछतो थको माँ बाप प्रमुख कुटुम्ब पासी आदेश लेवा भणि कहइ । मइ आज रात्रि सुपन दीठो पणि कहइ अदीठो जे माहरउ आउखउ अल्प छइ । ते भणी हू दीक्षा लेईसि । ये माया वीन ।

सं० १६८५ (कडुआ मत पट्टावली)

परमगुर्वानिदेश एकोन पंचाशत्तम पदधारियेो श्री जिनचन्द्रसूरये नमः । कडुआमती नाग गच्छनी वार्ता पेठी बद्ध यथा मुत लिखीइ छइ । वडोसाइ गामे नागर ज्ञातीय वृद्ध शाखायां मइ श्री ५ कान्हजी भार्या बाई कनकादे सं० १४९५ वर्षे पुत्र प्रसूतः नामतः मइ कडुआ वात्सल्य महावान् स्तोक दिने भाई प्रमुख सूत्रां भणी चतुरपणइ आत्मावर्य थी हरिहर ना पद गांथ करइ केत-शाकि दिनान्तर परस्तनिक भाव मिस्यो ।

सत्रहवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

वाहरो कु वर श्री छत्रपतसिंघ जी री दृष्टि पडियो, छत्रपत कु वर देखि भर राव दुरगे मू कहियो सु कौकटारी वाहे मानसिंघ मू देसो कर सू म्हली । वाहरो राव दुरगे हाथ म्हलियो ।

—छत्रपत विलास

सीहो की पेड़ गाव आव नै रहीया । पछे श्री द्वारिका जी री वात सु हालीया । बीच पाट ग सोलंकी मूलराज री रसवार, छठे डेरा कीया सु मूलराज लाखीडां री दोही तो लाखोड़ा रे माटी लाखे फुलाणी सु वैर सु लाखे वेटे करण मैं निवला भाव दीया तै सु राजरो धणी मूलराज हुवो । सु मूलराज सीहे जी सू मिलियो कहो मारे लाखे सु वैर छै ये मारो मदद करो... .....

—बीकानेर रे राठौड़ां री वात तथा वंसावली

सं० १७१७ (*वचनिका राठौड़ रतनसिंहजी महेसदासौत री*)

सिंघ पेखा वावार कु भार राजा रतन मू छां
कर आपाव बोले ।
दरबार तौले ।

हो तठे आया नै भठै वड़ो मगड़ो हुवो। मारवाड़ रा राजपूत तीन सौ काम आया। भरु बाईस रजपूत कांधलोत काम आया। भरु किवा एक मारवाड़ रा भाज नीसरिया। नै रावजी री फते हुई। भरु आख फेरी। घोड़ा दो सौ ऊंट सौ मारवाड़ रा लूट में आया।

सं० १६१० (उदयपुर री ख्यात)

रावल श्री वैरसिंघ, राणी हाडी पुरपाई रा पुत्र पास बत्रकोट सैन भरव ७०००, हस्ती १४००, पदातिस ५०००, धवत्र ३००, राजा बड़ा परवत, सेवा करत समत्र १०२६ राज बैठो मारवाड़रा धणी रान महामल धी पुत्र जीव पेत्र संभर राजलोकरायी १६, खवास २ पुत्र ११, आयु वर्ष ३० मा० ६

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

प्रथम रुकमनी जी तिणरो पुत्र प्रदुमन साक्षात श्री किसन सारिसो। तिण मे दस हजार हाथियां रो बल। तिणरै पुत्र बज्र हुवो। सो दुरवासा जी रा सराप सू मुसल थी वधियो। बज्र रै पुत्र प्रतिबाहु। प्रतिबाहु रै पुत्र सुबाहु। ज्यांरै रुकमसेन। तिण रै मृतसेन हुवो तिणरे पुत्र भगा हुवा।

(सं० १६२१)

जोधपुर रा महाराजा मानसिंघजी री तथा तखतसिंह जी री ख्यात

भर मीमनाथ जी वगेरैरथाना री राज रै काम में आया इसे सो सरब आया मिश्रमतां त्या अजवी पाहाली त्या केद कर विगाड़णा भीमनाथ जी रा बेटा लिखमीनाथ जी महामंदर रा जिणां रै बाप बेटा रै आपस में मेल नहीं.........

स० १६२७ (देस दर्पण)

पेर पलीतो तारीख १३ अक्टूबर सन् भगहूर कपतान फीरंच साहब इस्टंट साहब भजंट अजमेर रा भी दरबार सामो आयो हैं मे छीप्यो। लफटंट गवरनर अलरल फलारड साहब बहादुर सहमें हाम वावलपुर तक तसरीफ ल आवेंगे मा मोतमद हुमीयार या सफाउन या पुल इस्त्यार सरसे नवाब साहब ममदु की सीवमत में जाय देस।

स० १६६३ (बुढापा की सगाई)

थाइ माई म्हे लोग विद्वान हो जाता तो फेर म्हासू को हमाली धंधो नहीं होतो और पटकमत्क मांहे पडकर बापदादा की सब कमाई तो बैठा नहीं तो भगीने ठठीने सरकारी नौकरी खाजता फिरता। अंगरेजी सीखणे सू शरीर नैं खराबो कर भोक्या गमा लता। बूट पटलोन टोपी लगाकर आख्यां मांहै चस्मो घाल कर मूं डा मांह चिरूट लेकर साहेब बण जाता और असली धर्म भ्रष्ट होकर भिखारी बण जाता।

स० १६७२ (कनकसुन्दर)

दोपहर दिन को चलस धाय्धाधनी लू चाल रही छै। इया का जोर सू बालू बठी की अठी ने उड उड कर चोको नवा नवा टीवा हो रहया छै और मीजगा भी रहया छै। मु ह ऊंचो कर सामने भाकर्यो मुस्कता छै। घ कपडा मांहे बढ कर सारा सरीर न निकताप कर रही छै। घूप इसी ओर की पड रही छै के जमी ऊपर पगदेणो मुस्कल छै। रस्ता मांहे दूर दूर कठे ही मनख को नांव नहीं। बालू उडकर जगां जगां नवा टीवा होणे सू रस्ता को निधाण नहीं। आदमी तो दूर रस्ता मांह कोइ जीव जिनावर को भी दरसण नहीं।

स० १६७३ (मारवाड़ी मोसर और सगाइ अजाल)

फतरा री भाइ सांची। भाऊ साहब। आप भी म्यां का फंदा मांहे आगया दिसो जो। अजा! या तो घुप लोगां न मोसरां की बातां। मुर सीखयोडा का घरां में केन्यो मत मारवाड़ी पचारान का म्याब हुयोडा छै। म्यां ने पूछां तो दादाजी सू कर दीनो भाया जी म्यू कर दीना इसरे का सवरा अड़ंगा लगाकर आप मुड न्यारा हाएणा चावे पण डूजा न नाप रमवान कमर बाप कर मथक भगाडी नैयार भाऊ साहब ये तो सिन्न बेवो पै परपरागों कन्या मत माला भाना छै। आप दूजो विचार जानना नहीं सगाई कर लनो।

स० १६७५ (सीता हरण)

रे नीच रावण! म्यू बिना प्रमग ही मन में भाव मा बड रयो छ। गरमाइ धम्नी न त्याग देगा शांतिसना अम न छोड दरी क्षमा तपस्वियां न परित्याग देरी पण ह रावण या जनक कन्या राम न कदापि नहीं

हो वठे आया नै अठै बड़ो भगड़ो हुवो। मारवाड़ रा राजपूत तीन सौ काम आया। अरु बाईस रजपूत अंभवोत काम आया। अरु किया एक मारवाड़ रा आस नीसरिया। नै रावजी री फतै हुई। अरु आण फेरी। पाछा ही सो छंद सौ मारवाड़ रा खूट में आया।

सं० १६१० (उदयपुर री ख्यात)

रावल श्री वैरसिंघ, राणी हाड़ी पुरबाई रा पुत्र पाल धनकोट वैन असब ७०००, हस्ती १४००, पदातिक ४००० समत्र ३००, राजा बड़ा परलं, सेवा करत समत्र १०२६ राज बैठो, मारवाड़रा धणी राव महाजल श्री पुत्र जीव पैत्र संमर राजलोकरायी १४, खवास २ पुत्र ११, आयु वर्ष ३० मा० ६

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध

प्रथम रुकमनी जी तिणरो पुत्र प्रद्युमन साक्षात श्री किसन सारिखो। तिण मैं दस हजार हाथियां रो बल। तिणरै पुत्र घम हुवौ। सो दुरवासा जी रा सराप सू मुसल थी वाचियो। पम रै पुत्र मतिबाहु। मतिबाहु रै पुत्र सुबाहु। उणरै रुकमसेन। तिण रै मधुसेन हुवौ तिणरै पुत्र भणा हुवा।

(सं० १६२१)

जोधपुर रा महाराजा मानसिंघजी री तथा जसवंतसिंह जी री ख्यात

पर भीवनाथ जी अमृतमंरयाली री राज रै काम मैं आग्या हुई सो सरव आया सिरहमतां त्वा अबदी वाड़ाली त्या वेत्र कर सिगाड़ण्या भीमनाथ जी रा बेटा सिलमीनाथ जी माहामंदर रा जियां रै बाप बेटां रै आपस में मेल नहीं...... ...

सं० १६२७ (देस दर्पण)

पंद पमीतो तारीख १३ अक्टूबर सन मपपुर काशान फौरंप साहब इस्टंट साहब पर्जंट अजमेर रा श्री दरबार मामा आयो है मै सीव्यो। सरकटं गवरनर जनरल कमारक साहब बहादुर सहरो होय पापमपुर तक तसरीफ ल आवेंगे मो मानमर हुसीयार पा सवाराश पा पुरम इस्टयार मरसे नवाब साहब ममदु की सीखमत में आय हैन।

सं० २००८ (हरदास-दहीवाळो)

घर में टाबर-टोळी रामजी रो वास हो । माठै-मटकै चालतो जदेई तो माडो पक्को हो । मेह री रुत में हरदास गांव जातो, जठै इणारां पिता-पुरखी खेत हा । कच्चा टापरिया हा । लुगायां-टाबरां समेत पठै छठ जातो । सगळा खेत रै काम में जुट जांवता । बीजां सूं मजूरी करता । गायां न पठै गायां भैंसां रो दूध पीवण नै मिळतो । हरी टांच रोटी, हरा-हरा खेत । सियाळी आ जाती । बारह महीने खावै जितो धानड़ो राखेर बाकी धान बेच देतो । चोखी रकम साठी हो जांवती । आ रकम ब्याव-टाकिया में लागती । हरदास पक्को घर-साधू हो ।

सं० २०१० (भाषण)

राजस्थानी-जैन-साहित मरुभाषा में बणियो है। इणमें श्वेताम्बर सम्प्रदाय-अर खरतरगच्छीय विद्वानां-रो साहित अधिक है अर वैरो प्रभाव व्यक्तियां के विहार मारवाड़ में ही अधिक हो। इयां भी मारवाड़ी भाषा राजस्थान री प्रसिद्ध साहित री भाषा है ई। कई दिगम्बर विद्वानां ढूंढाड़ी भाषा में भी साहित रो निर्माण कियो है क्यों के इणै सम्प्रदाय रो जोर जैपुर कोटे आदि री तरफ-ई रयो है।

छोड़सी। थने सारा संसार को राज मिल जासी, स्वर्ग में भी तेरी हुर्ड़ी फिर जासी और पाताल में भी तेरी ही जय जयकार हो जासी पछ इस रामप्यार और रामपद में छीन जानकी पर तेरो अधिकार कदे ही नहीं होसी।

सं० १९७६ (समाजोन्नति को मूलमंत्र)

आपणा समाज रोगी है। आ बात कबूल करणने कोई इन्कार नहीं करसी। रोगी भी इसो नहीं महान रोगी है। महान रोगी तो है ही परन्तु बींका साथ साथ छोटा छोटा रोग भी अनेक रया करे है। वैद्यराज बठे तक रोगी का मुख्य रोग को पत्तो तथा निदान नहीं जाणसी बठे तांई बींकी दवा दारू काम देसी नहीं। बस, इसो ही हाल आपणा समाज को है।

सं० १९८८ (मारवाड़ी पद्यनाटक)

नसीब की बात है। किसना की मा मर गई महान दुख कर गई। के करो या मैं अवस्था मे यं हाल हो ज्यासी। लुगाई बिना घुवापा फरणू महामुश्कल है। बेटां की मूं तो इसी से मालक मूं कर सोवने छाग गई। घर में कार्या तो घर सावयें आवे है।

सं० २००१ (भाषण)

यो समस्त बिलकुल ही फूठो है के प्रान्तीय भाषा सू राष्ट्रीयता री भावना ने मुकसाण पुगें। प्रान्तीय भासावां री उन्नति सू राष्ट्रीयता ने मुकसाण पुगणों तो दूर रयो उलटी वा सबल और पुस्ट हुवे। इण बात रो परतक उदाहरण आज रूस रो है। रूस में रूसी राष्ट्रभाषा है पण प्रांतीय मासावां भी उठे विसी फलफूल रही है। रूस रा नेता प्रान्तीय मासावां रो मान को कर योनी उलटी बठे भासावां जाण हो रही भारा प्यार करणों।

सं० २००७ (संत सेठ श्री रामरतन जी बागा)

मर्तीरां री रुत में मतीरां रा ढंट रा ढंट नालीजता विसवासी आदमी बारे हाथयां जगायेर कई में मोहर भर कई में रुपिया भरर पाछा ही मूंडो बन्द कर देवता। सायवां ने देवती वेळा सेठ जी केवता "महाराज भगवान का मीठा मतीरा है, भूल जाना बखमा मत" इण तरह गुप्तदान होतो हो।

परिशिष्ट (ख)

ग्रन्थ-सूची

साहित्य के इतिहास

१–हिन्दी साहित्य का आदि-काल   हजारीप्रसाद द्विवेदी
२–हिन्दी साहित्य का इतिहास   रामचन्द्र जी शुक्ल
३–मिश्र बन्धु विनोद   मिश्र बन्धु
४–जैन-साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास   मोहनलाल दुलीचन्द देसाई
५–ऐतिहासिक-जैन-काव्य-संग्रह   अगरचन्द भँवरलाल नाहटा
६–गुजराती एण्ड इट्स लिटरेचर   के० एम० मुन्शी

भाषा के इतिहास

७–राजस्थानी भाषा और साहित्य   श्री मोतीलाल मेनारिया
८–भाषा रहस्य   श्यामसुन्दर दास
९–हिन्दी भाषा का इतिहास : धीरेन्द्र वर्मा
१०–राजस्थानी भाषा : सुनीतिकुमार चटर्जी
११–ओरिजिन एंड डेवलपमेंट आफ बंगाली लैंग्वेज   टैसीटोरी
१२–पुरानी हिन्दी   चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
१३–एल० एस० आइ०   श्री ग्रियर्सन

इतिहास

१४–नैणसी की ख्यात   श्री ओझा
१५–प्राचीन गूर्जर-काव्य-संग्रह
१६–जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम भाग : श्री ओझा
१७–बीकानेर का इतिहास द्वितीय भाग   श्री ओझा
१८–दयालदास की ख्यात   सम्पादक डा० श्री दशरथ शर्मा
१९–बृहत्तपागच्छ पट्टावली
२०–राजपूताने का इतिहास : श्री जगदीशसिंह गहलौत

रिपोर्ट्स

२१—सी० पी० ए० एस० बी०
२२—प्रिलिमिनरी रिपोर्ट आन दी ओपरेशन इन सर्च आफ मेन्युस्क्रिप्ट्स आफ बार्डिक क्रोनीकल्स
२३—बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल सोसाइटी आफ राजपूताना रिपोर्ट सन् १६१६
२४—पांचवी गुजराती साहित्य परिषद की रिपोर्ट : श्री सी० डी० दलाल
२५—बारहवें गुजराती साहित्य सम्मेलन की रिपोर्ट श्री भोगीलाल ज० सांडेसरा

कैटेलोग्स

२६—पाटन कैटेलोग आफ मेन्युस्क्रिप्ट्स
२७—ए डिस्क्रिप्टिव कैटेलोग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स सेक्शन १ भाग १ जोधपुर स्टेट
२८—कैटेलोग आफ दी राजस्थानी मेन्युस्क्रिप्ट्स इन अनूप-संस्कृत लाइब्रेरी
२९—जैन गूर्जर-कविओ प्रथम भाग
३०—जैन गूर्जर कविओ द्वितीय भाग
३१—जैन गूर्जर कविओ तृतीय भाग
३२—कैटेलोग आफ सरस्वती भवन, उदयपुर
३३—डेस्क्रिप्टिव कैटेलोग आफ बार्डिक एण्ड हिस्टोरिकल मेन्युस्क्रिप्ट्स बार्डिक पोइट्री पार्ट फर्स्ट-बीकानेर स्टेट

पत्र पत्रिकायें

३४—राजस्थान भारती
३५—नागरी प्रचारिणी पत्रिका
३६—राजस्थानी
३७—कल्पना
३८—हिन्दुस्तानी
३९—जैन-सिद्धान्त-भास्कर
४०—जैन-भारती
४१—विश्व-भारती
४२—अनेकान्त
४३—पंचराज
४४—शोध-पत्रिका
४५—मारवाड़ी हितकारक
४६—मानीवाण
४७—आगली खोज
४८—मारवाड़
४९—राजस्थान

राजस्थानी के प्रकाशित गद्य ग्रंथ

प्राचीन

१–मुहणोत नैणसी री ख्यात — ले० मुहणोत नैणसी
२–दयालदास री ख्यात — ले० दयालदास सिंढायच
३–चौबोली (कहानी) — सं० कन्हैयालाल सहल
४–रतना हमीर री वात (कहानी) — ले० महाराजा मानसिंह
५–नासकेत री कथा — मोसे द्वारा संपादित
६–रतन महेसदासोत री वचनिका — सिढ़िया जग्गा
७–मुग्धावबोध मौक्तिक — केशवराम हर्षद ध्रुव द्वारा संपादित
८–भगवद्गीता (अनु०) — रामकरण आसोपा द्वारा अनुवादित
९–अमृत सागर — ले० महाराजा प्रतापसिंह जी
१०–उपदेशमाला (तरुणप्रभसूरि की बालावबोध) — सं० मुनि जिनविजय द्वारा संकलित और संपादित
११–पृथ्वीचन्द्र चरित (माणिक्यचन्द्र) — " "
१२–सम्यक्त्व कथा — " "
१३–अतिचार कथा
१४–नमस्कार बालावबोध — "
१५–मौक्तिक प्रकरण — " "
१६–आराधना — "
१७–सर्वतीर्थनमस्कार — " "
१८–उपदेशमाला बाला — ले० नन्नसूरि

आधुनिक

१९–राजस्थानी वार्ता — ले० सूर्यकरण पारीक
२०–बोलावण (नाटक) — ले० सूर्यकरण पारीक
२१–मारवाड़ी मौसर सगाई जंजाल (नाटक) — लेखक श्री गुलाबचन्द नागौरी
२२–फाटका जंजाल " — श्री शिवचन्द्र भरतिया
२३–बुढ़ापा की सगाई " — श्री "
२४–केसर विलास " — श्री

८१–हमारा राजस्थान : श्री पृथ्वीसिंह मेहता
८२–रघुनाथ रूपक कवि मंछ
८३–भाषा विज्ञान : श्री श्यामसुन्दर दास
८४–वृत्तरत्नाकर
८५–भरत बाहुबली रास ले० लालचन्द भगवानदास गांधी
८६–प्राचीन गूर्जर-काव्य-संग्रह
८७–प्राचीन गुजराती गद्य संदर्भ सम्पादक मुनि जिनविजय
८८–षडावश्यक बालावबोध श्री तरुणप्रभसूरि
८९–कविवर सूरचन्द्र और उनका साहित्य ले० अगरचन्द नाहटा
९०–बृहद् कथाकोष डा० श्री आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्याय
९१–रायल ऐशियाटिक सोसायटी कलकत्ता डा० श्री हर्मन जेकोबी
९२–दिगम्बर जैन ग्रंथ कर्त्ता और उनके ग्रंथ : नाथूराम प्रेमी
९३–विक्रम स्मृति ग्रंथ श्री शान्तिचन्द्र द्विवेदी
९४–सोमसौभाग्य काव्य
९५–षष्ठिशतकप्रकरण : श्री नेमिचन्द्र
९६–योगप्रधान जिनदत्त सूरि ले० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा
९७–वचनिका रतनसिंह राठौड़ महेसदासौत री, खिड़िया जग्गा री कही
९८–जैनाचार्य श्री आत्मानन्द जन्म शताब्दी स्मारक-ग्रंथ
९९–आत्माराम शताब्दी ग्रंथ
१००–युगप्रधान जिनचन्द्र सूरि ले० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा
१०१–एपीग्रेफिका इंडिका
१०२–जनरल एन्ड प्रोसीडिंग्स एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल
१०३–इंडियन एन्टीक्वेरी

४९–गौतमपृच्छा बालावबोध	श्री जिनसूर (त०)	
५०–नवतत्व बालावबोध	श्री सोमसुन्दर सूरि	१५०२
५१–पर्यन्ताराधना (आराधना पताका) बालावबोध	,, ,,	
५२–षडावश्यक बालावबोध	,, ,, ,,	
५३–विचारग्रंथ बालावबोध	,, ,, ,	
५४–योगशास्त्र बालावबोध	,, ,, ,,	
५५–पिंडविशुद्धि बालावबोध	श्री संवेगदेव गणि (त०)	
५६–आवश्यक पीठिका बालावबोध	,, ,, ,,	
५७–चउसरण टबा	,, ,, ,,	
५८–षष्ठिशतक बालावबोध	धर्मदेवगणि	१५१५
५९–कल्पसूत्र बालावबोध	पासचन्द्र	१५१७
६०–चउसरण पयन्ना बालावबोध	श्री जयचन्द्र सूरि (त)	१५१८
६१–शत्रुञ्जय स्तवन बालावबोध	श्री मेरु सुन्दर (ख)	१५१८
६२–क्षेत्र समास बालावबोध	श्री उदयवल्लभ सूरि (वृत०)	१५२०
६३–शीलोपदेशमाला बालावबोध	श्री मेरुसुन्दर (ख)	१५२५
६४–षडावश्यक सूत्र बालावबोध	,,	१५२५
६५–षष्ठि शतक विवरण बालावबोध	,, ,,	
६६–योगशास्त्र बालावबोध	, ,,	
६७–अजित शान्ति बालावबोध	, ,,	
६८–श्रावक प्रतिक्रमण बालावबोध	,,	
६९–भक्तामर बाला (कथा सह)	,, ,,	
७०–संबोधसत्तरी	,,	
७१–पुष्पमाला बालावबोध	,, ,,	१५२८
७२–भावारिवारण बालावबोध	,, ,,	
७३–वृत्तरत्नाकर बालावबोध	,, ,,	
७४–क्षेत्रसमास बालावबोध	श्री दयासिंह (बृ० त०)	१५२९
७५–भक्तामर स्तोत्र बालावबोध	श्री सोमसुन्दर सूरि (त०)	१५३०
७६–षडावश्यक बालावबोध	श्री राजवल्लभ	१५३०
७७–कल्प सूत्र बालावबोध	श्री हेम विमल सूरि (त०)	
७८–कर्पूर प्रकरण बालावबोध	श्री मेरु सुन्दर (ख)	१५३४
७९–पंच निर्ग्रंथी बालावबोध	,,	
८०–मिथ्यात्व सारोद्धार	श्री कमल संयम उ० (ख०ल०)	१५५०

२५—बालविवाह विदूषण	"	श्री शोभाचन्द्र जम्मड़
२६—वृद्ध विवाह विदूषण	"	" "
२७—कलकतिया बाबू	"	श्री भगवती प्रसाद दारूका
२८—बखती फिरती माया	"	" "
२९—सीठणा सुधार	"	" "
३०—बाल विवाह	"	"
३१—वृद्ध विवाह	"	" "
३२—कलयुगी कृष्ण	"	श्री बोधमित्र
३३—गांव सुधार या गोमा आट	"	श्रीयुत श्रीनाथमोदी
३४—कनकसुन्दर (उपन्यास)		श्री शिवचन्द्र भरतिया

मुद्रणाधीन

३५—राजस्थानी वार्ता	श्री नरोत्तमदास स्वामी
३६—धरम गांठ	श्री मुरलीधर व्यास

❀

राजस्थानी के अप्रकाशित गद्य-ग्रंथ

जैन रचनायें

	लेखक	समय विक्रमी संवत
३७—षडावश्यक बालावबोध	तरुणप्रभ सूरि	१४११
३८—व्याकरण चतुष्क बालावबोध	श्री मेरुतुंग सूरि (आं०)	
३९—सप्तति बालावबोध	श्री मेरुतुंग सूरि (आं०)	
४०—नवतत्त्व विवरण बालावबोध	श्री साधुरत्न सूरि (त०)	१४५६
४१—श्रावक बृहदतिचार बालावबोध	श्री जयशेखर सूरि (आं)	
४२—पृथ्वीचन्द्र चरित्र वाग्विलास	श्री माणिक्यसुन्दर सूरि	१४७८
४३—कल्याणमंदिर बालावबोध	श्री मुनिसुन्दर शि० (त)	
४४—उपदेशमाला बालावबोध	श्री सोमसुन्दर सूरि	१४८५
४५—षष्ठिशतक बालावबोध	श्री सोमसुन्दर सूरि	१४९६
४६—संग्रहणी बालावबोध	श्री दयासिंह (बृ त०)	१४९७
४७—षडावश्यक बालावबोध	श्री हेमहंस गणि (त०)	१५ १
४८—भवभावना बालावबोध	श्री माणिक्यसुन्दर गणि	१५०१

११४-लोकनाल बालावबोध	श्री जयविलास	१६४०
११५-प्रश्नोत्तर ग्रंथ	श्री जयसोम	१६५०
११६-प्रवचन सारोद्धार बालावबोध	श्री पद्मसुन्दर (स०)	१६५१
११७-संग्रहणी टबाय	श्री नगर्षि (उ०) लगभग	१६५३
११८-दशवैकालिक सूत्र बालावबोध	श्री गोपाल लगभग	१६६४
११९-लोकनालिका बालावबोध	श्री यशोविजय (उ०)	१६६५
१२०-ज्ञाताधर्म सूत्र बालावबोध	श्री कनकसुन्दर गणि (बृ० उ०)	
१२१-दशवैकालिक सूत्र बालावबोध	श्री कनकसुन्दर गणि	१६६६
१२२-कल्पसूत्र बालावबोध	श्री रामचन्द्र सूरि	१६६७
१२३-क र्मविपाक बालावबोध	श्री हीरचन्द्र (उ०)	
१२४-लोकप्रकाश	श्री ज्ञानसोम	
१२५-सिद्धान्त हुंडी	श्री सहजकुशल	
१२६-साधु समाचारी	श्री मेघराज	१६६९
१२७-ऋषि मंडल बालावबोध	श्री श्रुत सागर	१६७०
१२८-राज प्रश्नीय उपांग बालावबोध	श्री मेघराज	१६७०
१२९-समवायांग सूत्र बालावबोध	,, ,,	
१३०-उत्तराध्ययन सूत्र बालावबोध	,, ,,	
१३१-औपपातिक सूत्र बालावबोध	,, ,,	
१३२-क्षेत्र समास बालावबोध	,, ,,	
१३३-संथार पयन्ना बालावबोध	श्री क्षेमराज	१६७४
१३४-सम्यक्त्व सप्ततिका पर सम्यक्त्व रत्नप्रकाश बाला०	श्री रत्नचन्द्र (उ०)	१६७६
१३५-लोकनाल बालावबोध	श्री सहजरत्न	
१३६-क्षेत्र समास बालावबोध		१६७६
१३७-दशवैकालिक सूत्र बालावबोध	श्री राजचन्द्र सूरि	१६७८
१३८-षट् कर्म ग्रंथ (बंधस्वामित्व) बालावबोध	श्री मतिचन्द्र	
१३९-च चल मत चर्चा	श्री कुशलाभ उ०	
१४०-लघु संग्रहणी बालावबोध	श्री शिवनिधान	१६८०
१४१-कल्पसूत्र बालावबोध	,, ,,	
१४२-कटुक मत पट्टावली	कल्याणसार (कडवागच्छ)	१६८२
१४३-षडावश्यक सूत्र बालावबोध	श्री समयसुन्दर	
१४४-ज्ञाता सूत्र बालावबोध	श्री विजयशेखर	
१४५-पृथ्वी राज कृष्ण वेलि बा	श्री जयकीर्ति	१६८६

८१–भुवन केवली चरित्र — श्री हरि कलश
८२–आचारांग बालावबोध — श्री पार्श्वचन्द्र (बृ० त०)
८३–दशवैकालिक सूत्र बालावबोध ,, ,
८४–औपपातिक सूत्र बालावबोध ,, ,,
८५–चउसरण प्रकीर्ण बालावबोध ,, ,,
८६–जम्बू चरित्र बालावबोध ,,
८७–तंदुल वैयालिय पयन्ना बालावबोध श्री पार्श्वचन्द्र (बृ० त०)
८८–नवतत्व बालावबोध ,
८९–दशवैकालिक बालावबोध , ,
९०–प्रश्नव्याकरण बालावबोध ,,
९१–भाषा ४२ भेद बालावबोध ,
९२–राय पसेणी सूत्र बालावबोध ,,
९३–साधुप्रतिक्रमण बालावबोध ,,
९४–सूत्रकृतांग सूत्र बालावबोध , ,,
९५–दु ख विहारी बालावबोध ,
९६–चर्चाओ बालावबोध ,,
९७–लोंका साथ १२२ बोल चर्चा ,, ,
९८–संस्तारक प्रकीर्णक बालावबोध श्री समरचन्द्र
९९–षडावश्यक बालावबोध ,, ,
१००–उत्तराध्ययन बालावबोध
१०१ गौतम पृच्छा बालावबोध — श्री शिवसुन्दर — १५६६
१ २–सत्तरी कर्मग्रंथ बालावबोध — श्री कुशल (पार्श्वचन्द्र शि)
१ ३–सत्तरी प्रकरण बालावबोध — श्री कुशलभुवन गणि
१ ४–सिद्ध हेम आख्यान बालावबोध — श्री गुणधीर गणि
१ ५–नवतत्व बालावबोध — श्री महीरत्न
१०६–षडावश्यक बालावबोध — श्री उदय धवल
१०७–षडावश्यक विवरण संदेहार्थ — श्री महिमा सागर (आं)
१ ८–पामत्था विचार — श्री सुन्दरहंस (त)
१ ९–उपासक दशांग बालावबोध — श्री विवेक हंस त० लगभग — १६१०
११०–सम स्मरण बालावबोध — श्री साधुकीर्ति — १६११
१११ कल्प सूत्र बालावबोध — श्री सोमविमल सूरि — १६२५
११२–युगादि देशना बालावबोध — श्री चन्द्रधर्म गणि (त) — १६१२
११३–सम्यक्त्व बालावबोध — श्री चारित्र सिंह (ख) — १६१२

१७७–बृहत् संग्रहणी बालावबोध	श्री विमलरत्न	
१७८–शत्रुंजय स्तवन बालावबोध	"	
१७९–नमुत्थणं बालावबोध		
१८०–कल्पसूत्र बालावबोध	"	
१८१–द्रव्य संग्रह बालावबोध	श्री हंसराज (सं०)	१७०६
१८२–नवतत्व बालावबोध	श्री पद्मचन्द्र (सं०)	१७२०
१८३–कल्पसूत्र स्तवन बालावबोध	श्री विद्याविलास	१७२६
१८४–ज्ञान सुखड़ी	श्री समाचन्द्र (वे० सं०)	१७६७
१८५–भुवन भानु चरित्र बालावबोध	श्री रत्नहंस	१८०१
१८६–भुवन दीपक बालावबोध	श्री रत्नधीर	१८०६
१८७–पृथ्वीचन्द्र सागर चरित्र बाला०	श्री भावसागर (कल्पगच्छ)	१८०७
१८८–सम्यक्त्व परीक्षा बाला०	श्री विबुध विमल सूरि	१८१३
१८९–मातृमवृत्ति बालावबोध	श्री उत्तमविजय	१८२४
१९०–सीमंधर स्तवन पर बालावबोध	श्री पद्मविजय	१८३०
१९१–कल्पसूत्र टब्बा	श्री महानन्द	१८३४
१९२–धन्य चरित्र टब्बा	श्री रामविजय (त)	१८३५
१९३–गौतम कुलक बालावबोध	श्री पद्मविजय	१८४६
१९४–नेमिनाथ चरित्र बालावबोध	श्री सुरसुंदविजय	१८४६
१९५–आनन्द घन चौबीसी बालावबोध	श्री ज्ञानसार	१८६६
१९६–अध्यात्म गीता पर बालावबोध	श्री अमीकुंवर ज्ञानसार	१८८२
१९७–यशोधर चरित्र बालावबोध	श्री क्षमाकल्याण	१८९३
१९८–विचारामृत संग्रह (बालावबोध)	श्री रूपविजय	१८९३
१९९–सम्यक्त्व संभव बालावबोध	श्री रूपविजय	१९००

अज्ञात-लेखक-जैन-रचनायें[1]:—

	समय
२००–शीलोपदेश माला बाला०	१४४६
२०१–षडावश्यक बालावबोध	सोलहवीं शताब्दी
२०२–अजित शान्तिस्तव बालावबोध	"
२०३– " " स्तोत्र बालावबोध	" "
२०४–आराधना बालावबोध	"

१—जैन-गूर्जर-कवियों के आधार पर

१४६–सप्तमसी कुल मरनोत्तर संवाद	श्री मतिकीर्ति	१६६१
१४७–उत्तराध्ययन बालावबोध	श्री कमल लाभ (ख०)	
१४८–उपासक दशांग बालावबोध	श्री हर्ष वल्लभ	१६६२
१४९–गुणस्थान गर्भित जिन स्तवन बालावबोध	श्री शिवनिधान	१६६२
१५०–क्रिसन रुक्मणी री वेलि बाला०	” ”	
१५१–विधि प्रकाश	” ”	
१५२–कालिकाचार्य कथा	” ”	
१५३–चौमासी व्याख्यान	” ,	
१५४–योग शास्त्र टब्बा	” ,	
१५५–दशवैकालिक सूत्र बालावबोध,	श्री सोमविमल सूरि	
१५६–प्रतिक्रमण सूत्र बालावबोध	श्री जयकीर्ति	१६६३
१५७–चतुर्मासिक व्याख्यान बाला०	श्री सूरचन्द्र	१६६४
१५८–दानशील तपभाव तरंगिनी	श्री कल्याणसागर	१६६४
१५९–लोक नालिका बालावबोध	श्री महर्षि (महमुनि)	
१६०–जीवाभिगम सूत्र बालावबोध	श्री नयविमल शि०	
१६१–क्ष कर्म ग्र थ पर बालावबोध	श्री धनविजय (त०)	१७००
१६२–कर्म ग्र थ बालावबोध	श्री हर्ष	१७००
१६३–भावकाराधना	श्री राजसोम	
१६४–इरियावही मिथ्यादुष्कृत स्तवन[1] बालावबोध	श्री राजसोम	
१६५–वीर चरित्र बालावबोध	श्री विमलरत्न	१७०२
१६६–जीव विचार बालावबोध	श्री विमल कीर्ति	
१६७–नव तत्व बालावबोध	श्री विमल कीर्ति	
१६८–दण्डक बालावबोध	” ”	
१६९ पक्खी सूत्र बालावबोध	” ”	
१७०–दशवैकालिक बालावबोध	” ”	
१७१–प्रतिक्रमण समाचारी बालावबोध	” ,	
१७२–षष्टि शतक बालावबोध	, ”	
१७३–उपदेश माला बालावबोध	” ”	
१७४–प्रतिक्रमण टब्बा	”	
१७५–गुणविनय बालावबोध	श्री विमल रत्न	
१७६–जय तिहुअण बालावबोध	”	

२०४–उपदेश माला बालावबोध	,,	,,
२०६–उपदेश रत्न कोष बालावबोध	,,	,,
२०७–कल्प सूत्र स्तबक		,,
२०८–कर्म ग्रंथ बालावबोध	,,	,,
२०९–दंडक बालावबोध	,,	,,
२१०–प्रश्नोत्तर रत्न माला बालावबोध		,,
२११–भव भावना कथा बालावबोध	,,	,,
२१२–योग शास्त्र बालावबोध		,,
२१३– ,,	,,	
२१४–वनस्पति सप्ततिका बालावबोध		,,
२१५–शीलोपदेश माला बालावबोध		,,
२१६–श्राद्ध विधि प्रकरण बालावबोध	,,	,,
२१७–श्रावक प्रतिक्रमण बालावबोध		,,
२१८–सिद्धान्त विचार बालावबोध	,,	,,
२१९–जम्बू स्वामी चरित्र	,,	,,
२२०–पांडव चरित्र	,,	,,
२२१–पुण्याभ्युदय	,,	,,

चारण साहित्य

ऐतिहासिक रचनायें —

	पृष्ठ
२२२–देश दर्पण ले० दयालदास	११४ अ० सं पु ली०
२२३–आर्याख्यान कल्पद्रुम ले० दयालदास	१७२ ,, ,,
२२४–बांकीदास री वाता ले० बांकीदास	
२२५–जोधपुर रा राठौड़ां री ख्यात	तीन प्रति
२२६–बीकानेर री ख्यात	१९२
२२७–जोधपुर री ख्यात	२४
२२८–जयपुर री ख्यात	११६
२२९–मानसिंह जी री ख्यात	५६
२३०–जसवंतसिंह जी री ख्यात	३५२
२३१–फुटकर ख्यात	४८८
२३२–मारवाड़ री ख्यात	

२६५–खाम कनड़ री
२६६–मन्यिारणी कमा दे री
२६७–करण सालावत वेसल राठौड़ चारण आसूणा सी री
२६८–करणसिंघ रे कंवर री
२६६–सोढ़ा कंवरसिंघ नै मरमल री
३००–कर्मस जी री
३०१–कांपल रिडमलोत री
३०२–राव किसन कल्याण री
३०३–सांवलै कुमर सी री
३०४–सीवे पीथे चाड़वी री
३०५–सरवहिय कैवाट री
३०६–सादगल पंवार री
३०७–सांमलै ऊदा सी री
३०८–सीवे पोकरणे री
३०६–खेतसी कांधलोत री
३१०–खेतसी रतन सोभोत री
३११–राणा खेता री
३१२–खोखर खाखावत री
३१३–राव गागा वीरम री
३१४–गीदोली री
३१५–गोगा जी री १८२०
३१६–गोगा दे जी री
३१७–गोगा दे वीरमदेवोत री
३१८–गौड़ गोपालदास री
३१६–चाले चापै री
३२० सींधल चीरे मादल वीर री
३२१–राठौड़ राव चूंडे जी री
३२२–पंवार छाहड़ री
३२३–जगदेव पंवार री
३२४–जगमाल मालावत री
३२५–जैतमाल पंवार री
३२६–जैतसी कल्याणत री
३२७–जैते हमीरोत री

२६६–अमर सिंह री बात

बात-साहित्य

	लिपिकार	लिपिकाल से० स्था० संवत
६७–पगसे हंसणी री (अपूर्ण)		१२८६ बीकानेर
२६८–नागौर रे मामले री		१६९६
२६९–सुवा बहुतरी	देवीदान नाइतो	१७०५
२७०–राठौड़ अमरसिंह री		१७०६
२७१–राणा अमरा रे विखेरी		
२७२–कुंडळियां री		१७०७
२७३–अहमद गहाणी री	मथेन वीर पाल	१७२२ फलवधी
२७४–वैताल पच्चीसी री	देवीदान नाइतो	१७२२
२७५–सिंहासन बत्तीसी री	"	१७२२
२७६–राम चरित री कथा		१७४०
२७७–नासिकेतोपाख्यान	(अनु०) ब्राह्मणी मुरलीधर	१७४५
२७८–प्रिथीसिंघ अर सूरां री	मथेन कुसला	१७५५
२७९–चंद कुंवर री बात		१८००
२८ –अकबर री		
८१–अकबर अर वजीर टोडरमल री		
२८२–सोलखी भले री		
२८३–खीची अचलदास री		१८२०
२८४–अचलदास खीची री उमा दे परणवा तिण री		
८५–अणहल बाघा पाटण री		
२८६–अणंतराम सांखला री		
२८७–गोहिल अरजण हमीर री		१८२०
२८८–राठौड़ अरड़क मल री		
२८९–पातसाह अलावदीन री		१८२०
२९०–अलहण सी भाटी री		
२९१–राव आसथान री		
२९२–राजा उदैसिंघ री		
२९३–राणा उदैसिंह उदैपुर बसायो तिण री		
२९४–ऊदै उगमणावत री		

३६१–जाईचा फूल री			
३६२–भगवानमतां री			
३६३–राव माल नाथ री			
३६४–भतृवाल मोग री			
३६५–माटियां री झोप कुरा हुई जिण री			
३६६–भमवाई मारमल री			
३६७–राजा मीम री		१८२०	
३६८–साईं री पलक में ललक बसे तेरी		१८२०	मधूणी
३६९–साईं फर रह्यो है री		१८२०	"
३७०–भाम ठकुकी माहि में है री		१८२०	"
३७१–हरराम रै नैणां री		१८२०	
३७२–क्यू हुरै न क्यू सेवे ते री		१८२०	"
३७३–सेली ने मालो भायो है री		१८२०	मधूणी
३७४–बीरवल री		"	"
३७५–राजा भोज खापरै चोर री		"	
३७६–कुतुबुदीन साहिबजाद री		"	"
३७७–दम्पति विनोद		"	"
३७८–राव सीहै री		"	"
३७९–राव कान्हड़ दे री		"	"
३८०–बीरम जी री		"	"
३८१–राव रिणमल री		"	"
३८२–गोरे बादल री		"	"
३८३–भोमल री		"	"
३८४–महिदर बीसलोत री		"	"
३८५–गांगे बीरम दे री		"	"
३८६–हरदास ऊहड़ री		"	"
३८७–राठौड़ मरै सूजावत बीमै पोहकरणा री		"	"
३८८–जगमल बीरमदेवोत री (ले० मयेन कुशला)			"
३८९–सीहै मांडण री	"	"	"
३९०–जेसलमेर री	"	"	"
३९१–जैते हमीरोत राणक दे लखणसीभोत री	"	"	"
३९२–राजस लखनसेन री	"	"	"
३९३–झगरै बलीच री	"	"	"
३९४–रासै फूलाणी री	"	"	"

३२८–जैमल वीरमदेवोत री — १८२०
३२९–सिवराज जैसिंह री
३३०–जैसे सरवहिये री — १८२०
३३१–राव जोधा री — १८२०
३३२–वजीर टोडरमल री
३३३–ठाकुर सी जैतसीहोत री
३३४–तिलोकसी जसहोत री
३३५–भाटी तिलोक सी री
३३६–तिमरलंग पातसाह री
३३७–राव बीक री
३३८–सूर्य मोज री
३३९–सोढे देपाल दे री
३४०–देवराज सिघ री
३४१–दौलताबाद रै उमरावां री
३४२–सरवहिये धनपाल वीरम दे री
३४३–नरपत सत्तावत री
३४४–नरपद नै नरसिंघ सींधल री
३४५–राजा नरसिंघ री
३४६–नरे सूजावत री
३४७–नानिग छाबड़ री — १८२०
३४८–मापे सांखले री
३४९–नारायण मीरा खां री
३५०–पताई रावल री
३५१–पदम सिंह री
३५२–पमे धोरंधार री — १८२०
३५३–पाबू जी री — १८२०
३५४–पारद पमार री
३५५–पीठवे चारण री
३५६–गोपां बाढ़ री
३५७–प्रिथीराज चौहाण री नै हमीर हाकुल री
३५८–प्रताप मल देवड़ा री — १८२०
३५९–प्रतापसिंघ मोहकमसिंघ री
३६०–कुंवर प्रिथिराज री

३६१–आसोपा फूल री			
३६२–बगड़ावतां री			
३६३–राव मास नाम री			
३६४–बहुमाय जोग री			
३६५–भाटियां री साप जुदा हुइ जिण री			
३६६–कछवाहे मारमल री			
३६७–राजा भीम री		१८२०	
३६८–सांई री पलक में खलक बसे तेरी		१८२०	अपूर्ण
३६९–सांई कर रह यो है री		१८२०	,,
३७०–माय ठकी माहि में है री		१८२०	,,
३७१–हरराम रे नेणां री		१८२०	
३७२–क्यू हरे न क्यू सेवो ते री		१८२०	,,
३७३–रोसे ने भाखो आयो है री		१८२०	अपूर्ण
३७४–वीरधवल री		,,	,,
३७५–राजा भोज खापरे चोर री		,,	,,
३७६–कुतुबदीन साहिजादे री		,,	,,
३७७–दम्पति विनोद		,,	
३७८–राव सीहे री		,,	,
३७९–राव कल्याण रे री		,,	,,
३८०–वीरम जी री		,,	,,
३८१–राव रिणमल री		,,	,
३८२–गोरे बादल री		,,	,
३८३–मोमल री		,,	,,
३८४–माहिहर बीसलोत री		,,	,,
३८५–गोगे वीरम दे री		,,	।
३८६–हरदास ऊहड़ री			,,
३८७–राठोड़ नरे सूजावत वीमे पोहकरण री		।	,,
३८८–जयमल वीरमदेवोत री	(से मपेन कुसला)	,,	,,
३८९–सीहे सांखले री	,,	,,	,,
३९०–जेसलमेर री	,,	,,	
३९१–जैसे हमीरोत राणक दे लखणसीओत री	,,	,,	,,
३९२–रावल लखनसेन री	,,	,,	,,
३९३–डूंगरे बलोच री		,,	,,
३९४–लाखे फूलाणी री	,,	,,	,,

३९५—कछवाहां री	"		"
३९६—राणी रतनसी राव सूरजमल री	"	"	"
३९७—नारायण मीठ्र खां री	"	"	"
३९८—रावत सूरजमल री	मयेन कुसला	१८२०	अपूर्ण
३९९—राणी सोढे री	"	"	"
४००—सोनिगरे माल दे री	"	"	"
४०१—खेतसी रतन सीसोद री	"	"	"
४०२—चंद्रावतां री	"	"	"
४०३—सिसरो माहेचाये गयी रहे तैरी	"	"	"
४०४—झाले झ्रणावत री	"	"	"
४०५—बहलियां री	"	"	"
४०६—राव सुरताण देवड़े री	"	"	"
४०७—हाड़ा री हकीकत	"	"	"
४०८—बूंदी री वात	"	"	"
४०९—सीचियां री	"	"	"
४१०—मोहिलां री	"	"	"
४११—सावंत सोम री	"	"	"
४१२—राव मंडलीक री	"	"	"
४१३—सोगरा बाड़ेल री	"	"	"
४१४—चापे वाले री	"	"	"
४१५—राव रायण दे सोलंकी री	"	"	"
४१६—सवखी री	"	"	"
४१७—देवरे नायक दे री	"	"	"
४१८—बीजे बीझे री	"	"	"
४१९—राणी चोबोली री	"	"	"
४२०—चार मूरखां री	"	"	"
४२१—सदैवच्छ सावलिंगा री	"	"	"
४२२—झाले फूलाणी री	"	"	"
४२३—बुधि बल कथा	"	"	"
४२४—राजा धार सोलंकी री	"	"	"
४२५—दो कहाणियां	"	"	"
४२६—बगड़ावतां री	"	"	"
४२७—राजा मानधाता री	"	"	"

४६१-बीकरै महीर री ”
४६२-बैरसल भीमोत बीसल महेवचे री ”
४६३-बमाडे भटियाणी री ”
४६४-रिणधवल री ”
४६५-राव लूणकरण री ,
४६६-राणक दे भाटी री ”
४६७-गुजरां री ”
४६८-राजा प्रिथीराज सूहवदे परणिया तै री ”
४६९-जोगराज चारण री ”
४७०-रावल जलीनाथ पंथ मैं आयो तै री ,
४७१-नरवद जी राये कूंमै न आंख दीधी तै री ,
४७२-कांधलोत खेतसी री ,
४७३-मोहणी री
४७४-कुंवरिये जयपाल री
४७५-बीनमान रै पख री
४७६-सूंबै ओझावत री
४७७-पताक हरिसाव री १८७० बीकानेर
४७८-राशि पथा री मयेन रामकृष्ण बीकानेर
४७९ राम धण भांगी री
४८०-रायसिंह खींवावत री
४८१-कुंवर सिंह री
४८२-बीरबल री
४८३-रावत सूरजमल कुंवर प्रिथीराज री
४८४-जैतमाल सवाआवत कांडियां री १८२६
४८५-राव बीका चाडावत री १८२६
४८६-फीरोजसाह पातिसाह री
४८७-सात वरियां वाले राजा री संबत पेन सवास ”
४८८-कुंवर रिणमल चूंडावत भली मोलसी
मारियो तै री
४८९-कुंवर रिणमल चूंडावत भली मोकले रो
बैर लियो तै री ” ”
४९०-समणी चारणी री ,
४९१ राव हमीर लमै आम री ” ”

५२५-सीथियां री
५२६-गौड़ां री
५२७-चहुवाणां री
५२८-पंवार सुग बासा राठौड़ां री
५२९-भाटियां री सांपां जुदा हुई जिण री
५३०-सोलंकिया परण आयां री
५३१-हाडा हुआ ते री कुने
५३२-अणहलवाड़ा पाटण री
५३३-सोगढ़ री
५३४-भटनेर री
५३५-संभाण रा गांम री
५३६-अमीपाल री
५३७-भली पर सुघटी पोली जिण री
५ ८-भाम हठ की माय री
५३९-राजपूत भाखणसी अर साख साह री
५४०-ऊंट चोर री
५४१-राठौर कपोलकुंवर री
५४२-कंवला पाखु रा साह री
५४३-काजल तीज री
५४४-कायां राजपूत री
५४५-भाटी भगड़े री
५४६-कुंवर मापजादा रो
५४७-राजा केरमन री
५४८-कोड़ीधज री
५४९-सुगन्ध बावली री
५५०-सोमा बगस्वारे री
५५१ गाम रा धणी री
५५२-साह स्यामा री
५५३-गुलाब कंवर री
५५४-राजा चंद री
५५५-चंदण मलयगिर री
५५६-अमर अपछरा री अर राजा इन्द्र री
५५७-अमर परमाना री

५५८—कंवर मूरसां री
५५९—खीपण री
५६०—माटी अखड़ा भुखड़ा री
५६१—भंमर री
५६२—साह ठाकुरे री
५६३—बेवड़ा बहल बानर री
५६४—बंदणी री
५६५—ढोला मारू री
५६६—तारा तंबोल री
५६७—वात वाजी अर राग पिछाड़ी जिया री
५६८—रैबारी देवसी री
५६९—देवर अहीर री
५७०—दो साहूकारां री
५७१—नवरतन कंवर री
५७२—नागजी नागवंती री
५७३—नाहरी हरणी री
५७४—पदम सी मुहतै री
५७५—पदमा चारण री
५७६—पना री
५७७—पराक्रम सेख री
५७८—पंच सहेलियां री
५७९—पंच दंड री
५८०—पंच मार री
५८१—पाटण रै बाणया चोरी कीधी तै री
५८२—पाबूजी री
५८३—पातसाह बंग रा बेटा री
५८४—बंबी बुवारी री
५८५—बाप अर बचा री
५८६—बामण चोर री
५८७—भद्रचरित्र री
५८८—भला बुरा री
५८९—भूपतसेण री
५९०—राजा भोज कंवर चारण्या री

५९१–राजा भोज भानमती री
५९२–राजा भोज माघ पिंडत राणी भानमती री
५९३–राजा भोज राणी सोमा री
५९४–मदनकंवर री
५९५–वरसी मयाराम री
५९६–महादेव पारवती री
५९७–कुंवर मंगल रूप अर महता सुमंत री
५९८–महमदखान साहजादा री
५९९–माणक तोल री
६००–मंतरमेणा री
६०१–मान गहडै री
६०२–माइ सुपारी री
६०३–मान्हाली री
६०४–मूमल महिंदरे री
६०५–मोजदीन महताब री
६०६–मोरडी मतवाली री
६०७–मोरडी हार मिगिलबो जिया री
६०८–रजपूत अर बोहरे री
६०९–रतना हीरां री
६१०–रतनै गहमै री
६११–राजा अर कीयस री
६१२–राजा राणी अर कंवर री
६१३–राजा रा कंवर राज लोभ्यं री
६१४–राजा रा बेटा रा गुरू री
६१५–राहब साहब री
६१६–लालमल कंवरी री
६१७–लाखां मणाकी री
६१८–लैला मजनू री
६१९–वजीर रै बेर री
६२०–वणजारी बहुरू री
६०१–वारण बलसूर सोपकी री
६२२–वाहलिमां री
६२३–बांसी री बपत

शुद्धि पत्र

(संशोधक—अगरचन्द नाहटा)

•••

पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१ — १८	कुकवि बत्तीसी	कुकवि बत्तीसी
१ — २८	मिलया	मिलिया
१ — २९	संस्कृति हुवे कपट सब	संसकृति हुवै कपट सब
१५ — २२	अज्ञात लेखक	पद्मसुन्दर
१५ — २१	उपासक दशांक	उपासक दशांग
१७ — २४	——	बालाव, जितविमल
१८ — ६	पार्श्वचन्द्र	पासचन्द्र
१८ — ७	महावीर चरित्र जम्बू स्वामी चरित्र	शांतिनाथ चरित्र पार्श्वनाथ चरित्र
१८ — ८	पृथ्वीचन्द्र-विजय	कुमार विजय
१९ — ६	बीकानेर	पार्श्वचन्द्रसूरि
२१ — ५	खाटी राह	?
२४ — १५	चाव	चाव
२४ — २१	पछाडै भारतम	ठाला है भराव
२४ — २२	बेठ	बैठू
२४ — २५	जमाहर	जवाहर के
३२ — १६, २८	वृत्त रत्नाकर	वर्ण रत्नाकर
३५ — २६	कोहली	कोहली
३५ — २८	मई	मद
३५ — ३०	संचिया	संचिया सेहिया
३६ — १५	तीवर	तीर्थ
३६ — १६	मोसेर कुणहवर्द	मोवद कुणहवधई
३६ — १६	मैदि	मैदि
३६ — २	वृत्ति माही	वति माही
३७ — ४	मायीरमाणम	पायरिमाणम
३७ — ६	चरित्राचार	चारित्राचार
३७ — १६	मीस	मीस

पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१७ — १७	विमासहमलिमं	विणासह पविमं
१७ — २६	बिदु	बिदु
१८ — १	मोकलउ	मोकलउ
१८ — ४	कुरसी	कुमरसीह्
१६ — ७ ८	तीहुइ	तीवहि
१६ — ६	भीजा	बीजा
१६ — २	वमि	वमि
१६ — १	तिपि	तिरिण
४ — १६	बधनिक	बधनिक
४ — २८	सोमसु द	सोमसुंदर
४१ — २१	पुरंदर	पुरंदर
४१ — २६	पुलीबन्ध	बलीबंध
४१ — २८	बालावबोध	बालावबोध
४१ — २८	माथि	पाथि
४१ — २६	विद्यासमाराग्यव	विद्यासमाराग्यव
४१ — १	कुमलावी	कुमलाव्यौ
४२ — २८	बालावबोस	बालावबोध
४३ — १३	चंद्रपुम	चंद्रपुत
४३ — १३	नंदराव	नंदराय
— १६	तखतो	तखतो
— २२	बालीर	बाणीइ
— २४	तडि थार	तिडि चोर
— २५	मडलउ	पटउलउ
— २६	स्वान के	स्वामके
— २६	थारचोमड	चोर चोतउ
— २७	अमाविउ	अमाविउ
४६ — १	बिम्ब	मात्रागुवर्ती
४७ — १२	स्थामरिग	स्थामरिग
४७ — १८	उपाध्याय	आचार्य
४ — १	न थि	नथि
— १४	माहुद	मोहुद
— २१ २२	कजबनंदी कुमरल	?
— २५, २६	सीमडी	सींबडी

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
४९	— १६	चीमासर	चीमसर
५३	— १८	चीमासर	चीमसर
	— २	कुमा मनई	कुलपनई
	— २१	वाचा	वाचा
	— २१	भिवतसा	भिव तसा
५४	— २	विस्तारिव	विस्तरिव
	— २	तसउ	तएउ कुकाल, माठी
	— २	काशिह	वीशिह
	— १	मेव	मेह
	— ५	विरीत	विपरीत
	— ५	परिपास	परिमास
	— ७	ऊपर	ऊपरि
	— ७	वेल	वेला
	— १	वोक	लोक
	— १	मइट्य	बइठो
	— ११	बैठस	बैठल
	— ११	भमर	भमर कुल
	— १४	पाडर	पाडल
	— १४	निर्मर	निर्मल
	— १५	सेवभी	सेवभी
५५	— ७	पधप	मधप
५६	— १२	वह	हह
	— १४	मम मलैठ	मवा मलैठ
	— १७	सांभरि	सांवरि
५७	— ५	मवबपाल	मयहपाल
	— ५	वारव	वार
	— ६	कमा तावह	कमाणवह
	— ११	सजवई	बजवई
	— १७	मीसाब	मीसब
	— १८	मकरंम	मकरंल
	— २२	मुती	मु ती
५९	— १८	कीमी	कीमी

पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
— ११	किन	किन
— २	बृहदिया	बृहदिम्म
— २१	मोमराणा	मोमरावां
— २१	माइ	बाइ
— २५	अभरज	मामारिज
— २५	करही	करही
— २५	कइ	मइ
— २६	मारित	मारति
६ — १६	देवतणी	देव तणी
— १७	धापाय	धपाय
— १७	बेह ठउ	बेहठउ
— १७	मय	मयु
— १६, २	इत्वार्व	इत्वर्व
— २७	भाग २	भाग १
११ — ५	समाउइ	समाकइ
— ११	दमवति	देमवति
— २०	राजकीर्ति मिम	भीवर
— २१	भीवर	राजकीर्ति
७ — ७	समुद्युति	इन्द्रद्युति
— १३	नाम	ना
— १४	तंबोलाइ	भडोलाइ
७७ — ७	विरवणात्मक	विवरणात्मक
७८ — ६	बणी	बणी
७६ — १६	पमरय	समरंम
८१ — ६	वया व्यवस्था	वंड व्यवस्था
८३ — १	देवला	देवड़ा
— १६	रावणिमां	रा वणिमां
— २१	कांवल	कांबल
— २७	रामसी भीत	रामसीभोत
— २८	पौह करणे	पौहकरणे
८६ — १	स्याम	समाम
६१ — २	बीपइ	बीपइ

पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१४५—१६	वीरमाण	वीरमाण
१४७— ८	बीमपुर	बोधपुर
१४८— ४	पठना	पटना
—२२	मर हाव	करि बाति
—२८	पु	पौ
—२८	कहूता	कहुतां
१४९— ७	मासाण	मवसाण
— ८	वावजीनै	सावजीनै
— ९	सीमै	सीमै न दीजै
—१	वाट	बड़ा
—१	म्हारमळै	म्हाम्हळै
१५ —११	पटवो	बडवा
—१६	मरणा बोलते	मरणा बोलते
१५१— १	पडपती	पडपती
— ९	पावक	बावक
—१५	रूपधतुकाम्य	रूपधंतु का रूप
१५३—२५	मजाव	मजाव
१५४— १	१६ विधि	१६ विधि बाजा
१५५—१५	पाबोत	पाबोट
१५६— २	पारवती	पावती
— १	मील	मील
— ५	काटरी	कोटरी
—१९	भण	भण
—२	धमव	धमल
—२४	पद	पधि
—२५	रूपाकिमा	रूपकिमा
१५७— १	टीपा	दीमा
— ७	पर्वत	पवन
—११	भिमि	भिर्मि
—१७	माह जी	माहजी
—१	बोसी जी	बोसोजी
—१८	नाथी जी	नाथीजी

पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
—२३	भालो	भोसो
—२४	चौकां	सौकां
—२५	सुथाएौ	सु थाएौ
—२५	डिमबरो	डिमंबरो
—२६	पाइली	पौइणी
—२६	बाल	बमि
१४८ — ६	घूघलीमो	घूघलीमो
—९	ऊडी	ऊंडी
—११	मासास मरिया	मासा समरिया
— १५	बांत	बात
१४६ — १	नहीं	नवी
— ३	देवी	दूबी
— ४	सिर्व	सिव
— ५	लावी	लायो
—२५	पमांसू	पौडां सू
—२७	झनकार	झमकार
—२६	रह्या	रह्यो
—३	रह्या	रह्या
१५ —११	ज्यांका	आका
—११	वी	टी
—१५	मुह	मु ह
—१७	है	है
—२०	घत	घत
१५१ —२१	वूघव	घूघट
—२३	बविबा	बविबावा
१५२ — ३	चकठा	एकठा
— ६	गटा	मटा
— ८	गोर	मोर
— ६	चूमे माल	चूमे साल
—१२	समाम्यू मार	सबाम्यू गार
—१७	कासहुत	काम हुत
—२१	बाइडे	बाइडे
—२२	बकी	अका
—२५	साव	साव

पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१६२ — २१	बिहारल	बिहार म
१६३ — ११	माडवे	माडवे
— १८	भामरण	भामरण
— १८	मांवती	मांवती
— १८	घोड़ती	घोड़ती
— १९	कंगुर	कगुर
— २१	सांवैसरा	सांवैसरा
१६४ — १	मुम्भर	मुम्भर
— ४	संताप	संतापर
१६५ — २	को	के
१६७ — १०	का	के
१६८ — २	प्रताप	प्रमुत
१७ — ७	प्रतिष्ठा	मस्थान
— १९	सहारा	सहरां
१७१ — १२	ऊपर	ऊपर सरो
— १४	भी	को
— १४	नरचों की	नरेप सिफारिसी
— १९	राजपने	राज पनै
— २१	सिखि र्त	सिखिर्त
— २१	कारणीपी	कारिणी
— २७	भिपम्मो	भितम्यो
— २८	मनसातामा मै	मन साता मामै
१७२ — १	भीता रां	भीतारां
— ४	है वो	हैवो
— ५	रापे वो	रापैवो
— ६	होयहर की मन मनोर १ दै	?
१७८ — १४	पामण	पामग
१७९ — ६	भपवान	भग्वनी
— ६	पसनुप	पमरानुप
— २९	भिवार	भिगद्
१८१ — ८	मुरतापीन	मशालिम
१८३ — १	घुमाको	घुमम्यो
१८४ — १	मारिमोरी	मरिमोरी

पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२२ — १६	मयविमल	विनयविमल
— १२	पुण्यविमल विमलरत्न	भक्तामर, पुण्यविनय
२२१ — १	विमलरत्न	पुण्यविनय
— १	नमुत्थाणं	नमुत्थुणं
— ६	सं १७०७	सं० १७६६
— १४	भावबृत्ति	भावविधिवृत्ति
— १७	१८३१	१८३१
— २२	१८६१	१८६४
— २२	यशोधर	धम्मड
२२२ — १७	पुण्याम्बुधय	पुण्याम्बुधय
— २	पछ	पद
२२४ — १	१४८६	१८२१
— ७	१७०१	१७५२
— २२	सौलगी प्रवरी	?
— २१	धर्मतराम	धर्णतराय
— ११	उपमरणावत	उमरणावत
२२५ — ५	सोढा कवलसिंघ	कुवरसी सांवसी
— ६	कवल	कांवल
— ६	साख्ने	सावर्से
— १	पाड़बी	पाड़वी
— २१	बाले चापे	बार्ले चांपे
— ६	सीमस चीपे	सीमय चांपे
२२६ — १७	मर्याधिव सीवस	मर्याधिइ सीवस
— २२	मीढा	मीठा
— १०	हाडुल	हाडूल
२२७ — १	जाड़ेचा	जाड़ेचा
— ४	बौम	?
— ६	मारमम	मारमम
— ११	कमरै	कु यरै
२२८ — १०	ऊणावत	ऊमणावत
— ११	बहुमिया	बहुतिमा
२२६ — ७	मादूमर्या	?

पृष्ठ पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
२०९ — २	ते री	तैरी
— २२	पाहुमा	पाहुणा
२१० — १	मलीनाथ	मलीनाथ
— ११	कूमे	कू भे
— १६	रायमल	रायमण
— २१	कु वरसिह	कु वरसी
— २४	कोड़ियां	कोसियां
२११ — १२	मलीनाथ	मलीनाथ
— १६	मांबड़ियां	माबड़ियां
— २२, २१	रायमण	रायमल
२१२ — ४	वाता	वार्ता
— १४	माम हठ की माय	माय ठहकी माहिमै
२१३ — ८	माब	माक
— १०	पिसाड़ी	पिसाणी
— १२	बेमरं	बेमरै
२१४ — १	सोना री	सोनारी
— ११	माम	माम
— ११	मास्हाली	मास्हाली
— १४	मूमल	मूमल
— १५	मोजदीन	मोजदीम
— २५	राहब साहब	राबब सायब
— २६	लालमल	?
— ३०	बडाबकी बहुत	बैडाबकी बै बई बहुत
		देखें न० ५० १६१
— ३१	सोनड़ी	सोनड़ी
— ३३	बडी	बंध
२१५ — १	बाड़ी बारै री	?
— ४	मसम बाल री	?
— ७	बैसाम्बेरा	?
— ९	बाबा	?
— ११	सामों री	?